बहाउल्लाह और नया युग

Baha'u'llah and the New Era

Dr. J. E. ESSLEMONT, M.B., Ch. B., F.B.E.A.

BAHA'I PUBLISHING COMMITTEE
P. O. Box No. 19—NEW DELHI.

प्रकाशक
बहाई पब्लिशिंग कमिटि,
पो०बो०न०१६, नई दिल्ली।

॥ प्रथम आवृत्ति १६३७-१६३८ ॥
॥ द्वितीय आवृत्ति १६५० ॥

मुद्रक——
रश्मि आर्ट प्रेस
दरियागंज-दिल्ली

बहाउल्लाह और नया युग

सूची

बहाउल्लाह और नया युग

अध्याय पहला

—:०:—

शुभ-सूचना

"संसार को जिस महापुरुष के आने का वचन दिया गया था, वह प्रकट हो गया। सब लोग और जातियां ईश्वरीय ज्ञानप्रकाश की आशा में हैं और वह बहाउल्लाह ही मनुष्यमात्र का प्रमुख अध्यापक और शिक्षक है"—'अब्दुल-बहा'

इतिहास में सब से बड़ी घटना

यदि हम मानव जाति की उन्नति की कथा पर, जो इतिहास के पृष्ठों से लिखी हुई है, ध्यान दें तो यह बात सिद्ध हो जायगी कि मानव जाति की उन्नति समय समय पर उन महात्माओं के अवतरण पर निर्भर रही है, जो अपने समय के प्रचलित विचारों और रूढ़ियों का उल्लङ्घन कर मनुष्यमात्र में किसी अज्ञात सत्य का प्रकाश और प्रचार करते आये हैं। संसार की काया-पलट करना आविष्कारकों, मार्ग-दर्शकों, अद्भुत प्रतिभा वाले तथा पैगंबरों या अवतारों का ही काम है जैसा कि कारलाइल कहते हैं:—

"सरल स्पष्ट और निर्व्याज निर्मल सत्य जो हम सोच सकते हैं, यह है कि, जिस की प्रतिभा उच्चत है, सर्व साधारण में दुर्लभ

आध्यात्मिक सत्य जिसमें विद्यमान है वह महापुरुष दस या दस हज़ार नहीं बल्कि संसार के सभी मनुष्यों से, जिनमें यह गुण नहीं पाये जाते, अधिक शक्ति-शाली है। वह महात्मा सर्वथा स्वर्गीय दिव्यशक्ति के प्रभाव से संसार भर में इस प्रकार दृढ़ रहता है जैसे उसके हाथ में निज ईश्वर के शस्त्रागार से प्राप्त हुआ कोई ऐसा खड्ग हो, जिसका सामना सारे भौतिक अस्त्र मिलकर भी नहीं कर सकते"। "साइनज् आफ टाइमज़" से उद्धृत।

विज्ञानकला और संगीत के इतिहास में इस सत्य के पोषक पर्याप्त उदाहरण हमें मिलते हैं। परन्तु किसी भी विषय में इस प्रकार के बड़े आदमियों या उनके संदेशों का प्राधान्य इतना स्पष्ट प्रमाणित नहीं होता जितना कि धार्मिक विषय में। पूर्व समय से अब तक जब-जब लोगों के आध्यात्मिक जीवन का अधःपतन हुआ और उनके आचार भ्रष्ट हुए, तब तब किसी अत्यन्त आश्चर्य पूर्ण और रहस्यमय पुरुष भगवान के अवतार का प्रादुर्भाव होता आया है। बिना किसी ऐसे एक भी आदमी की सहायता के जो शिक्षा देने या नेता बनने के योग्य हो, या उसके अभिप्राय को पूरा समझ सके, अथवा उसकी ज़िम्मेवारी को थोड़ा बहुत बाँट सके, वह महापुरुष अकेला ही संसारभर की धारा का विरोध करते हुए भी अंधों में एक ऋषि की भांति न्याय और सत्य की घोषणा करने के लिये खड़ा होता है।

इन अवतारों में कई तो बहुत प्रभावशाली हो चुके हैं। पूर्व में गत कई एक शताब्दियों से कोई न कोई ईश्वरीय संदेश-हारी महात्मा, कभी श्रीकृष्ण, कभी जरथोस्त, कभी मूसा, कभी मसीह, कभी मुहम्मद, के रूप में आध्यात्मिक सूर्य की भांति उदय होकर मनुष्यों के अंधकार पूर्ण हृदयों को प्रकाशित करने

और उनकी सुप्त आत्माओं को जगाने के लिये प्रकट होता आ रहा है। धार्मिक संप्रदायों के प्रवर्तक इन महात्माओं के बड़प्पन के सापेक्ष्य महात्म्य के विषय में हमारे चाहे कुछ भी विचार क्यों न हों, परन्तु यह बात हमें स्वीकार करनी पड़ेगी कि यही लोग मानवजाति की शिक्षा के मुख्य और प्रबल कारण बने हैं। इन अवतारों ने एक स्वर में इस बात की घोषणा की है कि जो शब्द उनके मुंह से निकले हैं, वे उनके नहीं बल्कि दिव्य आविर्भाव हैं, ईश्वरीय संदेश हैं, जो उनके द्वारा ईश्वर की ओर से लाये गये हैं। इन महात्माओं के लिपि बद्ध संदेश इस बात का भी संकेत अथवा प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि, एक ऐसा महापुरुष समय की पूर्ति पर प्रकट होगा जो उन सब के काम को आगे चलायेगा और सफल करेगा, जो संसार में न्याय और शान्ति का राज्य स्थापित करेगा, जो सब वंशों, धर्मों जातियों और क़ौमों को इस प्रकार एक कल के सूत्र में बांध कर दिखाएगा जिससे सब लोग, छोटे से लेकर बड़े तक, एक समुदाय में आकर ईश्वर के सच्चे रूप को पहचानें और उससे प्रेम करें।

यह निश्चय है कि आगामी समय में जब मनुष्यमात्र का शिक्षक अवतार प्रकट होगा तब अवश्य ही मानव समाज के इतिहास में एक बड़ी घटना घटेगी। बहाई प्रचार संसार को इसी शुभ समाचार की सूचना दे रहा है कि वह सच्चा शिक्षक प्रकट हो चुका है। उसकी दिव्य वाणी प्रकट हो गई है और लिखी गई है, और प्रत्येक सच्चे जिज्ञासु को ध्यान से उसका मनन करना चाहिए। "महापुरुष का सुप्रभात" पहले आ ही चुका है और अब "सत्य का सूर्य" भी उदय हो आया है। अभी तो

इसका भास्कर मण्डल पर्वतों की कुछ चोटियों पर ही दीखने पाया है कि पृथ्वी और आकाश इसकी चमक से जगमगा उठे हैं और शीघ्र ही यह पहाड़ों के ऊपर आकर पूरे तेज से समभूमि और घाटियों पर अधर्म और मनुष्यमात्र को जीवन तथा प्रकाश देगा।

परिवर्तन शील संसार

यह बात सब पर प्रकट है कि उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं सदी के आरम्भ में संसार पुराने युग की मृत्यु और नये युग के जन्म की पीड़ा में से होकर जा रहा है। पुराने प्रकृति पूजा और स्वार्थ के सिद्धान्त तथा प्राचीन पद्धति की जातीयता देशभक्ति के पक्षपात और उमंगें अपने ही अपराधों के कारण नष्ट और अवहेलित हो रहे हैं। अब हमें प्रत्येक देश में विश्वास, भ्रातृभाव और विश्व प्रेम की नूतन भावना देखने में आ रही है जोकि पुरानी गांठों को खोलकर और पुरानी सीमाओं को लांघ कर आगे बढ़ती जा रही है। मानव जीवन के प्रत्येक भाग में क्रान्ति-कारी परिवर्तनों के अद्भुत स्वरूप बन रहे हैं। पुराना युग अभी बिलकुल मर नहीं गया। यह नये युग के साथ जीवन और मृत्यु के संग्राम में प्रवृत्त है। बुराइयां बहुत, बड़ी और भयावनी हैं, पर वह खुल रही हैं, उनकी खोज की जा रही है, नये विक्रय और नई आशा से उनका सामना किया जा रहा और उस पर आक्रमण किये जा रहे हैं। मेघ यद्यपि बहुत, बड़े और भयावने हैं, तो भी प्रकाश की किरण उसमें से निकलकर आगे बढ़ने के मार्ग को प्रकाशित कर रही है, विघ्न और गढ़े जो आगे बढ़ने से रोकते थे, सामने दीख रहे हैं।

अठारहवीं सदी की बात और थी। उन दिनों आध्यात्मिकता

और सच्चरित्रता के विषय में जो अन्धकार संसार में छाया हुआ था, वह ज्योति की किरण नहीं पा सका था। वह अन्धकार प्रभात होने से पहले के अन्धेरे का सा था, जब कि थोड़े से इने गिने दिये या बत्तियां टिमटिमाती रहती हैं और उनसे प्रकाश के बदले अन्धकार और भी घना मालूम होता था। कारलाइल अपने "फ्रैडरिक दी ग्रेट" पुस्तक में अठारहवीं सदी का दृश्य यों अङ्कित करते हैं—

"यह एक ऐसी सदी है जिसका कोई इतिहास नहीं है और नाही हो सकता है। छल कपट इतना अधिक था जो कभी था ही नहीं झूठ की इतनी वृद्धि हो गई थी कि लोग अनुभव ही न कर सकते थे कि यह झूठ है। दम्भ का साम्राज्य था। झूठ लोगों की रग रग में रच गया था। अनाचारों का प्याला पूर्ण रूप से भर चुका था। फ्रांस की क्रान्ति ने इसका अन्त किया। मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ और समझता हूँ कि ऐसी सदी का अन्त ऐसा ही होना उचित था। क्योंकि उस समय बालकों के समान अज्ञान की नींद में सोये अबोध मनुष्यों को जगाने के लिये एक बार फिर ईश्वरीय अवतार (ज्ञान के प्रकाश) की बड़ी आवश्यकता प्रतीत होती थी; जो कि लोगों को ऐसी बुरी दशा में डूबने से बचाय।" (Frederick the Great, Book 1, Chap. 1)

अठारहवीं सदी से तुलना करने पर वर्तमान समय अन्धकार के अनन्तर प्रभात का सा है, या यों कहें कि हेमन्त के बाद वसन्त का सा है। संसार नया जीवन प्राप्त कर रहा है, नये विचार और नवीन आशाओं से भर रहा है। जो बातें कुछ समय पहले असम्भव स्वप्न की सी दीखती थीं आज यथार्थ और सत्य बन रही हैं। जो सदियों में होना था, आज दैनिक व्यवहार में

आने लग गया है। हम आकाश में उड़ने और समुद्र में यात्रा करने लग गये हैं। हम बिजली के वेग से संसार भर में चारों ओर सन्देश भेजने लग गये हैं। थोड़े ही वर्षों के अन्दर हमने सैनिक बल की दुर्धर्ष स्वेच्छाचारिता का पतन, स्त्रियों का सब व्यवसायों में प्रवेश, जहां से उनका प्रवेश बन्द था; और बड़े बड़े देशों के जनसमुदाय का, शराब का त्याग तथा सब राष्ट्रों का संगठन, (League of Nations) का जन्म जो भविष्य में संग्राम को रोकने का शुभ प्रयत्न कर रहा है, आदि अनेक अद्भुत चमत्कारों को, जिन का गिनना कठिन है, अपनी आंखों से देख लिया है।

सचाई का सूर्य

संसार भर में इस जागृति का क्या कारण है ? बहाईयों का विश्वास है कि लगभग एक शताब्दी पहले ईरान में जन्म धारण कर के उन्नीसवीं सदी के अन्त में पवित्र धाम को सिधारने वाले महात्मा (पैगम्बर) बहाउल्लाह के द्वारा जिन पवित्र विचारों के एक महान् प्रवाह का प्रचार हुआ था वही इस जागृति के कारण हैं।

महात्मा बहाउल्लाह ने उपदेश दिया है कि जिस प्रकार सूर्य भौतिक सृष्टि पर प्रकाश डालता है, इसी प्रकार पैगंबर या अवतार आध्यात्मिक संसार को प्रकाशित करते हैं। जैसे भौतिक सूर्य पृथ्वी पर प्रकाशित होता है, और भौतिक अङ्गों की वृद्धि और विकास का कारण होता है, ठीक उसी प्रकार ईश्वरीय आत्मा के आविर्भाव से सत्य के सूर्य का सारे जगत् के हृदयों और आत्माओं पर प्रकाश पड़ता है और उससे मनुष्य मात्र को विचार, चरित्र

और सदाचार की उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है। जैसे प्राकृतिक सूर्य की रश्मियां संसार के निबिड़ अंधकारपूर्ण और प्रगाढ़ छाया वाले कोनों में भी घुसकर प्रकाश डालतीं और उन प्राणियों को भी जिन्हें सूर्यदेव का कभी दर्शन नहीं होता, जीवन और गर्मी पहुँचाती हैं, ठीक उसी प्रकार ईश्वर के अवतार दिव्य आत्मा से उत्पन्न पवित्र विचारों का महान् प्रवाह मनुष्य मात्र के जीवन पर प्रभाव डालता और उन स्थानों में भी जहां कोई उस महात्मा का नाम तक नहीं जानता, लोगों के प्यासे हृदयों को तृप्त कर देता है। ईश्वरीय आत्मा का आविर्भाव वसन्त-ऋतु के आगमन के समान है। यह एक पुनरुत्थान का वह दिवस है जब आध्यात्मिकता की दृष्टि से मृत मनुष्य नया जीवन पाते हैं, जब ईश्वरीय धर्म का स्वरूप नया होकर फिर से स्थापित होता है, और जब नये भूलोक और देवलोक की सृष्टि होती है।

परन्तु प्राकृतिक संसार में वसन्तऋतु बुद्धि और नया जीवन ही नहीं देती बल्कि पुरानी तथा सारहीन वस्तुओं के विनाश और निस्सारण का भी कारण बनती है, क्योंकि वही सूर्य जो फूलों को खिलाता और वृक्षों में नई कोंपलें उत्पन्न करता है, सारहीन अथवा निर्जीव वस्तुओं के मुरझाने और नष्ट करने का भी कारण बनता है, यह सर्दियों के जमे हुए पानी और बरफ़ को पिघलाता है, प्रवाह और आंधी को खुला छोड़ देता है जिससे पृथ्वी का गंद बह जाने और साफ़ हो जाने से पवित्र हो जाती है। यही हाल आध्यात्मिक संसार का भी है। आध्यात्मिक सूर्य का प्रकाश भी इसी प्रकार हलचल और परिवर्तन का कारण होता है। इस प्रकार पुनरुत्थान का दिन निर्णय का दिन होता है। इस में बुराइयां, गले सड़े विचार और रीति-

रिवाज सब अस्वीकृत और विनष्ट हो जाते हैं, इसमें पक्षपात और अन्धविश्वास की बर्फ जो सर्दियों के मौसिम में गाढ़ी जमी होती, पिघलकर कुछ की कुछ हो जाती है, इसमें मानसिक शक्तियां जो देर से जमी रह कर इकट्ठी पड़ी थीं खुल कर बह निकलतीं और संसार को फिर से पहले की तरह बना देती हैं।

बहाउल्लाह का कार्य

महात्मा बहाउल्लाह ने बार-बार और स्पष्ट शब्दों में कहा है कि वह संसार भर के मनुष्यों के शिक्षक और अध्यापक हैं, जिसकी लोगों को बड़ी देरी से आशा लगी थी। वह ईश्वरीय दया के अद्भुत प्रवाह समान हैं जो पहले की विचारधाराओं से बढ़कर चलेगा और जिसमें सब धर्मों के प्रचार की छोटी बड़ी नदियां इस प्रकार लीन हो जाएंगी जैसे सब प्रकार के नदी नाले समुद्र में समा जाते हैं।

उन्होंने एक ऐसी बुनियाद रखी है जिससे सारी दुनिया में एकता कायम होगी और पृथ्वी भर में शांति तथा मनुष्य मात्र में सदिच्छा के भाव स्थिर होंगे, जिनके विषय में पैगम्बर उपदेश देते और कवि कविता करते आये हैं।

सत्य की खोज, मनुष्य मात्र की एकता, सब धर्मों, सब जातियों और राष्ट्रों तथा पूर्व पश्चिम में मेल, विज्ञान और धर्म का संमिश्रण, पक्षपात और अन्धविश्वास का निराकरण, स्त्री और पुरुषों में समता, न्याय और सत्य की स्थापना, अन्तर्राष्ट्रीय न्याय भवन की आयोजना, भाषाओं का एकीकरण, ज्ञान का निश्चित प्रसार, इत्यादि तथा और भी इसी प्रकार की शिक्षाएं और उपदेश महात्मा बहाउल्लाह के कलम के द्वार

आज से पचास साल पहले प्रकाशित हो चुकी हैं । ये असंख्य ग्रंथों और पत्रों के रूप में हैं, जिनमें से कई दुनियां के बादशाहों और शासकों को संबोधित किए गए थे।

उनके उपदेश (संदेश) विचार और प्रसार की दृष्टि से अनुपम और समय के लक्षणों और आवश्यकताओं के साथ अद्भुत मेल खाते हैं। आजकल की सी जटिल और बड़ी-बड़ी समस्याओं का सामना मानव जाति को पहले कभी नहीं करना पड़ा, और नाही कभी इनके सुलझाने के लिए असंख्य और परस्पर विरोधी उपायों की ही उद्भावना हुई होगी, संसार भर के एक महान शिक्षक की इतनी ज़रूरी और इतनी व्यापक आवश्यकता भी कभी प्रतीत न हुई होगी, और कदाचित ऐसे शिक्षक की इतनी श्रद्धापूर्ण और व्यापक आशा भी पहले कभी न लगी होगी।

भविष्यवाणियों का पूरा होना—

अब्दुलबहा लिखते हैं:—

"बीस शताब्दी पूर्व जब ईसा मसीह प्रकट हुए, तब यहूदी लोग यद्यपि बड़ी उत्कण्ठा से उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, प्रति दिन प्रार्थना करते और आंखों में आंसू भर कर कहा करते थे 'हे ईश्वर शीघ्र अवतार धारण करो' तो भी जब सत्य का सूर्य उदित हुआ तो वह उसको मानने से इन्कार करने लगे और बड़े वैर भाव से उसके विरोधी बन बैठे, और इसी कारण उस ईश्वरीय महती सत्ता को सूली पर लटकाया और उसको "बीलज़बब" अर्थात् पापी नाम से पुकारा, जैसा कि अञ्जील में लिखा है। इसका कारण वह यों बताते थे। "तोराह" के पुस्तक में स्पष्ट लिखा है कि ईसा के

अवतीर्ण होने के साथ उसकी सत्यता सिद्ध करने के लिये कई लक्षण प्रकट होंगे। जब तक यह लक्षण दृष्टिगत न हों, जो कोई दावा करे कि मैं मसीह हूं वह दाम्भिक (धोखेबाज़) है। इन लक्षणों में एक यह है कि मसीह किसी अज्ञात स्थान से प्रकट होगा। सो हम सब जानते हैं कि इस आदमी का घर नज़ारथ (Nazareth) में है। क्या नज़ारथ (Nazareth)से कोई अच्छी वस्तु प्रकट हो सकती है। दूसरा लक्षण यह लिखा है कि वह लोहे को छड़ी से शासन करेगा अर्थात् वह तलवार से काम लेगा। परन्तु इस मसीह के पास काठ की छड़ी भी नहीं है। एक और शर्त और लक्षण यह लिखा है कि वह डेविड (दाऊद) के राज सिंहासन पर अवश्य आरूढ़ होगा और सारे भू-मण्डल पर डेविड (दाऊद) का साम्राज्य स्थापित करेगा। सो सिंहासन पर आरूढ़ होना तो कहीं रहा, इसके पास तो बैठने के लिये चटाई भी नहीं। एक और शर्त है तोराह के सब कानूनों या नियमों का चलाना। सो यह आदमी उल्टा नियमों का उल्लङ्घन कर चुका है और विश्राम या आराधना के दिन रविवार को नष्ट कर चुका है। हालां कि तोराह के धर्मपुस्तक (Text) में साफ लिखा है कि ऐसा आदमी जो पैगंबर होने का दावा करे और चमत्कार दिखाए और विश्राम या आराधना के दिन का भंग करे अवश्य मार डाला जाय। एक और लक्षण है, वह यह कि उस के शासन में न्याय का इतना अधिक प्रचार होगा कि न केवल मनुष्य ही बल्कि पशुओं तक भी सत्य और शुभ कर्मों का व्यवहार करने लग जायेंगे। सांप और चूहा एक बिल में रहेंगे, गीध और कबूतर एक घोंसले में निवास करेंगे, शेर और बकरी इकट्ठे रहेंगे, भेड़िया और भेड़ का बच्चा एक घाट पानी पीयेंगे। परन्तु इसके शासन में अन्याय और अत्याचारों का संकट इतना बढ़ गया है कि लोगों ने इसको सूली पर चढ़ा दिया।

एक और लक्षण यह लिखा है कि मसीह के जीवन समय में यहूदी लोग भूमण्डल में सब जातियों से अधिक समृद्धि शाली और सब पर विजय पाने वाले होंगे लेकिन यह अब रोमन साम्राज्य के अधीन अत्यन्त कष्ट और दासता में अपने दिन काट रहे हैं। फिर यह आदमी मसीह कैसे हो सकता है जिसके आगमन की तोराह में भविष्यवाणी हो चुकी है।" "इस आधार पर तो उन्होंने उस सत्य के सूर्य को, जो वास्तव में वही ईश्वरीय आत्मा था जिस ने तोराह के प्रमाण पर अवतार धारण करना था, स्वीकार करने से इनकार कर दिया। वास्तव में इन लोगों ने उन लक्षणों के सच्चे अर्थ को न जान कर ईश्वरीय आदेश को सूली पर लटका दिया। बहाई लोगों की धारणा है कि उपर्युक्त लक्षण मसीह के अवतार धारण करने पर प्रकट हुए थे जद्यपि वह उस रूप में प्रकट नहीं हुए थे जिस रूप में उनका प्रकट होना यहूदियों ने समझा था क्योंकि तोराह में उनका वर्णन आलङ्कारिक है। उदाहरण के लिए साम्राज्य प्राप्त करने का लक्षण ले लो। बहाई कहते हैं कि क्राइस्ट का साम्राज्य दिव्य, ईश्वरीय और स्थायी था। नैपोलियन के साम्राज्य के समान क्षणभंगुर न था। क्योंकि लगभग दो हज़ार सालों से मसीह का साम्राज्य स्थापित है और अब तक चला आ रहा है। जब तक यह संसार है तब तक वह पवित्र आत्मा इस सिंहासन को सुशोभित करता रहेगा।"

"इसी प्रकार बाकी लक्षण भी सब घट चुके थे, परन्तु यहूदियों की समझ में वह न आये। यद्यपि क्राइस्ट को दिव्य शक्ति के साथ अवतार धारण किये लगभग दो हज़ार साल बीत चुके हैं तो भी यहूदी लोग अब तक मसीह के अवतार लेने की प्रतीक्षा करते आ रहे हैं; और अब तक भी अपने आप को सच्चे और मसीह को झूठा समझ रहे हैं।"
(इस अध्याय के लिए अब्दुल-बहा का लेख)

अगर यहूदियों ने क्राइस्ट से पूछा होता तो वह स्वयं अपने सम्बन्ध की भविष्य वाणियों का सच्चा अर्थ बता देते। आओ हम इस उदाहरण से लाभ उठाएं। इस बात का निश्चय कर लेने के पूर्व कि आगामी शिक्षक का अवतार होने के सम्बन्ध की भविष्य वाणियां अभी पूर्ण नहीं हुई, आओ हम उन बातों पर ध्यान दें जो बहाउल्लाह ने इस सम्बन्ध में स्वयं लिखी हैं। क्योंकि बहुत सी भविष्यवाणियां अवश्य गूढ़ोक्तियाँ होती हैं। सच्चा शिक्षक ही केवल उनके ढकने खोल सकता और सच्चे अर्थों को जो शब्दों की डिबियों में बन्द होते हैं, खोल कर बता सकता है।

महात्मा बहाउल्लाह ने पुरानी भविष्य वाणियों की व्याख्या करते हुए बहुत कुछ लिखा है परन्तु वह अपने अवतार होने को प्रमाणित करने के लिये वह उन्हीं बातों पर निर्भर नहीं वह उसके लिए उन्हीं बातों को प्रमाण रूप में पेश नहीं करते। सूर्य अपने उदय के सम्बन्ध में बोधशक्ति रखने वाले सारे संसार के लिये स्वयं प्रमाण है। जब उसका उदय होता है, हमें उसकी धूप या प्रकाश का निश्चय करने के लिये प्राचीन विश्वासों से सहायता लेने की कोई आवश्यकता नहीं होती। यही बात ईश्वर के अवतार धारण के सम्बन्ध में है। पहले की सभी भविष्य वाणियां चाहे विस्मृति के गहरे गढ़े में लुप्त होजाएं तो भी उन आदमियों के लिये जिनकी आध्यात्मिक आँखें खुली हों, वह अवतार या पैगम्बर अपनी सत्ता का स्वयं एक भारी और पर्याप्त प्रमाण होता है।

पैगम्बर होने के प्रमाण

महात्मा बहाउल्लाह ने यह बात किसी को नहीं कही कि लोग उनके उपदेशों अथवा संकेतों को अंधाधुंध मान लें। बल्कि उन्होंने तो अपने उपदेशों में इस बात पर जोर दिया है कि लोग किसी के अधिकार या महत्व को बिना समझे अंधे होकर उसे प्रमाण न मान लें। उन्होंने तो सब से अनुरोध किया है कि लोग अपनी आंखें और कान खोलें, स्वतन्त्र और निर्भय होकर अपनी निर्णायक बुद्धि का उपयोग करें, ताकि उन्हें सत्य का निश्चय हो। उन्होंने अनुसन्धान पर पूरा जोर दिया है और कभी अपने आप को छुपाया नहीं। अपने जगतगुरु होने के प्रमाण में उन्होंने उपदेश और अपने कामों को लोगों के सामने रखा है जिनका प्रभाव लोगों के आचार और जीवन को पलटने का सामर्थ्य रखता है। परखने की कसौटी उन्होंने वही बताई है जो उनसे पहले के पैगम्बर बता गये हैं। मूसा ने कहा है:—

"अगर कोई नबी ईश्वर के नाम पर कुछ कहे, और उसकी उक्ति यथार्थ सिद्ध न हो, तो समझ लो कि यह बात ईश्वर की कही नहीं बल्कि नबी ने अपने दिल से बना कर कह दी है। ऐसी बात से तुम मत डरो।—(Deut xviii 22)

क्राइस्ट ने भी अपने सम्बन्ध में यही परख स्पष्ट रूप से बताई है। अपने दावे के प्रमाण में उन्होंने इसी बात पर जोर दिया है। आपने कहा है:—

"झूठे नबियों से खबरदार रहो, जो भेड़ की खाल ओढ़ कर आते और वास्तव में हिंसक भेड़िये होते हैं, तुम उनके कर्मों से उन्हें पहचानो। क्या कोई आदमी कांटों से अंगूर या झाड़ियों से अंजीर

पा सकता है ? इसी प्रकार प्रत्येक अच्छे वृक्ष को अच्छे फल लगते हैं और बुरे को बुरे। इस लिये उनके फलों से ही तुम उन्हें पहचानों।"
(Matt vii 15—20.)

अगले अध्यायों में हम इस बात को सिद्ध करने का यत्न करेंगे कि क्या इस कसौटी के आधार पर महात्मा बहाउल्लाह का जगत गुरु होने का दावा ठीक उतरता है या नहीं, जो बातें उन्होंने कही हैं वह सची सिद्ध हो चुकी हैं या नहीं और उनके फल अच्छे हुए हैं या बुरे; प्रकारान्तर से यों कहें उनकी भविष्य-वाणियां और आदेश यथार्थ सिद्ध हुए हैं या नहीं, और क्या उनके जीवन कार्यों से शिक्षा और मानव समाज की उन्नति तथा उसके चरित्रों का सुधार हुआ है या इसका उलट (विपरीत)।

अनुसन्धान की कठिनाइयां—

इसमें सन्देह नहीं कि जो जिज्ञासु इस बात की सच्चाई खोजना चाहता है, उसके मार्ग में अनेक कठिनाइयां आती हैं। आध्यात्मिक तथा चरित्र सम्बन्धी बड़े सुधारों के समान बहाई प्रचार को भी अत्यन्त बुरे रूप में लोगों के सामने रखा जा रहा है। बहाउल्लाह और उनके अनुयायियों की भयानक यातनाओं और कष्टों के विषय में मित्र और शत्रु दोनों सर्वथा सहमत हैं। धर्म के महत्व और उसके प्रवर्तक के चरित्र के विषय में उसमें विश्वास रखने वालों और उसके विरोधियों की उक्तियां अत्यन्त भिन्न हैं। यह ठीक वैसा ही है, जैसा ईसा के समय में हुआ। ईसा को सूली पर लटकाने और उसके अनुयायियों के अनेक कष्ट भोगने तथा आत्मबलिदान करने के बारे में यहूदी और क्रिश्चियन (ईसाई) दोनों इतिहासकार सहमत हैं। भेद केवल

इतना है कि ईसाई तो कहते हैं कि ईसा ने मूसा आदि अपने पहले के अवतारों की शिक्षा को पूरा किया और चमकाया, इसके विरुद्ध यहूदियों का कथन है कि उसने अवतारों के नियमों और आदेशों का भंग किया, इसलिये उसे प्राण-दण्ड मिलना चाहिये था।

विज्ञान की तरह धर्म में भी सचाई का रहस्य उस श्रद्धालु और विनम्र जिज्ञासु पर प्रकट होता है जो हृदय के प्रत्येक पक्ष-पात और अंध विश्वास को त्याग देने के लिए सदा उद्यत रहता है, अथवा यों कहें कि जो "बहुमूल्य सच्चा मोती" खरीदने के लिये अपना सर्वस्व बेच डालने के लिये तैयार रहता है।

बहाई धर्म के महत्व को पूरे तौर पर समझने के लिये हमें शुद्ध हृदय से, स्वार्थ रहित सत्य की भक्ति से, गवेषणा के मार्ग में तत्पर होकर और ईश्वरीय प्रेरणा पर भरोसा रखकर अध्ययन आरम्भ करना चाहिए। इसके प्रवर्तकों के लेखों में हमें एक बड़ी चाबी मिलेगी जिसके द्वारा इस महती जागृति के सब रहस्य खुलेंगे और इसके मूल्य को जांचने के लिए असली कसौटी हाथ आयेगी। दुर्भाग्यवश इस सम्प्रदाय के शिक्षा-ग्रन्थ प्रायः सभी फारसी या अरबी भाषा में पाये जाते हैं, इस लिए इन भाषाओं को न जानने वाले छात्र को इस मत का अध्ययन करने के मार्ग में और भी अधिक कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। इसके लेखों का बहुत थोड़ा भाग अभी तक अंग्रेजी में अनुवादित हो पाया है, और बहुत से अनुवाद ऐसे निकले हैं जो रचना और विशुद्धता की दृष्टि से अधूरे हैं। परन्तु इतिहास के लेखों और अनुवादों के अपूर्ण तथा अपर्याप्त होने पर भी बड़ी और आवश्यक सचाइयां जो इस मत की बुनियादों को पक्का और

ठोस बनाती हैं, अनिश्चय की धुंध में से पहाड़ों की तरह सामने नज़र आ रही हैं।

पुस्तक का उद्देश्य

अगले अध्यायों में जहां तक हो सकेगा, बिना पक्षपात के उचित रीति से ऐसा यत्न किया जायगा जिससे बहाई धर्म के इतिहास की मुख्य बातों विशेष कर उसकी शिक्षाओं पर अधिक प्रकाश पड़े ताकि पढ़ने वाले उनके महत्व के विषय में बुद्धि-पूर्वक निश्चय कर सकें और कदाचित् अपनी जिज्ञासा को पूरा करने के लिए तत्व की खोज करने में अधिक ध्यान से प्रवृत्त हों।

सत्य की गवेषणा केवल ही, चाहे वह कितनी भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, जीवन का उद्देश्य नहीं है। सचाई कोई निर्जीव वस्तु नहीं है जो खोज कर आ जाय व घर में रख दी जाय या लेबल (चिटें) लगा कर वर्गीकरण करके और सूचीपत्र में लिख कर प्रदर्शित की जाय और फिर वहां पड़ी सूखती और सड़ती रहे। यह तो वह सारभूत वस्तु है जो मनुष्यों के हृदय में जड़ पकड़ कर जम कर उनके जीवन में ही फल ला सकती है जिन्हें आदमी खोज के बाद पूरे पारितोषिक के रूप में पा सकता है।

इसलिए जगतगुरुओं की शिक्षा का असली उद्देश्य यह होता है कि लोग उस पर विश्वास लायें और अमल करें, और इस शुभ समाचार को आगे फैलाएं ताकि वह शुभ दिन शीघ्र आए जिसमें पृथ्वी पर भी ईश्वर की इच्छा वैसे ही पूरी हो जैसे दिव्य लोक में होती है।

अध्याय दूसरा

बाब जो कि आनेवाले दिव्य आत्मा का अग्रदूत था

"यह सच है, कि अत्याचारी ने समस्त भुवनों के प्यारे की हत्या कर दी इसलिए कि लोगों में जल रहा ईश्वरीय दीप बुझ जाय और लोग उन दिनों स्वर्गीय जीवन के दिव्य प्रवाह तक न पहुँच सकें।"

नवीन अवतार का जन्मस्थान—

बहाई अवतार की जन्मभूमि ईरान संसार के इतिहास में अद्वितीय स्थान रखती है। अपने प्राचीन महत्त्व के दिनों में यह भूमि सब देशों या राष्ट्रों में महारानी के समान थी जिस की सभ्यता, शक्ति और शोभा में कोई भी समता न कर सकता था। इसने संसार को बड़े बड़े राजा, राजनीतिज्ञ, पैगंबर, कवि, तत्त्व ज्ञानी और कलाकुशल दिये। जरथोस्त, साइरस (Cyus) और डेरियस (Darius) हाफिज़ और फिरदौसी, सादी और उमर खयाम इसके प्रख्यात पुत्रों की बहुत बड़ी संख्या में से कुछ हैं। इसके कारीगरों की चातुरी अनोखी, इसके कालीन अद्भुत, इसके लोहे के हथियार अनुपम और इसके बरतन संसार भर में प्रसिद्ध थे। मध्य एशिया और उसके आस पास के सभी प्रदेशों में इसके पूर्व वैभव के चिन्ह पाये जाते हैं।

तो भी अठारहवीं और उन्नीसवीं सदियों में इस की दशा अत्यन्त शोचनीय पतन को प्राप्त हो गई थी। इसका प्राचीन वैभव सर्वथा नष्ट हो गया था। इसका शासन प्रबन्ध दूषित हो गया था और आर्थिक अवस्था बहुत बिगड़ गई थी। इस के शासक कुछ दुर्बल और कुछ क्रूर और अत्याचारी थे। इसके पुरोहित हठी और असहनशील थे। जनता अशिक्षित और बहमी हो गई थी। अधिकांश लोग मुसलमानों के शिया† फिरके से सम्बन्ध रखते थे, परन्तु जरथोस्ती, ईसाई, यहूदी आदि विभिन्न और परस्पर विरोधी सम्प्रदाय वालों की संख्या भी पर्याप्त थी।

यह सब अपने आपको उन महान् शिक्षकों के अनुयायी मानते थे जो लोगों को एक ईश्वर को मानने और आपस में प्रीति पूर्वक और एक होकर रहने का उपदेश देते थे। परन्तु उसके विपरीत वह एक दूसरे से अलग रहते और एक दूसरे से घृणा करते थे। प्रत्येक मत के लोग दूसरे मत वालों को तुच्छ समझते और उनसे कुत्तों या काफिरों का सा व्यवहार करते थे। एक दूसरे को धिक्कारना और बुरा भला कहना अत्यन्त भयानक अवस्था तक पहुँच चुका था। वर्षा के दिनों में जरथोस्ती और यहूदियों का सड़क पर चलना खतरे से खाली न था, क्यों कि उसके गीले कपड़े यदि किसी मुसलमान से छू जाते तो

† मुसलमानों के दो बड़े बड़े संप्रदाय मोहम्मद साहिबकी मृत्यु के बाद हो गये थे, एक सुन्नी और दूसरा शियाह। शियाह कहते हैं कि मोहम्मद साहिब के दामाद अली प्रथम खलीफ़ा होने का उचित अधिकार रखते थे, और उन्हीं की सन्तान आगे भी मुसलमानों का खलीफ़ा होने का उचित अधिकार रखती है।

वह मुसलमान अपवित्र हो जाता और वह जरथोस्ती या यहूदी इस अपराध में अपना जीवन तक खो बैठता था। यदि कोई मुसलमान किसी यहूदी, जरथोस्ती या ईसाई से कुछ रुपये लेता तो उन रुपयों को जेब में डालने से पहले धो लिया करता था। अगर कोई यहूदी अपने लड़के को किसी ग़रीब मुसलमान को पानी का गिलास देते देख लेता तो वह झट लड़के के हाथ से गिलास छीन कर फ़ेंक देता, क्योंकि उसके विचार से ऐसे काफ़िर पर दया करने की अपेक्षा उसको धिक्कार देना अधिक संगत था। स्वयं मुसलमान भी अनेक भागों में बँटे हुए थे जो आपस में लड़ते झगड़ते और मार पीट करते रहते थे। जरथोस्ती यद्यपि इन झगड़ों से दूर रहते तो भी वह अलग समाजों में बँटे रहते थे और दूसरे अपने पंथ के विरोधी मतों के देशवासियों के साथ हिल मिल कर रहना पसंद नहीं करते थे।

जातीय तथा धार्मिक अवस्था भी बहुत बुरी हो चुकी थी। शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था। पाश्चात्य विज्ञान और कला, धर्म के विरुद्ध समझे जाते थे। न्याय का नाम तक न था। प्रति दिन लूट मार होती थी। सड़कें खराब और यात्रा के योग्य न थीं। स्वास्थ्य रक्षा और विशुद्धता के प्रबन्ध में बहुत दोष आगये थे।

इन सब बातों के होते हुए भी आध्यात्मिक जीवन का प्रकाश ईरान में नष्ट न हुआ था। सांसारिक तथा भ्रमात्मक प्रवृत्तियों के बाहुल्य में भी कहीं कहीं पवित्र आत्माओं की उपलब्धि होती थी और अनेक हृदयों में ईश्वर-विषयक चाह विद्यमान थी, जैसे मसीह के अवतार से पूर्व अन्ना और शमयून के हृदयों में थी। बहुत से लोग बड़ी उत्सुकता से

ईश्वरीय दूत के आगमन की प्रतीक्षा में थे, और उन्हें इस बात का दृढ़ विश्वास था कि ईश्वरावतार होने वाला है। ईरान की ऐसी अवस्था के दिनों में बाब ने, जो नये युग की सूचना देने आये थे, अपने सन्देश से सारे देश को हिला दिया।

आरम्भिक जीवन—

मिर्ज़ा अली मुहम्मद का जन्म, जो बाद में बाब की उपाधि से विभूषित हुए थे, २० वी अक्तूबर सन् १८१६ वी को ईरान के शहर शिराज़ में हुआ था। आप हज़रत मोहम्मद साहिब के वंश में से थे। इनके पिता जो एक प्रसिद्ध व्यापारी थे, इनके जन्म के बाद शीघ्र ही स्वर्ग सिधार गये। तब इनके पालन पोषण का भार इनके मामा ने, जो शिराज में व्यापारी थे, ग्रहण किया और उन्हीं की देख भाल में यह बड़े हुए। बचपन में ही इन्होंने वह सब शिक्षा प्राप्त कर ली जो उन दिनों बच्चों को †

---

† इस विषय पर एक इतिहासकार लिखता है कि पूर्व के बहुत से लोगों, विशेष कर बाबियों का, जो अब बहाई कहलाते हैं, यह विश्वास था कि बाब सर्वथा अपठित थे, परन्तु मुल्लाह लोग इन्हें लोगों की नज़रों से गिराने के लिये कहा करते थे कि इनमें जो विद्या और बुद्धि दीख पड़ती है इसी शिक्षा का परिणाम है जो उन्होंने बचपन में पाई थी। इस विषय के सूक्ष्म निरीक्षण के बाद हमें इस बात का पूरा प्रमाण मिल गया हैं कि बचपन में यह शेख महम्मद के घर (जो आबिद के नाम से भी प्रसिद्ध थे) जाया करते थे। वहां इन्होंने फ़ारसी भाषा का पढ़ना लिखना सीखा। पुस्तक बयान में इसी बात का संकेत करते हुए म० बाब ने कहा है "ऐ महम्मद! ऐ मेरे शिक्षक, ..."

दी जाती थी। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में वह व्यापार में प्रविष्ट हुए। पहले अपने पालने वाले मामा के साथ और फिर दूसरे मामा के साथ, जो परशियन सागर के किनारे पर बुशायर (Bushire) में रहते थे, व्यापार करने लगे।

यौवन समय में यह अद्भुत सौन्दर्य, हृदयहारी चरित्र, असाधारण ईश्वरभक्ति तथा उन्नत सदाचार से सुशोभित थे। आप मुससमानी धर्म के आदेश, व्रत तथा प्रार्थना नित्य किया करते थे, आप नबियो के उपदेशों के शब्दार्थ तक ही न रहते थे, बल्कि उनका तत्त्व समझने का यत्न किया करते थे। लगभग बाईस वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हुआ। आपका एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो आपके लोकसेवा का भार ग्रहण करने के पहले साल ही बचपन में मर गया।

घोषणा—

अभी वह पच्चीस ही वर्ष के थे कि उन्होंने ईश्वरीय आज्ञा की घोषणा की कि परमेश्वरने उन्हें बाब स्थान के लिए चुना है।

"सब से अद्भुत बात यह है कि यह शेख जो इनका शिक्षक था अपने शिष्य का भक्ति पूर्ण अनुयायी बन गया, और इन का चचा; जो इनके लिए पिता के तुल्य था और जिनका नाम हाजी सैयद अलि था, इनपर श्रद्धालु हो गया कि अपना जीवन इन पर न्योछावर कर दिया।

"इन रहस्यों को समझना सत्यान्वेषियों का काम है, परन्तु हम इतना जानते हैं कि म० बाब ने केवल आरम्भिक शिक्षा ही प्राप्त की थी और जो ज्ञान तथा बड़प्पन के अद्भुत चिन्ह इनमें प्रकट हुए वह केवल आन्तरिक और ईश्वरीय थे"।

"एक यात्री का वृत्तान्त" नामी पुस्तक में लिखा है कि:—

"बाब" नाम से आपका हेतु यह था कि वह किसी महापुरुष की दया का पूर्वरूप थे जो अभी प्रकाश या प्रभा के पर्दे में छुपा था और जो असीम और असंख्य सिद्धियों का निधान था जिसकी इच्छानुसार उसकी गति थी और जिसके प्रेमरस में वह पगा था।" (Episode of the Bab p. 3.)

उन दिनों यह बात बहुत फैली हुई थी कि ईश्वरीय दूत आने वाला है और शेखीयों के फिरके में तो इस बात की चर्चा बहुत ही थी। इसी फिरके के एक प्रसिद्ध ईश्वरभक्त मुल्ला हुसेन बसरोई के सामने बाब ने सबसे पहले अपने कर्तव्य की घोषणा की थी इस घोषणा का ठीक समय "स्वयं बाब की लिखी 'बयान' नामक पुस्तक में १२६० हिज़री† (२२ वी मे सन् १८४४ ईसवी) में जमादिउल अव्वल के महीने की पांचवीं तिथि और सूर्यास्त से दो घंटे और १५ मिनट बाद" दिया गया है। कुछ दिन तक बड़ी उत्सुकता गवेषणा और अध्ययन के बाद उसको निश्चय हो गया कि वह ईश्वर दूत, जिसके लिये शेखिया लोग उत्कण्ठित हो रहे हैं, निःसंदेह प्रकट हो गया है। इस निश्चय पर उन्हें इतना उल्लास हुआ कि शीघ्र ही उन्होंने कुछ मित्रों को भी अपने इस आनन्दानुभव में साथी बना लिया। थोड़ी ही देर के बाद शेखिया फिरके के अधिक संख्यक लोगों ने बाब का ईश्वरीय दूत होना स्वीकार कर लिया, और वह बाबी कहलाने लगे। शीघ्र इस नवयुवक नबी की कीर्ति वन में अग्नि के समान सारे देश में फैल गई।

† सन् हिजरी छः सौ बाईस ई० से आरम्भ होता है जब मोहम्मद साहब मक्का से मदीना चले गये।

बाबी संप्रदाय का प्रसार

बाब के पहले १८ शिष्य (जो बाब के साथ मिलकर १६ बनते थे) "जीवित अक्षर" के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन शिष्यों को उसने अपने आगमन की सूचना देने के लिए ईरान और तुर्किस्तान में भेजा। इसी समय उन्होंने स्वयं मक्का की यात्रा के लिए प्रस्थान किया जहां कि वह दिसम्बर सन् १८४४ में पहुँचे। वहां उन्होंने संसार भर के मुसलमानों के सामने जो 'हज' करने आए हुए थे, अपने कर्तव्य की घोषणा स्पष्ट रीति से कर दी। बुशायर में वापस लौट आने पर लोगों में उनके बाब होने की घोषणा पर बड़ी उत्तेजना फैल गई। उनके ओजस्वी भाषणों, प्रतिभासम्पन्न लेखों, असाधारण बुद्धि और विज्ञान तथा सुधारकों के से धैर्य और उत्साह ने जितना अधिक से अधिक आनन्द दिया, उसी मात्रा में प्राचीन विचारों के कट्टर मुसलमानों में उत्तेजना और विद्वेष की अग्नि को भी भड़का दिया। शिया पंथ के पढ़े लिखे लोग उनका खुले तौर पर विरोध करने लगे और उन्होंने फारस के अन्ध-विश्वासी और अत्याचारी शासक हुसेनखां को इस नवीन विचार-धारा (आन्दोलन) को दबाने के लिए उभारा। उस समय से बाब के लिए कैद, निर्वासन, अदालतों में अपमानपूर्ण दुर्व्यवहार आदि अनेक भयानक कष्टों और संकटों की परम्परा का आरम्भ हुआ, जिनके कारण उनके जीवन का सन् १८५० में बलिदान हुआ।

बाब का अधिकार या दावा (Claim)

बाब होने का दावा करने से जो शत्रुता की आग भड़की

थी, वह इस बात के कहने से कि वह मैंहदी भी, जिसके आगमन के विषय में मोहम्मद साहिब ने भविष्य वाणी की थी, मैं ही हूँ, दुगनी भड़क उठी। शियाओं के विश्वास के अनुसार इमाम मैंहदी बारहवें इमाम † थे जो एक हज़ार वर्ष पूर्व लोगों की दृष्टि से एकाएक ओझल हो गये थे। उनका विश्वास था कि वह अभी जीवित हैं और फिर अपने उसी देह में प्रकट होंगे। जिस प्रकार यहूदी लोग मसीह के सम्बन्ध की भविष्य वाणियों का भौतिक अर्थ ग्रहण करते थे, वैसे ही यह लोग भी मैंहदी के सम्बन्ध की भविष्य वाणियों का भी अर्थात् उसके साम्राज्य, उसके वैभव, उसके विजय आदि अवतार होने के चिन्हों का भौतिक अर्थ ही ग्रहण करते थे। वह आशा करते थे कि वह सांसारिक सार्वभौम ऐश्वर्य और अपरिमित सेना को साथ लिये अपने अवतार होने की घोषणा करेगा, वह मुर्दों को जीवित करेगा, इत्यादि। क्योंकि यह निशानियां उनके सामने नहीं आईं, इसलिये शियाओं ने उसी क्रोध और घृणा से बाब को अस्वीकार कर दिया जो मसीह के विषय में यहूदियों ने की थी। दूसरी

† शियाओं के विश्वास के अनुसार इमाम पैगम्बर का ईश्वर से नियत किया हुआ उत्तराधिकारी है जिसकी आज्ञा का पालन करना सभी भक्तों का प्रधान कर्त्तव्य है। बारह इमाम एक दूसरे के बाद हुए। सबसे प्रथम अली हुए जो मोहम्मद साहिब के चचेरे भाई और दामाद भी थे। बारहवें को शिया लोग इमाम महदी कहते हैं। इनका विश्वास है कि वह मरे नहीं बल्कि ३२६ हिजरी में एक भूगर्भ मार्ग से अदृश्य हो गये थे और समय आने पर फिर प्रकट होकर पाप का नाश करके न्याय के धन्यतम युग का आरम्भ करेंगे।

और, बाबी लोग इन भविष्य वाणियों का अर्थ और ही प्रकार से करते थे। वह इस अवतार के साम्राज्य को गैलीलियस के लिखे हुए "दुःखी मनुष्य" की तराह एक रहस्यमय साम्राज्य समझते थे। वह समझते थे कि उनका ऐश्वर्य सांसारिक नहीं आध्यात्मिक और उनका विजय भूमण्डल के लोगों के हृदयों पर है। उनको बाब के ईश्वरीय दूत होने में असंख्य प्रमाण उनके जीवन और शिक्षाओं में विचित्रता, उनका अनिवार्य विश्वास, उनकी अजेय दृढता और, उनकी अज्ञान तथा भ्रम के अन्धकार में पड़े हुए लोगों के जीवन में आत्मज्ञान देकर नवीनता उत्पन्न कर देने की शक्ति में उपलब्ध होते थे।

परन्तु बाब केवल मैहदी होने का दावा करके ही चुप नहीं होगये। उन्होंने 'नुक्तैइउला' अर्थात् आदि बिन्दु की पवित्र पदवी को भी अपने साथ लगा लिया जो पदवी कि स्वयं मोहम्मद साहिब को उनके अनुयायियों ने दी थी। इनके इमाम भी जिनसे वह अधिकार और संदेश पाते थे, इस पदवी से दूसरे दर्जे पर गिने जाते थे। इस पदवी को धारण करके बाब अपने आपको मोहम्मद साहिब के समान धर्म प्रवर्तकों की श्रेणी में गिना जाने का दावा करने लगे। इसी कारण शिया लोग उनको फरेबी या धोखेबाज कहा करते थे, जैसे कि उससे पूर्व मूसा और मसीह को लोग धोखेबाज कहकर पुकारते थे। उन्होंने सौर वर्ष का पुनरावर्तन किया और अपनी घोषणा के वर्ष से ही नये युग का आरम्भ निश्चित किया।

यातनाओं की वृद्धि

बाब की इन घोषणाओं के कारण तथा उनकी शिक्षाओं पर अमीर, ग़रीब; पढ़े, अनपढ़े सब प्रकार के लोगों के बड़े चाव से

धड़ाधड़ विश्वास करते जाने के सबब से इस प्रवाह को दबाने के लिये निश्चित और क्रूर उपाय व्यवहार में लाये जाने लगे। घर लूटे और नष्ट किये गये। स्त्रियां पकड़ कर भगा ली गईं। तेहरान, फ़ारस, माज़िंदरान और दूसरे स्थानों में बाबी लोग बड़ी-बड़ी संख्या में निर्दयता से मार डाले गये। बहुत लोग क़त्ल किये गये, फांसी पर लटकाये गये, तोपों से उड़ाये गये, जलाये गये, और टुकड़े-टुकड़े करके काटे गये। ऐसी क्रूरता और अत्याचारों के होते हुए भी यह प्रवाह दिन-दिन बढ़ता ही गया। ज्यों ज्यों यातनाओं की वृद्धि होती थी लोगों की श्रद्धा और विश्वास इस मत पर बढ़ता ही जाता था। क्योंकि मैहदी के अवतार होने के सम्बन्ध की बहुत भविष्य वाणियां अक्षरशः पूरी हो रही थीं। जाबिर नाम विद्वान की नक़ल की हुई कथा में, जिसे शिया लोग प्रमाण समझते हैं, यों लिखा है:—

'इसमें मूसा जैसी पूर्णता, मसीह सा चमत्कार और जाब (अयूब) जैसा धैर्य होगा। इसके महात्मा लोग इसके समय में ही अपमानित होंगे। उनके सिर भेंट में दिये जायेंगे। जैसे तुर्क और डेलम लोगों के सिर भेंट में दिये जाते हैं। वह काटे और जलाये जायेंगे। वह सदा भीत, अशांत और अप्रसन्न रहेंगे। पृथ्वी उनके लहू से भर जायगी। उनकी स्त्रियों में शोक छा जायेगा। यही लोग वास्तव में मेरे महात्मा हैं।' प्रोफ़ैसर ई. जी. ब्राउन से अनुवादित बाब का नया इतिहास पृष्ठ १३२।

बाब का आत्म बलिदान

६ वीं जुलाई सन् १८५० ईसवी को शुक्रवार के दिन बाब, जब कि अभी ३१ ही वर्ष के थे, स्वयं अपने विरोधियों के

अन्धे क्रोध का शिकार बने। एक श्रद्धालु शिष्य आक़ा मुहम्मद अली के साथ जिसने बड़ी उमंग से उन्हीं के साथ आत्म-बलिदान के लिये विनम्र प्रार्थना की थी, उन्हें तबरीज़ की पुरानी छावनी के चौक में फांसी के तख्ते पर पहुँचाया गया। दोपहर होने से लगभग दो घंटे पूर्व उन दोनों की बगलों में रस्सियां डाल कर इस तरीके से लटकाया गया कि मुहम्मदअली का सिर अपने प्यारे गुरु की छाती पर जा टिका। उसी समय अरमनी सेना के सिपाहियों को तय्यार होने और गोली चलाने की आज्ञा मिली। फ़ौरन बन्दूकें दनदनाईं। परन्तु जब धुंआ दूर हटा तो मालूम हुआ कि बाब और उनके शिष्य जीवित हैं। गोलियों से केवल वह रस्सियां कट गईं थीं जिन से वह लटके हुए थे, इसलिये वह दोनों बिना चोट खाये ही पृथ्वी पर गिर पड़े थे। वह उठ कर पास के कमरे में जाकर अपने मित्र से बातें कर रहे थे। दोपहर के लगभग वह फिर फांसी पर लटकाये गये। अरमनी सिपाही, जो अपनी गोलियों की बौछाड़ के परिणाम को एक विचित्र चमत्कार समझते थे, दूसरी बार गोली चलाना न चाहते थे, इसलिये दूसरी सेना के सिपाही वहां बुलाये गये। उन्होंने आज्ञा पाकर गोलियां चलाईं। इस बार गोलियों की बौछाड़ ने अपना प्रभाव दिखा दिया। दोनों के शरीर छिद कर छलनी हो गये और बुरी तरह कट गये परन्तु उनके मुख-मण्डल पर गोली के घाव का कोई चिन्ह न दीख पड़ा।

इस बुरे काम से वह सैनिक चौक दूसरा "कालबेरी" † बन

---

† वह पर्वत जिस पर महात्मा मसीह को फांसी पर चढ़ाया गया था; वह जगह जहां मृत मनुष्यों की खोपड़ीयां लटकाई जायें।

गया। बाब के शत्रु इस पापपूर्ण कार्य से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा कि बाबियों के मत का घृणित वृक्ष जड़ से काट डाला गया और अब इसका सर्वनाश करना सहज है। परन्तु उनकी यह प्रसन्नता थोड़ी देर तक ही रही। उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि सचाई का वृक्ष लोहे के कुल्हाड़े से काटा नहीं जा सकता। अच्छा होता, यदि वह जानते कि उनका यह अत्याचार इस संप्रदाय की वृद्धि का कारण होगा। बाब के इस बलिदान ने उनके अभीष्ट को पूरा कर दिया और उनके अनुयायिओं के हृदयों में नया उत्साह भर दिया। उन की आध्यात्मिक उत्तेजना की अग्नि इतनी चमक उठी कि अत्याचारों के झंझावात ने उसे उलटा और भी भड़का दिया। उस आग को बुझाने का जितना अधिक यत्न किया गया, उतना ही अधिक वह फैलती गई।

कारमल पहाड़ पर इनकी समाधि--

बाब और उनके भक्त साथी के आत्म बलिदान के अनन्तर उनकी मृत देहों को नगर के बाहर की दीवार के कोने में फेंक दिया गया। दूसरे दिन आधी रात के समय कुछ एक बाबी लोग उन्हें उठा लाये, सालों तक ईरान में ही गुप्त स्थानों में छुपा कर रखते रहे और अन्त में बड़े संकट और भय का सामना करते हुए साहस के साथ "पवित्रभूमि" में उन्हें ले आये। वहां कारमल पहाड़ की अधित्यका पर सुन्दर समाधि मन्दिर बनवाकर उसमें उन्हें स्थापित किया। यह स्थान 'एलिजा' की गुफा से बहुत दूर नहीं, और उस स्थान से भी, जहां म० बहाउल्लाह ने अपना अन्तिम समय बिताया और जहां अब उनकी समाधि विद्यमान है, कुछ

ही मील दूर है। संसार के सभी प्रदेशों से जो यात्री हज़ारों की संख्या में म० बहाउल्लाह के पवित्र समाधि मन्दिर का दर्शन करने आते हैं वह सब उनके अग्रगामी प्रिय भक्त बाब † के समाधि मन्दिर पर भी प्रार्थना किये बिना नहीं लौटते।

म० बाब के लेख—

इनके लेख असंख्य है। बिना अध्ययन के और बिना किसी प्रकार का विशेष परिश्रम किए जिस वेग से इन्होंने उत्तम टीकाएं, सारगर्भित व्याख्याएं, तथा उपयोगी प्रार्थनाएं लिखीं, उन्हीं से इनकी दिव्यता सिद्ध होती है।

इनके विविध लेखों का सार संक्षेप में नीचे लिखा जाता है :—

म० बाब के लेखों में कई लेख कुरान शरीफ की कुछ आयतों पर टीका और कुछ की व्याख्या थे, कई प्रार्थनाओं तथा टिप्पणियों के रूप में थे, कई ईश्वर की एकता के सिद्धान्तों की भिन्न भिन्न शाखाओं के विशद तथा विस्तृत व्याख्यानों के रूप में थे, कई आचार के सुधार पर, कई सांसारिक अवस्थाओं की विभिन्नता पर और कई ईश्वरीय आदेशों के महत्त्व पर थे। परन्तु उनके सब लेखों का तत्व और भावार्थ उसी सत्य वस्तु की प्रशंसा और वर्णन करना था जो शीघ्र ही प्रकट होने को थी, और जिसको प्रकट करना ही इस महापुरुष का प्रियतम अभीष्ट तथा लक्ष्य और उद्देश्य था। क्योंकि वह अपने आगमन को एक भावी शुभ समाचार की सूचन समझते थे, और

---

† बाब के समाधि मन्दिर की शोभा अब दुगुनी हो गई है क्योंकि अब्दुल-बहा का समाधि मन्दिर भी वहीं स्थापित हो गया है। (देखो अध्याय ४)

अपने आप को उस महत्तर और परिपूर्ण ईश्वरावतार के आगमन का एक साधनमात्र जानते थे। इसमें संदेह नहीं कि वह दिन रात एक क्षणभर के लिये भी उसे न भुलाते, और सदा अपने अनुयायियों को कहते कि वह उस महा पुरुष के आगमन की प्रतीक्षा मे रहें। उन्हों ने एक मौके पर लिखा है कि मैं उस महा पुस्तक का एक अक्षर और उस महासागर का एक बिन्दु हूं, और जब वह प्रकट होगा तो मेरा सच्चा स्वरूप, मेरे गुप्त रहस्य, मेरी पहेलियां, और मेरे इशारे सब स्पष्ट हो जायेंगे, और इस धर्म का बीज क्रम क्रम से बढ़ता हुआ आने वाली दुनिया तक पहुँचेगा और सृष्टि-कर्ता ईश्वर के धन्यतम स्वरूप से विभूषित होगा।

वह उस के ध्यान में इतने मग्न थे कि माकू के अभेद्य दुर्ग में अंधेरी रातों में उस की स्मृति प्रकाश के रूप में उनके साथ थी और चहरीक के कारावास के कष्टों में उसी की स्मृति इन की संगिनी थी। उसी के चिन्तन से इनको आध्यात्मिक जीवन प्राप्त हुआ और उसी के प्रेम के मद से इनको आनन्द लाभ होता था। (Episode of the Bab p. 54.)

जो ईश्वर का अवतार बन कर आयेगा—

बाब जॉन (योहन) बपत के समान समझे जाते हैं। परन्तु उनकी पदवी मात्र अग्रदूत या अग्रगामी की नहीं। बाब स्वयं एक भगवान के अवतार और एक नये धर्म ले आने वाले थे, यद्यपि उनका धर्म मात्र थोड़े वर्षों के लिये ही था, बहाई मानते हैं कि बाब और बहाउल्लाह उनके धर्म के सम प्रवतक थे। म० बहाउल्लाह के नीचे लिखे हुए वचन इस बात का प्रमाण हैं:

"मेरे इस अद्भुत और सबल अवतार और मेरे पहले के अवतार में मात्र

इतना कम अन्तर हो यह एक वह रहस्य है, जो कोई नहीं जानता और वह भेद जिससे कोई भी ज्ञात नहीं, इसका समय नियुक्त था और कोई भी मनुष्य इसका कारण नहीं जान सकता जब तक उसे मेरे गुप्त पुस्तक का ज्ञान न हो।"

बहाउल्लाह का वर्णन करते समय बाब बिलकुल नम्र हो जाते हैं, और कहते हैं कि "उनके युग में जिन्हें प्रभु प्रकट करेगा":—जो कोई उन की लिखी हुई एक तुक भी सुने और उसे पढ़े, तो बहेतर है उससे कि बयान (बाब का अपना प्रकट किया हुआ पुस्तक) को हजार बार पढ़े।

वह अनेक कष्ट और संकटों को अपने ऊपर लेने और झेलने के लिये बड़े आनन्द से तय्यार थे यदि ऐसा करने से उस महान् ईश्वरीय अवतार का मार्ग निष्कण्टक हो सके। वह कहा करते थे कि वही महान् आत्मा उनका एक मात्र उद्भव स्थान तथा उनके प्रेम का एक मात्र आधार है।

पुनरुत्थान, स्वर्ग और नरक—

पुनरुत्थान अर्थात् निर्णय का दिन, स्वर्ग और नरक की परिभाषाओं का स्पष्टीकरण म० बाब की शिक्षाओं का प्रधान अंग है। वह लिखते हैं, पुनरुत्थान का भाव सत्य के सूर्य का नवीन अवतार है। मुर्दों के उठ खड़े होने का असली मतलब यह है कि यह लोक जो अज्ञान, आलस्य और भ्रम की कब्रों में सोये पड़े हैं, उनमें आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न होने से वे नया जीवन प्राप्त करें,। "निर्णय का दिन" से मतलब है 'नये अवतार का दिन' जिसे स्वीकार या अस्वीकार करने से भेड़ें बकरियों से अलग-अलग हो जायें, क्योंकि भेड़ें अपने सच्चे स्वामी गड़रिये

के शब्द को पहचानती और उसके पीछे चलती हैं। ईश्वर के अवतार तत्त्व को समझना और उससे प्रेम करके आनन्द लाभ करना ही स्वर्ग है, जिसके कारण प्रत्येक मनुष्य पूर्ण होने की योग्यता प्राप्त करता है और मृत्यु के बाद ईश्वर के साम्राज्य में प्रविष्ट होकर अक्षय जीवन प्राप्त करता है। ईश्वर के ज्ञान से वञ्चित रहना और इसी कारण ईश्वरीय पूर्णता प्राप्त करने में असफल रहना ही नरक है। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा है कि इन अर्थों के सिवा इन शब्दों के दूसरे सच्चे अर्थ हैं ही नहीं। भौतिक देह के पुनरुत्थान या भौतिक स्वर्ग या नरक के संबन्ध में लोगों के जो दूसरे प्रकार के विचार प्रचलित हैं, वह केवल भ्रमात्मक हैं। उनकी शिक्षा है कि मृत्यु के बाद भी जिन्दगी है, और मृत्यु पश्चात जिन्दगी में पूर्णता की ओर की प्रगती असीम हो जाती है।

जातीयता और नीति विषयक शिक्षाएं—

अपने लेखों में म० बाब ने अपने अनुयायिओं से कहा है कि भ्रातृभाव और सदाचार ही उनकी सच्ची पहचान होनी चाहिए। उपयोगी कला-कौशल तथा दस्तकारी की शिक्षा भी अवश्य होनी चाहिये। आरम्भिक शिक्षा सर्वसाधारण में अवश्य हो। इस नये और विचित्र युग में स्त्रियां पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त करेंगी दीनों और अनाथों का प्रबंध राज्य-कोश से किया जायेगा। परन्तु भीख मांगने की सर्वथा मनाही की गई है। इसी प्रकार मादक वस्तुओं को भी सर्वथा त्याज्य कहा गया है। लोभ अथवा दण्ड के भय के बिना सच्चा प्रेम ही बाबियों का मुख्य आदर्श होना चाहिये। अपनी पुस्तक बयान में उन्होंने यों लिखा है:—

"ईश्वर की आराधना इस प्रकार करो कि अगर तुम्हें उसके सबब आग में कूदना पड़े तो भी उसमें न्यूनता न आये। यदि तुम भय से आराधना करते हो तो वह आराधना उस पवित्र ईश्वर तक पहुंचने के योग्य नहीं। यदि तुम स्वर्ग की कामना से ईश्वर का भजन करते हो तो भी बुरा करते हो, क्योंकि तुम उसकी सृष्टि को उसके साथ हिस्सेदार बनाते हो।" (Babis of persia ll, by prof. E. G. Browne, J. R. A. S., vol. xxi P. 931.)

राग और विजय

इस अन्तिम कथन से म० बाब के उस मानसिक भाव का ज्ञान होता है जो जीवन भर उनके साथ रहा। ईश्वर को जानना और उससे प्यार करना, उसके गुण और स्वभाव को लोगों में प्रकाशित करना, उसके अवतार के आगमन का मार्ग तय्यार करना ही उनके जीवन का केवल मात्र लक्ष्य और उद्देश्य था। उनके लिये न तो जीवन एक डरावनी चीज़ था, न तो मृत्यु कोई दुख वाली वस्तु, क्योंकि ईश्वरीय प्रेम ने भय को दूर निकाल फेंका था और शहीदत (शहीद हो जाने की तमन्ना) तो स्वयं अपने प्यारे के चरणों में सर्वस्व अर्पण करने की एक मधुर भावना थी।

आश्चर्य की बात है कि ऐसा पवित्र और सुन्दर जीवन (आत्मा Soul) ईश्वरीय सत्य का ऐसा ओजस्वी शिक्षक, ईश्वर का ऐसा प्यारा भक्त और उसके साथी घृणा के पात्र समझे जाकर उन दिनों के अन्धे और ढोंगी धर्मात्मा कहलाने वाले लोगों के द्वारा ऐसी बुरी दशा से मार डाले जायें !!! निःसन्देह अनजानपने से या जानबूझ कर धारण किये हठ-धर्म के सिवा कोई भी दूसरी बात मनुष्यों की दृष्टि से इस सत्य को छुपा नहीं सकती थी कि

वह अवश्य धर्मावतार अर्थात् ईश्वरीय पवित्र दूत था। उनके पास सांसारिक वैभव या ऐश्वर्य न था, परन्तु आध्यात्मिक शक्ति और उसके साम्राज्य का इस योग्यता के सिवा दूसरा प्रमाण हो ही क्या सकता है कि सांसारिक सहायता को परे हटा कर उतने बड़े भारी विषभरे विरोध का सामना करके उस पर विजय प्राप्त की जाय। अश्रद्धालु लोगों पर ईश्वरभक्ति का प्रचार ही कैसे किया जा सकता है सिवा इस गुण के कि यातनाओं की झपटें और विपत्तियों के कड़े से कड़े प्रहार, शत्रुओं की घृणा और मुँह मीठे मित्रों के विश्वासघात सहे जायें, इस पर भी भीत या दुःखी न होकर उन सतानेवालों को केवल क्षमा किया जाय बल्कि उनके लिये भी ईश्वरीय दया की प्रार्थना की जाये। महात्मा बाब ने यातनाएँ सहीं और उन पर विजय भी प्राप्त की। सहस्रों मनुष्यों ने उनकी सेवा में अपनी जानें और सर्वस्व होम कर उन पर अपना प्रेम और सद्भाव प्रमाणित किया है। मनुष्यों के जीवन और हृदयों पर जो अधिकार उन्होंने प्राप्त किया उसके लिये राजा महाराजा भी कदाचित् स्पर्धा करेंगे। इसके अतिरिक्त ईश्वर ने जिस रूप में अवतार लेना था उसका भी प्रकाश हो गया है। उसने म० बाब के कथनों को दृढ़ कर दिया है और अपने अग्रगामी की उदार भक्ति को स्वीकार करके उसे अपने ऐश्वर्य का सहभागी बना लिया है।

अध्याय तीसरा

ईश्वरीय ज्योति के रूप में महात्मा बहाउल्लाह

"ऐ प्रतीक्षा करनेवालो, अब अधिक उत्कण्ठित न होओ, क्योंकि अब वह अवतीर्ण हो चुका है। उसका मन्दिर और उस मन्दिर में उसके प्रकाश को देखो। यह नये स्वरूप में वही प्राचीन प्रकाश है।"
—बहाउल्लाह।

जन्म और आरम्भिक अवस्था

मिर्ज़ा हुसेन अली, जो बाद में बहाउल्लाह अर्थात् ईश्वरीय ज्योति की उपाधि से भूषित हुए थे, तेहरान के राजमन्त्री मिर्ज़ा अब्बास नूर के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनका वंश धनी और प्रख्यात था। इस वंश के कई मनुष्य ईरान राज्य में सेना में और दूसरे राजकीय कार्य विभागों में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर नियुक्त थे। ईरान की राजधानी तेहरान में १२ वीं नवंबर सन् १८१७ को उषाकाल में इन का जन्म हुआ। यह किसी स्कूल या कालेज में कभी नहीं गये। जो कुछ थोड़ी बहुत शिक्षा पाई सो घर में ही। तो भी बचपन में ही इन्होंने आश्चर्यजनक बुद्धि और ज्ञान का परिचय दिया। अभी यह नौजवान ही थे कि इनके पिता का देहान्त हो गया। अब अपने छोटे भाई और बहनों के पालन पोषण तथा पैतृक विशाल सम्पत्ति की देखभाल का भार इन्हीं पर आ पड़ा।

एक मौके पर बहाउल्लाह के बड़े बेटे अब्दुल-बहा ने अपने पिता

के प्रारम्भिक जीवन के सम्बन्ध में इस पुस्तक के लेखक को यों बयान दिया था :—

"बाल्यकाल से ही वह अतिशय दयालु और उदार थे। वह बाहर घूमना बहुत पसन्द करते थे। उनका अधिकांश समय खेतों और उद्यानों में ही व्यतीत होता था। उनकी असाधारण आकर्षण शक्ति का अनुभव सभी को था। उनके आसपास सदा लोगों का जमघट लगा रहता था। मन्त्रियों और न्यायालय के अधिकारियों तक उन्हें घेरे रहते थे। बालक भी उनके भक्त बन गये थे। अभी वह १३ या १४ वर्ष के ही थे कि लोगों में अपने पाण्डित्य के लिए प्रख्यात हो गये थे। वह सभी विषयों पर बातचीत कर सकते थे और जो भी कड़ा से कड़ा प्रश्न उनसे किया जाता, उसका उचित उत्तर दिया करते। वह बड़ी सभाओं में उलमाओं, विद्वानों के साथ विविध विषयों पर वाद-विवाद करते और धर्म सम्बन्धी कठिन प्रश्नों की व्याख्या किया करते थे। इनकी सभी बातों को लोग ध्यान से सुना करते थे।

"जब बहाउल्लाह बीस वर्ष के हुए तो इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। तब सरकार ने मन्त्रिमण्डल में इनके पिता के पद पर इन्हीं को आरूढ़ करना चाहा, परन्तु बहाउल्लाह ने इसे स्वीकार न किया। तब प्रधान मन्त्री ने कहा था 'इसे अपने काम में लगा रहने दो। यह पद इसके योग्य नहीं। इसकी दृष्टि में कोई उच्चतर लक्ष्य है। यद्यपि मैं इसका रहस्य नहीं जान सकता तथापि इतना मुझे विश्वास है कि यह किसी महान् कार्य के सम्पादन में प्रवृत्त है। इसके विचार हमारे जैसे नहीं हैं। इसलिए इसे स्वतन्त्र रहने दो।' "

बाबी बनकर बन्दी होना

जब म० बाब ने १८४४ में अपने कर्तव्य की घोषणा की, तो

बहाउल्लाह जो उस समय २७ वर्ष की अवस्था में थे, बड़े साहस के साथ उस नये मत में संमिलित हो गये जिसके कि वह आगे चल कर शीघ्र ही बड़े शक्तिशाली और निर्भय प्रचारक माने गये।

इस काम में वह पहले दो बार कैद हो चुके थे, और एक मौके पर बेतों की मार का कष्ट भी भोग चुके थे, जब कि अगस्त १८५२ में बाबियों पर भयानक कष्ट भोग का एक समय आया था। उसका हाल यों है। बाबी संप्रदाय का एक नवयुवक, जिसका नाम सादिक था, अपने प्रिय स्वामी के बलिदान का दृश्य अपनी आँखों से देख कर जोश में आ गया। उसका मन भड़क उठा और बदला लेने की बुद्धि से वह शाह की घात में रहने लगा और मौका पाकर उसने शाह पर पिस्तौल दाग दिया। उसने गोली नहीं डाली केवल छोटे छोटे छरहे ही भरे और पिस्तौल चला दिया। शाह को छरहे लगे, पर उनसे कोई विशेष हानि न पहुँची। तब उस जवान ने शाह को घोड़े पर से नीचे घसीट लिया, परन्तु राजसेवकों ने तत्काल ही उसको पकड़ लिया और वहीं मार डाला। बाबियों का सारा जत्था ही इस कार्य के लिये ज़िम्मेवार ठहराया गया। फिर क्या था, भयंकर हत्याकाण्ड आरम्भ हो गया। इस जत्थे के अस्सी आदमी तेहरान में रोमाञ्चकारी कष्ट देकर मार डाले गये। बाकी बहुतेरे पकड़ कर कैदखानों में बन्द किये गये उनमें एक बहाउल्लाह भी थे। इन्होंने बाद में लिखा कि—

"हमारा इस घृणित कार्य से कोई सम्बन्द न था। हमने न्यायाधीशों के सामने अपना निरपराध होना निर्विवाद सिद्ध कर दिया था। तो भी हम लोग बन्दी किये गये और नियावरां से, जो उन दिनों राजकीय निवास-स्थान था, तेहरान के कारागार में पैदल और नंगे मस्तक

लाये गये। आते समय हमारे पांव में बेड़ियां थीं, सिर और पैर नंगे थे। एक पशु प्रकृति के मनुष्य ने, जो घोड़े पर चढ़ा हमारे साथ आ रहा था, मेरे सिर से टोपी उतार ली थी। कई जल्लाद और फरोश (सिपाही) बड़े वेग से हमें भगाते ले आये। चार महीनों तक हमें ऐसे बुरे स्थान में रखा जैसा किसी ने देखा भी न होगा। यथार्थ एक अन्धेरा और बहुत तंग तहखाना भी इस स्थान से कई दर्जे अच्छा होता है, जहाँ यह सेवक और उसके साथी बन्द किये गये।

"जब हम कारागार में पहुँचे, हमें एक अँधेरे बरामदे में खड़ा किया गया। वहां से तीन सीढ़ियां नीचे उतरे और जो स्थान हमारे लिए नियत था, वहां पहुँचे। स्थान बहुत अन्धेरा था और वहाँ डेढ़ सौ के लगभग चोर, डाकू और भयंकर लुटेरे बन्द थे। इतना जमघट रहते भी वहां प्रवेश-द्वार के सिवा हवा आने का कोई मार्ग न था। इस स्थान और इसको दुर्गन्ध का वर्णन नहीं हो सकता। प्रायः कैदियों के पास पहनने के लिए कपड़े और बिछाने के लिए चटाइयाँ तक न थीं। इस अन्धेरे और दुर्गन्धमय स्थान में जैसी हमारे साथ बीती उसे ईश्वर ही जानता है।

"इस कैदखाने में रहते दिन रात हम बाबियों की दशा, कार्य और व्यापारों पर विचार किया करते थे; हमें आश्चर्य होता था कि ऐसे धार्मिक, सज्जन और बुद्धिमान् होते हुए भी उनसे सम्राट् के जीवन पर आक्रमण जैसा घृणित कार्य कैसे हो पाया था, तब इस सेवक ने निश्चय किया कि जब कारावास से मुक्त हूँगा तो इन पवित्रात्माओं के चरित्र सुधार के लिए भरकस यत्न करूँगा।

"एक रात सपने में चारों ओर से यह दिव्य वाणी सुनने में आई। 'ओ हम तुझे तेरी शक्ति और लेखनी के द्वारा विजय प्राप्त करने में सहायता देंगे। जो कुछ तुम पर बीत चुकी है, उस पर शोक मत

करो, और डरो नहीं । सचमुच तेरी गणना उनमें है, जो सुरक्षित हैं । शीघ्र ही ईश्वर पृथ्वी के खज़ाने खोल देगा । और उन लोगों को भेजेगा जो तेरे नाम के लिए तेरी सहायता करेंगे जिससे ईश्वर ने असहाय और अनाथों के हृदयों में जीवन डाल दिया है ।' " (see Epitre ou Fils du Loup, pp. 20-22.)

बगदाद में निर्वासन

इस भयानक कैद में चार महीने बीत गये, पर बहाउल्लाह और उनके साथियों को उत्साह और जोश ने वैसे ही अति प्रसन्न रखा। तकरीबन प्रतिदिन उनमें से एक या अधिक सताये या मार डाले जाते और दूसरों को भी याद दिलाया जाता था कि तुम्हारी शायद कल बारी आये । जब जल्लाद इस मित्र मण्डल में से किसी एक को पकड़ने आते तब वह आदमी, जिस का नाम पुकारा जाता था, सचमुच मारे हर्ष के नाचने लग जाता, बहाउल्लाह के हाथ चूमता, बाकियों को गले लगाता और बड़े हर्ष और उत्सुकता से बलिदान की भूमि को जाता था । यह बात निश्चित रूप से सिद्ध हो चुकी थी कि शाह के विरुद्ध षड्यन्त्र में बहाउल्लाह का कोई भाग नहीं था और रूसी राजदूत ने भी उनके आचार की पवित्रता को प्रमाणित कर दिया था । दूसरे वह इतने बीमार थे कि समझा जाता था, शीघ्र ही मर जायेंगे । इस लिए शाह ने उन्हें मृत्यु दण्ड न देकर इराक अरब में निर्वासन करने की आज्ञा दी । पन्द्रह दिनों के बाद बहाउल्लाह अपने परिवार और कुछ एक भक्तों के साथ उस प्रदेश की ओर चल पड़े । शीत ऋतु की इस लम्बी यात्रा में उन्होंने सरदी और अन्य प्रकार की भयानक कठिनाइयाँ सहीं और तब बहुत बुरी दशा में बगदाद पहुंचे ।

ज्यों ही इनका स्वास्थ्य अच्छा हुआ, इन्होंने जिज्ञासुओं को सिखाना और भक्तों को उत्साहित तथा पवित्र कार्य में प्रवृत्त करना आरम्भ कर दिया। फिर शीघ्र ही बाबियों में सुख और शान्ति छा गई। यह दशा भी थोड़े ही दिनों तक रही। बहाउल्लाह का सौतेला भाई मिर्ज़ा यह्या जो सुभहे अज़ल के नाम से भी प्रसिद्ध था, बगदाद में आया। उसके आने के बाद शीघ्र ही उसके गुप्तप्रचार से उनमें आपस का मत भेद उत्पन्न होगया, जैसे मसीह के शिष्यों में उस समय उठ खड़ा हुआ था। यह मत भेद आगे जाकर ऐड्रियानोपल में बड़े वेग से फैल गया और बहाउल्लाह के हृदय को इससे बहुत दुःख पहुँचा, क्योंकि उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य यही था कि संसार भर के लोगों में एकता की वृद्धि हो।

निर्जन वन में दो वर्ष

बगदाद में आने के लगभग एक साल बाद यह एक जोड़ा कपड़ों के सिवा और कुछ साथ न लेकर अकेले सुलेमानियां के निर्जन वन को चले गये। इस समय का हाल इन्होंने अपने 'इकान' नामी पुस्तक में यों लिखा है—

"हमारे इस देश में पहुँचते हमने शीघ्र ही होने वाली घटनाओं का अन्दाज़ा लगाया और कुछ अनुचित होने पाए उससे पूर्व ही एकान्त वास का निर्णय किया। हम वन की ओर चल दिये और वहां संपूर्ण एकान्त में दो वर्ष बिताए। हमारी आंखों से दुःख के आंसू बह

'यह घटना १८५३ में हुई अर्थात् बाब की घोषणा के नौ वर्ष बाद। इस प्रकार बाब की यह भविष्यवाणियाँ जो इन्होंने नौ वर्ष के सम्बन्ध में की थीं पूरी हुईं।

रहे थे और पीड़ित हृदय से दर्द का समुद्र उछल रहा था। कई रात हमें भोजन न मिला और कई दिन विश्राम तक न पाया, जिवन स्वामी प्रभु की सौगन्ध है कि इन विपदाओं की वर्षा और सतत आपत्तियों के होते हुए भी हमारी आत्मा अत्यन्त प्रसन्न रही और हमारे सारे शरीर ने एक असीम आनन्द का अनुभव किया। क्योंकि एकान्त में हमें किसी के स्वास्थ्य या रोग या लाभ और हानि की ख़बर भी न थी। हमने अकेले ही दुनिया और उसमें अस्तित्व रखती वस्तुओं को भुलाकर आत्मा से सम्बन्ध रखा। हमें ज्ञान न था कि परमात्मा की जाल मनुष्यों के विचार से पर है, और उसकी इच्छा का तीर मनुष्य की आशाओं को बेध सकता हैं। वह जाल जो वह बिछाता है उससे कोई भी मुक्त नही हो सकता। और ईश्वरेच्छा के सिवाय किसी का छुटकारा नहीं। ईश्वर की शपथ हैं, हमें इस निर्जन वन से लौटने की कोई इच्छा न थी, और न इस यात्रा के बाद फिर मिलने की आशा ही थी। इससे हमारा अभिप्राय केवल यही था कि हम अपने प्रियजनों में विरोध का कारण न बनें, मित्रों में झगड़े फ़साद का मूल न बनें, और किसी के दिल को कष्ट पहुँचने का साधन भी न बनें। इसके सिवा दूसरा कोई उद्देश्य न था। फिर भी इस विषय में प्रत्येक पुरुष ने अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार भिन्न-भिन्न मत और आशय प्रकट किये, जब तक कि ईश्वर की ओर से लौट आने की आज्ञा मिली। हमने उसका पालन किया और लौट आये। लौट आने पर जो हमें भुगतना पड़ा, लेखनी उसे नहीं लिख सकती। सभी जानते हैं कि दो वर्ष से हमारे शत्रु इस विनम्र सेवक के विनाश का पूरा यत्न और लगातार कोशिशें करते रहे।"

मुल्लाओं का विरोध

उधर से वापस आने पर उनकी कीर्ति पहले से भी अधिक

फैल गई। दूर और समीप सभी स्थानों से लोग धड़ाधड़ उनको देखने और उनकी शिक्षा सुनने के लिए बगदाद में जमा होने लगे। यहूदी, ईसाई, जरथोस्ती तथा मुसलमान सभी इस नये संदेश को चाह से सुनने लगे। मुसलमानी धर्म के आचार्य मुल्ला लोग इस प्रचार के विरोध में उठ खड़े हुए और इस धारा को रोकने के लिये बड़ा प्रयत्न करने लगे। एक मौके पर उन्होंने अपने एक दूत को इनसे बातचीत करने भेजा और उसने इनसे कुछ प्रश्न किये। म० बहाउल्लाह के यथार्थ उत्तरों से वह दूत ऐसा निरुत्तर हुआ, और उनके बिना पढ़े ही प्राप्त हुई ऐसी विद्या और बुद्धि पर इतना विस्मित हुआ कि उसे इस बात को स्वीकार करना पड़ा कि विद्या और बुद्धि में सचमुच बहाउल्लाह अद्वितीय महा-पुरुष है। उसने बहाउल्लाह से कोई चमत्कार दिखाने को कहा जिसके आधार पर वह उन मुल्लाओं के सामने, जिन्होंने उसको भेजा था, उसका नबी होना सिद्ध कर सके। बहाउल्लाह ने कुछ शर्तों पर उसकी यह बात मान लेने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने कहा यदि मुल्ला लोग मेरे दिखाये चमत्कारों पर मुझ से सहमत हो जाएँ और एक कागज़ पर लिखकर अपनी स्वीकृति के प्रमाण में अपने हस्ताक्षर कर दें कि आगे के लिये मेरे प्रचार की सत्यता मान कर उसका विरोध करना छोड़ देंगे। फिर यदि मैं चमत्कार न दिखा सकूँ तो झूठा समझा जाऊँ। यदि वास्तव में मुल्ला लोग सचाई जानना चाहते तो अवश्य इससे अच्छा कोई और अवसर उन्हें नहीं मिल सकता था, परन्तु उनकी इच्छा तो इससे सर्वथा विपरीत थी। वह तो चाहते थे कि सच्ची या झूठी किसी भी रीति से वह अपना अभीष्ट निर्णय प्राप्त करें। वह सचाई से डरते थे, इसलिये उन्हें खुले चैलेंज को स्वीकार करने का साहस न हुआ।

इस हार से झुंझलाकर वह लोग इस आपद्ग्रस्त जत्थे को मटियामेट करने के लिये और भी नये नये षड्यन्त्र रचने लगे। बगदाद का ईरानी प्रधान अधिकारी भी इनका साथी बन गया। उसने शाह को बार-बार लिखना आरम्भ किया कि बहाउल्लाह मुसलमानी धर्म को पहले से भी अधिक हानि पहुँचाने लग गये हैं, और ईरान पर एक बहुत बुरा प्रभाव डाल रहे हैं, इसलिये उनको यहाँ से निकाल कर किसी दूरवर्ती प्रदेश में भेजना अत्यावश्यक जान पड़ता है।

बहाउल्लाह का स्वभाव था कि जब जब मुल्लाओं के उकसाने से ईरान या तुर्की की सरकारें उनके प्रचार को मटियामेट करने पर तुल जाती थीं तो वह शान्त और गम्भीर रहते, साथियों को ढारस बँधाते, उनको जोश दिलाते तथा उन्हें धीरज से अपना काम चलाये जाने की अद्भुत शिक्षा देते रहते थे। अब्दुल-बहा बयान करते हैं कि इन्हीं दिनों "रहस्यमय वचन" किस प्रकार लिखे गये। बहाउल्लाह प्रायः टिग्री नदी के किनारे घूमने जाया करते थे। जब वापिस आते तो बहुत प्रसन्न होते और बैठ कर विवेक-भरी इन अमूल्य शिक्षाओं को लिखते जिन्होंने हजारों दुखिया और आहत हृदयों को सहायता देकर अच्छा किया है। कई सालों तक इन शिक्षाओं की केवल थोड़ी-सी हस्तलिखित प्रतियां विद्यमान रहीं। यह बड़ी सावधानता से सुरक्षित रक्खी जाती थीं कि कहीं शत्रु लोग, जो सब जगह पाये जाते थे, इन्हें ले न जायें। यही लेखमाला अब बहाउल्लाह के नाम से अधिक प्रख्यात है और संसार के प्रत्येक भाग में पढ़ी जाती है। इनकी एक और पुस्तक 'इकान' भी प्रसिद्ध है जो उन्हीं दिनों अर्थात् बगदाद में स्थिति के समय लिखी गई थी। (१८६२—१८६३ ई० स०)

बगदाद के समीप रिज़्वान में घोषणा

बहुत लिखा पढ़ी के बाद तुर्की की सरकार ने ईरानी सरकार की प्रार्थना पर बहाउल्लाह को कुस्तुन्तुनिया में बुलाने के लिए आज्ञापत्र भेजा। इस आज्ञा ने इनके अनुयायिओं में हलचल पैदा कर दी। उन्होंने अपने प्रिय गुरुदेव के घर को घेर लिया और उनकी संख्या इतनी बढ़ गई कि बहाउल्लाह को १२ दिन तक नगर के बाहर नजीब पाशा के बगीचे में तंबुओं के अंदर सपरिवार रहना पड़ा। यहाँ यह यात्रा की तैयारियाँ करते रहे। इन्हीं बारह दिनों के आरम्भ में (१८६३ के २१ वीं एप्रिल से ३ वीं मई तक, अर्थात् बाब की घोषणा के ठीक १९ साल बाद) इन्होंने अपने कुछ शिष्यों के सामने इस बात की घोषणा की कि म० बाब ने जिस महापुरुष के आगमन की शुभ सूचना दी थी, और सब पूर्ववर्ती नबियों ने भी जिसके आगमन के विषय में भविष्य वाणियां की थीं, वह ईश्वरीय दूत मैं ही हूँ। वह बग़ीचा, जिस में यह चिरस्मरणीय घोषणा हुई थी, बहाईयों में 'रिज़वान' के नाम से प्रसिद्ध होगया और यह बारह दिन 'रिज़वान उत्सव' के नाम से प्रख्यात हुए। इन दिनों में बहाई प्रतिवर्ष बड़ी खुशियाँ मनाते हैं। उन दिनों बहाउल्लाह शोकग्रस्त और विषण्ण होने के बजाय बहुत प्रसन्न, शक्तिशाली और प्रभाववान् दीखते थे। उनके साथी अत्यन्य प्रसन्न और सहर्ष थे और लोगों के झुण्ड के झुण्ड उनका सत्कार और आदर सम्मान करने आये। बगदाद के सभी बड़े-बड़े आदमी और स्वयं गवर्नर भी इस कैदी को विदा करने के लिए उपस्थित हुए।

कुस्तुन्तुनिया और एड्रियानोपल

तीन और चार महीनों के भीतर कुस्तुन्तुनिया की यात्रा

समाप्त हुई। मार्ग में आपने लगभग ७२ शिष्यों और १२ परिवार के आदमियों के साथ सरदी के भयानक कष्ट सहे। कुस्तुन्तुनिया पहुँचने पर इन्हें एक छोटे से कमरे में कैद किया गया जहाँ यह बहुत तंग होकर रहने लगे। बाद में इन्हें एक खुला कमरा रहने को मिला। पर वहाँ चार महीने निवास के अनन्तर फिर एड्रियानोपल को भेज दिये गये। यह यात्रा यद्यपि थोड़े दिनों में समाप्त होगई पर इसमें अदृष्ट-पूर्व और भयानक संकट भोगने पड़े। बरफ बराबर पड़ रही थी और इनके पास तन ढाँपने को कपड़ा तक न था और अच्छी खुराक भी न मिलती थी, इस कारण इन्हें बड़ा कष्ट हुआ। वहाँ पहुँचने पर इन्हें अपने १२ आदमियों के परिवार के साथ रहने को तीन छोटे छोटे कमरों वाला एक तंग सा मकान दिया गया जो बड़ा गंदा और कष्टकर था। फिर बसन्त में इन्हें एक सुखकर स्थान मिल गया। साढ़े चार साल से कुछ अधिक समय तक यह एड्रियानोपल में रहे। यहाँ भी इन्होंने अपनी शिक्षा देना आरम्भ कर दिया और थोड़े ही दिनों में एक खासा जमघट इनके इर्द गिर्द जमा हो गया। इन्होंने सबके सामने अपने मिशन की घोषणा की और बाबी संप्रदाय के अधिकांश लोगों ने, जो बाद में बहाई कहलाने लग गये थे, उसे बड़े चाव से ग्रहण किया। इसके सौतेले भाई मिर्ज़ा 'यह्या' की अधीनता में एक छोटे से गिरोह ने इनका कड़ा विरोध करना आरम्भ किया जो बाद में इनके पहले शत्रु-शियाओं के दल से जा मिला। इस कारण इन पर बड़े संकट आये। अन्त में तुर्की की सरकार ने बाबीयों और बहाईयों को एड्रियानोपाल से बाहर भेज दिया। बहाउल्लाह और उनके साथियों को तो पैलिस्टाइन के अक्का नगर में और मिर्ज़ा यह्या और उनके

साथियों को कबरस में भेज दिया। यह वहाँ सन् १८६८ के ३१ वीं अगस्त को पहुँचे।

बादशाहों से पत्र-व्यवहार

इसी समय बहाउल्लाह ने योरप के राजाओं, पोपों, अमरीका की सरकार तथा ईरान के शाह को अपने प्रसिद्ध पत्र लिखे जिनमें इन्होंने संसार भर के शासकों और जातियों में एकता और शान्ति स्थापित करनेवाले अपने नये मत को व्यापक बनाने में अपनी शक्ति लगाने की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया। जो पत्र ईरान के शाह को लिखा था, उसमें उन्होंने पीड़ित बाबियों का बड़े ज़ोर से निरपराध होना सिद्ध किया और कहा कि उन बाबियों के विरुद्ध भड़काने और उन्हें तंग करने के लिए उभारने वाले लोगों के सामने आपको खड़े होकर अपने पक्ष का समर्थन कर दिया जाय। कहने की आवश्यकता नहीं, कि उनकी यह प्रार्थना स्वीकार न की गई, बल्कि उस नौजवान बहाई को जो पत्र लेकर गया था और जिसका नाम बदी था, पकड़ लिया और शहीद किया। ईंटें तपा तपा कर उसके शरीर पर रक्खीं और उसे कष्ट की मौत मारा।

इसी पत्र में बहाउल्लाह ने अपनी यातनाओं और उत्कण्ठाओं का बड़ा मर्म-भेदी वृत्तान्त लिखा है—

"हे राजन्, मैंने ईश्वरीय मार्ग में चलते चलते वह बातें देखी हैं, जिन्हें न किसी आँख ने देखा और न किसी कान ने सुना है। मित्रों ने मुझसे मुँह मोड़ लिया। मेरे लिए सब रास्ते तंग हो गये। मेरी रक्षा का सरोवर सूख गया। मेरे आराम और चैन का बगीचा सूख कर पीला पड़ गया। कितनी ही आपदाएँ मुझ पर आईं और कितनी और आयेंगी। मैं उस प्रभु के मार्ग में आगे बढ़ता जा रहा हूँ और मेरे पीछे

पीछे एक भयंकर साँप आ रहा है। मेरी आँखों से आँसुओं की धार इतने ज़ोर से बहती है कि इससे मेरा बिस्तर गीला हो जाता है पर यह शोक अपने लिये नहीं। ईश्वर की सौगन्ध है, मेरा सिर ईश्वरीय प्रेम की सूली पर चढ़ने के लिए आतुर है। मैं यदि किसी वृक्ष के पास से भी होकर गया हूँ तो मेरे हृदय ने उसे भी यों अवश्य कहा है कि ऐ वृक्ष ऐसे भी हो सकता है कि तू मेरे लिए काट कर सूली बनाया जाता और मेरा देह ईश्वरीय मार्ग पर चलाने के लिए तुझ पर चढ़ाया जाता। मैं देख रहा हूँ कि लोग मस्ती में आकर भटक रहे हैं, पर उन्हें इस बात की खबर नहीं, कि उन्होंने विषय में ईश्वर को भुला रखा है। मालूम होता है कि उन्होंने ईश्वरीय आज्ञा को हँसी मख़ौल या खेल तमाशा समझ लिया है। कदाचित् वह यही समझते होंगे कि वह अच्छा काम कर रहे हैं और ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए उसकी शरण में आये हुए हैं। पर उनका यह मानना ठीक नहीं। जिसका आज प्रत्याख्यान करते हैं, कल उसे मान लेंगे।

"हम शीघ्र इस दूरवर्ती प्रदेश (एड्रियानोपल) से हटा कर 'अक्का' के कारागृह में पहुँचाये जायेंगे। लोगों के कथन के अनुसार यह स्थान अवश्य संसारभर के ऊजड़ नगरों में सर्व प्रधान है, देखने को बहुत भद्दा है, इसका जल-वायु भी बहुत खराब है, अर्थात् उल्लुओं के रहने का एक अड्डा है, उल्लुओं के शब्द के सिवा और कुछ भी वहाँ पर सुनाई नहीं देता। ऐसे स्थान में इस सेवक को बंद करके रखने का विचार किया जा रहा है, हमारे सुख चैन के मार्ग को बन्द किया जा रहा है, और हमारे जीवन के अवशिष्ट दिनों में सांसारिक सुख सामग्री को हमसे छीना जाता है। ईश्वर की सौगन्ध है, यातनाएँ मुझको चाहे कितना दुर्बल बना दें और भूख मुझे मार ही क्यों न डाले, चाहे शिलायें मेरा कठोर बिछौना और जंगली हिंस्र जीव मेरे साथी बनाये जायें, तो

भी प्राणिमात्र के रचयिता परम प्रभु ईश्वर की शक्ति से मैं उफ तक न करूँगा, बल्कि धैर्य और दृढ़ता से सब कुछ सहता हुआ भी शान्त और सन्तुष्ट रहकर ईश्वर का धन्यवाद करता रहूँगा। मुझे पक्का भरोसा है कि वह दयालु उदार तथा सर्व समर्थ परमेश्वर अपने सच्चे भक्तों की सहायता करेगा। निःसन्देह वह भक्तों की प्रार्थना को सुनता है, और जो उसको सच्चे हृदय से पुकारता है, उसके पास वह अवश्य आता है, हम उसी से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने भक्तों के लिए इन विपत्तियों को सुदृढ़ कवच के रूप में पलट दे, जिससे कठोर तलवारों की तेज धारों से उनकी रक्षा हो। कष्ट सहने से ही उसकी ज्योति प्रकट होती और कष्ट ही उसकी स्तुति को निरन्तर चमकाता है। यही उसकी रीति परम्परा से चली आ रही है।" (Episode of the Bab, pp 146-147.)

अक्का में बन्दी होना

उन दिनों 'अक्का' वह नगर था जिसकी जेल में तुर्की साम्राज्य के सब प्रान्तों के बड़े बड़े अपराधी लाकर बंद किये जाते थे। समुद्र की कष्टदायक यात्रा समाप्त करके यहाँ पहुँचने पर बहाउल्लाह को उनके साथी स्त्रियों, बच्चों और पुरुषों के साथ, जो संख्या में लगभग ८०–८४ के बीच में थे, एक फौजी बारग में कैद किया गया। वह स्थान अत्यन्त मैला और निरानन्द था। उन्हें बिछौना आदि कोई सुख का सामान न दिया गया। खुराक भी ऐसी बुरी और अधूरी मिलती थी कि अन्त में विवश होकर कैदियों को अपने लिये स्वयं भोजन सामग्री खरीदने की अनुज्ञा माँगनी पड़ी। पहले कुछ दिन बच्चे लगातार रोते रहे और सोना प्रायः असंभव हो गया। ज्वर, अतिसार आदि रोग प्रकट हो गये और जत्थे के

सभी लोग बीमार पड़ गये। केवल पाँच इस बीमारी से बचे थे, वह भी आगे जाकर रोगग्रस्त हो गये। चार तो इस बीमारी में मर भी गये और जो बच गये, उन्होंने जो कष्ट भोगा उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। †

दो वर्ष इस कठोर कारावास में बीत गये। इस समय तक बहाईयों में किसी को जेल के द्वार तक बाहर आने की आज्ञा न मिलती थी सिवाय उन मनुष्यों के, जो कड़े पहरेदारों के साथ प्रतिदिन के खाने पीने का सामान खरीदने को बाहर जाया करते थे।

कैद के इन दिनों में दर्शकों का बारग के अंदर आना बिलकुल मना था। ईरान से कुछ बहाई लोग अपने प्रिय नेता का दर्शन करने के लिए इतनी दूर पैदल चलकर आते पर बेचारों का नगर के अंदर घुसना तक बंद कर दीया जाता था। वह लोग क़िले के तीसरे कोट के बाहर एक मैदान में जा खड़े होते थे, जहाँ से उन्हें बहाउल्लाह के वासगृह की खिड़कियाँ दीख पड़ती थीं। इन्हीं खिड़कियों में से किसी एक में खड़े होकर बहाउल्लाह उन्हें दर्शन दे दिया करते थे। दूर से उनका दर्शन पाकर वह लोग रोते और फिर सेवा तथा आत्मबलिदान की तीव्र उमंग हृदयों में लिये अपने देश को लौट जाते।

बन्धन ढीले हुए

अन्त में कारावास की कठोरता घट गई। तुर्की सेना का युद्धो-

---

† शहीदों में से दो के कफ़न का खर्च पूरा करने के लिए बहाउल्लाह ने अपना ग़लीचा बेचने को दिया, परन्तु सिपाहियों ने रुपया तो अपनी जेबों में डाला और लाशें किसी गढ़े में फेंक दीं!

योग आरम्भ होगया और इसी कारण कैदियों की कोठरियाँ सिपाहियों के लिये आवश्यक हो गईं। बहाउल्लाह तो परिवार के साथ एक घर में बदल दिये गये और उनके साथी नगर की एक सराय में रक्खे गये। इस घर में बहाउल्लाह सात साल तक बंद रहे। बहाउल्लाह की कैद कोठरी के पास ही एक छोटे से कमरे में उन के परिवार के स्त्री पुरुष सब मिलाकर १३ आदमियों को जैसे तैसे रहना पड़ता था। यहां भी आरम्भ में इन्हें कमरों के तंग होने, भोजन ठीक न मिलने तथा अन्यान्य जीवनोपयोगी साधन प्राप्त न होने के कारण बहुत कष्ट सहने पड़े, पर थोड़े दिनों बाद कुछ कमरे उन्हें और मिल गये जहाँ यह पहले की अपेक्षा आराम से रहने लगे। जब से बहाउल्लाह और उनके साथी क़िले के बाहर रहने लगे थे तब से दर्शकों को भी उनके पास आने की आज्ञा मिल गई थी, और धीरे-धीरे सभी बन्धन जो सरकारी आज्ञाओं से उन पर लगाये गये थे, अधिकाधिक ढीले कर दिये गये थे, यद्यपि कभी कभी फिर भी वे कुछ समय के लिये जकड़ दिये जाते थे।

जेल के द्वार खुले

कारावास की इन भयंकर यातनाओं पर भी बहाई लोग अधीर न हुए और न इनके विश्वास की दृढ़ता मे ही कुछ कमी आई। 'अक्का' की कैद कोठरियों में रहते समय बहाउल्लाह ने अपने मित्रों को लिखा था "डरो नहीं। यह द्वार खुल जायँगे। मेरा तंबू कारमल पहाड़ पर लगेगा और बड़ा आनन्द प्राप्त होगा।" इस घोषणा से उनके अनुयायिओं को ढारस मिला और ठीक समय पर यह बात अक्षरशः सच्ची सिद्ध हुई।

जेल के द्वार कैसे खुल गये, इसका वृत्तान्त अब्दुल-बहा के ही शब्दों में लिखना उचित होगा, जैसा कि उनके पौत्र 'शोक़ी एफ़ैन्दी' ने अनुवाद किया है :—

"बहाउल्लाह खुले ग्रामों की सुन्दरता और हरियाली पर मुग्ध थे। एक दिन उन्होंने कहा—'नव साल हुए मैंने हरियाली नहीं देखी। ग्राम आत्मिक संसार और नगर दैहिक संसार है।' जब मैंने यह व्यंग भरी बातें सुनी तो समझ गया कि यह नगर की अपेक्षा ग्राम को अधिक चाहते हैं। मुझे इस बात का निश्चय था कि इनकी इच्छा को पूरा करने के लिए जो कुछ भी मैं करूँगा, उसमें मुझे सफलता प्राप्त होगी। उन दिनों 'अक्का' नगर में एक मनुष्य महम्मद पाशा सफ़वत नामी रहता था जो हम लोगों का घोर विरोधी था। उस मनुष्य का नगर से चार मील उत्तर की ओर एक सुन्दर महल था जो मज़रई के नाम से पुकारा जाता था। यह स्थान बहुत सुहावना था। चारों ओर बाग लगे थे और एक नदी भी पास ही बह रही थी। मैं उस मनुष्य के घर गया और उससे बातचीत की। मैंने कहा पाशा जी आप महल को खाली छोड़ कर अक्का में क्यों रहते हैं। उसने उत्तर दिया कि मैं रोगी हूँ नगर को नहीं छोड़ सकता। अगर मैं वहाँ चला जाऊँ तो वह एकान्त स्थान है, मैं अपनी मित्र मण्डली से दूर हो जाऊँगा। मैंने कहा, जब तक आप यहाँ रहते हैं और वह मकान खाली पड़ा है तो हमें किराये पर दे दीजिये। पहले तो वह इस प्रस्ताव पर विस्मित हुआ पर फिर शीघ्र ही मान गया। मैंने बहुत थोड़े अर्थात् लगभग पाँच पौंड वार्षिक किराये पर यह मकान ले लिया और पाँच वर्ष का किराया पहले दे दिया। मैंने मज़दूर भेज कर उस स्थान की मरम्मत करवाई। बाग को साफ

कराया और स्नानागार भी बनवाया। मैंने 'जमाले मुबारिक' † के लिए एक गाड़ी भी तय्यार की। एक दिन मैंने उस स्थान को स्वयं देख आने का निश्चय किया। यद्यपि बारबार घोषणाएँ हो चुकी थीं कि हमें कोट से बाहर जाने की आज्ञा नहीं तो भी मैं नगर द्वार से बाहर निकल गया। सिपाही पहरे पर खड़े थे पर उन्होंने कोई रोक टोक न की। मैं सीधा महल की ओर चल पड़ा। दूसरे दिन कुछ मित्रों और अधिकारियों को साथ लिये मैं फिर नगर के बाहर गया, सिपाही और पहरेदार द्वार के दोनों ओर खड़े थे पर किसी ने कोई आपत्ति न की। फिर एक दिन मैंने बाहजी के देवदार वृक्षों के नीचे नगर के प्रतिष्ठित लोगों तथा अधिकारियों के भोज का प्रबन्ध किया। सायंकाल हम सब खा पीकर नगर में लौट आये।"

"एक दिन मैं 'जमाले-मुबारिक' (बहाउल्लाह) के सम्मुख उपस्थित हुआ और कहा कि मज़रई का महल आपके लिए तय्यार है और वहाँ पहुँचाने के लिए एक गाड़ी खड़ी है। (उन दिनों अक्का या हैफ़ा में गाड़ियां न थीं।) उन्होंने यह कह कर कि मैं कैदी हूँ, जाने से इन्कार कर दिया। मैंने फिर प्रार्थना की पर उत्तर वही मिला। मैंने तीसरी बार भी कहा, पर उन्होंने फिर भी वैसे ही 'ना' कह दिया। बस, आगे कुछ और कहने का मुझे साहस न हुआ। अक्का में एक प्रसिद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति मुसलमान शेख़ रहता था। यह बहाउल्लाह से प्रेम करता था और बहाउल्लाह की भी इस पर विशेष कृपा दृष्टि थी। मैंने इस शेख़ को बुलाया और सारा हाल सुना कर कहा कि आप दिलेर आदमी हैं, आज रात को उस महात्मा के सामने जाएँ,

† यह बहाउल्लाह की उसके मित्रों और अनुयायिओं की दी हुई उपाधि थी जिसका अर्थ है 'ईश्वर का दिया 'सौन्दर्य'।

घुटने टेक कर जोर से हाथों को पकड़े रहें और तब तक न छोड़ें जब तक उसने नगर छोड़ देने की स्वीकृति न ले लें। वह सीधा बहाउल्लाह के पास चला गया। उनके घुटनों के पास बैठ कर हाथों को पकड़ कर चूमा और पूछने लगा कि आप नगर छोड़ देना क्यों स्वीकार नहीं करते। उन्हों ने कहा मैं कैदी हूँ। शेख़ ने उत्तर दिया, ईश्वर न करे, भला आपको क़ैद करने की सामर्थ्य किसमें है? आपने तो स्वयं अपने आपको कैद कर रखा है। आपकी अपनी इच्छा कैद में रहने की थी। अब मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप बाहर आयें और महल को चलें। वह स्थान बहुत सुन्दर और हरा भरा है। सुहावने वृक्ष लगे हैं। आग के गेंदों की सी नारंगियाँ लटक रही हैं। वह महात्मा बार-बार वही कहते रहे कि 'मैं कैदी हूँ, मुझसे यह नहीं हो सकता।' शेख़ फिर-फिर उनके हाथ पकड़ता और चूमता। इस प्रकार शेख़ को प्रार्थना करते पूरा एक घंटा बीत गया। अन्त में बहाउल्लाह ने कह दिया 'बहुत अच्छा', और शेख़ की प्रार्थना और अनुरोध सफल हुआ। वह महात्मा की स्वीकृति का आनन्द भरा शुभ-समाचार मेरे पास ले आया। सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ की मेरे लिए 'जमाले मुबारिक' के पास आने जाने और बात - चीत तक न करने की कठोर आज्ञा के रहते भी मैं दूसरे दिन गाड़ी लेकर उन्हे महल में ले ही गया। किसी ने कोई रोक टोक न की। मैं उनको वहां छोड़कर नगर को लौट आया।

"दो वर्ष तक वह इस सुंदर और मनोहर स्थान में रहे। फिर उन्हें बाहजी में किसी दूसरे स्थान पर ले जाने का निश्चय किया। यह घटना यों हुई कि बाहजी में भयंकर बीमारी का प्रकोप होगया। घर का स्वामी मारे डर के अपने परिवार के साथ दूर भाग गया और चाहता था कि बिना किराये दिये ही कोई उसके मकान में रहे। हमने

बहुत मामूली किराये पर घर ले लिया और वहाँ ईश्वरीय महापुरुष के लिए सब द्वार खुल गये । अब बहाउल्लाह नाम मात्र के कैदी रह गये । यद्यपि सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ की आज्ञाओं में कोई ढिलाई न हुई थी तो भी सच बात यों थी कि बहाउल्लाह ने अपने जीवन के संगी सद्व्यवहार और अभूतपूर्व प्रभाव के द्वारा लोगों को ऐसा वश में कर लिया था कि सब उनका आदर और मान करने लग गये थे । यहाँ तक कि स्वयं पैलस्टाइन के शासक भी उनके इस प्रभाव और शक्ति के लिये स्पर्धा करने लगे थे । गवर्नर-मुसर्रिफ - जनरल तथा स्थानीय अधिकारी लोग बड़ी नम्रता से और श्रद्धा - पूर्वक उनसे भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए बारबार उनसे प्रार्थना किया करते थे पर उनकी प्रार्थना बहुत कम स्वीकार की जाती थी ।

एक मौके पर नगर के प्रधान शासक ने इसी प्रकार की प्रार्थना की और कहा कि उच्च अधिकारियों की ओर से उसे हुक्म हुआ है कि किसी विशेष जनरल को साथ लेकर वह उस ईश्वरीय महापुरुष का दर्शन करे । प्रार्थना स्वीकृत हो गई । उसका साथी जनरल, जो एक स्थूल आकार का योरोपियन था, उनके दर्शन से इतना प्रभावित हुआ कि वह द्वार लांघते ही घुटनों के भार भूमि पर गिर गया । दोनों दर्शकों की ऐसी दशा हुई कि उन्होंने महात्मा का दिया हुक्का (नरगोई) उनके बार-बार कहने पर ले तो लिया पर ओठों से लगा कर ही रख रख दिया और ऐसे विनम्र और विनीत भाव से हाथ जोड़ कर बैठे कि पास के लोग देखकर विस्मित रह गये । ”

“मित्रों का मान भरा प्रेम, अधिकारी और प्रतिष्ठित लोगों का आदर और पूज्यबुद्धि, यात्री और सत्यान्वेषकों की भीड़, सर्वत्र प्रकट हुआ सेवा और भक्ति का भाव, चेहरे पर ईश्वरीय पूर्णता का दिव्य तेज,

आज्ञा का महत्त्व, उत्साही भक्तों की इतनी संख्या, यह सब इस बात के प्रमाण थे कि वास्तव में बहाउल्लाह कैदी नहीं थे बल्कि राजाओं के भी राजा थे। दो स्वेच्छाचारी शक्ति-संपन्न सम्राट् उनके विरोधी थे। उनके कारागार में रहते भी यह महापुरुष उन्हीं सम्राटों से ऐसे रोब से और दबाव से बातचीत या पत्र व्यवहार करते जैसे बादशाह अपनी प्रजा से। इसके बाद कठोर आज्ञाओं के होते हुए भी वह बाहजी में राजा के समान रहे। प्रायः वह कहा करते 'इतना दुःखपूर्ण कारागार निश्चय ही अदन के स्वर्ग में बदल गया है।' "

"सचमुच, जब से संसार बना है, ऐसी बात देखने में कभी नहीं आई।"

बाहजी में उनका जीवन

पहले वर्षों के कष्ट-भोग से उन्होंने यह सिद्ध करके दिखाया कि मनुष्य दरिद्रता और अपमान की दशा में किस प्रकार ईश्वरीय प्रकाश को चमका सकता है, और आगे चलकर सम्मान तथा प्रभाव की अवस्था में उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया कि ऐसी दशा में भी मनुष्य ईश्वरीय प्रकाश को किस प्रकार अपने साथ लिये रह सकता है।

सहस्रों की संख्या में भक्त लोग आते और बहाउल्लाह के आगे भेंटें चढ़ाते थे। इसमें एकत्र हुआ धन इन्हीं की इच्छा से खर्च किया जाता था। यद्यपि बाहजी का जीवन सचमुच एक शाही ठाट का जीवन था तो भी यह बात मन में नहीं आ सकती कि इन दिनों में भी उन्होंने सांसारिक ऐश्वर्य दिखाने या अपव्यय करने की चेष्टा की। इस ईश्वरीय महापुरुष ने अपना और अपने परिवार का जीवन बहुत ही सादा बनाये रखा और इस धन में से भोग

सामग्री के लिये कुछ खर्च न किया जाता था। उनके घर के समीप भक्तों ने एक बहुत सुन्दर बाग लगाया था, जिसका नाम 'रिज़वान' रखा गया। इस बाग में बहाउल्लाह प्रायः कई कई दिन रहा करते और इसमें बनी छोटी सी झोपड़ी में रातें भी काट लिया करते थे। कभी कभी खेतों में दूर तक चले जाते। अक्का और हैफ़ा में भी कई बार आया जाया करते और कारमल के पहाड़ पर उनके तंबू भी लगाये जाते थे जैसा कि अक्का के कारावास के दिनों में वह कहा करते थे। उनका समय अधिकतर प्रार्थना और ध्यान में, पवित्र पुस्तकें लिखने में, तख्तियां प्रकाशित करने में (revealing Tablets) और मित्रों को आध्यात्मिक शिक्षा देने में व्यतीत हुआ करता था। इस महान् कार्य को पूरा करने में उन्हें स्वतन्त्र तथा निर्बाध बनाये रखने के अभिप्राय से अब्दुल-बहा ने उनके बाकी सब काम अपने ऊपर ले लिये थे। यहां तक कि मुल्लाओं, कवियों तथा सरकारी आदमियों से मिलना जुलना भी अब्दुल-बहा का ही काम था। यह सब लोग अब्दुल-बहा से मिलकर बहुत प्रसन्न होते और उनकी बातों और व्याख्यानों से सर्वथा सन्तुष्ट होकर जाते। यद्यपि बहाउल्लाह के दर्शन वह न कर पाते तो भी उनके पुत्र अब्दुल-बहा के प्रेमपूर्ण व्यवहार से ही प्रसन्न होकर वह लोग पिता के प्रति हृदय में भक्ति और प्रेम धारण करके जाते थे, और पुत्र की योग्यता से ही पिता की योग्यता का अनुमान कर लेते थे।

१८९० में कैंब्रिज विश्वविद्यालय के प्राच्यभाषाओं के अध्यापक स्वर्गीय ऐडवर्ड जी० ब्रौन बाहजी में बहाउल्लाह से मिले थे। इन्होंने उनके संबन्ध में यों लिखा है :—

"मेरा पथ दर्शक थोड़ी देर ठहरा और मैंने बूट उतार लिये। फिर वह झट से हाथ का संकेत देकर उसने परदा हटाया और जैसा ही मैंने प्रवेश किया उसने परदा गिरा दिया मैंने अपने आप को एक विशाल कमरे में पाया। मेरे सामने कमरे के ऊपर के भाग में एक छोटा मसनद था और द्वार के समीप दो तीन कुर्सियाँ पड़ी थीं। मेरे मन में यों ही संदेह सा हो रहा था कि मैं कहाँ और किससे मिलने जा रहा हूँ, क्योंकि मुझे पूरा परिचय नहीं दिया गया था। दो या तीन क्षण बीते होंगे कि मेरा हृदय भय और विस्मय से धड़कने लगा। मुझे अच्छी तरह ज्ञान हो गया कि कमरा ख़ाली नहीं है। मैंने कमरे के एक कोने में दीवार के साथ मसनद पर बैठे हुए एक अद्भुत और आदरणीय व्यक्ति को देखा। उनके मस्तक पर एक उंची और विचित्र बनावट वाली टोपीयां जिसे दरवेश (साधु लोग) ताज कहते हैं। इस टोपी के इर्द गिर्द एक छोटी सी सफेद पगड़ी लपेटी हुई थी। उस चेहरे को, जिस पर मेरी दृष्टि पड़ रही थी, मैं कभी भूल नहीं सकता, यद्यपि उसका वर्णन करना मेरी शक्ति से बाहर है। वह चमकती हुई आँखें जो मनुष्य के हृदय के भाव तक को देख सकती थीं; प्रशस्त ललाट जिससे शक्ति और तेज टपकता था; और उसके चेहरे तथा माथे पर की झुर्रियाँ जिस अवस्था को प्रकट कर रही थीं, उसे उनके काले बाल और कमर तक लम्बी और खूब घनी दाढ़ी भी उसी को झुटलाते थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि मैं किसके सामने खड़ा था। मेरा सिर उस व्यक्ति के आगे झुका हुआ था जो लोगों की उस भक्ति और प्रेममय सम्मान का पात्र था जिसके लिए राजा इश्क करते हैं और महाराजा भी तरसते हैं। एक मधुर पर गम्भीर ध्वनि ने मुझे बैठने को आज्ञा दी और कहा कि ईश्वर का धन्यवाद है कि तुम्हें प्राप्त हुआ। तुम एक कैदी और निर्वासित से मिलने आये हो।

हम संसार भर के कल्याण और मनुष्यमात्र के सुख के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते, तो भी लोग समझते हैं कि हम झगड़े और बगावत फैलाते हैं, इस कारण कारावास और निर्वासन के अधिकारी हैं। सब जातियाँ एक ईश्वर पर विश्वास लाएँ, सब लोग एक दूसरे को भाई समझें मनुष्यमात्र में एकता और प्रेम के बन्धन दृढ़ हो जाएँ, मतमतान्तरों के झगड़े रुक जाएँ, जातियों का भेदभाव दूर हो जाए, भला इसमें क्या हानि है ? और यह अवश्य हो कर रहेगा। यह व्यर्थ के झगड़े-बखेड़े और यह विनाशकारी युद्ध अवश्य बन्द होंगे और पूर्ण शान्ति संसार में स्थापित होगी। क्या योरुप में यह बात आप लोगों को अभीष्ट नहीं ? क्या मसीह ने यही भविष्यवाणी नहीं की थी ? तो भी तुम्हारे राजा और शासक अपने कोष को मानव जाति का सत्यानाश करने में खर्च कर रहे हैं और उसके कल्याण या सुख के लिए नहीं। यह झगड़े और यह रक्तपात अवश्य रुकना चाहिये। सभी मनुष्य एक सम्बन्ध और एक परिवार में आने चाहिएँ। मनुष्य को इस बात का गर्व न करना चाहिये वह अपनी जाति या देश भक्त है, बलिक उसको इस बात का गर्व होना चाहिए कि वह प्राणिमात्र का हित चाहता है।"

"जहाँ तक याद आता है मैंने यही शब्द और इसी प्रकार के और भी बहुत से, बहाउल्लाह के मुख से सुने थे। जो लोग इन शब्दों को पढ़ सकते हैं, अपने हृदय में विचार करें कि क्या ऐसे सिद्धान्तों का प्रचारक बन्धन या प्राणदण्ड के योग्य है और क्या ऐसे आदमी को फाँसी पर लटका देने से संसार का हित है या हानि ?" (Introduction to "A Traveller's Narrative", Episode of the Bab, p. 39)

स्वर्गारोहण

ऐसी सादगी और शान्ति से म० बहाउल्लाह ने अपने जीवन के अन्तिम दिन बिताये और १८९२ के मई महीने की २९ वीं तिथि को ज्वर के प्रकोप से उनका देहान्त हो गया इस समय उनकी उमर ७५ वर्ष की थी। उन्होंने जो अन्तिम लेख प्रकाशित किये थे उनमें अपना वसीयतनामा भी अपने हस्ताक्षरों सहित स्वयं लिखकर उस पर अपनी मोहर लगा दी थी। उनकी मृत्यु के नौ दिन बाद उनके बड़े बेटे ने कुछ मित्रों और समग्र परिवार के सामने इस निर्वाण पत्र (Will) को खोल कर पढ़ा। यह लेख छोटा पर असाधारण था। इस वसीयत में उन्होंने अब्दुल-बहा को अपना प्रतिनिधि और अपनी शिक्षा का प्रमुख नेता निर्धारित किया और सब अनुयायिओं को आदेश दिया कि वह सब इसी की आज्ञा का पालन करें। इस प्रबन्ध से उन्होंने अपने संप्रदाय में फ़िरकाबंदी और भेदभाव को रोका और एकसा बनाये रखने पर जोर दिया।

बहाउल्लाह का अवतार होना

बहाउल्लाह के ईश्वरावतार होने की बात को स्पष्ट करना अत्यावश्यक है। दूसरे अवतारों के समान उनके वचन भी दो भागों में बाँटे जा सकते है। एक भाग तो वह शब्द या लेख हैं जो उन्होंने ईश्वरीय संदेश के रुप में लोगों को दिये। दूसरा भाग उनके वह शब्द है जिनका अभिप्राय है कि ईश्वर स्वयं कह रहा है।

पुस्तक 'इकान' में वह लिखते हैं—

ईश्वरीय ज्योति स्रोतों से उदय होते सूर्यों को हमने दो स्थान नियुक्त किये हैं। एक स्थान है अनिवार्य एकता का जैसे कुरान में आज्ञा है। हम इन दोनों में भेद नहीं कर सकते।' (*Quran S. 2*).

"दूसरा स्थान भेद का है और इस सृष्टि और उसकी मर्यादाओं से सम्बन्ध रखता है। इस स्थान में प्रत्येक के लिये व्यक्तित्व, एक नियत हुआ कर्तव्य, पूर्व से निर्माण हुआ प्रभुत्व, और कुछ सीमाएँ निर्धारित होती हैं। प्रत्येक को एक विशेष नाम से पुकारा जाता है, विशेष गुणों से उसकी पहचान होती है कोई खास कर्तव्य उसे सौंपा जाता है और एक नियत किये हुए ध्येय को वह सर करता है। जैसा कि कहा गया है, 'यह ईश्वरीय दूत हैं। हमने कुछ एक को दूसरों से विशेषता दी है। कइयों के साथ ईश्वर ने स्वयं बातचीत की और कइयों के दर्जे को ऊँचा बनाया। हमने मेरी के पुत्र जेसस (ईसा) को स्पष्ट चिन्ह दिये और पवित्र आत्मा से उसकी शक्ति बढ़ाई'।" *(Quran S. 2)*

"एवं एकता, और निर्मोह के दृष्टि बिन्दु से पवित्रमहत्ता, ईश्वरत्व, एकता और परिपूर्ण देवभाव आदि गुण उन सृष्टि के सार-भूत उच्च सत्ताधारियों को दिये जाते हैं क्योंकि वह सब ईश्वरावतार के सिंहासन पर विराजमान हैं अर्थात् ईश्वर का सौन्दर्य उन्हीं के सौन्दर्य से अभिव्यक्त है। इसलिये परमात्मा के वचन इनके मुखों से सुने जाते हैं।"

"दूसरे स्थान में जो कि भेद, पार्थक्य (परिमितता ससीमता) सांसारिक या लौकिक अवस्थाओं और संकेतों का है, वह अपने आप को सच्चा सेवक और नितान्त छोटे रूप में प्रकट करते हैं। जैसा कि कहा है 'निश्चय ही मैं ईश्वर का सेवक हूँ' और 'सचमुच मैं तुम्हारी तरह ही केवल मनुष्य हूँ'।" *(Quran S. 41)*

"यदि पूर्णावतारों से यह बात सुनी जाय 'निश्चय ही मैं ईश्वर हूँ' तो यह बात निःसंदेह सच है, क्योंकि उन्हीं की ज्योति, गुणों और नामों के द्वारा ईश्वर की ज्योति, उसके गुण और नाम संसार में प्रकट होते हैं। इस प्रकार परमात्मा ने कहा "वह तीर तेरे न थे बल्कि प्रभु

के थे" (कुरान ८ : १७) और फिर पुकारता है "जो लोग तुम्हारी तरफ वफ़ादारी दर्शाते हैं, वह प्रभु की तरफ दर्शाते हैं" (कुरान ४८:१०)

"इसी प्रकार यदि अवतारों में से कोई कहे "मैं ईश्वर का दूत हूँ" तो यह बात भी दृढ़ और स्पष्ट रूप से संगत हो जाती है फिर यदि कहते हैं "मोहम्मद तुम्हारे दरम्यान किसी के पिता नहीं बल्कि ईश्वर के दूत हैं" तो इसी के प्रमाणित यह सब उस पूजनीय नृप—प्रभु के दूत हैं जो समय के फेरधेर के आधीन नहीं, और जब वह सब के सब यूं कहें "मैं ईश्वरावतारों की मोहर हूँ" तो इसमें रती भर भी संशय नहीं, क्योंकि वास्तव में वह सब एक ही मनुष्य हैं—एक आत्मा, एक शरीर, एक शक्ति और एक अवतार, वह सब अनादि व अनंत, प्रथम और अंतिम, प्रत्यक्ष और अदृष्य शक्ति के स्वरूप हैं, जो वह सब कहने लगें कि "हम सब उसके सेवक हैं" (कुरान २२.४०) तो यह भी नग्न सत्य है। क्योंकि बाह्य रूप से वह परम सेवाभाव को लेकर ही प्रकट हुए हैं। इस प्रकार का सेवाभाव साथ लेकर संसार में प्रकट होने का सामर्थ्य दूसरे किसी को नहीं।"

"इस प्रकार जब इस सृष्टि की सार-भूत अलौकिक सत्ताएं अनश्वर आत्मभाव के समुद्र में गोता लगाती थीं या जब आदर्श राजत्व के प्रकाशमय उन्नत शिखर पर आरोहण करती थीं। तब उन का दावा यह था कि उनकी घोषणा एकत्व की आवाज़ है और ईश्वर की आज्ञा। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह बात स्पष्ट प्रतीत हो जायगी कि उन्होंने इस परम महिमामय स्थिति में भी उस परिपूर्ण सत्ता और के सामने अपनी नितान्त विनम्रता और तुच्छता भी इस प्रकार प्रकट की है। मानो वह उसके सामने सर्वथा सत्ताहीन हैं और उस न्याय गृह में अपना नाम लेना भी दोष समझा क्योंकि ऐसी दरबार में अपना नाम लेना भी

स्वतंत्र जीवन और हठ करने के समान हैं, उन महात्माओं की राय में जो वहां तक पहोंच सके हैं यह विचार भी अक्षम्य पाप है, तो फिर कितना ही अधिक पाप होता कि उस न्यायगृह में और कुछ कहा जाता अथवा मनुष्य का हृदय, मन या उसकी आत्मा या वाणी प्रेमप्रिय के अतिरिक्त किसी अन्य से दिल लगाते, अथवा उसकी आखें कोई दूसरे को ओर देखतीं या उसके कान प्रभु आज्ञा से अचेत हो कर किसी और का स्वर श्रवण करते अथवा उसके पांव प्रभु का मार्ग छोड़ कर कोई अन्य मार्ग लेते।"

"इस समय ईश्वर की सुवास फैली हुई है, और उसकी शक्ति सब पदार्थों में भरी हुई हैं, उसकी कृपा इस हद तक है कि लेखनी और वाणी उसका वर्णन करने के अशक्त हैं। इस पद्धि द्वारा वह ईश्वरीय घोषणा कर सकते हैं और प्रभु-दूत होते हुए उन्होंने अपने आपको प्रभु के संदेशवाहक कहा है प्रत्येक समय पर उन्होंने ऐसी बात कही है जो समय के अनुकुल हो और यह कहा है कि "यह वाक्य हमारे हैं" वह विचार जो ईश्वरावतार से लेकर सृष्टि की समस्याओं पर अथवा प्रभुत्व से दुन्यवि जीवन तक प्रकाश डालें।"

"इस लिये वह (विशेष सत्ताएं) अपने विषय में जो कुछ भी अवतार, देवता, पैगंबर, देव-दूत, प्रतिनिधि, इमाम या सेवक होने की घोषणा करती हैं वह निःसन्देह सत्य है। अतएवं यह विचार जो हमने अपने की पुष्टि में प्रगट किये उन पर ध्यानपूर्वक सोचना चाहिये, ताकि अदष्य के अवतारों और पवित्रता के केन्द्रो के वाक्य आत्मा को न उलझायें और मन को व्याकुल न करें।" (*Book of Iqan pp. 125-129*).

जब बहाउल्लाह मनुष्य के रूप में भाषण करते हैं तब वह

अपने आपको जिस स्थान का अधिकारी प्रकट करते हैं वह है नितान्त विनम्रता का, "ईश्वर में अपनी सत्ता के लय" का। मनुष्य रूप में प्रकट हुए ईश्वरीय ज्योति वा अवतार को उसका आत्म त्याग और शक्तियों की पूर्णता ही दूसरे मनुष्यों से पृथक् करती है। सभी अवस्थाओं में वह यह कह सकता है, जैसा कि जीसस ने गैथसीमेन के बगीचे (Garden of Gethsemane) में कहा था "तो भी मेरी इच्छा नहीं बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।" शाह को एक पत्र में बहाउल्लाह यों लिखते हैं:—

"ऐ बादशाह निश्चय ही मैं एक साधारण मनुष्य के समान अपनी चारपाई पर पड़ा ऊँघ रहा था। एकाएक ईश्वरीय महिमा का प्रकाश मुझ पर पड़ा। उसने मुझे वास्तविक ज्ञान सिखाया। यह वस्तु मेरी अपनी नहीं बल्कि उस सर्व शक्तिमान और सर्वज्ञ एक (अर्थात् ईश्वर) से मुझे प्राप्त हुई है। पृथ्वी और आकाश के भीतर इस तत्व (ज्ञान) को प्रकाशित कर देने की आज्ञा उसी ने मुझ को दी है। इस आज्ञा के पालन करने में मुझ पर वह विपत्तियाँ आई हैं जिन्हें देखकर जानने वालों की आंखें आँसू बहाये बिना नहीं रही। मनुष्य जिन विद्याओं को जानते हैं उन्हें न मैंने सीखा है और न मैं कभी किसी विद्यालय में प्रविष्ट ही हुआ हूँ। यह एक पत्ता है जिसे तेरे सर्वशक्तिमान् स्वामी का इच्छा-समीर हिलाडुला रहा है। क्या यह पत्ता आंधी के तेज़ झोंकों में टिका रह सकता है? कभी नहीं। यह तो जिधर वह झोंके इसे घुमाएंगे उधर ही घूमेगा, क्योंकि अविनाशी के सामने नाशवान की कोई स्थिति नहीं। उसकी निश्चित आज्ञा हो चुकी है जिसने मुझे सब देशों में उसका प्रकाश प्रकट करने के लिए प्रेरित किया है। मैं निश्चय ही उसकी आज्ञा के सामने सर्व-परवश हूँ। तेरे स्वामी का दयालु

और क्षमाशील हाथ मुझे घुमा रहा है। क्या किसी मनुष्य की यह सामर्थ्य हो सकती है कि वह अपनी ओर से ऐसी बातें कहे जिन्हें सुनते ही सब छोटे बड़े उस पर अत्याचार करें ? उस प्रभु की कसम जिसने लेखनी को शाश्वत रहस्य सिखाये हैं, सिवाय उसके कोई नहीं कह सकता जिसे ईश्वर ने शक्ति प्रदान की है और कोई ऐसा नहीं कर सकता।" (*Episode of the Bab, p. 395*).

जिस प्रकार मसीह ने अपने शिष्यों के पाँव धोये थे इसी प्रकार बहाउल्लाह भी कई बार अपने शिष्यों के लिये भोजन बनाते और दूसरे हल्के काम किया करते थे। वह सेवकों के सेवक थे और सेवा करने में ही प्रसन्न रहते थे। आवश्यकता के समय भूमि पर ही विना बिस्तर के सो जाते थे, रूखी सूखी रोटी पर भी निर्वाह कर लेते और कभी कभी कुछ न खाने पर भी - जिसे वह प्रायः 'ईश्वरीय पुष्टि' कहा करते थे-रह लेते थे। प्रकृति, मानवस्वभाव, और विशेष कर सन्तों, नबियों, और धर्म पर बलि होने वालों (शहीदों) का पूर्ण आदर करने में उनकी बड़ी ही विनम्रता दिखाई देती थी। छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी सभी वस्तुओं को वह ईश्वरीय महिमा की दृष्टि से देखा करते थे। उनका मानव देह ईश्वर ने इसलिये बनाया कि वह ईश्वरीय आदेशों का व्याख्यानों और लेखों द्वारा प्रकाश करें। उन्होंने ऐसी असाधारण कठिनाइयों और संकटों की अवस्था अपनी इच्छा से ग्रहण नहीं की थी। जैसे मसीह ने कहा है-"हे पिता, अगर संभव हो सकता हो तो यह प्याला (विषम संकट) मुझसे टल जाये।" इसी प्रकार बहाउल्लाह ने कहा है—"यदि कोई और उपदेशक या वक्ता मिल सकता तो हम अपने आपको लोगों की निन्दा, घृणा और अपमान का पात्र न बनाते"। परन्तु

ईश्वरीय आज्ञा स्पष्ट और प्रत्यक्ष थी, जिसका उन्होंने पालन किया। ईश्वर की इच्छा उनकी इच्छा हो गई और ईश्वर की प्रसन्नता ही उनकी प्रसन्नता। बड़ी दृढ़ता से उन्होंने घोषणा की:–

"मैं सच कहता हूँ कि ईश्वरीय मार्ग पर चलते समय जो कुछ हम पर बीतता है वह आत्मा को अतिशय प्रिय और मन को अभीष्ट है। उसके मार्ग में हलाहल विष मधुर और उसके नाम पर अतिशय पीड़ा भी शीतल शान्तिप्रद जल के समान है।"

कई अवसरों पर, जैसा कि हमने लिखा है, बहाउल्लाह "देव भाव के स्थान से" भाषण करते हैं। इन भाषणों में उनकी मानव व्यक्ति इतनी गौण हो जाती है कि वह बिल्कुल प्रतीत ही नहीं होती। उनके द्वारा ईश्वर अपने देह धारियों से वार्तालाप करता है, उनके लिए अपना प्रेम प्रकट करता है, अपने गुणों की उन्हें शिक्षा देता है, अपनी इच्छा को उन पर प्रकट करता है, उनके पथप्रदर्शन के लिए उन्हें नियम बनाकर देता है, उन्हें प्रेरणा करता है कि वह उससे प्रेम करें और उसके अधीन और सेवक बन कर रहें।

बहाउल्लाह के लेखों में इस प्रकार के भाषणों का ढंग स्थान-स्थान पर बदल जाता है। कभी तो मनुष्य भाषण करता हुआ प्रतीत होता है, और फिर झट ऐसा मालूम होने लग जाता है कि स्वयं ईश्वर ही वार्तालाप कर रहा है। मनुष्य के समान भाषण करते समय भी बहाउल्लाह इस प्रकार बोलते हैं जैसे ईश्वरीय दूत बोल रहा हो और ईश्वरीय इच्छा को पूरा करने का प्रत्यक्ष उदाहरण लोगों के सामने बन रहा हो। उनके संम्पूर्ण जीवन को पवित्र आत्मा से प्रेरणा मिलती है। इसलिए जीवन और शिक्षाओं में मानव तथा ईश्वरीन लक्षणों का भेद प्रकट करने के

लिए स्पष्ट रेखा खींची नहीं जा सकती। ईश्वर उन्हे कहता है:—

"कह दे कि 'मेरे स्वरूप में उसके स्वरूप, मेरे सौन्दर्य में उसके सौन्दर्य, मेरी सत्ता में उसकी सत्ता, मेरी आत्मा में उसकी आत्मा, मेरे संचरण में उसके संचरण, मेरी इच्छा में उसकी इच्छा, मेरी लेखनी में उसकी प्रशंसनीय उत्तम लेखनी के सिवा और कुछ नहीं दीखता।"

"कह दे कि 'मेरी आत्मा में सत्य के और मुझ में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं दीखता।' " *(Saratu'l-Haykal,p. 30)*

उसका मिशन (उद्देश्य)

महात्मा बहाउल्लाह का उद्देश्य संसार भर के मानव समाज में एकता पैदा करता है अर्थात् मनुष्यमात्र को एक ईश्वर की ओर आकृष्ट करके उनमें भेदभाव मिटाना है। उन्होंने कहा है:—

"ज्ञान रूपी वृक्ष का सबसे उमदा फल यही वाणी है: तुम सब एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा के पत्ते हो। मनुष्य इस बात का गर्व न करे कि वह अपने देश से प्रेम करता है। इसको तो इसबात का गर्व करना चाहिये कि वह मनुष्य मात्र से प्रेम करता है।"

पूर्ववर्ती नबियों ने एक ऐसा समय आने की सूचना दी है जब कि संसार भर में शांति और मनुष्यमात्र में सद्भाव स्थापित होगा और इसी समय को शीघ्र लाने के लिए उन्होंने अपना जीवन तक दे दिया है। पर उन्होंने यह बात भी स्पष्ट रूप से कही है कि ऐसा शुभ समय ईश्वरावतार के आगमन के बाद के ही दिनों में आएगा जब कि दुर्जनों को दण्ड और साधुओं को पुरस्कार दिया जाएगा। जरस्थोस्त ने भविष्यवाणी की थी कि संसारभर के रक्षक शाह बहराम के आगमन से पूर्व तीन हजार साल तो अत्याचार का राज्य रहेगा, फिर वह आकर अहरीमन या पाप-शक्ति को दूर करेंगे और न्याय तथा शान्ति का राज्य स्थापित करेंगे।

मूसा ने कहा कि ईश्वरीय अवतार "देवों के प्रभु" के आगमन से पूर्व 'इसराइल' के बच्चे देर तक निर्वासित रहेंगे, सताये जायेंगे और दण्डित होंगे, पर वह ईश्वरीव अवतार उन्हें सब जातियों से एकत्र करेगा और आततायिओं का विध्वंस करके पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा।

मसीह ने कहा था "मत ख्याल करो कि मैं संसार में शांति लेकर आया हूँ। मैं शांति लेकर नहीं, खड्ग लेकर आया हूँ।" (Matt. x, 34.) और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि लड़ाइयों और लड़ाइयों की किंवदन्तियों तथा अत्याचार और यातनाओं के बाद जो कि सच्चे पुत्र के आगमन से पूर्व देर तक जारी रहेंगे वह बेटा 'अपने बाप के ऐश्वर्य में प्रविष्ट होगा।'

मोहम्मद साहिब ने कहा है कि बुरे कामों के सबब ईसाइयों और यहूदियों में परस्पर शत्रुता और घृणा के भाव उत्पन्न हो गये हैं। यह दशा निर्णय के दिन तक बराबर जारी रहेगी। जब वह फिर आयेगा तो इन सबको उचित दण्ड देगा।

इधर बहाउल्लाह इस बात की घोषणा करते हैं कि जिसके लिए उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ हो चुकी हैं, वह मैं ही हूँ, वही ईश्वरावतार जिसके शासनकाल में सच्ची शांति स्थापित होगी। यह कथन बड़ा अद्भुत और अनुपम है। पर समय के लक्षणों और बड़े बड़े पैगंबरों की भविष्यवाणियों से इस उक्ति का विचित्र साम्य घटित होता है। बहाउल्लाह ने अतुलनीय स्पष्टता से संसार भर के मनुष्यों में एकता और शांति स्थापित करने के बड़े ही अद्वितिय साधन प्रकट किये हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि उनके आगमन से लेकर अब तक लड़ाइयाँ और उपद्रव बहुत बड़ी मात्रा में बराबर होते आरहे हैं, पर यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि सब नबियों ने कहा था कि उसके आगमन से थोड़ा और समय ऐसी भयावनी घटनाएँ होंगी, इसलिए इन उपद्रवों से उनके इस कथन की पुष्टि होती है कि वह ईश्वरावतार आने वाला नहीं, वास्तव में आचुका है। मसीह की बताई मिसाल के अनुसार—कि अंगूरों के बाग का स्वामी पहले दुर्जन किसानों का अवश्य सत्यानाश करेगा और फिर अंगूरी बाग उन के हवाले करेगा जो मौसमी फल उसे अर्पित करेंगे। क्या इसका भाव यह नहीं कि उस महापुरुषके आने पर भयंकर नाश स्वेच्छाचारी शासकों, असहिष्णु और अन्ध-विश्वासी पादरियों और मुल्लाओं तथा निर्दय नेताओं की प्रतीक्षा कर रहा है जो दुर्जन किसानों की भाँति पृथ्वी पर सदियों से अन्याय का राज्य और इसके फलों का बुरा उपयोग करते आरहे हैं।

अभी भयानक घटनाएं और अनहोनी आपत्तियाँ पृथ्वी पर और आयेंगी, पर बहाउल्लाह हमें विश्वास दिलाते हैं कि यह व्यर्थ के लड़ाई झगड़े और सत्यानाशी युद्ध शीघ्र ही हट जायेंगे और पूर्ण शांति के दिन आयेंगे। झगड़े और लड़ाईयाँ अपने विनाशरूपी दुष्परिणामों के कारण इतने असह्य हो चुके हैं कि मानव समाज या तो इनसे छुटकारा पायेगा या नष्ट हो जायगा।

"समय पूर्ण हो गया है और मुक्ति देनेवाला भी साथ ही अवतीर्ण हो चुका है।"

उनके लेख

उनके लेख बड़े गम्भीर और धारावाही हैं। उनमें मानव जीवन के सभी अङ्गों पर विचार किया गया है। व्यक्तिगत और जातीय जीवन, आध्यात्मिक और भौतिक पदार्थ, प्राचीन और आधुनिक धार्मिक ग्रन्थों के तत्त्व, दूर और समीप में होने वाली घटनाओं पर धर्मावतारों की सी भविष्यवाणी आदि सभी विषयों से उनका सम्बन्ध है। उनके ज्ञान की परिपूर्ण धारा बड़ी ही विस्मयजनक है। वह अपने प्रश्न करनेवालों और पत्र-लेखकों के सामने अनेक धार्मिक पुस्तकों के, जिन्हें वह जानते होते थे, ऐसे उद्धरण निकाल लेते और उनकी ऐसी उत्तम व्याख्या करते और ऐसे प्रबल प्रमाणों से अपने सिद्धांत को सुदृढ़ करते कि सुनने या पढ़नेवाले अवाक् रह जाते और उन्हें उनकी बातें माननी ही पड़ती थीं यद्यपि उन्हें इन विविध धर्मों की पुस्तकों का ज्ञान प्राप्त करने के उपयुक्त साधन भी उपलब्ध न थे! उन्होंने अपनी 'भेड़िये के पुत्र को पत्र' नामी पुस्तक में लिखा है कि उनको बाब की पुस्तकें पढ़ने के लिये कभी समय या अवसर प्राप्त नहीं हुआ तो भी उनके लेखों से ऐसा प्रतीत होता है कि वह बाब के प्रकाशित लेखों को अच्छी तरह समझते थे और उनको उन्हें परिपूर्ण ज्ञान था। (बाब ने स्वयं लिखा है कि उनकी प्रकाशित पुस्तक 'बयान' उसी ईश्वरावतार की प्रेरणा का फल है, और उसी के ज्ञान सागर से निकली एक धारा है।) सिवाय प्रोफेसर ब्रोन के, जो १८९० में उनसे मिले और केवल चार बार २०-३० मिनट तक उनसे बातचीत करते रहे, और किसी भी उत्तम प्रणाली के शिक्षित पश्चिमी विद्वान् से उनकी कभी भेंट या बातचीत न हुई थी, तो भी उनके लेखों से ऐस

जान पड़ता है कि उन्हे पश्चिमी संसार की धार्मिक, नैतिक अथवा जातीय सभी प्रकार की समस्याओं का अद्भुत ज्ञान था। उनके शत्रु भी इस बात को स्वीकारते हैं कि विद्या और बुद्धि में उनकी तुलना कोई नहीं कर सकता था। बहुत देर तक कैद में पड़े रहने के सुप्रसिद्ध वृत्तान्त से यह बात निर्विवाद और निःसन्देह सिद्ध हो जाती है कि उनका यह ज्ञानरत्न भंडार, जो उनके लेखों से प्रकट होता है, बिना किसी अध्यापक अथवा पुस्तकों की सहायता के स्वच्छन्द रूप से अपने ही अन्दर के अध्यात्मिक भावनामय सागर से उपलब्ध हुआ था।❀

कभी वह साधारण बोलचाल की फ़ारसी भाषा में, जिसमें अरबी के शब्द अधिक मिले रहते हैं, अपने लेख लिखते और कभी, जब कि जरथोस्ती विद्वानों से लिखा पढ़ी करनी होती तो साहित्यमय विशुद्ध फारसी में लिखा करते थे। अरबी भाषा में भी वह वैसी ही प्रौढ़ता से लिख सकते थे, कभी साधारण बोलचाल की भाषा में और कभी कुरान की सी विशुद्ध भाषा में लिखा करते थे। इन दोनों विभिन्न भाषाओं के बोलने और लिखने में उनका ऐसा पूर्ण अधिकार होना बड़ी ही अद्भुत बात

❀जब अब्दुल-बहा से यह प्रश्न किया गया कि क्या बहाउल्लाह ने पाश्चात्य देशों की पुस्तकों का अध्यायन करके अपने विचारों को उनके अनुसार स्थिर किया है तो इन्होंने कहा कि बहाउल्लाह की पुस्तकें साठ वर्ष पहले लिखी और छापी गई थीं और इनमें वह सिद्धान्त या नियम लिखे गये थे जो अब पश्चिम में इस प्रकार प्रसृत और सर्वप्रिय हो रहे हैं। परन्तु उस समय ऐसे विचार न कहीं छपे थे और न ही पश्चिम के लोगों के मन में ही आये थे।

थी क्योंकि उन्होंने पढ़ना लिखना सीखा तो बिलकुल था ही नहीं। उनके कुछ लेख तो ऐसी साधारण भाषा में लिखे गये हैं जिनके पढ़ने में नवीन आगन्तुक और यहां तक कि अति मूर्ख आदमी भी भूल नहीं कर सकता। कुछ लेख ऐसे भी हैं जिनमें कविता के रहस्य, पूर्ण तत्त्वज्ञान, मुसलमानी, जरथोस्ती तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों के गूढ़ भाव कूट कूट कर भर दिये हैं, जिन का रसास्वाद कवि, तत्त्वज्ञानी और प्रखर विद्वान् ही ले सकते हैं। कुछ लेख आध्यात्मिक जीवन की उच्चतर कक्षाओं से भी सम्बन्ध रखते हैं और उनका यथार्थ बोध प्राप्त करना उन्हीं लोगों का काम है, जो आध्यात्मिक शिक्षा की आरम्भिक श्रेणियों से उत्तीर्ण हो चुके हैं। उनके लेख एक ऐसे सुन्दर मेज के समान हैं जिस पर सभी प्रकार के भोज्य पदार्थ बड़ी उत्तम रीति से सजाये गये हैं, और जिन से प्रत्येक बुद्धिमान और सत्यान्वेषी पुरुष की प्रयोजन सिद्धि और तृप्ति पूर्ण रूप से हो सकती है।

इसलिये ही उनके धर्म का प्रभाव विद्वानों, बहुश्रुतों, आध्यात्मिक कवियों और सुप्रसिद्ध लेखकों पर पड़ा है। सूफी (वेदान्ती) और दूसरे संप्रदायों के कई एक प्रमुख व्यक्ति तथा कुछ एक राजनैतिक मन्त्री लोग भी, जो अपने समय के प्रसिद्ध लेखक थे, उनके लेखों पर मुग्ध थे, क्योंकि अर्थ गाम्भीर्य और पदमाधुरी में उनके लेख दूसरे लेखकों की अपेक्षा बहुत बढ़ चढ़ कर थे।

बहाई आत्मा (वा भावना)

अपने कारावास के दूरवर्ती स्थान 'अका' से बहाउल्लाह ने अपनी जन्मभूमि ईरान के लोगों के दिलों को अच्छी तरह हिला

दिया, न सिर्फ ईरान को ही, बल्कि सारे संसार को हिला दिया और हिला रहे हैं। जो भावना उन को और उनके साथियों को जीवन दे रही थी, वह यद्यपि बड़ी सौम्य, विनम्र तथा सहिष्णु थी तो भी वह एक ऐसा बल था जिसमें विचित्र तेज और अभूतपूर्व शक्ति भरी थी। उसने असम्भव को भी सब के सामने सम्भव कर दिखाया। मनुष्य के स्वभाव तक को उसने पलट दिया। जिन्होंने उसकी शरण ली उनके जीवन में नवीनता आ गई। उनमें ऐसा प्रेम, विश्वास और उत्साह भर गया कि जिस की तुलना में सांसारिक सुख और दुःख अत्यन्त तुच्छ थे। वह लोग ईश्वर की भीति रहित अधीनता के बल से जीवन भर की लंबी यातनाओं और भयानक मृत्यु तक का भी बड़ी शान्ति से, नहीं नहीं बड़े आनन्द से, सामना करने को सदा उद्यत रहते थे।

सब से बड़ी अद्भुत बात यह थी कि उनके हृदय नये जीवन के आनन्द से इतने लबालब भरे रहते थे कि वहां अपने कष्ट-दाताओं के प्रति निन्दा अथवा वैर के भावों को रहने का स्थान ही न था। वह अपनी रक्षा के लिये बल प्रयोग कभी न करते थे और संकट में भी दैव को कोसने के स्थान में अपने आप को अत्यन्त भाग्यवान् समझते थे कि उन्हें ज्योतिमय नवीन अवतार को स्वीकार करने का और उसके सत्य को सिद्ध करने के लिये अपना जीवनोत्सर्ग करने या रुधिर बहाने का शुभ समय प्राप्त हुआ है। उनके हृदय अवश्य आनन्द के गीत गाते होंगे, क्योंकि उनकी यह पक्की धारणा थी कि सर्वशक्तिमान् अविनाशी और प्रियतम ब्रह्म ने मनुष्य के रूप में आकर उन्हें उपदेश दिया, उन्हें अपना सेवक और मित्र कहकर पुकारा, पृथ्वी पर अपना राज्य जमाने और लड़ाई झगड़ों से तंग आये संसार को शान्ति

का अमूल्य पाठ पढ़ाने के लिये वह स्वयं मानव देह में आया है।

यह भावना है, जिसे बहाउल्लाह ने लोगों में फैलाया था। उन्होंने अपना वही आदर्श बताया जिसकी महात्मा बाब पहले ही सूचना दे गये थे। धन्यवाद है इस महान् अग्रगामी के प्रशंसनीय कार्यों को, जिनके प्रताप से सहस्रों हृदय उनका स्वागत करने को तय्यार हो गये और सहस्रों आदमी भ्रम और पक्षपात को हटाकर विशुद्ध और उत्सुक हृदयों से सब के बताये ईश्वरावतार की प्रतीक्षा करने लग गये। विपत्तियां और बेड़ियाँ, संकटपूर्ण दशाएँ और प्रत्यक्ष अपमान, उनके सामने से ईश्वरीय सत्य को न छुपा सके, बल्कि इन अन्धकारपूर्ण अवस्थाओं ने उस सत्य के ज्योति को और भी अधिक उज्ज्वल बना दिया।

———

अध्याय चौथा

अब्दुल-बहा अर्थात् बहा का सेवक

"जब मेरी स्थिति का सागर सूख जाये और मेरे अवतार लेने का पुस्तक समाप्त हो जाये तो मेरी ओर जिसे ईश्वर ने भेजा और जो उसी प्राचीन वृक्ष की एक शाखा है, ध्यान लगाओ।"—बहाउल्लाह

जन्म और बचपन

अब्बास अफेंदी, जिन्हों बाद में अब्दुल-बहा (बहा का सेवक) की उपाधि धारण की थी, बहाउल्लाह के सब से बड़े बेटे थे। इनका जन्म १८४४ के मई महीने की २३ वीं तिथि को (मुताबिक बीरवार पांचवीं जुमादा (हिजरी सन् १२६०) अर्द्धरात्र के कुछ पहले हुआ था। यह ठीक वही दिन था जब कि बाब ने अपने कर्तव्य की घोषणा की थी।

यह अभी आठ ही वर्ष के थे जब इनके पिता जिनके यह परम भक्त बन चुके थे, तेहरान के कैदखाने में बन्द कर दिये गये। घर में लोग घुस आये, लूटमार करके परिवार को सर्वथा अकिंचन बना गये। अब्दुल-बहा ने स्वयं लिखा है कि किस प्रकार उन्हें एक दिन अपने परम प्रिय पितृदेव का दर्शन करने के लिये, जब कि वह दैनिक व्यायाम के निमित्त बाहर आये थे, जेल के आँगन में घुसने की आज्ञा मिली थी। उनका रूप बिलकुल बदल गया था। इतने दुर्बल और बीमार थे कि चल भी न सकते थे। उनकी दाढ़ी और सिर के बाल जटायें बन गये थे। लोहे के भारी पट्टे की रगड़ से गला घिस और सूज गया

था। बेड़ियों के बोझ से शरीर झुका हुआ था। उस समय के दृश्य से इस समझदार बालक हृत्पटल पर जो संस्कार अङ्कित हुए, वह उमर भर साथ ही रहे।

बगदाद में उनके निवास के प्रथम वर्ष अर्थात् बहाउल्लाह के अपने कर्तव्य की घोषणा करने के दिन से दस वर्ष पहले ही इस बुद्धिमान बालक ने, जो अभी नौ वर्ष का ही था, अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के बल से पहले ही यह बात समझ ली थी कि मेरे पितृदेव ईश्वर का वही प्रतिज्ञान रूप हैं जिसके अवतार की बाबी लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं। कोई साठ साल के बाद इसने फिर उस समय का वर्णन, जब कि उपर्युक्त विचार इसके हृदय में एकाएक जम गया था, यों किया है—

"मैं उस पूर्ण रूप (जमाले मुबारिक) का सेवक हूँ। बगदाद में मैं निरा बालक था। वहां पर उन्होंने मुझे उपदेश दिया और मैं उनपर श्रद्धा लाया। ज्योंही उनके शब्दों की गूंज मेरे कानों में पड़ी, मैं उनके पाँव पर गिर पड़ा। मैंने विनयपूर्वक उनसे प्रार्थना की कि वह अपने मार्ग में मेरे शरीर का रुधिर बलिदान के रूप में स्वीकार कर लें। बलिदान, यह शब्द मुझे बड़ा मीठा लगता है। इससे बढ़ कर मेरे लिये दूसरा कोई पुण्य-कार्य नहीं है। इससे बढ़कर मैं अपने लिये दूसरा कीर्तिकर काम नहीं समझता कि मेरा गला उनके लिये जंजीरों से जकड़ा जाये, उनके प्रेम में मेरे पांव में बेड़ियां पड़ें, और उनके काम में मेरा शरीर काटा जाये वा गहरे समुद्र में फेंक दिया जाये। अगर सचमुच हम उनके सच्चे प्रेमी हैं या सचमुच मैं उनका सच्चा सेवक हूँ, तो मुझे अपने जीवन, अपने सर्वस्व का उनके लिये उत्सर्ग कर देना चाहिये।" (*Diary of Mirza Ahmad Sohrab, January 1914.*)

तक़रीबन उसी समय इनके मित्र इन्हें 'ईश्वरीय रहस्य' के नाम से बुलाने लग गये थे। यह पदवी इन्हें अपने पिता से प्राप्त हुई थी और बग़दाद में रहते समय ही यह नाम सर्व साधारण में प्रसिद्ध हो चुका था। जब इनके पिता दो दर्ष के लिये वन में चले गये थे तो इनका दिल टूट गया था। तब इन का मनस्तोष बाब की प्रकाशित तख्तियों के लिखने और याद करने में हुआ करता था, और इनका अधिकांश समय ध्यान में बीतता था। जब अंत में पितृदेव लौट आये तो बालक के हृदय में आनन्द न समाता था।

यौवन

इस समय से लेकर आगे सदा यह अपने पिता के साथ ही रहे, जैसे यह उनके रक्षक हों। इस छोटी आयु में भी इन्होंने चातुरी और विवेक शक्ति का अद्भुत परिचय दिया। पिता के दर्शनों के लिये जो अगणित दर्शक आया करते थे, उन सब के साथ पहले यह स्वयं बातचीत कर लिया करते थे। यदि किसी दर्शक को बुद्धिमान् और सत्यान्वेषी पाते तो उसे पिता के पास ले जाते, नहीं तो किसी को भी भीतर जाकर पिता को कष्ट देने की आज्ञा न देते थे। कई मौकों पर यह दर्शकों के प्रश्नों का उत्तर देने और उन्हें कठिन समस्याओं की बातें समझाने में अपने पिता की बड़ी सहायता किया करते थे। उदाहरण के लिये, जब सूफ़ी नेता अलीशौक़त पाशा ने आकर पूछा कि "मैं एक छुपा हुआ रहस्य था" इस वाक्य का क्या आशय है, जो कि मुसलमानों के एक सुप्रसिद्ध आम्नाय में आता है तो आम्नाय बहा-उल्लाह ने अपने पुत्र 'ईश्वर के रहस्य' अब्बास को कहा कि तुम इस

पर व्याख्या लिखो। तब इन्होंने जब कि अभी १५ या १६ वर्ष की अवस्था में ही थे, झट उस वाक्य की ऐसी मर्मप्रकाशिनी और सरल व्याख्या लिखी कि पाशा चकित हो गया। इनकी यह व्याख्या बहाईयों में तो बहुत प्रसिद्ध है ही परन्तु बाहर के भी बहुत से लोग उससे सुपरिचित हैं।

इन दिनों अब्बास मसजिदों में बहुत जाया करते और वहाँ ईश्वरीय तत्त्व पर विद्वानों के साथ वाद विवाद किया करते थे। वह कभी किसी स्कूल या कालेज में न गये थे। उनका शिक्षक एक मात्र उनका पिता ही था। इनका अभिमत मनोविनोद घोड़े की सवारी था। उसे यह शौक से किया करते थे।

बगदाद के बाहर एक बाग में बहाउल्लाह की घोषणा के बाद से अब्दुल-बहा की श्रद्धा अपने पिता पर पहले से कहीं अधिक हो गई थी। कुस्तुन्तुनिया की लंबी यात्रा में इन्होंने दिन रात अपने पिता की घोड़ेगाड़ी पर चढ़े चढ़े उनकी रक्षा की और तंबू में भी पूरी देख भाल की। जहाँ तक हो सकता था यह अपने पिता को घरेलू सब कामों और जिम्मेवारियों से छुड़ाये रखते थे। सारे परिवार को सँभालने का काम इन्होंने अपने ऊपर ले रखा था।

ऐड्रियानोपल में जितने साल बिताये, उनमें इन्हों ने सबको अपना मित्र बना लिया था। वहाँ इन्होंने लोगों को बहुत कुछ सिखाया, यहाँ तक कि लोग इन्हें 'गुरुजी' कहने लग गये थे। 'अक्का' में जब इन के सब साथी बीमार पड़ गये थे, किसी को संतत ज्वर था, किसी को प्राकृतिक ज्वर (मौसमी बुखार) था और किसी को अतिसार था, यह आप उनको धोते, उनकी सेवा शुश्रूषा करते, उनकी देख भाल करते और आप कभी विश्राम न

लेते थे। इसी कठोर परिश्रम के कारण इन्हें भी फिर दस्त लग गये और महीना भर बुरी दशा में पड़े रहे। 'अक्का' में भी ऐड्रियानोपल की तरह छोटे, बड़े, अनपढ़ और पढ़े लिखे सभी श्रेणियों के लोग इनके प्रेमी और भक्त बन गये थे।

विवाह

नीचे लिखा अब्दुल-बहा के विवाह का वृत्तान्त प्रस्तुत पुस्तक के लेखक को बहाई संप्रदाय के एक ईरानी इतिहास वेत्ता की कृपा से प्राप्त हुआ है—

"अब्दुल-बहा के यौवनकाल में उनके विवाह का प्रश्न स्वभावतः सभी अनुयायिओं में विशेष स्थान ग्रहण करता था, और बहुतों को यह इच्छा थी कि यह सम्मान का मुकुट उनके वंश को प्राप्त हो। परन्तु कुछ समय तक अब्दुल-बहा ने विवाह की कोई इच्छा प्रकट न की और उसके विचारपूर्ण आशय का किसी को पता भी न लगा। बाद में मालूम हुआ कि एक कन्या है जिसके भाग्य में अब्दुल-बहा की दुलहन बनना लिखा है। इस कन्या का जन्म इसफ़हान में महात्मा बाब के वरदान के प्रभाव से इस प्रकार हुआ था। इस बालिका के पिता का नाम मिर्ज़ा मुहम्मदअली था। वह 'शहीदों के प्यारे' वा 'शहीदों के राजा' का चाचा था। सो यह कन्या इसफ़हान के एक बड़े उच्च वंश से संबन्ध रखती थी। जब महात्मा बाब इसफ़हान में थे तो मिर्ज़ा को कोई सन्तान न थी। इनकी स्त्री सन्तान के लिए बहुत उत्कण्ठित थी। म० बाब ने यह सुन कर मिर्ज़ा को अपने खुराक का भाग दिया और कहा कि स्त्री-पुरुष दोनों मिल कर उस को खा लें। खाने के कुछ दिनों बाद शीघ्र ही प्रकट हुआ कि उनकी आन्तरिक कामना सिद्ध हो गई अर्थात् उनकी स्त्री गर्भवती हुई और नौ महीने बाद एक कन्या उत्पन्न हुई। इसका नाम उन्होंने मुनीरा ख़ानम रखा। (लूका की अंजील के

प्रथमाध्याय में बपतिसमा देने वाले जोहन के जन्म का जो वृत्तांत लिखा है, उसके साथ इस घटना की बड़ी बड़ी विचित्र समता है)। इसके बाद उनके यहाँ एक लड़का उत्पन्न हुआ, जिसका नाम 'सय्यीद यहया' रखा गया। फिर और भी बच्चे उत्पन्न हुए। कुछ समय के अनन्तर मुनीरा के पीता का स्वर्ग-वास होगया। उसके चचेरे भाईयों को ज़िल्लु सुलताने शहीद किया और यह सारा परिवार बहाई होने के कारण अत्याचारों और भयानक यातनाओं का लक्ष्य बना। तब बहाउल्लाह ने मुनीरा और उसके भाई सय्यीद को आत्मरक्षा के लिय 'अक्का' में चले आने की आज्ञा दे दी। यहां आने पर बहाउल्लाह और उनकी पत्नी अर्थात् बहा की माता 'नव्वाब' दोनों मुनीरा पर इतना स्नेह और दयाभाव दिखाने लगे कि सब जान गये कि इनका अभिप्राय मुनीरा को अब्दुल-बहा की पत्नी बनाना है। माता पिता की इच्छा ही अब्दुल-बहा की भी इच्छा थी। उनका भी मुनीरा के साथ हार्दिक प्रेम होगया जिसका मुनीरा की ओर से हार्दिक उत्तर मिला। परिणाम यह हुआ कि दोनों प्रेमी विवाह बन्धन में आकर एक होगये।"

यह विवाह बड़ा आनन्द-दायक सिद्ध हुआ। इनसे जो सच्चे पैदा हुए उन में से चार लड़कियां बड़ा लंबा और कष्ट पूर्ण कारावास भोग कर जीवित रही है और अपने सेवामय सुन्दर जीवन के प्रभाव से उन सब के प्रेम और सम्मान की पात्र हैं जिन्हें इनको जानने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

आशाओं का केन्द्र

बहाउल्लाह ने कई प्रकार से इस बात का संकेत किया था कि अब्दुल-बहा उनके उत्तराधिकारी होंगे। अपनी मृत्यु के कई वर्ष पूर्व उन्होंने गुप्त रीति से अपनी "किताब-इ-अकद्दस" में इस

बात को प्रकट किया था। उन्होंने कई बार अपने लेखों में अब्दुल-बहा को 'अपनी आशाओं का केन्द्र' कहा है। वह प्रायः इनको 'स्वामी' कह कर पुकारते थे और अपने परिवार को कहा करते थे कि वह इनका विशेष सत्कार और सम्मान किया करें। अपनी वसीयत (Will) में भी उन्होंने स्पष्ट निर्देश किया है कि अब्दुल-बहा पर सब की मानभरी दृष्टि बनी रहे और सब इनकी आज्ञाओं का पालन करते रहें।

पूर्ण रूप जमाले मुबारिक (बहाउल्लाह को उनका परिवार तथा भक्त लोग इसी नाम से प्रायः बुलाया करते थे) के प्रमाण के अनन्तर अब्दुल-बहा ने अपनी स्थिति वैसी ही बना ली जैसा कि उनके पिता उन्हें अपने सम्प्रदाय का शिरोमणि और अपनी शिक्षाओं के प्रचार का अग्रणी बता गये थे। यह बात उन के कुछ सम्बन्धियों और इतर लोगों को अच्छी न लगी। यह लोग उनके वैसे ही शत्रु बन गये जैसे सुबे अज़ल बहाउल्लाह के शत्रु बन बैठे थे। इन लोगों ने सम्प्रदाय में असन्तोष और झगड़े खड़े करने का बहुत यत्न किया। पर जब इनके यत्न सफल न हुए तो इन लोगों ने तुर्की सरकार के आगे इनके विरुद्ध कई झूठे अभियोग लगाने आरम्भ किये।

अपने पिता की आज्ञानुसार अब्दुल-बहा हैफ़ा के ऊपर की ओर क़ारमल पहाड़ पर एक भवन बनवा रहे थे, जिसका हेतु यह था कि इस भवन में म० बाब का देहावशेष सदा के लिए स्थापित रहे, और इसी भवन में कुछ कमरे सभा और प्रार्थना के लिये भी बनवाने अभीष्ट थे। इन विरोधियों ने अधिकारियों से जाकर कहा कि अब्दुल-बहा एक किला बनवा रहे हैं जिस में वह अपनी सेना एकत्र करके उसके द्वारा सरकार से मुकाबला करके

सीरिया के आस पास के प्रदेश को अपने अधीन किया चाहते हैं।

कड़ी कैद का फिर आरम्भ

इस प्रकार के झूठे अभियोगों का फल यह हुआ कि १६०१ में अब्दुल-बहा और उनका परिवार, जो लगभग बीस वर्षों से नज़र बंद रहते आये और 'अक्का' के आसपास परिमित मीलों तक ही सैर बिहार कर सकते थे, फिर सात वर्षों तक कठोर कारावास दण्ड भोगने के लिये जेल में बंद किये। पर यह कारावास उन्हें ऐशिया, योरुप तथा अमेरिका में अपने धर्म का प्रचार करने से रोक न सका। मिस्टर होरस होली इस समय का वृत्तान्त यों लिखते हैं:—

"अब्दुल-बहा के पास उसे अपना अध्यापक और मित्र मानकर सब क़ौमों, जातियों और धर्मों के स्त्री पुरुष आते थे, वह सब इनके पास प्रिय अतिथियों के समान भोजन पाते, बैठते, और अपने अपने विचारों के अनुसार इनसे जातीय, आध्यात्मिक तथा सदाचार संबन्धी प्रश्न पूछते, और कुछ घण्टों से लेकर महीनों तक इनके पास रहकर जब वापिस घर को लौटते तो अपने आप को नये जीवन और नयी प्रतिभा से आभासित पाते थे। निश्चय ही संसार भर में इसके समान दूसरी अतिथिशाला न थी।"

"इसकी चारदीवारी के अन्दर हिन्दुस्तान की कड़ी जातपात मोम हो जाती, यहूदियों का कठोर जातीय पक्षपात उड़ जाता, और ईसाई या मुसलमान भी नाम मात्र के रह जाते थे। और इस घर के स्वामी की अटूट सहानुभूति के कारण, हार्दिक प्रेम और मानसिक चाहत के सिवाय टूटफूट कर अस्वीकृत हो जाती थीं। यह दृश्य महाराज

आर्थर और उसकी गोल मेज़ के समान था। भेद केवल इतना था कि यह आर्थर स्त्री और पुरुष दोनों को वीर बनाकर, खड्ग हाथ में देकर नहीं, बल्कि अपना संदेशमात्र देकर संसार को विजय करने के लिये भेजा जाता था।" (*The Modern Social Religion*, Horace Holley, p. 171)

इन दिनों में अब्दुल-बहा संसार के प्रत्येक भाग में अपने भक्तों और जिज्ञासुओं के साथ निरन्तर पत्र व्यवहार किया करते थे। इस काम में इन्हें अपनी कन्याओं और कई द्विभाषियों (interpreters) तथा मन्त्रियों से बड़ी सहायता प्राप्त होती थी।

इनका अधिकांश समय बीमारों और दुःखियों के घरों में जा-जा कर उनकी देख भाल में बीतता था। 'अक्का' के ग़रीब मोहल्ले में इस मुलाकाती "स्वामी" से बढ़ कर किसी का स्वागत न होता था। एक यात्री, जो इस समय अक्का में गया था, लिखता है:—

"अब्दुल-बहा का यह स्वभाव था कि वह प्रत्येक शुक्रवार को सवेरे गरीबों को भिक्षा बांटते थे। अपने साधारण से कोष में से वह प्रत्येक अर्थी को, जो उनके पास मांगने आता था; कुछ न कुछ दिया ही करते थे। आज प्रातःकाल लगभग सौ भिक्षु उस खुली गली में, जहाँ अब्दुल-बहा का घर है, भूमि पर कतार बाँधे बैठे थे। इन गरीबों की दशा का वर्णन नहीं हो सकता था। अनेक निर्धन, अनाथ, अंधे, लूले, लँगड़े भिक्षु स्त्री-पुरुष और बच्चे जिनकी ग़रीबी बयान से बाहर है, फटे पुराने कपड़ों में बड़ी उत्कण्ठा से उनके द्वार पर बैठे थे जब तक अब्दुल-बहा बाहर आये। जब यह बाहर आये तो शीघ्र एक से दूसरे के पास गये, कहीं सहानुभूति दिखाने और धृति बँधाने के लिये थोड़ी

देर रुक जाते, कहीं बड़ी उत्सुकता से दूर तक फैलाये किसी के हाथ में कुछ द्रव्य डालते, कहीं बच्चों के सिरों पर हाथ रखते, कहीं किसी नेत्र-हीन वृद्धा स्त्री का हाथ, जिसने लांघते समय उनके चोले का आँचल दबाकर पकड़ रखा था, अपने हाथ में लेते, कहीं किसी वृद्ध और दृष्टिहीन पुरुष को सहानुभूति के शब्द कहते, कहीं दुर्बल और दीन पुरुषों की दशा पूछते, सबकी सहायता करते और सबको अपना अपना भाग प्रेम और उत्साह पूर्ण संदेश के साथ भेजते चले जाते थे।" (*Glimpses of Abdul-Baha* M. J. M., p. 13)

अब्दुल-बहा की निजी आवश्यकताएँ बहुत थोड़ी थीं। प्रातः काल से रात्रि तक काम करते रहते थे। दिन में दो बार बहुत साधारण भोजन करते थे। इनकी पोशाक बहुत सस्ते कपड़े की बनी होती थी। दूसरों को कष्ट-मय जीवन व्यतीत करते देख कर इन्हें विलासमय जीवन व्यतीत करना पसन्द न था।

यह बच्चों, फूलों और प्राकृतिक सौन्दर्य से बहुत प्रेम रखते थे। प्रति दिन प्रातः काल छः सात बजे के लगभग सारा परिवार चाय पीने के लिए जमा हो जाता था, और "स्वामी" के चाय पीते समय छोटे बच्चे सुरीले गीत गाया करते थे। मिस्टर थार्नटन चेज़ इन बच्चों के विषय में लिखते हैं—

"ऐसे सुशील, नि स्वार्थी, औरों से सहानुभूति रखनेवाले, दुःख न देनेवाले, बुद्धिमान्, और उन छोटी २ चीजों से भी, जिन्हें बच्चे प्रायः पसन्द किया करते हैं, झट संबन्ध त्याग कर देने वाले बच्चे मैंने कभी नहीं देखे।" (*In Galilee*, p. 51).

'अक्का' के जीवन का एक खास अंग था "फूलों का प्राधान्य" प्रत्येक यात्री इसका कोई न कोई चिन्ह अपने साथ ले आता था। मिसेज़ ल्यूकस लिखती हैं—

"जब यह स्वामी फूलों को सूंघते हैं तोयह दृश्य बड़ा ही अद्भुत होता है। जब यह फूलों में अपने मुँह को छिप लेते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि फूल इन्हें कुछ कह रहे हैं। ठीक ऐसा प्रतीत होता है जैसे कान किसी मधुर और मनोरम गीत को सुनने के लिये एकाग्र हो रहे है।" (*A Brief Account of my Visit to Akka* p. 26).

यह अपने असंख्य दर्शकों को सुन्दर और सुगन्धित फूलों की भेंट करना बहुत पसन्द करते थे।

मिस्टर थार्नटन चेज़ ने अक्का में इनके कारावास जीवन का बयान यों लिखा है—

"पांच दिन तक हम उन दीवारों के अन्दर उन के साथ जो सबसे बड़े जेल में रहते हैं, कैदी बनकर रहे।"

"यह शान्ति, प्रेम और सेवा का कैदखाना था। इसमें इच्छा या कामना केवल मात्र यही थी कि मनुष्य मात्र की भलाई हो, संसार में शान्ति स्थापित हो, ईश्वर को पिता माना जाये, और ईश्वर के ही बंदे समझकर और सब मनुष्यों को अधिकारों में समानता स्वीकार की जाये। वास्तव में, सच्चा कैदखाना, दम घुटनेवाला वायुमण्डल, मन की सच्ची कामनाओं से वियोग, सांसारिक अवस्थाओं का बन्धन, यह सब इन पत्थर की दीवारों से बाहर थे, क्योंकि इनमें पवित्र और स्वतन्त्र ईश्वरीय विशुद्ध तत्त्व का निवास था। सांसारिक कष्ट, पीड़ाएँ, चिन्ताएँ और उत्कण्ठाएँ इन दीवारों से बिलकुल बाहर थीं।" (*In Galilee*, p. 24.)

अधिकांश लोगों को जेल का जीवन दुःखदायी और संकटमय प्रतीत होता होगा, पर अब्दुल-बहा के लिये यह कोई भयावनी बात न थी। कारावास के ज़माने में उन्होंने लिखा है—

"मुझे कैद अथवा विपत्ति में देख कर दुःखी न हो। यह तो मेरे रमणीय उद्यान है, मेरा स्वर्ग भवन और मानव जाति में मेरे साम्राज्य का सिंहासन। कैद्र में संकट भोग तो मेरा वह मुकुट है जिस के द्वारा मैं सत्य के प्रेमी पुरुषों में प्रकाश अथवा शोभा पाता हूँ।"

"विश्राम, सुख, सफलता, स्वास्थ्य, आनन्द और हर्ष की दशा में तो हर कोई प्रसन्न हो सकता है, पर साधुता या बड़प्पन का एकमात्र प्रमाण यह है कि मनुष्य क्लेशों, कष्टभोगों और दीर्घ रोगों के समय भी अपने आप को प्रसन्न और सन्तुष्ट रखे।" (*Tablets of Abdul-Baha*, vol. ii. pp. 258, 263).

जांच के लिये सरकारी कमीशन

अब्दुल-बहा पर जो अभियोग लगाये गये थे, उनकी जांच के लिये तुर्की सरकार ने सन् १६०४ और १६०७ में कमीशन नियत किये। झूठे गवाहों ने इनके विरुद्ध झूठी गवाहियां दीं। अब्दुल-बहा ने उन सब अभियोगों का खण्डन करते हुए कहा कि मैं कमीशन के नियत किये किसी भी प्रकार के दण्डोपभोग के लिये सर्वथा तय्यार हूँ। इन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि चाहे मुझे जेल में धकेल दो, गलियों में घसीटो, फटकारें दो, मुझ पर थूको, मुझको फांसी, गोली या पत्थरों से मारो, और किसी भी प्रकार के भारी से भारी संकट मुझ पर डालो, मैं तब भी बहुत प्रसन्न हूँ।

उन दिनों में भी, जब जांच कमीशन की बैठकें हो रही थीं, यह अपना जीवन पहले की तरह ही बड़ी शान्ति से बिता रहे थे। उसी प्रकार बाग में फलदार वृक्ष लगाते और आध्यात्मिक स्वतन्त्रता के तेज और प्रभाव के साथ विवाह की दावत में

प्रधान बनकर बैठे। इटली के न्यायाधीश (Consul) ने इनसे कहा कि वह इन्हें किसी भी समुद्र पार के देश में, जहां यह रहना पसन्द करें, भिजवा देने का प्रबन्ध कर सकता है, पर इन्होंने उसकी प्रार्थना को धन्यवादपूर्वक बड़ी दृढ़ता से अस्वीकृत कर दिया और कहा कि कुछ भी क्यों न हो, मैं म० बाब और उस पूर्णावतार की पद्धति का ही अनुसरण करूँगा जिन्होंने शत्रुओं के डर से भाग कर आत्मरक्षा का कभी यत्न नहीं किया। इन्होंने बहुत से बहाईयों को 'अक्का' का पड़ोस छोड़ देने के लिये प्रोत्साहित किया, जो उनके लिये बड़ा भयावह था और आप अकेले थोड़े से भक्तों के साथ वहाँ अपने भाग्य का निर्णय होने की प्रतीक्षा में रहे।

चार कुचरित्र अधिकारी, जो अन्तिम जांच कमीशन में नियत हुए थे, १६०७ की शीत ऋतु के आरम्भ में 'अक्का' पहुँचे। एक महीना वहां रह कर कुस्तुन्तुनिया को लौट गये। उन्हों ने अपनी आधार-शून्य जांच की सूचना (Report) में योंही लिख दिया कि अब्दुल-बहा के विरुद्ध जो अभियोग लगाये गये थे, वह सच्चे सिद्ध हुए हैं और इस कारण उनकी राय में अपराधी को निर्वासन या फांसी का दण्ड मिलना चाहिये। वह लौट कर तुर्की में पहुँचे ही थे कि इधर भयंकर क्रान्ति (विप्लव) उठ खड़ी हुई और क्यों कि वह चारों पुराने शासनप्रबन्ध के सूत्रधारों में से थे, इसलिये उन्हें आत्मरक्षा के लिये भाग जाना पड़ा। टर्की के नवयुवकों ने अपनी प्रभुता स्थापित करली और साम्राज्य भर के सभीराजनैतिक तथा धार्मिक कैदियों को मुक्त कर दिया गया। १६०८ के सितम्बर महीने में अब्दुल-बहा कैद से छूट गये, और दूसरे ही साल अब्दुल हमीद जो सुलतान थे, स्वयं कैदी बने।

पश्चिमी देशों का दौरा

बन्धन से छूट जाने के बाद अब्दुल-बहा अपना श्रमजीवी जीवन पहले की तरह बिताते रहे, और उसी प्रकार शिक्षा, पत्र-व्यवहार और निर्धन तथा रोगियों की सेवा करते रहे। भेद केवल इतना हुआ कि वे 'अक्का' से हैफ़ा आ गये और फिर हैफ़ा से सिकन्दरिया। फिर सन् १९११ के अगस्त महीने में पाश्चात्य देशों का दौरा करने पहले पहल चले। यहां अब्दुल-बहा प्रत्येक भिन्न भिन्न मतवाले लोगों से मिले और बहाउल्लाह की इस आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन किया कि "सब प्रकार के लोगों से प्रीति और उल्लास से मिलो"। १९११ के सितम्बर के आरम्भ में यह लंदन पहुँचे और एक महीना वहां रहे। इन दिनों में जिज्ञासु मण्डल तथा अन्य प्रकार के लोगों से दैनिक वार्तालाप के अतिरिक्त इन्होंने सिटी टैम्पल में पादरी आर० जे० कैम्पबेल, तथा सैंट जान और वैस्टमिनिस्टर में आर्च डिकन और विलबर फोर्स के गिर्जों में व्याख्यान भी दिये। लार्ड मेयर के साथ नाश्ता किया। यहाँ से यह पैरिस चले गये। यहाँ इनका समय प्रतिदिन भिन्न भिन्न जातियों और भिन्न भिन्न स्वरूपों के उत्सुक श्रोताओं के आगे भाषण करने और व्याख्यान देने में बीता। दिसंबर में यह मिस्र चले आये। फिर वसन्त में यह अमेरिका की मित्र मण्डली के बार बार आग्रह और अनुरोध से अमेरिका को चल पड़े और १९१२ के एप्रिल में न्यूयार्क पहुँच गये। नौ महीनों तक अमेरिका के एक किनारे से दूसरे किनारे तक भ्रमण करते रहे। अनेक स्थानों में व्याख्यान दिये। विश्वविद्यालय के छात्रों तथा सभी भिन्न भिन्न संप्रदाय और मतों वाले लोगों के समुदायों साम्यवादी, मॉरमन, यहूदी शान्ति सभाओं में नये

विचार समाज, स्त्रीओं मताधिकार प्रचारिणी सभाओं में और गिरजाओं में जा कर भाषण दिये। प्रत्येक समय में श्रोताओं की योग्यता और समय की अवस्थानुसार ही इनके व्याख्यान होते रहे। दिसम्बर की पाँचवीं तिथि को इन्होंने फिर ग्रेट ब्रिटेन के लिये जल-यात्रा आरम्भ की। यहाँ यह छः सप्ताह तक लिवरपुल, लंदन, ब्रिस्टल और एडिंबरा में घूमा किये। एडिंबरा में ऐसपरेंटो सोसाइटी के सामने इनका बड़ा उदार भाषण हुआ। इसमें इन्होंने कहा कि मैं पूर्वीय देशों के बहाईयों को ऐसपरेंटो मत का अध्ययन करने के लिये प्रेरणा किया करता हूँ जिस से पूर्वी और पश्चिमी दोनों भूखण्डों के विचारों में और भी अधिक मेल हो जाये। फिर पहले की तरह पैरिस में जाकर दो महीनां तक लोगों के साथ वार्तालाप और विचार परिवर्तन करने के बाद यह स्टटगर्ट को चले गये। वहाँ जर्मनी के बहाईयों के साथ लगातार कई अत्यन्त फलवती समितियाँ हुईं। वहाँ से यह बुदापेस्ट और वायना में चले गये और इन स्थानों में नये समुदाय खड़े करके मई १९१३ को मिस्र में लौट आये और यहाँ से पाँच दिसम्बर १९१३ को हैफा चले आये।

पवित्र भूमि में लौटना

इस समय इनकी अवस्था सत्तर वर्ष की हो चुकी थी। लंबे और कड़े परिश्रमों से तथा पाश्चात्य देशों की पुनः पुनः कष्ट-कर यात्राओं से इनका भौतिक देह अत्यन्त दुर्बल हो गया था। यहाँ लौट कर इन्होंने अपने पूर्वीय तथा पश्चिमी भक्त जनों के लिए निम्न लिखित अत्यन्त हृदय-द्रावक लेख (Tablet) लिखा—

"मित्रो ! अब वह समय आरहा है, जब मैं आपके साथ न हूँगा।

जो कुछ हो सकता था, मैंने कर दिया है। जहाँ तक मुझ में योग्यता थी, मैंने बहाउल्लाह के प्रवर्तित संप्रदाय की सेवा की है। मैंने अपने जीवन का सारा समय दिन रात परिश्रम करते बिताया है। आह ! मेरी कितनी उत्कट इच्छा है कि मैं अब भक्त जनों को इस कर्तव्य की जिम्मेवारी अपने कन्धों पर उठाये हुए देखूँ। अब अति प्रकाशमय अब्हा के राजत्व की घोषणा का समय आगया है। अब एकता और मिलन का समय है। यह दिन ईश्वरीय भक्तों की आत्माओं के मधुर मिलन का है।"

"मैं पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर की ओर अपने कान लगाये हुए हूँ जिससे भक्तों की सभाओं या गोष्ठियों में प्रेम और उन्नत मित्र भाव के मधुर गीत सुनूं। मेरे जीवन के दिन अब थोड़े से बाकी हैं। इन दिनों में मिलन का मधुर संगीत सुनने के अतिरिक्त मुझे और कोई आनन्दोपभोग अभीष्ट नहीं रहा।"

"आः ! मेरे मन में यह देखने के लिये कितनी बलवती लालसा है कि मेरे मित्र सुन्दर मोतियों के समान प्रेम की लड़ी में पिरोये हुए हों, एक ही आकाश के सब तारे हों, एक ही सूर्य की सब किरणें हों, और एक ही खेत में सब चरने वाले हों।"

"छुपी हुई बुलबुल उनके लिये गा रही है, क्या वह उसका गीत न सुनेंगे ? दिव्य विहग उनके लिये चहचहा रहा है, क्या यह इसे न सुनेंगे ? अब्हा (अति तेज) के राजत्व के स्वर्गीय दूत उन्हें बुला रहे हैं, क्या वह उनकी ध्वनि न सुनेंगे ? आशाओं का दिव्य दूत उनसे बोल रहा है, क्या वह उसकी ओर ध्यान न देंगे ?"

"आः ! मैं बहुत प्रतीक्षा कर रहा हूँ यह शुभ समाचार सुनने के लिये कि सब भक्तजन सौहार्द और भक्ति के रस में एक होकर मिले हुए

हैं, वह प्रेम और मित्रता के अवतार तथा एकता और सहयोग का ईश्वरीय स्वरूप हैं।"

"क्या वह मेरे हृदय को प्रसन्न न करेंगे, क्या वह मेरी इच्छाओं को पूरा न करेंगे, क्या वह मेरी बातों पर ध्यान न देंगे, क्या वह मेरी आशाओं को पूर्ण न करेंगे, क्या वह मेरी पुकार का उत्तर न देंगे ?"

"मैं बड़ी उत्कण्ठा से इसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

(*Diary of Mirza Ahmad Sohrab*, April 2, 1924)

बाब को फाँसी पर लटकाने और बहाउल्लाह को जीवन भर के लिये निर्वासित करने और फिर उनके निर्वाण प्राप्त करने से बहाई प्रचार के विरोधियों का उत्साह बहुत बढ़ चुका था। अब्दुल-बहा के पाश्चात्य देशों में भ्रमण करके लौट आने पर इन की शारीरिक दुर्बलता देखकर उन शत्रुओं के दिल फिर और बढ़ गये। परन्तु फिर भी उनकी आशाएँ निराशा के अंधकार में गिरीं। थोड़े ही दिनों में अब्दुल-बहा फिर लिखने योग्य बन गये।

"इसमें सन्देह नहीं कि भौतिक देह और मानव शक्ति निरन्तर परिश्रम करने के योग्य न थीं, पर प्रियतम का सहयोग और साहाय्य निर्बल और विनम्र अब्दुल-बहा के रक्षक तथा प्रेरक थे। कुछ लोगों का विचार है कि अब्दुल-बहा संसार से अन्तिम बिदा मांगने वाला है और इसकी शारीरिक शक्तियां इतनी प्रक्षीण हो चुकी हैं कि अब वह देर तक जीवन-यात्रा को चला नहीं सकेगा। पर यह बात सच नहीं है। यद्यपि उन आशा-विघातियों और कलुषित हृदयवालों का यह अनुमान आपाततः ठीक है कि (मेरी) देह प्रचार कार्य के लिये देशान्तर भ्रमण की कठिनायों से दुर्बल हो गई, तो भी, ईश्वर को अनेक धन्यवाद हैं,

जिस पूर्ण पुरुष (जमाले मुबारिक) की अपार दया से (मेरा) आत्मिक बल वैसा ही नवीन और शक्ति-शाली है। ईश्वर का धन्यवाद है कि बहाउल्लाह के आशीर्वाद से अब शरीर में भी फिर पूरी शक्ति हो आई है, दिव्य हर्ष प्राप्त हो गया है। आनन्द की लहर उठ रही है और सच्चे सुख का प्रवाह मन में लहराने लगा है।"—(*Star of the West*, vol. V. No. 14, p. 213.)

युरोपी महा संग्राम के दिनों में और उसके कुछ अनन्तर अब्दुल-बहा ने दूसरे कार्य कलाप के अतिरिक्त एक ऐसी बड़ी और हृदयग्राहिणी पत्रमाला लिखी जिसने पत्र व्यवहार का मार्ग खुल जाने के बाद संसार भर में भक्तों के हृदयों में सेवा-भाव का नया उत्साह और नयी उमंगें भर दीं। इन पत्रों के प्रभाव से प्रचार कार्य दिन दूना और रात चौगुना बढ़ गया और सर्वत्र ही प्रचार के नये और सजीव लक्षण दीख पड़ने लगे।

महा संग्राम के समय हैफ़ा में

महा संग्राम आरम्भ होने के कुछ महीने पहले अब्दुल-बहा ने अपने भविष्य ज्ञान का बड़ा अद्भुत परिचय दिया था। शान्ति के समय में ईरान तथा संसार भर के इतर प्रदेशों से यात्री लोग हैफ़ा में बड़ी संख्या में जमा हुआ करते थे। संग्राम आरंभ होने के लगभग छः मास पूर्व एक वृद्ध हैफ़ा निवासी बहाई ने कई ईरानी भक्तों की ओर से एक प्रार्थना पत्र भेजा कि उन्हें 'स्वामी' (अब्दुल-बहा) के दर्शन की आज्ञा मिले। अब्दुल-बहा ने उनकी इस प्रार्थना को स्वीकार न किया, और उसी समय से सब यात्रियों को धीरे धीरे हैफ़ा से बिदा करने लगे, यहाँ तक कि जुलाई १९१४ के अन्त तक कोई भी उनके पास न रहा। जब

अगस्त के आरम्भिक दिनों में भयंकर संग्राम ने आरंभ होकर संसारभर में हलचल मचा दी तब लोगों को उनकी इस विचित्र बुद्धि और दूरदर्शिता का पता लगा।

ज्यों ही युद्ध की आग भड़की, अब्दुल-बहा जो पहले भी अपने जीवन के पचपन साल कैद और निर्वासन में बिता चुके थे, फिर तुर्की सरकार के कैदी हो गये। सीरिया से बाहर अपने मित्रों और भक्तों से उनका पत्र व्यवहार बिलकुल ही बन्द सा हो गया। अपने कतिपय अनुयायिओं के साथ फिर उन्हें पूर्ववत् कष्ट भोग की दशा देखनी पड़ी। आहार की कमी, शारीरिक भय तथा असुविधाएँ फिर वैसी ही अनुभव में आने लगीं।

संग्राम के दिनों में अब्दुल-बहा गरीब लोगों की आत्मिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रबन्ध में रहते थे। इन्होंने तिबेरिया के समीप गेहूँ की उपज के लिये बहुत सा भूभाग स्वयं तय्यार किया, और इस प्रकार जब बहुत सा गेहूँ तय्यार हो गया, तो इन्होंने अक्का और हैफ़ा के अकाल पीड़ित लोगों का इस अन्न से विना जाति और धर्म का पक्षपात किये, समान दृष्टि से सबका दुःख निवारण किया। जहां तक इनसे बन पाता, सब की देखभाल रखते और सबके संकटों को दूर करने का यत्न करते थे। सैकड़ों गरीबों को यह प्रतिदिन थोड़ा बहुत धन बाँटते थे। धन के अतिरिक्त रोटी भी देते थे। जब रोटी न होती थी तो खजूर या कुछ और दे दिया करते थे। यह अपने भक्तों और ग़रीबों को सुख और सहायता देने के लिये 'अक्का' में कई बार जाया करते थे। युद्ध के दिनों में यह अपने भक्तों के साथ नित्य मिलकर बैठते थे और इनकी सहायता से भक्त लोगों ने उस कष्टमय समय को भी बराबर सुख और चैन से बिताया।

सर अब्दुल-बहा अब्बास के. बी. ई.

हैफ़ा में बड़ी खुशी हुई जब कि २३ सितंबर १९१८ को दिन के तीन बजे २४ घंटों के लगातार युद्ध के बाद नगर ब्रिटिश और हिन्दुस्तानी रिसाले के अधिकार में आ गया, और तुर्की सरकार का आधिपत्य हट जाने पर युद्ध की विभीषिकाओं का अन्त हो गया।

ब्रिटिश का अधिकार हो जाने के पहले दिन से ही सिपाहियों और सभी प्रकार के सरकारी अधिकारियों के झुंड के झुंड अब्दुल-बहा से मिलने आते और इनके प्रतिभापूर्ण भाषण, उदार विचार, गहरी दूरदर्शिता, लौकोत्तर शिष्टाचार तथा हार्दिक आतिथ्य से बहुत प्रसन्न होकर जाते थे। इनके उदार चरित्र, शान्ति स्थापन के लिये महान् कार्य तथा सच्ची लोकहितैषिता का सरकारी प्रतिनिधियों के हृदयों पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने इन्हें 'ब्रिटिश साम्राज्य का सितारा' K. B. E. की पदवी प्रदान की और २७वीं एप्रिल १९२० को सेना के प्रधान शासक (Military Governor) के बाग में बड़ी धूमधाम से इसका उत्सव मनाया गया।

अन्तिम वर्ष

ईसवी सन् १९१९–२० के हेमन्त में इस पुस्तक के लेखक (J. E. Esslemont, M.B., Ch. B., F. B. E. A.) को हैफ़ा में अढ़ाई मास तक अब्दुल-बहा के यहां अतिथि बनकर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उन्हें इनकी दिनचर्या अच्छी तरह देखने का समय मिला। उस समय इनकी अवस्था कोई ७६ वर्ष की थी। तब भी इनमें बड़ी शक्ति थी और दिन-भर में इतने

काम कर डालते थे कि बुद्धि चकित हो जाती थी। बीच-बीच में यह बहुत थक भी जाते पर झट फिर अद्भुत शक्ति पाकर उन लोगों की सेवा में लग जाते थे जिन्हें इनकी सेवा की आवश्यकता होती थी। इनके अटूट धैर्य, सौशील्य, दयालुता और चातुरी ने इन्हें साक्षात् ईश्वर का आशीर्वाद ही बना रखा था। रात्रि का अधिक भाग प्रार्थना और ध्यान में ही बिता देना इनका स्वभाव हो गया था। भोजनोत्तर थोड़ा विश्राम करने के अतिरिक्त यह प्रातःकाल से सायंकाल तक सारा समय दूसरे देशों से आये पत्रों को पढ़ने और उनके उत्तर लिखने तथा घरेलू काम और प्रचार कार्य करने में ही बड़ी तत्परता से लगे रहते थे। दोपहर के बाद यह प्रायः पैदल या सवारी पर थोड़ी देर के लिये बाहर जाया करते थे। इस समय में भी इनके साथ एक दो या अधिक यात्री लोग लगे होते थे जिनके साथ यह आध्यात्मिक विषय पर बातचीत किया करते थे या इस समय में किसी ग़रीब को देखने और सँभालने का मौका इन्हें मिल जाता था। उधर से लौट कर यह यात्रियों और मित्रों को अपने स्थान पर वार्तालाप के लिए बुला लिया करते थे। मध्याह्न और रात्रि दोनों समय यह यात्रियों और मित्रों को भोजन कराया करते थे और उस समय अतिथियों को विचित्र और रोचक कथाएँ तथा अनेक बड़ी अमोलक बातें सुनाकर प्रसन्न किया करते थे। यह प्रायः कहा करते थे 'मेरा घर हास्य और आनन्द का घर है", और यथार्थ में था भी ऐसा ही। इनकी प्रसन्नता इसी में थी कि सब जातियों, धर्मों और रंगों के लोग प्रेम और एकता के साथ इनके घर पर एकत्र हों। यह न केवल हैफ़ा के लोगों के लिये ही, बल्कि संसारभर के बहाई लोगों के लिये स्नेहपूर्ण पिता के समान थे।

अब्दुल-बहा का देहावसान

अब्दुल-बहा के कार्यकलाप शारीरिक दुर्बलता के प्रतिदिन बढ़ते जाने पर भी मृत्यु के एक दो दिन पहले तक बराबर इसी प्रकार जारी रहे। २५वीं नवंबर १९२१ शुक्रवार को हैफ़ा के प्रार्थना मन्दिर में यह मध्याह्न की प्रार्थना में सम्मिलित हुए। फिर इन्होंने गरीबों को अपने हाथों भिक्षा बाँटी, क्योंकि यह काम इन्हें बहुत भाता था। फिर भोजनोत्तर कुछ पत्र लिखवाये। आराम के बाद बाग में भ्रमण किया और माली के साथ कुछ बातचीत की। फिर सायंकाल अपने भक्त और प्यारे घरेलू सेवक को, जिसका विवाह उसी दिन हुआ था, आशीर्वाद और उपदेश दिये। फिर अपने घर पर मित्र मण्डल के साथ दैनिक गोष्ठी की। इसके कुछकम तीन दिनोंके बाद २८ वीं नवंबर सोमवार को रात्रि के डेढ़ बजे के आसपास इनका स्वर्गवास ऐसी शान्ति से हुआ कि पास बैठी देखती हुई इनकी दोनों कन्याओं ने समझा कि निर्भर निद्रा में सो गये हैं। यह शोकमय समाचार झट सारे नगर में फैल गया और सब देशों को तारें दी गईं। अगले प्रभात को अर्थात् २९वीं नवंबर मंगलवार को इनकी अर्थी निकाली गई।

"ऐसा जनाज़ा हैफ़ा में ही नहीं बल्कि सारे पैलिस्टाइन में कभी पहले न निकला होगा। सभी धर्मों, जातियों और भाषाओं के लोगों ने सहस्रों की संख्या में मिलकर हार्दिक शोक प्रकट किया।"

"हाई कमिश्नर सर हरबर्ट सैम्युअल, जैरुस्लेम और फीनिशिया के गवर्नर, सरकार के बड़े बड़े अधिकारी, हैफ़ा में रहने वाले भिन्न भिन्न देशों के कौंसल, कई धर्मों और जातियों के मुखिया, पैलिस्टाइन के

सभी सुप्रसिद्ध व्यक्ति, यहूदी, ईसाई, मुसलमान, मिसरी, यूनानी, तुर्की, कुर्द, तथा अमेरिका और योरोप से आये अतिथि लोग और स्थानीय मित्र मण्डल, छोटे और बड़े सभी श्रेणियों के स्त्री, पुरुष और छोटे बड़े सभी लोग लगभग दस हज़ार की संख्या में अपने प्रियतम के वियोग में शोक प्रकट करने के लिये जमा हुए। लोग करुणापूर्ण ध्वनि से एक स्वर में आर्तनाद कर रहे थे 'हे ईश्वर, हमारे पिता हमें छोड़ गये, हमारे पिता हमें छोड़ गये।' "

"शनैः शनैः यह झुण्ड कारमल पहाड़ के ऊपर ईश्वर के अँगूरी बाग की ओर बढ़ा। दो घण्टों की यात्रा के बाद म० बाब की समाधि वाले बाग में पहुँचा। जब बाग के चारों ओर यह भारी जन-समुदाय आकर खचाखच भर गया, तब मुसलमान, ईसाई और यहूदी आदि सभी भिन्न धर्मों और जातियों के प्रतिनिधियों ने अब्दुल-बहा के प्रति प्रगाढ़ प्रेम और भक्ति की प्रेरणा से कइयों ने प्रेम की उमंग में तत्काल तय्यार की हुई, और कइयों ने पहले से तय्यार कर रखी हुई अपनी अपनी वक्तृताओं के रूप में अपने प्रियतम पर श्रद्धा की पुष्पाञ्जलियाँ चढ़ाई। सबने एक स्वर में अब्दुल-बहा को ऐसे संकटमय और दुरवस्थित समय में मनुष्यमात्र का पूर्ण शिक्षक और उनमें एकता उत्पन्न करने वाला ऐसे बल पूर्ण शब्दों में सिद्ध कर दिखाया कि बहाईयों के लिए कुछ कहना बाकी न रहा।" (*The Passing of Abdul-Baha*, by Lady Bloomfield and Shoghi Effendi.)

जो वक्ताओं ने, जो मुसलमान, ईसाई और यहूदी जातियों के प्रमुख नेता थे, अपने ओजस्वी और हृदयद्रावक भाषणों द्वारा इस पवित्र और उच्चतर जीवन के लिये अपने हार्दिक भक्ति, प्रेम और प्रशंसा के उद्गार प्रकट किये। तब सन्दूक धीरे धीरे साधारण से बने पवित्र समाधि-स्थान (कब्र) में उतारा गया।

इस श्रद्धेय महापुरुष की स्मृति में लोगों ने जो सम्मान प्रकट किया वह वास्तव में इसके योग्य ही था, जिसने भिन्न भिन्न धर्मों, जातियों,. संप्रदायों तथा भाषाओं को एक करने के शुभ प्रयत्न में सारा जीवन व्यतीत किया। यह सम्मान इन बातों का भी पर्याप्त प्रमाण था कि इनके जीवन में किये कार्य निष्फल नहीं गये, और बहाउल्लाह के सिद्धान्त, जो इनके श्वास या जीवन ही थे, संसार पर प्रभाव डालने लग गये हैं अर्थात् जाति और संप्रदाय के भेदभाव को हटा कर मुसलमान, यहूदी और ईसाई आदि सभी जातियों को, जो सदियों से अलग अलग बिखरी चली आ रही थीं, एक सूत्र में बाँधने लग गये हैं।

लेख और व्याख्यान

अब्दुल-बहा के लेख असंख्य हैं; उनमें अधिक उन पत्रों के रूप में हैं, जो इन्होंने अपने भक्तों और जिज्ञासुओं को लिखे थे। इनके बहुतेरे वार्तालाप और भाषण भी लेखबद्ध हो चुके हैं, और बहुतेरे छप कर भी तय्यार हो चुके हैं। उन सहस्रों यात्रियों में से, जो अक्का और हैफ़ा में इनका दर्शन करने आये थे, बहुसंख्यक यात्रियों ने अपने विचारों का लेखबद्ध वर्णन किया है, जिनमें बहुत से लेख मुद्रित रूप में भी प्राप्त हो सकते हैं।

इस प्रकार इनकी शिक्षाएँ पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं, और अनेक विषयों में विभक्त हैं। पूर्व और पश्चिम की समस्याओं को इन्होंने अपने पिता की अपेक्षा अधिक पूर्णता ग्रहण किया है, और बहाउल्लाह के बताये सर्वसाधारण सिद्धान्तों को इन्होंने अधिक विस्तार से प्रयुक्त किया है। इनके कितने एक लेखों का अभी तक किसी भी पाश्चात्य भाषा में अनुवाद नहीं हो पाया

है, परंतु इनकी शिक्षाओं के अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान और सुगूढ़ तत्त्व दिखाने के लिये जितना अंश अनुवादित हो चुका है, वही पर्याप्त है।

यह फारसी, अरबी और तुर्की भाषा में बोला करते थे। पाश्चात्य देशों की यात्रा में इनकी बातचीत और भाषणों का दुभाषियों द्वारा अनुवाद किया जाता था। इससे यद्यपि उनका रस, सौन्दर्य और प्रखरता तो अवश्य नष्ट हो जाती थी, तो भी इनके शब्दों में भाव की शक्ति इतनी भारी होती थी कि उससे श्रोताओं के मन खिंच जाया करते थे।

अब्दुल-बहा का स्थान

ईश्वरीय पूर्णावतार (बहाउल्लाह) की नीचे लिखी तख्ती में अब्दुल-बहा के लिये सर्वोच्च स्थान निर्दिष्ट किया गया है—

"जब मेरे प्रकाश का समुद्र उतर जायगा और मेरा सन्देश पूरा हो जायगा तो उस समय तुम अपना ध्यान उसकी ओर लगाओ जिस को परमात्मा ने इस काम के लिए नियत किया है और जो इसी प्राचीन जड़ से उत्पन्न हुआ है।"

तथाः—

"........जो कुछ तुम मेरे सन्देश में से समझ नहीं सकते उसके सबन्ध में उनसे पूछो जो इस महान वृक्ष से पैदा हुए हैं।"

अब्दुल-बहा ने स्वयं यूँ लिखा है:—

"किताबे अक़दस के स्पष्ट लेखानुसार बहाउल्लाह ने प्रतिज्ञा के केन्द्र (अब्दुल-बहा) को अपनी वाणी का अनुवादक नियत किया है—यह प्रतिज्ञा इतनी दृढ़ और प्रबल है कि आदि काल से लेकर आज तक किसी भी मत ने इस जैसी प्रतिज्ञा नहीं दर्शाई है।"

जिस पूर्ण सेवाभाव के साथ अब्दुल-बहा ने बहाउल्लाह के धर्म

का पूर्व और पश्चिम में प्रचार किया है उसी के कारण बहाईयों में अब्दुल-बहा के स्थान के सम्बन्ध में कभी कभी मत भेद हो गया है।

उनकी वाणी और उनके कामों के भावों की पवित्रता को अनुभव करते हुए और उन धार्मिक प्रभावों के अन्दर घिरे हुए जो उनके पुराने धार्मिक भावों को तोड़ रहे थे बहुत से बहाईयों ने अनुभव किया कि अब्दुल-बहा परमात्मा के अवतार हैं या "ईसा-मसीह फिर आ गया है।" अब्दुल-बहा को इससे अधिक और कोई दुःख न होता था जितना यह देखकर होता था कि लोग बहाउल्लाह के प्रति उनके सेवाभाव की शक्ति को न समझ सकते थे कि वह उनके हृदय रूपी दर्पण की पवित्रता के कारण है जो सचाई के सूर्य्य (बहाउल्लाह) की ओर होने से उत्पन्न होती है न कि वह (अब्दुल-बहा) स्वयं सचाई के सूर्य्य हैं।

इसके अतिरिक्त पहले मतों के विरुद्ध बहाउल्लाह के धर्म में मनुष्य-मात्र को एक बना देने की शक्ति है। अब्दुल-बहा के कार्यकाल में जो सन् १८९२ से सन् १९२१ तक रहा, धर्म, संसार भर को एक करने की ओर क्रमशः उन्नति करता रहा। इसकी इस उन्नति के लिए निरन्तर अब्दुल-बहा के स्पष्ट पथप्रदर्शन की आवश्यकता थी जो अकेले उस नई प्रबल आकाशवाणी को समझ सकते थे जो इस युग के लिये संसार में आई थी। जब तक अब्दुल-बहा के इस शरीर को त्यागने के पश्चात् आपका वसीयत नामा प्रकट नहीं हुआ और उसके तात्पर्य को धर्म के "प्रथम रक्षक" शौक़ी अफ़ेन्दी ने नहीं समझाया तब तक बहाई अपने प्रिय स्वामी के पथप्रदर्शन को इतना ही आत्मिक अधिकारी समझते थे जितना कि एक अवतार के पथप्रदर्शन को।

ऐसी साधारण उत्तेजना का प्रभाव में पाया नहीं जाता, बल्कि आम बहाई उस अद्वितीय भक्ति और सेवा-भाव के तत्व को अधिक समझने लगे हैं जो अब्दुल-बहा द्वारा परिपूर्ण की गई। वह धर्म जो सन् १८६२ में इसके आदर्श स्थापन करने वाले और अनुवादक के शारीरिक देश निकाले के समय और कैद की अवस्था में अति दुर्बल और दीन प्रतीत होता था, आज से न रुकने वाले वेग के साथ इसने चालीस देशों में अपने अनुयायिओं की संस्थाएँ स्थापन कर ली हैं और दम तोड़ती हुई सभ्यता को ऐसे सन्देश द्वारा ललकारता है, जो अकेला निराश मनुष्यमात्र के भावी काल के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करता है।

अब्दुल-बहा के वसीयतनामे में बाब और बहाउल्लाह और स्वयं उसके स्थान के गूढ़ तत्व के सम्बन्ध में प्रकट रूप से यह लिखा है:—

"बहाईयों (मैं उन पर वारी जाऊँ) के इष्ट का आधार यह है कि हज़रते आला (बाब) ईश्वर की एकता और अद्वैतपने के प्रकाशक हैं और आदि सौन्दर्य (जमाले क़िदम) के अगुआ हैं। हज़रते जमाले अब्हा (बहाउल्लाह) (मैं उसके पक्के मित्रों पर वारी जाऊँ) परमात्मा के पूर्ण अवतार हैं और उसके गूढ़ तत्व के प्रकाश स्थान हैं। दूसरे सब उसके दास हैं और आज्ञाकारी हैं।"

इस कथन से और ऐसे ही दूसरे अगणित कथनों द्वारा जिन में अब्दुल-बहा ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि मनुष्य को अपने धर्म संबन्धी ज्ञान की नींव उनकी सर्वसाधारण शिक्षाओं पर रखनी चाहिए, इष्ट की एकता की नींव पड़ गई जिसका फल यह हुआ कि मत-भेद जो आपकी व्यक्तिगत तख्तियों (पत्रादि) के कारण, जिनमें आपने वैयक्तिक प्रश्नों के उत्तर दिए थे, पैदा

हुआ था शीघ्र ही मिट गया। सबसे बढ़कर यह बात हुई कि एक नियमित और प्रबन्धित संस्था स्थापित हो गई जिसके ऊपर एक गार्डियन (रक्षक) है। इस प्रकार जो अधिकार पहले विभिन्न स्थानीय बहाई संस्थाओं में पृथक् पृथक् बहाईयों को उनके प्रभाव और महानता के कारण प्राप्त था वह संस्थाओं को प्राप्त हो गया।

बहाई जीवन का उदाहरण

बहाउल्लाह शिक्षा के मुख्य स्रोत थे। कैद के ४० वर्षों में उन्हें मानव संसार से मेल जोल का समय बहुत कम मिला। इसलिए यह बड़ा काम अब्दुल-बहा के ज़िम्मे लगा कि वह अपने समय के सारे संसार का सामना करके भी, ईश्वरीय ज्योति का प्रकाशक (व्याख्याता), उसकी शिक्षा का प्रचारक बने, तथा आज्ञाओं का पालन करे और बहाई जीवन के प्रत्येक भाग और कर्तव्य का एक सच्चा और महान् उदाहरण बन कर दिखाये। इन्होंने यह बात सिद्ध कर दिखाई कि इस वर्तमान जीवन प्रवाह के भँवरों में, सर्वत्र फैल रही आर्थिक उन्नति के लिये इन स्वार्थ पूर्ण उग्र प्रयत्नों के रहते भी, यह बात सर्वथा संभव है कि मनुष्य ईश्वर-परायण रहकर अपना जीवन बिताए और मनुष्यमात्र की सेवा करे जैसा कि बहाउल्लाह और मसीह आदि पैगंबर मनुष्यों को शिक्षा दे गये हैं। अनेक परीक्षाओं और क्रान्तियों और परिवर्तनों के समय में जब कि एक ओर धोखा और कष्ट भोग तथा दूसरी ओर प्रेम, प्रशंसा और भक्ति भाव था, वह समुद्र के किनारे चट्टान पर बने एक ऐसे प्रकाश गृह (Light-House) के समान स्थिर भाव से खड़े रहे जिसके एक तरफ हेमन्त के तूफानों की परम्परा हो, और दूसरी तरफ ग्रीष्म की रमणीयता

और प्रमोद। इन विरोधी दशाओं में भी इनकी अवस्था समशील और अटल रही। इनका जीवन धर्ममय था और यह अपने भक्तों को भी प्रति समय और इस दुनिया पर ऐसा ही जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया करते थे। आपस की लड़ाईयों और झगड़ों से भरे इस संसार में इन्होंने एकता और शान्ति का झंडा उठाकर नये युग की स्थापना की और जो इस झंडे के नीचे एकत्र होंगे उनको यक़ीन दिलाया कि इन्हें नये जीवन का उज्ज्वल प्रकाश प्रेरणा देगा। यह प्राचीन नबियों और सन्तों के समान ही महात्मा थे, भेद केवल इतना है कि इन्होंने नवीन आवश्यकताओं के अनुसार नवीन शिक्षाओं और भावनाओं का प्रचार किया है।

अध्याय पांचवां

बहाई किसे कहते हैं ?

"मनुष्य को फलवान् होना चाहिये (अपना कर्तव्य करके सफल बनना चाहिये) । फलहीन मनुष्य ईश्वरोय आत्मा अर्थात् मसीह के शब्दों में फलहीन वृक्ष के समान है और फलहीन वृक्ष जलाने के योग्य है ।"—(Bahaullah, in *Words of Paradise.*)

हर्बर्ट स्पैंसर ने एक बार कहा था कि कोई राजनैतिक रसायन सीसे को सोना नहीं बना सकता, इसी प्रकार यह बात भी सच है कि कोई राजनैतिक रसायन सीसे जैसे निगु ण व्यक्तियों से सुवर्ण के समान गुरुतर नहीं बना सकता। बहाउल्लाह ने दूसरे पूर्ववर्ती नबियों के समान ही इस सत्य की घोषणा की और कहा कि संसार में ईश्वर का राज्य स्थापित करने के लिये पहले लोगों के हृदयों में उसे स्थापित करना चाहिये । इसलिये बहाई शिक्षाओं की परीक्षा को हम पहले पहल बहाउल्लाह के बताये व्यक्तिगत आचार से आरम्भ करेंगे, और इस बात का सच्चा चित्र खींचने का यत्न करेंगे कि बहाई वास्तव में कहते किसको हैं, अर्थात् बहाई कहलाने का सच्चा अभिप्राय क्या है ।

जीवन यात्रा

एक मौके पर 'बहाई किसको कहते हैं ?' इस प्रश्न के उत्तर में अब्दुल-बहा ने कहा था कि बहाई होने का सीधा अर्थ यह है कि "आदमी सारे संसार से प्रेम करे, मानव जाति से प्रेम करे और उसकी सेवा करने का यत्न करे, संसार भर में शान्ति और भ्रातृभाव स्थिर करने का उद्योग करे।" एक और मौके पर उन्हों ने बहाई शब्द का अर्थ यों बताया है "कि बहाई वह है जिस के कार्य-कलाप सभी पूर्णताओं से युक्त हैं।" लंदन में बातें करते करते एकबार उन्होंने कहा था कि ऐसा मनुष्य भी, जिसने बहाउल्लाह का नाम तक ना सुना हो, बहाई कहा जा सकता है। उन्होंने बताया कि—

"जो मनुष्य बहाउल्लाह के उपदेशों के अनुसार अपना जीवन बिताता है वह 'बहाई' है। इसके विपरीत वह आदमी, जो अपने आप को पचास वर्षों से 'बहाई' कहता आ रहा है, पर उसके व्यवहार यदि वैसे नहीं, तो वह 'बहाई' नहीं हो सकता। एक भद्दी सूरत का मनुष्य अपने आप को कैसा भी सुन्दर कहे, पर वह किसी को धोखा नहीं दे सकता और एक काले रंग का आदमी अपने आप को गोरा कहता जाय, पर वह किसी और को बल्कि अपने आप को भी धोखा नहीं दे सकता।"
(*Abdul-Baha in London*, p. 109.)

जो आदमी ईश्वरीय दूतों को नहीं जानता, वह छाया में पले हुए वृक्ष के समान है। यद्यपि वह सूर्य को नहीं जानता पर इसमें सन्देह नहीं कि वह उस पर सर्वथा निर्भर अवश्य है। बड़े बड़े धर्मावतार आध्यात्मिक सूर्य हैं, और बहाउल्लाह आजकल का सूर्य है जिसमें हम जी रहे हैं। गत समय के सूर्य संसार को जीवन

और गर्मी दे गये। यदि वह प्रकाशित न होते, तो संसार इस समय तक ठंडा होकर निर्जीव हो गया होता। परन्तु आजकल के फलों को, जिन्हें पहले सूर्यों ने जीवन प्रदान किया है, केवल आजकल का सूर्य ही पका सकता है।

ईश्वर की आराधना

बहाई जीवन की पूर्णता प्राप्त करने के लिये बहाउल्लाह के साथ सम्पूर्ण प्रत्यक्ष संबन्ध जोड़ने की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि कमल या गुलाब के फूल को खिलने के लिये सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है। बहाईयों की आराधना बहाउल्लाह के भौतिक देह की आराधना नहीं है, बल्कि उनकी देह के द्वारा जो ईश्वरीय महिमा का प्रकाश हुआ है, उसकी आराधना है। बहाई मनुष्य मसीह और मोहम्मद साहिब आदि सभी पूर्ववर्ती ईश्वरीय दूतों को, जो समय समय पर मानव सुधार के लिये अवतार धार चुके हैं, आदर और सम्मान की दृष्टि से देखता है, पर बहाउल्लाह को अपने समय का ईश्वरीय दूत समझता है, और उसकी धारणा है कि यह दूत संसारभर में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है और भूतपूर्व धर्मावतारों के कार्य को चलाने और पूरा करने के लिये आया है।

इस धर्म को बुद्धिपूर्वक स्वीकार कर लेने से ही मनुष्य बहाई नहीं बन जाता और नाही अपने सदाचार को बाह्य रूप से पवित्र बना लेना ही उसके लिये पर्याप्त है। बहाउल्लाह अपने भक्तों से हृदय की शुद्धि और पूरी आराधना जाहते हैं। लोगों से ऐसी आकांक्षा रखना केवल ईश्वर का ही अधिकार है, पर बहाउल्लाह ईश्वर का प्रतिनिधि वा प्रत्यक्ष स्वरूप होने और उस-

की इच्छा को प्रकट करनेवाला होने की हैसियत से ऐसा कथन करते हैं। भूतपूर्व अवतारों ने भी इस विषय को इसी प्रकार स्पष्ट किया है। मसीह ने कहा था कि "यदि कोई मनुष्य मेरे पीछे लगना चाहता है तो उसे चाहिये कि अपनी सत्ता का प्रतिषेध करे (समझे कि मैं कोई वस्तु नहीं हूँ) और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे आये, क्योंकि जो अपने जीवन की रक्षा करना चाहता है वह उसे अवश्य खोयेगा और जो मेरे निमित्त आत्मोत्सर्ग करेगा वह अवश्य उसे प्राप्त करेगा।" सभी ईश्वरीय दूतों ने भिन्न भिन्न शब्दों में अपने अनुयायिओं से ऐसी ही इच्छा प्रकट की है और धार्मिक इतिहास से यह बात स्पष्ट सिद्ध होती है कि ऐसी इच्छा के स्वीकार करने और पालन करने से प्रत्येक धर्म को, संसार भर के विरोधी होने पर भी, अनेक कष्ट और यातनाओं के होते भी तथा असंख्य भक्तों का बलिदान होने पर भी, उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई।

इसके विरुद्ध ज्यों ज्यों ढीलापन दिखाया गया और मान तथा प्रतिष्ठा की अभिलाषा बढ़ती गई धर्म ह्रास होता गया। यह सामयिक अभिरुचि और प्रवृत्ति (फैशन) के अनुकूल तो बन गया पर इसमें की आत्म रक्षा और हृदयों को आकृष्ट करने की क्षमता और अद्भुत कार्य कर दिखाने की सामर्थ्य जाती रही। सच्चा धर्म आज तक कभी मनभावना नहीं हुआ। ईश्वर करे, ऐसा बन जाय, पर अभी तक तो मसीह के समय का सा ही है कि "जीवन का मार्ग तंग और द्वार छोटा है और कुछ ही लोग उसे पाते हैं"। आध्यात्मिक जन्म का द्वार-मार्ग भौतिक जन्म के द्वार-मार्ग के समान केवल एक एक करके ही मनुष्यों को ग्रहण कर सकता है, वह भी उसको जो भारी न हो। यदि भविष्य में

लोग पूर्व समय की अपेक्षा अधिक संख्या में इस द्वार में से प्रवेश पाने में सफल हो सकेंगे तो इसका कारण यह न होगा कि द्वार पहले की अपेक्षा खुला हो गया है, बल्कि यह होगा, कि लोगों ने पूर्व समय की अपेक्षा अधिक दृढ़ता से ईश्वरीय नियमों को स्वीकार किया है, या यों कहें कि, लोगों ने अपने लंबे और कटु अनुभव के द्वारा इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है कि ईश्वर के दिखाये मार्ग को छोड़ कर अपने लिये स्वयं मार्ग चुनना भारी अनर्थ का हेतु है।

सत्य की गवेषणा

बहाउल्लाह ने अपने अनुगामियों से न्याय करने पर बड़ा ज़ोर दिया है, और न्याय का स्वरूप उन्होंने यों बताया है—

"मनुष्य को भ्रम और अनुकरण से दूर रहना चाहिये ताकि वह ईश्वरीय ज्योति को एकता की दृष्टि से देखे और सब बातों में सूक्ष्म दृष्टि से काम ले।"—(*Words of Wisdom*)

प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह आवश्यक है कि वह बहाउल्लाह के मानव देह में ईश्वरीय महिमा के ज्योति को देखे, अन्यथा बहाई विश्वास (Faith) उसके लिये विडम्बनामात्र (व्यर्थ) होगा। ईश्वरावतरों की ओर से मनुष्यमात्र को यही आदेश होता आया है कि वह अपनी आँखों को खोलें, उन्हें बंद न रखें, अपनी बुद्धि से काम लें, उसे दबने न दें। पराधीनता का भोलापन नहीं, बल्कि स्पष्ट दर्शन और स्वतन्त्र विचार ही मनुष्य को पक्षपात के बादलों को हटाकर और अन्धे अनुकरण की बेड़ियों को तोड़ कर, नवीन अवतार के सत्य का निश्चय करा सकेगा।

जो भी अपने आपको बहाई कहलायेगा, उसे निर्भय होकर

सत्य की खोज करनी होगी, परन्तु उसकी गवेषणा भौतिक परिधि में ही बन्द न रहनी चाहिए। उसकी भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दर्शन शक्तियाँ जागृत रहनी चाहियें। सत्य को प्राप्त करने के लिये ज्ञान के सभी साधनों को, जो ईश्वर ने दिये हैं, उसे उपयोग में लाना चाहिये, और तब तक किसी बात पर विश्वास न करना चाहिये जब तक उसमें पक्के और पर्याप्त प्रमाण न मिलें। जिसका हृदय पवित्र है, और जिसका मन पक्षपात से मुक्त है, ऐसा सच्चा गवेषक किसी भी देह में प्रकट हुए ईश्वरीय ज्योति को पहचाने बिना नहीं रह सकता। बहाउल्लाह ने आगे चलकर लिखा है—

"मनुष्य को अपने आप का ज्ञान होना चाहिये और उसे यह भी जानना चाहिये कि कौनसी बातें आदमी को ऊँचा या नीचा बनाती हैं, कौनसी बातें लज्जा वा सम्मान के योग्य बनाती हैं, और कौनसी बातें धनी या दरिद्र बनाती हैं।"—(*Tablet of Tarazat.*)

"सब विद्याओं का मूल ईश्वरीय विद्या है और ईश्वर के ही अवतार के द्वार जब तक यह विद्या प्राप्त न हो दूसरे किसी उपाय से प्राप्त नहीं हो सकती।"—(*Words of Wisdom.*)

ईश्वरीय ज्योति में अवतीर्ण पूर्ण पुरुष मनुष्य मात्र के लिये महान् आदर्श है और मनुष्यत्व के वृक्ष का सब से पहला फल है। जब तक हमें इसका ज्ञान न हो, तब तक हमें अपने अन्दर की छुपी हुई शक्तियों का पता नहीं लग सकता। मसीह ने हमें कहा है कि कमल के फूलों को ध्यान से देखो, वह किस प्रकार उगते हैं, और उन्होंने बताया कि सुलोमान अपनी पूरी शान शौकत से तय्यार हो कर खड़ा हो जाये तो भी इन फूलों में से किसी एक के साथ भी समता नहीं कर सकता। कमल अत्यन्त भद्दे से रूप

वाले बीज से उगता है। यदि हम कमल को फूलता न देख लेते और यदि उसके अनुपम शोभा संपन्न पत्तियाँ और फूल हमारे दृष्टिगोचर न हो गये होते तो उसके भद्दे से बीज में छुपी हुई इतनी सुन्दरता का ज्ञान किस प्रकार हो पाता। हम चाहे इस बीज के बड़ी सावधानता से कई टुकड़े करके प्रत्येक टुकड़े का बड़े ध्यान से निरीक्षण करें पर उसके अन्दर के प्रसुप्त सौन्दर्य का वह भेद हमें मालूम नहीं हो सकता जिसे माली प्रकट करके दिखा सकता है। इसी प्रकार जब तक हम ईश्वरीय महिमा को किसी अवतार में प्रकट हुआ न देख लें तब तक हमारे अपने और दूसरे मनुष्यों के अन्दर गुप्त रूप से विद्यमान आध्यात्मिक सौन्दर्य का हमें किस प्रकार ज्ञान हो सकता है। ईश्वरीय अवतार को जानने, उससे प्रेम करने और उसकी शिक्षाओं का अनुसरण करने से हमें धीरे धीरे अपने अंदर की गुप्त शक्तियों का अनुभव होने लग जाता है और तब ही, न कि उससे पूर्व, हमें अपने जीवन और संसार के तत्त्व तथा प्रयोजन का यथार्थ भान होता है।

ईश्वर का प्रेम

ईश्वरीय अवतार को जान लेने का अर्थ उससे स्नेह करना भी है। वास्तव में एक के अलग दूसरा मार्ग शक्य नहीं। बहाउल्लाह की शिक्षा के अनुसार मानव सृष्टि का प्रयोजन यह है कि मनुष्य ईश्वर को जाने और उसकी आराधना करे। अपनी एक तख्ती में उन्होंने कहा है—

"प्राणी मात्र के सर्जन का एकमात्र प्रयोजन केवल प्रेम है, जैसा कि इस परम्पराप्राप्त प्रसिद्ध उक्ति में कहा है, 'मैं एक छुपा हुआ निधि था,

मैं चाहता था कि मैं प्रकट होऊँ, इसलिये मैंने सृष्टि उत्पन्न की कि मेरा स्वरूप प्रकट हो जाये।' ''

और 'गुप्त शब्दों' में उन्होंने कहा है—

''ऐ अस्तित्व (सत्ता) के पुत्र ! मुझ से प्रेम कर ताकि मैं भी तुझ से प्रेम करूँ। यदि तुम मुझ से प्रेम न करोगे तो मेरा प्रेम तेरे तक कभी न पहुँचेगा। ऐ सेवक ! इस बात को जान ले।''

''ऐ उच्चतम दृष्टि वाले पुत्र ! मैंने तेरे अन्दर अपना आत्मांश डाला है ताकि तू सर्वोत्तम शक्ति संपन्न होकर मेरा प्रेमी बने, क्यों तुमने मुझको भुला रखा है और किसी और से प्रेम लगाना चाहते हो ?''

बहाई जीवन का एकमात्र उद्देश्य यही है कि आदमी ईश्वर का प्रेमी बने। वह ईश्वर को सबसे अधिक समीपवर्ती साथी समझे, सबसे अधिक अभिन्न हृदय मित्र समझे अपना सर्वोत्तम प्रियतम जाने, और उसी के सामीप्य में अपने आनन्द की पराकाष्ठा समझे। ईश्वर से प्रेम करने का हेतु यह है कि सब वस्तुओं और सब प्राणियों से प्रेम करे, क्योंकि वह सब कुछ ईश्वर का है। सच्चा बहाई पूरा प्रेमी होगा। यह सबके साथ पवित्र हृदय से बड़े चाव से प्रेम करेगा। किसी से उसका द्वेष न होगा। वह किसी से घृणा न करेगा क्योंकि उसे हर एक चेहरे में अपने प्रियतम का चेहरा देखना सीखना होगा और सब जगह उसी को ढूँढना होगा। उसका प्रेम किसी मत, जाति, वर्ग अथवा संप्रदाय तक मर्यादित (बंद) न रहेगा। बहाउल्लाह कहते हैं—

'गत समय में कहा जाता था कि अपने देश से प्रेम करना ही धर्म है। पर इस अवतार के द्वारा उस महान् आत्मा की जिह्वा कहती है कि अपने देश से प्रेम करना कोई महत्त्व की बात नहीं, महत्त्व इसमें है कि मनुष्यमात्र से प्रेम किया जावे।''

और फिर—

"धन्य है वह जो अपने भाई को अपने से अधिक जानता है। ऐसा मनुष्य बहा के अनुयायिओं में से है।"

अब्दुल-बहा ने हमें कहा है कि हम एक दूसरे से ऐसा व्यवहार करें जैसे भिन्न भिन्न देहों में एक आत्मा हो, क्योंकि जितना अधिक हम आपस में एक दूसरे से प्यार करेंगे, उतना ही अधिक हम ईश्वर के समीप पहुँचेंगे। अमरीका के श्रोतागण के एक समूह के सामने आपने फरमाया—

"परमात्मा के पूर्ण अवतारों के प्रचलित किए हुए धर्म वास्तव में सब एक ही हैं यद्यपि उनके नाम भिन्न भिन्न हैं। मनुष्य को ज्योति का प्रेमी होना चाहिए, चाहे वह कहीं से भी चमके। उसे गुलाब के फूल से प्रेम करना चाहिये, चाहे वह किसी भी भूमि में उगे। उसे सचाई का ढूँढनेवाला होना चाहिये, चाहे वह किसी स्थान से भी मिले। दीपक के प्रति प्रेम ज्योति से प्रेम नहीं है। भूमि से प्रेम व्यर्थ है किन्तु गुलाब के फूल से प्रेम करना जो उस भूमि में से उगता है यथोचित है। वृक्ष से प्रेम करना व्यर्थ है किन्तु उनके फल चखना ही उपयोगी है। स्वादिष्ट फल चाहे वह किसी वृक्ष पर भी लगें और कहीं भी हों उनसे आनन्द लेना चाहिए। सत्य वचन चाहे वह किसी जिव्हा से भी उच्चारण किए जाएँ मान लेने चाहियें। अटल सिद्धान्त चाहे वह किसी भी ग्रन्थ में लिखे हों माननीय हैं। यदि हम हठधर्मी बनते हैं तो इससे सिवाय अज्ञान के और कुछ प्राप्त न होगा। धर्मों, जातियों और राष्ट्रों के बीच झगड़ा मिथ्याबोध के कारण उत्पन्न होता है। यदि हम धर्मों के मूल सिद्धान्तों की जाँच पड़ताल करें तो हमें प्रतीत हो जायगा कि वह सब एक ही हैं क्योंकि उनकी मूल सत्ता एक ही है दो नहीं। इस ढग से संसार के सब मतानुयायी सहमत हो जाएँगे और कोई झगड़ा न रहेगा।"

फिर उन्होंने कहा है—

"प्रत्येक भक्त को चाहिये कि अपने साथियों से प्रेम करे, अपनी सम्पत्ति और अपने जीवन को उनसे पृथक् न रखे, किन्तु जैसे भी हो उन्हें प्रसन्न और संतुष्ट रखने का यत्न करे। परन्तु साथियों को भी चाहिए कि यह निःस्पृह और त्यागी हों। इस प्रकार यह सूर्योदय सब में प्रकाशित हो, यह मधुर गीत सब लोगों को हर्षित और आह्लादित करे, यह दिव्य औषधि सब रोगों के लिये महौषध सिद्ध हो, यह सत्य की भावना सबके जीवन का उद्देश्य हो।"—(*Tablets of Abdul-Baha* Vol. I, p. 147.)

विरक्ति

ईश्वर की भक्ति उन सब वस्तुओं से जो ईश्वर की नहीं हैं, विरक्ति (जुदाई) चाहती है, अर्थात् भक्ति के मार्ग में मनुष्य को स्वार्थ, विषय वासना और परलोक की शुभ कामना तक का भी त्याग करना आवश्यक है। ईश्वरभक्ति का मार्ग ऐश्वर्य और दरिद्रता, आरोग्य और बीमारी, महल और झोंपड़ी, पुष्पवाटिका और यातनामय स्थान, इन सब में से होकर जाता है। कैसी भी दशा क्यों न हो, बहाई दैव विधियों में दृढ़ता और संतोष को धारण किये रहेगा। विरक्ति (जुदाई) का यह अर्थ नहीं है कि आदमी अपने अड़ोस पड़ोस से मूर्खतापूर्ण औदास्य धारण किये रहे, या बुरी दशाओं में निरुद्योग सा होकर पड़ा रहे और इसका यह भी अर्थ नहीं कि आदमी ईश्वर की बनाई वस्तुओं से घृणा करता रहे। सच्चा बहाई न तो कठोर होगा और न सुस्त व भीरु होगा और नहीं यति व संन्यासी होगा। वह ईश्वर के मार्ग में बेहद शोक, अनगिनत काम और अपरिमित आनन्द प्राप्त करेगा, परन्तु

वह सुखाभिलाषा में पड़ कर ईश्वर के मार्ग से एक बाल भर भी इधर उधर न होगा और ना ही वस्तु के पीछे दौड़ धूप करेगा जो ईश्वर ने उसे नहीं दी। जब आदमी बहाई हो जाता है तो ईश्वर की इच्छा उसकी इच्छा हो जाती है, क्योंकि ईश्वर के विरुद्ध होकर रहना वह किसी प्रकार भी सह नहीं सकता। ईश्वर के मार्ग में भूलें मनुष्य को वश में नहीं कर सकतीं और न कष्ट ही आदमी को हतोत्साह कर सकते हैं। प्रेम की ज्योति उसके अन्धकारमय दिनों में प्रकाश किये रहती और कष्टों को सुख में पलट देती और जीवनोत्सर्ग को उसके हार्दिक आनन्द का साधन बना देती है। उसका जीवन वीरता के उच्च आसन पर विराजता है और मृत्यु एक मनोविनोद का कारण बन जाती है। बहाउल्लाह कहते हैं:—

"जो आदमी मेरे सिवा और किसी में अणुमात्र भी प्रेम रखता है, निश्चय जानो, वह मेरे राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"—(*Suratul-Haykal.*)

"ऐ मानव पुत्र ! यदि तू मुझसे प्रेम रखता है तो अपने आप से पृथक् हो जा, यदि तू मेरी इच्छा को देखना चाहता है तो अपनी इच्छा का ऐसा परित्याग कर कि तू मुझ में मरे और मैं तुझ में जीऊँ।"

"ऐ मेरे सेवक ! अपने आपको संसार की बेड़ियों से मुक्त कर और 'अहंता' के कारागार से बाहर आ। समय के मूल्य की कदर कर, क्योंकि फिर यह तुझे न मिलेगा और ना ही ऐसा शुभ समय फिर हाथ आयेगा।"—(*Hidden Words*).

आज्ञा पालन

उसकी प्रकाशित की हुई आज्ञाओं का श्रद्धापूर्वक पालन करना

भी ईश्वर भक्ति का अङ्ग है, चाहे उन आज्ञाओं का हेतु ज्ञात भी न हो। मल्लाह बिना चूंचपड़के अपने कप्तान की आज्ञा का पालन करता है, चाहे उसे उनका सबब मालूम न भी हो, परन्तु उसका अपने अध्यक्ष के अधिकार को मानना अन्ध विश्वास नहीं। उस को पता है कि कप्तान काफी समय तक अपना काम करता रहा है और अपनी योग्यता का पूरा प्रमाण दे चुका है। यदि ऐसा न होता तो उसके अधीन काम करना उसकी मूर्खता थी। इसी प्रकार बहाई के लिये भी बिना चूंचपड़ किये अपने मोक्षदाता कप्तान की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है, परन्तु यह उसकी मूर्खता होगी यदि वह इस बात को पहले अच्छी तरह न जान ले कि उसके कप्तान ने अपने विश्वासपात्र होने का पूरा प्रमाण दे दिया है। ऐसा प्रमाण पाकर भी यदि वह उसकी आज्ञा का पालन करने से इनकार करे तो यह उसकी और भी बड़ी उद्दंडता होगी, क्योंकि बुद्धिमान स्वामी की आज्ञाओं का आँखें खोल कर बुद्धि-पूर्वक पालन करने ही से वह उसकी बुद्धिमत्ता से लाभ उठा सकता है, और स्वयं भी ऐसी योग्यता के अधिकारी बन सकता है। अगर कप्तान ऐसा बुद्धिमान न हो और अगर मल्लाह उसकी आज्ञा का पालन न करें तो जहाज़ समुद्र से पार कैसे पहुँचेगा, या मल्लाह जहाज़ चलाने की विद्या कैसे सीख सकते हैं। मसीह ने बहुत ही स्पष्ट रूप से कहा है कि आज्ञा पालन ही ज्ञान का मार्ग है। उन्होंने कहा है:—

"मेरे सिद्धान्त मेरे नहीं, बल्कि उसके हैं, जिसने मुझे भेजा है। यदि कोई मनुष्य उसकी इच्छा को पूरा करेगा तो उसे इस बात का भी पता लग जायगा कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह उसकी इच्छा से कह रहा हूँ या अपनी इच्छा से। (St. John VII 16-17.)

बहाउल्लाह भी इसी प्रकार कहते हैं:—

"ईश्वर पर विश्वास और उसका ज्ञान पूर्ण रूप से तब तक पाया नहीं जा सकता जब तक उसकी आज्ञाओं का पालन और उसकी प्रभाव-भरी लेखनी द्वारा लिखी पुस्तक का अध्ययन न किया जाये।"—(*Tablet of Tajalliyat*).

आजकल के लोकराज्य के दिनों में किसी की आज्ञा को अन्धाधुन्ध पालन करना कोई विशेष गुण नहीं समझा जाता और यथार्थ में किसी साधारण मनुष्य की आज्ञाओं का बिना विचारे पालन करना निःसन्देह घातक होगा। परन्तु मनुष्य मात्र में एकता तभी निष्पन्न हो सकती है जब सब व्यक्ति तथा समाज ईश्वरीय इच्छा मुताबिक चलें। जब तक वह इच्छा स्पष्ट रूप से प्रकाशित न हो और मनुष्य बाकी नेताओं को छोड़ कर उसी एक ईश्वरीय दूत के अनुगामी न हो जायें, तब तक झगड़े फ़साद जारी रहेंगे, और मनुष्य एक दूसरे का विरोध करते रहेंगे, अपनी शक्ति का अधिकांश अपने भाई के यत्नों को विफल करने में लगाते रहेंगे, चाहे उनका कर्तव्य यही क्यों न हो कि वह ईश्वर के नाम से सबके साथ भ्रातृ-स्नेह से रहें और सब भले काम करें।

सेवा

अपने साथी प्राणिमात्र की सेवा करना भी ईश्वर भक्ति में सम्मिलित है। हम ईश्वर की सेवा और किसी प्रकार से नहीं कर सकते। यदि हम अपने भाइयों से पीठ फेरते हैं तो ईश्वर से पीठ फेरते हैं। मसीह का कथन है—"क्योंकि तुमने मेरे इन भाइयों मेंसे छोटे से छोटे की भी सेवा न की तुमने मेरी सेवा नहीं की।' इसी प्रकार बहाउल्लाह भी कहते हैं:—

"ऐ मानवपुत्र ! यदि तू दया चाहता है तो अपने लाभ का ध्यान न रख बल्कि अपने भाइयों का लाभ सोच। यदि तू न्याय चाहता है तो दूसरों के लिये वह काम पसन्द कर जो तू अपने लिये पसंद करता है।"—(*Words of Paradise*).

अब्दुल-बहा ने कहा है:--

"बहाई मत में कला, विज्ञान और सभी शिल्प आराधना में गिने जाते हैं। यदि कोई मनुष्य अपनी योग्यता से बड़ी ईमानदारी के साथ सारी शक्तियां लगाकर पत्र लिखने में उपयोगी एक कागज़ बनाता है, वह ईश्वर की स्तुति करता है। सारांश यह कि जो आदमी किसी भी यत्न या उद्योग को शुद्ध हृदय से आरम्भ करता है वह ईश्वर का भजन करता है, यदि उसके हृदय में ऊँचा लक्ष्य और मनुष्यमात्र की सेवा का भाव विद्यमान हो। यही भक्ति है मनुष्यमात्र की सेवा और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना। सेवा ही प्रार्थना है। जो वैद्य किसी रोगी का सौशील्य और सद्भाव से किसी प्रकार का पक्षपात न करके उसे मानव जाति का एक अङ्ग समझ कर इलाज करता है वह ईश्वर का भजन करता है।"—(*Wisdom of Abdul-Baha.*)

शिक्षा

सच्चा बहाई बहाउल्लाह की शिक्षाओं पर केवल विश्वास न करेगा बल्कि बड़े आनन्द से दूसरों को भी उस ज्ञान में साथी बनायेगा जो उसके कल्याण का सुधा-सरोवर है। ऐसा करने से ही वह पूर्णरूप से आत्म-शक्ति और आशीर्वाद प्राप्त कर सकेगा। सभी लोग धुरंधर व्याख्याता और शीघ्र लेखक नहीं बन सकते परन्तु बहाई जीवन व्यतीत करने से सभी लोग प्रचार कर सकते हैं।

बहाउल्लाह कहते हैं—

"सभी बहाईयों का कर्तव्य है कि वह बुद्धिमत्ता से ईश्वर की सेवा करें, दूसरों को भी अपने जीवन के आदर्श से शिक्षा दें, और अपने कार्यों से ईश्वरीय ज्योति का प्रकाश करें। सच्चे कार्यों का प्रभाव वचनों की अपेक्षा बहुत अधिक हैं। शिक्षक के कहे शब्दों का प्रभाव उसके भाव की शुद्धि तथा त्यागिता पर अवलम्बित है। कई लोग शब्दों पर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं, परन्तु शब्दों की सचाई कार्यों से परखी जाती और जीवन पर आश्रित रहती है। कार्य ही मनुष्य की स्थिति को प्रकट करते हैं। वाणी धर्म पुस्तकों में उल्लिखित या ईश्वरावतार के मुख से निकले हुए शब्दों के अनुसार ही होनी चाहिये।"—(*Words of Wisdom.*)

बहाई मनुष्य अपने विचार ऐसे लोगों को, जो सुनना न चाहेंगे, जोर से सुनाने की चेष्टा कभी न करेगा। वह ईश्वरीय राज्य की ओर लोगों को आकृष्ट करेगा पर इसमें घसीट लाने का यत्न न करेगा। वह एक अच्छे गडरिये के समान अपने खेड़ का मधुर संगीत से परिचालन करेगा न कि उस गडरिये के समान जो अपने खेड को कुत्ते और लगुड़ के द्वारा आगे लगाये रहता है।

बहाउल्लाह अपने "गुप्त शब्दों" में कहते हैं—

"ओ धूलि के पुत्र! बुद्धिमान वे हैं जो अपना मुँह तब तक नहीं खोलते जब तक श्रोताओं को नहीं पा लेते, जैसे मदिरा का प्याला लिये हुए मनुष्य (साक़ी) तब तक प्याला किसी को नहीं देता जब तक कोई मांगे नहीं। और चाहनेवाला तब तक सत्य हृदय से नहीं चिल्लाता, जब तक वह अपने प्रीतम की सुन्दरता को भली भान्ति नहीं देख पाता। इसलिए अपने हृदयों की पवित्र भूमि में बुद्धिमत्ता और ज्ञान

के बीज बोओ और उन्हें उस समय तक गुप्त रक्खो जब तक ईश्वरीय ज्ञान की कलियाँ कीचड़ और मिट्टी से नहीं बल्कि हृदय से फूटें।"

फिर उन्होंने इशराकात (*Ishraqat*) की तख़्ती में लिखा है—

"ऐ बहा के लोगो! तुम ईश्वरीय प्रेम के अरुणोदय हो और ईश्वरीय प्रसाद के वासन्तिक दिन हो। किसी को दुर्वचन या कठोर भाषण करके अपनी जीभ को कलुषित मत करो और अपनी आँखों को ऐसी वस्तु से बचाकर रखो जो देखने के योग्य नहीं। जो कुछ तुम्हारे पास है उसे अर्थात् सत्य को सामने लाकर धरो। अगर वह स्वीकृत हो गया तो तुम्हारा उद्देश्य सिद्ध हुआ और यदि अस्वीकृत हुआ तो निषेध करने वाले को कटु शब्द कहना या उससे झगड़ना व्यर्थ है। उसको अपने पर छोड़ दो, तुम आप सर्वरक्षक और स्वयं सिद्ध ईश्वर की ओर बढ़ते जाओ। किसी के आत्मसन्ताप का भी कारण मत बनो, झगड़े और फ़साद की तो बात ही क्या। आशा की जाती है कि तुम सब ईश्वर के प्रसाद रूपी वृक्ष की छाया में पलते और बढ़ते रहोगे और वही काम करोगे जो ईश्वर की इच्छा के अनुकूल होगा। तुम सब एक ही वृक्ष के पत्ते और एक ही समुद्र के बिन्दु हो।"

विनय और सम्मान

बहाउल्लाह कहते हैं—

"ऐ ईश्वर के बंदो! मैं तुम्हें विनय करने का उपदेश करता हूँ। विनय अवश्य सब गुणों का मुकुट है। वह पुरुष धन्य है, जो मन का सरल और विनय से विभूषित है। विनय-संपन्न पुरुष एक बड़े स्थान का अधिकारी है। आशा है, यह यातना-भोगी और अन्य सब लोग इसे प्राप्त करेंगे, और इसे सम्हाल कर पास रखेंगे। यह ईश्वरीय लेखनी द्वारा लिखी गई उसकी अनुल्लंघनीय आज्ञा है।" (विश्व तख़्ती)

उन्होंने बार बार इसे दोहराया है—

"संसार की सब जातियां प्रेम और आनन्द से एक दूसरी के साथ मिल जायें। ऐ लोगो ! सब धर्मों के लोगों से प्रीति और हर्ष के साथ मिल जाओ।"

अब्दुल-बहा अमेरिका के बहाईयों को पत्र में लिखते हैं:—

"ध्यान रखो, तुमसे किसी हृदय को चोट न पहुँचे, ध्यान रहे, तुम से किसी की आत्मा दुःख पाये; ध्यान रहे, तुम्हारा किसी के साथ क्रूर व्यवहार न हो; ध्यान रहे, तुम किसी प्राणी की निराशा का कारण न बनो।"

"यदि कोई किसी हृगय को दुखाने का कारण बने अथवा किसी जीव की निराशा का कारण बने तो उसके लिये पृथ्वी के ऊपर चलने की अपेक्षा पृथ्वी के किसी गढ़े में जा छुपना कहीं अच्छा है।"

वह आज्ञा करते हैं कि जैसे फूल डोडी में छिपा होता है वैसे ही ईश्वरीय आत्मा प्रत्येक मनुष्य के हृदय में रहता है, चाहे उसका बाह्य रूप कितना भी कठोर या अप्रिय क्यों न हो। इसलिये प्रत्येक बहाई को मनुष्यमात्र के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिये जैसा एक माली कोमल और सुन्दर बूटे के साथ करता है। वह जानता है कि उसकी अधीरता का क्रिया-कलाप किसी प्रकार भी डोडी को फूल में नहीं बदल सकता, केवल प्राकृतिक धूप ही ऐसा कर सकती है, इसलिये इसका कर्तव्य है कि प्रत्येक अन्धकारपूर्ण हृदय या घर में इस ज्ञानमय जीवनदाता सूर्य की ज्योति को पहुँचाये।

फिर अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"बहाउल्लाह की शिक्षाओं में एक शिक्षा यह है कि आदमी

किसी भी अवस्था या दशा में रहता हुआ भी क्षमाशील रहे, शत्रु से भी स्नेह करे, और बुरा चाहनेवाले को भी हितैषी समझे। यह नहीं कि पहले किसी को शत्रु समझ ले और फिर उससे मेल करे और उसका सब कुछ सहे। यह दम्भ है, सच्चा प्रेम नहीं। तुम्हें तो अपने शत्रुओं को मित्र समझना चाहिये, अपने बुरा चाहने वालों को भला चाहनेवाला जानो और उससे वैसा ही व्यवहार भी करो। तुम्हारा प्रेम और दया सच्ची होनी चाहिये, केवल सहनशीलता ही काफ़ी नहीं, क्योंकि सहनशीलता यदि हार्दिक न हो तो वह केवल दम्भ है।"–(*Star of the West*, vol. iv. *191.*)

ऐसी शिक्षाएं तब तक समझ में नहीं आ सकतीं जब तक आदमी यह महसूस न करे कि बाहर से आदमी चाहे द्वेषी या बुरा चाहने वाला भी क्यों न हो, पर प्रत्येक मानव हृदय के अंदर एक ऐसा अन्तरात्मा स्थित है जिससे प्रेम और सद्भाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं प्राप्त हो सकता। अपने पड़ोसी की इसी आन्तरिक आत्मा की ओर हमारा भाव और प्रेम लक्षित होना चाहिये। जब यह अन्तरात्मा जागृत होती है तो बाह्य रूप स्वयं बदल जाता है और मनुष्य एक नये रूप में आ जाता है।

पराये दोषों पर उपेक्षा-दृष्टि

बहाई शिक्षा और किसी बात पर इतना अधिक ज़ोर नहीं देती जितना कि पर-दोष-दर्शन से दूर रहने पर ज़ोर देती है। मसीह ने भी इस विषय पर ज़ोर दिया है, परन्तु आजकल ऐसी धारणा हो गई है कि "पर्वत पर दिया हुआ उपदेश" पूर्णता की हद है और एक साधारण ईसाई के बस का रोग नहीं कि उस पर अमल कर सके। बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा दोनों

ने बड़े यत्न से इस बात को स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि उक्त विषय पर जो कुछ उन्होंने कहा है वह प्रत्येक बहाई के लिये है। 'गुप्तवचन' में लिखा है—

"ऐ मानव पुत्र ! जब तक तू आप दोषी है किसी दूसरे के दोष न देख। यदि तू इस आज्ञा के विरुद्ध चलेगा तो तू मेरा भक्त नहीं है, इसका मैं स्वयं साक्षी हूँ।"

"ऐ सत्ता के पुत्र ! किसी आत्मा को ऐसी बात से संबन्ध न दे जिसका अपने साथ संबन्ध लगाना तुझे अभीष्ट नहीं। यह तुझ को मेरी आज्ञा है, इसका पालन कर।"

अब्दुल-बहा ने कहा है:—

"हमें दूसरों की भूलों पर चुप रहना चाहिये। उनके दूर होने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये, और उनका सुधार करने में दया करके उन (मनुष्यों) की सहायता करनी चाहिये।"

"सदा गुणों पर ध्यान देना चाहिये दोषों पर नहीं। यदि किसी पुरुष में दस गुण हों और एक दोष, तो तुम उसके दस गुणों पर दृष्टि डालो और एक दोष को भुला दो। यदि किसी में दस ऐब हों और एक गुण, तो तुम उसके एक गुण को देखो और दस अवगुणों को भूल जाओ। हमें चाहिये कि हम किसी मनुष्य को भी मर्मभेदी वचन कभी न कहें चाहे वह हमारा शत्रु ही क्यों न हो।"

एक अमेरिका निवासी मित्र को इन्होंने लिखा है:—

"मनुष्य में भारी से भारी अवगुण और बड़े से बड़ा पाप पराई निन्दा है, विशेषकर उस समय जब कि वह ईश्वर के भक्तों (बहाईयों) की जीभ से निकल रही हो। यदि कोई ऐसा उपाय निकल आये जिससे निन्दा के सभी द्वार सदा के लिये बंद हो जायें और सब ईश्वर के भक्त

दूसरों की स्तुति में ही अपनी जीभ का उपयोग करने लगें तब ईश्वरीय ज्योतिरूप बहाउल्लाह की शिक्षाओं का प्रसार हो जाये, हृदय चमक उठें, आत्माएं उज्ज्वल हो जायें और सारे संसार की मानव जाति शाश्वत कल्याण प्राप्त कर ले।" (*Star of the West Vol. IV, p. 192.*)

नम्रता

जब हमें यह आज्ञा है कि हम दूसरों के दोष न देखे और उनके गुण ही देखें तो दूसरी यह आज्ञा भी उसके साथ ही है कि हम अपने दोषों को देखें और गुणों पर ध्यान न दें।

बहाउल्लाह अपनी पुस्तक 'गुप्तवचन' में कहते हैं—

"ऐ सत्ता के पुत्र! तू क्यों अपने दोषों को भुला कर दूसरों के दोषों पर सूक्ष्म दृष्टि लगाये रहता है। जो ऐसा करता है, उसे मैं धिक्कारता हूँ। ऐ परदेशियो! जीभ केवल मेरे वर्णन के लिये दी गई है, पराई निन्दा से इसे दूषित न करो। यदि कोई कामना की अग्नि तुम में प्रबल हो रही हो तो उस पर सावधान होने में लगे रहो और अपने दोष याद करते रहो। मेरे जीवों को बुरा मत कहो क्योंकि तुम में से प्रत्येक अपने आप से मेरे जीवों की अपेक्षा अधिक परिचित है।"

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"तुम्हारा जीवन मसीह के राज्य का परिणाम स्वरूप हो। वह सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने आया था। बहाउल्लाह के संप्रदाय में सब सेवक और सेविकाएं, भाई और बहनें हैं। ज्यों ही मनुष्य के मन में अपने आप को कुछ अच्छा या कुछ ऊँचा मानने का भाव उपजता है त्योंही वह एक भयानक सी दशा में आ जाता है, और जब तक भाव को मन से निकाल बाहर नहीं फेंक देता तब तक वह ईश्वर के राज्य में सेवा करने के योग्य नहीं होता।"

"अपने आप पर असन्तुष्ट रहना उन्नति का चिन्ह है। वह आत्मा जो अपने आप पर सन्तुष्ट है, शैतान का रूप है जो अपने आप पर असंतुष्ट है वह दयानिधि का रूप और मनुष्य में चाहे सहस्रों गुण हों तो भी चाहिये कि वह उन पर ध्यान न दे और अपने दोष तथा न्यूनताओं को खोज निकालने का यत्न करे। मनुष्य कितनी भी उन्नति क्यों न कर ले तो भी वह अपूर्ण ही रहता है, क्योंकि एक नुकता उसके ऊपर सदा रहता ही है। ज्यों ही उसको उस नुकते का पता चलता है वह अपने में न्यूनता अनुभव करके असन्तुष्ट रहने लगता और उसको प्राप्त करने के यत्न में लग जाता है। अपनी स्तुति करना स्वार्थपरता का चिन्ह है।" (*Diary of Mirza Ahmad Sohrab, 1914.*)

यद्यपि हमें आशा है कि हम अपने पापों को जानें और उन पर पश्चात्ताप करें पर उन पापों को मुल्लाओं, पादरियों या पुरोहितों के सामने जाकर अङ्गीकार करना सर्वथा मना किया गया है। शुभ समाचार (*Glad Tidings.*) में बहाउल्लाह लिखते हैं:---

"पापी को चाहिये जब उसका मन ईश्वर के सिवा सब विकारों से मुक्त हो, तो वह स्वयं ईश्वर से ही क्षमा की भिक्षा मांगे। सेवकों (मनुष्यों) के सामने जाकर अपराध स्वीकार करने की सर्वथा आज्ञा नहीं है, क्योंकि यह ईश्वरीय क्षमा का कारण या साधन नहीं है। मनुष्यों के सामने ऐसा अङ्गीकार उसको उनके आगे नीच या लज्जित करने का कारण होता है, और परमात्मा अपने सेवक का किसी के आगे नीच या लज्जित होना पसंद नहीं करता। निश्चय ही वह दयालु और दानशील है। पापी केवल उसी दया सागर के आगे जाकर दया की भिक्षा मांगे और उसी क्षमा के स्वर्ग से जाकर क्षमा के लिए प्रार्थना करे।"

सचाई और दियानतदारी (साधुता)

तराज़ात की तख़्ती में बहाउल्लाह कहते हैं:---

"निश्चय ही ईमानदारी संसार में सब के शान्ति का द्वार है और दयालु परमेश्वर के समक्ष सम्मान का हेतु है। जो इसे प्राप्त कर लेता है वह धन सम्पत्ति का भंडार पा लेता है। ईमानदारी मनुष्य मात्र की रक्षा और शान्ति का सबसे बड़ा द्वार है। प्रत्येक कार्य की स्थिरता सदा से इसी पर निर्भर रहती आई है और सांसारिक मान, यश और समृद्धि इसी की ज्योति से चमकती है।"

"ऐ बहा के लोगो! ईमानदारी तुम्हारे देहों का उत्तम परिधान और सिरों का प्रोज्ज्वल मुकुट है। अपने सर्वशक्तिमान सेनापति की आज्ञा मान कर उसे चमट जाओ।

फिर उन्होंने कहा है—

"धर्म का नियम यह है कि मनुष्य बोले थोड़ा और काम करे अधिक। जो आदमी बोलता बहुत और करता कम है, निश्चय जानो, उसका न होना होने की अपेक्षा कहीं अच्छा है और उसकी मृत्यु उसके जीवन से बहुत अच्छी है।" (*Words of Wisdom.*)

अब्दुल-बहा कहते हैं:--

"सचाई मनुष्य के सब सुकृतों का मूलाधार है। सचाई के बिना संसार के किसी भी काम में मनुष्य की सिद्धि या उन्नति असम्भव है। जब यह पवित्र गुण मनुष्य में आजाता है तो बाकी सब ईश्वरीय मार्ग के सहकारी गुण स्वयं जागृत हो जाते हैं।" (*Tablets of Abdul-Baha*, vol. ii, p. *459*.)

"सचाई और ईमानदारी की ज्योतिको तुम्हारे चेहरों पर चमकनेदो ताकि सबको पता लगे कि तुम्हारी वाणी, काम के अथवा विनोद के सभी

समयों में विश्वास के योग्य है। अपने आपको भूल जाओ और सबके लिये काम करो।" (लंदन के बहाईयों को संदेश, अक्टूबर १९११)

आत्मज्ञान

बहाउल्लाह बार बार कहते हैं कि मनुष्य अपने अंदर गुप्तरूप से स्थित सब पूर्णताओं को जाने और उन्हें पूर्ण रूप से प्रकट करे, अर्थात् उस अन्तरात्मा को जो बाह्य-रूप से भिन्न है, जो एक उत्तम मंदिर है और सच्चे मनुष्य के लिये कारागार है। अपने "गुप्त वचनों" में वह लिखते हैं:—

"ऐ सत्ता के पुत्र ! शक्ति के हाथों से मैंने तुझे बनाया है, और बल की उंगलियों से तेरा निर्माण किया है। अपनी ज्योति की किरण मैंने तुझ में रखी है, इसलिये इसके सिवा किसी और पर निर्भर न रह, क्योंकि मेरा कार्य पूर्ण और मेरी आज्ञा निर्भ्रान्त है। इसमें संदेह न कर और न अनिश्चय ही समझ।"

"ऐ आत्मा के पुत्र ! मैंने तुझे धनी बनाया है, फिर क्यों तू अपने आपको दरिद्र बनाता है। मैंने तुझको श्रेष्ठ बनाया है, फिर क्यों तू अपने आपको गिराता है। ज्ञान के सार से मैंने तुझे प्रकट किया है, फिर क्यों तू मेरे सिवा किसी और से जिज्ञासा रखता है। प्रेम की मट्टी से मैंने तुझको गूँधा है, फिर तू दूसरे की क्यों अपेक्षा रखता है। अपनी दृष्टि को अन्दर की ओर घुमा ताकि तू मुझे अपने में स्थित शक्तिशाली, सर्वसमर्थ और सर्वोच्च पाये।"

"ऐ मेरे सेवक ! तू एक उज्ज्वल और अद्भुत खड्ग के समान है, जो एक अन्धकारमय म्यान में छुपी हो, इसी कारण इसके गुण शिल्पकारों से अज्ञात रहते हैं। सो तू इच्छा और आत्माभिमान की म्यान से

बाहर आ ताकि तेरी चमक फैलकर सारे संसार को विदित हो जाय।"

"ऐ मेरे मित्र ! तू मेरे आकाश का प्राभातिक तारा है, अपनी चमक को सांसारिक अपवित्रता से मैली न कर। अज्ञान के पर्दे को उठा दे ताकि बिना पर्दे या ढकने के चमक बाहर निकले और सबको जीवन देकर सुसज्जित करे।"

जिस जीवन की ओर बहाउल्लाह अपने अनुयायिओं को बुलाते हैं वह वास्तव में ऐसी श्रेष्ठता का जीवन है कि मानव महत्त्व की विस्तृत परम्परा में उससे बढ़कर न तो कोई स्थान ऊँचा है और न सुन्दर है कि आदमी उसको प्राप्त करने का इच्छुक हो। अपने आपको पहचानने का अभिप्राय उस महान् परम सत्य आत्मा के पहचानने से है कि हम ईश्वर से उत्पन्न हैं और उसी की ओर वापस जा रहे हैं। ईश्वर की ओर यह लौटना ही बहाईयों का उज्ज्वल लक्ष्य है, इस लक्ष्य को प्राप्त करने का केवल एक ही मार्ग है और वह यह कि उसके भेजे हुए दूत की आज्ञा का पालन करें, विशेषकर उस दूत की जिसके समय में हम जी रहे हैं और वह बहाउल्लाह है, जो नये युग का ईश्वरावतार है।

———

अध्याय छठा

प्रार्थना

"प्रार्थना एक सीढ़ी है, जिसके द्वारा प्रत्येक पुरुष स्वर्ग तक पहुँच सकता है।" (Muhammad.)

ईश्वर के साथ संभाषण

अब्दुल-बहा कहते हैं कि प्रार्थना ईश्वर के साथ संभाषण है। अपनी इच्छा को लोगों पर प्रकट करने के हेतु से ईश्वर लोगों से उस भाषा में वार्तालाप करता है जिसे वह समझते हों और यह काम वह अपने पवित्र पैगंबरों द्वारा करता है। जब तक पैगंबर संसार में सदेह जीवित होते हैं तब तक वह स्वयं लोगों से बात चीत करते और उन्हें ईश्वरीय संदेश पहुँचाते रहते हैं, और उनकी मृत्यु के अनन्तर उनके लेखों और आज्ञाओं के द्वारा लोगों को ईश्वरीय संदेश पहुँचता रहता है। परन्तु ईश्वर का लोगों से बातचीत करने का केवल यही एक मार्ग नहीं है। आत्मा की एक भाषा है जो लिखने और बोलने के अधीन नहीं है, इस भाषा के द्वारा ईश्वर सत्य के जिज्ञासुओं से वार्तालाप करता और उनके हृदयों को ज्ञान की ज्योति प्रदान करता है, चाहे जहाँ भी वह हों, और जो भी उनकी जाति या भाषा हो। इसी भाषा के द्वारा ईश्वरीय अवतार भौतिक संसार को छोड़ जाने के बाद अपने भक्तों के साथ वार्तालाप करते रहते हैं। मसीह

फांसी पर चढ़ने के बाद अपने शिष्यों के साथ वार्तालाप करते और उन्हें प्रेरित करते रहे। सच पूछो तो, उस समय उनका प्रभाव पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली था। दूसरे ईश्वरावतारों की भी यही बात है।

अब्दुल-बहा ने इस आत्मिक भाषा के विषय में बहुत कुछ कहा है। उदाहरण के लिये उन्होंने कहा है:—

"हमें स्वर्गीय भाषा अर्थात् आत्मा की भाषा में बातचीत न करनी चाहिये, क्योंकि आत्मा और हृदय की भी एक भाषा है। यह भाषा हमारी भाषा से ठीक उसी प्रकार भिन्न है जैसे हमारी भाषा पशु पक्षियों की भाषा से भिन्न है, जो अपने आशय को केवल चीखों या ध्वनियों द्वारा ही प्रकट करते हैं।"

"आत्मा की भाषा ही के द्वारा हम ईश्वर से बोलचाल करसकते हैं। प्रार्थना के समय जब हम सांसारिक बातों से दूर हुए होते हैं, और हमारा हृदय ईश्वर की ओर झुका होता है, तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम हृदयों में ईश्वर का शब्द सुन रहे हों। उस समय बिना शब्दों के हम बोलते हैं और अपने भावों को दूसरों पर व्यक्त करते हैं, हम ईश्वर से संभाषण करते हैं और उसका उत्तर सुनते हैं। हम सब एक सच्ची आध्यात्मिक दशा पर पहुँच कर ईश्वर की वाणी को सुन सकते हैं।" (from a talk reported by Miss Ethel J. Rosenberg.)

बहाउल्लाह कहते हैं कि उच्च कक्षा की आध्यात्मिक सचाइयों को हम केवल इस आत्मा की भाषा के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। लिखना या बोलना उसके लिये पर्याप्त नहीं। 'सप्तवादी' नाम की एक छोटी सी पुस्तक में, जिसमें उन्होंने सांसारिक गृह

से ईश्वरीय गृह तक की यात्रा का वर्णन लिखा है, यात्रा के अन्तिम भाग के संबन्ध में कुछ बोलते हुए उन्होंने लिखा है:—

"भाषाएँ इसका वर्णन करने में असमर्थ और सर्वथा अपर्याप्त हैं। लेखनी इस न्याय-भवन में व्यर्थ तथा स्याही कालख लगाने के सिवा कुछ लाभ नहीं दे सकती। ज्ञाता की अवस्था हृदय से ही हृदय को बताई जा सकती है, यह ईश्वरीय दूत का काम नहीं और नहीं पत्रों में इसे अवकाश मिल सकता है।"

भक्तिभाव

वह अवस्था प्राप्त करने के बारे में, जबकि ईश्वर के साथ हमारा बातचीत करना संभव हो सकता है, अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"संसार की सब वस्तुओं और लोगों से पृथक् होकर केवल ईश्वर-परायण होकर हमें उस अवस्था को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये। मनुष्यों को ऐसी अवस्था प्राप्त करने में कुछ यत्न करना पड़ेगा, पर उसे इस दिशा में कार्य करना चाहिए और यह यत्न अवश्य करना ही चाहिये। सांसारिक पदार्थों से ध्यान हटाकर आध्यात्मिक बातों पर अधिक ध्यान देने से हमें वह अवस्था प्राप्त हो सकती है। जितना अधिक हम संसार से दूर हटेंगे उतना ही अधिक ईश्वर के समीप पहुँचते जायँगे। यह हमारी इच्छा पर निर्भर है।"

"हमारी आध्यात्मिक बुद्धि अर्थात् हमारी अन्दर की आँख खुली होनी चाहिये ताकि हम ईश्वर के चिन्ह और लक्षण प्रत्येक वस्तु में देख सकें। प्रत्येक वस्तु हमें आत्मा की झलक दिखा सकती है।" (from a talk reported by Miss Ethel J. Rosenberg.)

बहाउल्लाह ने लिखा है:—

"ढूँढने वाले को चाहिये कि...प्रतिदिन प्रातःकाल......ईश्वर का ध्यान करे और जी जान से अपने प्रीतम की तलाश में धैर्य्य पूर्वक लगा रहे। उसे चाहिये कि मन की हठीली कल्पनाओं को प्रीतम की प्यारी याद की अग्नि से भस्म कर दे......।" (*Gleanings*, p. *265*).

इसी प्रकार अब्दुल-बहा फरमाते हैं:—

"जब मनुष्य की आत्मा उसके मन द्वारा उसकी बुद्धि को प्रकाशित करती है तो सारा विश्व मनुष्य में समा जाता है...किन्तु इसके विपरीत जब मनुष्य अपने मन को आत्मा की बरकत (प्रसाद) के लिए तैयार नहीं करता बल्कि अपने मन को सांसारिक वस्तुओं में लगा देता है और विषय भोग में डूब जाता है तब वह उच्च स्थान से पतित हो जाता है और पशुपक्षियों से घटिया हो जाता है।" (*Wisdom of Abdul-Baha.*)

फिर बहाउल्लाह कहते हैं:—

"ऐ मनुष्यो! अपने मन को विषय भोग से निवृत्त करो और उसको मेरे प्रेम के सिवाय सब चीजों के मोह से शुद्ध करो। मेरी याद सब चीजों को मैल से शुद्ध करती है यदि तुम ज्ञान-चक्षु से देखो...ऐ मेरे सेवक! ईश्वर की उस वाणी को जो तुझे मिली है जप, ताकि तेरे स्वर की मधुरता तेरे मन को प्रकाशित कर दे और सब मनुष्यों के चित्तों को अपनी ओर आकर्षित कर ले। जो कोई एकान्त में अपनी कोठड़ी के भीतर ईश्वर की भेजी हुई वाणी का जप करता है, सर्वशक्तिमान परमात्मा के देवता लोग उसके मुख से निकले शब्दों की सुगन्धि को दूर दूर तक फैला देते हैं......।" (*Gleanings*. pp. *294-295*.)

मध्यस्थ (वसीले) की आवश्यकता

अब्दुल-बहा के कथनानुसारः—

"मनुष्य और सृष्टिकर्ता के बीच में मध्यस्थ का होना आवश्यक है, जो ईश्वरीय प्रकाश को पूर्णरूप से पाकर उसे मानव संसार पर इस प्रकार प्रकाशित कर दे जैसे पृथ्वी का वायुमण्डल सूर्य से प्रकाश और गर्मी पाकर उसे सर्वत्र फैला देता है।" (*Divine Philosophy.*)

"यदि हम प्रार्थना करना चाहें तो हमें एक ऐसे लक्ष्य की आवश्यकता पड़ती है जिस पर हम अपना ध्यान एकाग्र कर सकें। जब हम ईश्वर की ओर झुकते हैं तो हमें अपना मन किसी केन्द्र पर स्थिर करना आवश्यक होता है। यदि कोई आदमी ईश्वर का अवतार माने बिना उसकी आराधना करना चाहता है तो उसे ईश्वर का कोई न कोई स्वरूप अवश्य कल्पना करना पड़ता है। क्योंकि व्याप्य वस्तु व्यापक को ग्रहण नहीं कर सकती, इसलिये अपने मन से कल्पना किये किसी रूप से ईश्वर का ग्रहण नहीं हो सकता। आदमी अपने मन में जो कल्पना करता है उसे समझ लेता है, परन्तु जो कुछ समझता है वही ईश्वर नहीं हो सकता। जो कुछ भी ईश्वर का रूप मनुष्य कल्पना करता है, वह उसकी निरी कल्पना या भ्रम ही होता है। इस कल्पना और उस सर्वशक्तिमान् में कुछ भी सादृश्य या संबन्ध नहीं होता। यदि कोई ईश्वर को देखना चाहता है तो वह उसे मसीह या बहाउल्लाह के रूप के दिव्य दर्पण में देखे। इन्हीं में से किसी एक दर्पण में वह ईश्वरीय सूर्य की झलक पा सकेगा।"

"जिस प्रकार भौतिक सूर्य को हम उसकी चमक, उसके प्रकाश और उसके ताप से जान सकते हैं, इसी प्रकार हम आध्यात्मिक सूर्य अर्थात् ईश्वर को, जब वह अवतार के रूप में अपनी पूर्णता से, अपने

गुणों के सौन्दर्य से, और अपने प्रकाश की द्युति से प्रकाशित होता है, जान लेते हैं।" (from a talk to Mr. Percy Woodcock, at Akka, 1909.)

इन्होंने फिर कहा है:—

"जब तक कोई पवित्रात्मा मध्यवर्ती न हो तब तक कोई भी अपने आप ईश्वरीय प्रसाद को प्राप्त नहीं कर सकता। इस स्पष्ट सत्य की उपेक्षा न करनी चाहिये, क्योंकि यह बात स्वयं सिद्ध है कि एक बच्चा शिक्षक के बिना शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकता। और ज्ञान भी ईश्वरीय प्रसादों में से एक प्रसाद है। कोई खेत वर्षा के बिना घास या सागपान से हराभरा नहीं हो सकता इसलिये खेत और ईश्वरीय प्रसाद में बादल मध्यवर्ती होते हैं। ज्योति का भी एक केन्द्र है, यदि कोई आदमी ज्योति को इस केन्द्र के सिवा किसी दूसरे स्थान में ढूंढना चाहता है तो वह उसे कभी नहीं पा सकता। मसीह के समय की ओर ध्यान दीजिये। कई लोगों का विचार था कि मसीह के अनुगामी बने बिना सत्य को प्राप्त करना संभव है, परन्तु उनका यह विचार ही उनके वञ्चित रहने का कारण हुआ।" (*Tablets of Abdul-Baha.* vol. iii. pp. *591–592.*)

जो आदमी ईश्वरीय अवतार का आश्रय लिये बिना ईश्वर की आराधना करना चाहता है वह ठीक ऐसा है जैसे कोई अँधेरी कोठड़ी में बैठा अपनी कल्पना से सूर्य के प्रकाश की महिमा का अनुभव कर रहा हो।

प्रार्थना करना कर्तव्य और अत्यावश्यक है

प्रार्थना करना बहाईयों के लिये अत्यावश्यक और कर्तव्य बताया गया है। 'धर्मशास्त्र अक़दस' में बहाउल्लाह कहते हैं:—

"प्रति दिन प्रातःकाल और सायंकाल ईश्वर के गीत गाया करो। जो ऐसा नहीं करता वह ईश्वर की आज्ञाओं और नियमों का पालन नहीं करता, और जो आज इससे मुँह मोड़ बैठा है, वह उनमें से है जो ईश्वर से ही विमुख हैं। ऐ मेरे मित्रो ! ईश्वर से डरो, दिन रात बहुत अधिक पवित्र पुस्तकों के पढ़ने और काम करते रहने पर गर्व मत करो। आनन्द-पूर्वक और प्रसन्नता से एक श्लोक पढ़ लेना अच्छा है, पर बेपरवाही से सर्वशक्तिमान् ईश्वर की प्रकाशित सभी पुस्तकों का पढ़ना किसी काम का नहीं। ईश्वरीय पुस्तकों का अध्ययन उतनी मात्रा में करो जिससे तुम्हें थकावट या कष्ट न हो। आत्मा पर इतना बोझ न डालो जिस से वह हार जाये या निर्बल हो जाये। बल्कि इसे ताज़ा बनाये रखो जिससे कि यह ईश्वरीय वाणी रूप परों के सहारे उड़ता हुआ चरम लक्ष्य तक पहुँच जाये। इससे तुम ईश्वर के निकट जा पहुँचोगे, यदि तुम उनमें से हो, जो समझते हैं।"

एक पत्र के उत्तर में अब्दुल-बहा लिखते हैं—

"ऐ मेरे रुहानी मित्र ! तुम निश्चय जानो कि प्रार्थना अत्यावश्यक और प्रधान कर्तव्य है, और इसे न करना दूसरे किसी भी हेतु से क्षम्य नहीं हो सकता सिवाय ऐसी अवस्था के जबकि मनुष्य की मानसिक दशा बिगड़ी हुई हो या कोई भारी विघ्न उपस्थित हो जाये।" (*Tablets of Abdul-Baha*, vol. iii, p. *683*.)

एक पत्र-लेखक ने इनसे पूछा था "हम प्रार्थना क्यों करें ? इसमें क्या रहस्य है ? ईश्वर ने सब वस्तुएं बनाई हैं और सबका उत्तम नियम से संचालन करता है। फिर उससे विनति करने, प्रार्थना करने और अपनी आवश्वकताएं बताकर सहायता मांगने में क्या रहस्य है ?"

अब्दुल-बहा ने उत्तर दियाः—

"तुम निश्चय जानो, कि एक दीन पुरुष को किसी शक्तिशाली का आश्रय लेना सर्वथा उचित है, और किसी कल्याण चाहने वाले को सब कल्याणों के घर महामहिमशाली के पास जाकर कल्याण के लिये प्रार्थना करना लाभदायक है। जब मनुष्य अपने स्वामी के आगे अधीनता से विनति करता है, उसके सामने झुकता और उसके भण्डार में से कल्याण की भिक्षा मांगता है तो उसकी यह विनति उसके हृदय को प्रकाश से भर देती है, उसकी दृष्टि को चमका देती है, उसकी आत्मा को सजीव और उसकी सत्ता को उत्कृष्ट बना देती है।"

"जब तुम यह कह कर ईश्वर से प्रार्थना करते हो कि "तेरा नाम मेरे लिए आरोग्य है" तब सोचो उस समय तुम्हारा मन किस प्रकार आनन्द से भर जाता है, तुम्हारी आत्मा ईश्वरीय प्रेम से आनन्दित हो जाती है, और तुम्हारा मन ईश्वरीय राज्य की ओर खिंच जाता है। इस आकर्षण से मनुष्य की योग्यता और शक्ति बढ़ जाती है। जब पात्र बड़ा होता है तो पानी बढ़ जाता है, जितनी प्यास अधिक होती है उतना ही बादलों का दर्शन अधिक शुभ प्रतीत होता है। इसमें प्रार्थना करने और अपनी आवश्यकता प्रकट करने का रहस्य छिपा है।" (from a tablet to an American believer, translated by Ali Kuli Khan, October 1908.)

प्रार्थना प्रेम की भाषा है

एक दूसरे ने पूछा कि प्रार्थना किस लिए आवश्यक है जब कि ईश्वर सबके हृदयों की कामनाओं को जानता है। इन्होंने उत्तर दिया किः—

"यदि एक आदमी दूसरे से प्रेम करता है तो वह अपने प्रेम को

प्रकट करना चाहता है। यद्यपि वह जानता है कि मेरा मित्र मेरे प्रेम से परिचित है तो भी वह उसे अपना प्रेम बताना ही चाहता है। इसी प्रकार ईश्वर यद्यपि मानव हृदयों से अच्छी तरह परिचित है तो भी मनुष्य का ईश्वर के प्रति हार्दिक प्रेम स्वभावतः प्रार्थना का भाव उत्पन्न कर देता है।"

"प्रार्थना शब्दों में नहीं बल्कि विचारों में और व्यवहार में होनी चाहिए। यदि इच्छा और प्रेम नहीं है तो शब्दों को मजबूरी और दबाव से प्रकट करना व्यर्थ है। प्रेम के बिना शब्द कुछ भी नहीं। यदि कोई आदमी तुमसे इस प्रकार बातचीत करे कि वह तुमसे बातचीत करना नहीं चाहता और तुम्हारे मेल जोल से उसे कोई प्रीति या आनन्द नहीं तो क्या तुम ऐसे आदमी से बातचीत करना पसन्द करोगे?" (article in *Fortnightly Review*, June 1911, by Miss E. S. Stevens.)

एक और बातचीत में इन्होंने कहा—

"सबसे उच्च कक्षा की प्रार्थना यह है कि मनुष्य केवल ईश्वर के प्रेम के लिए प्रार्थना करे, नरक के या प्रभु भय से नहीं, अथवा स्वर्ग या प्रसाद के लोभ से नहीं। जब मनुष्य का किसी मनुष्य से प्रेम हो जाता है तो यह असम्भव है कि वह अपने प्रेमी का नाम न ले। जब किसी आदमी के अन्दर ईश्वर के लिए प्रेम है तो उसके लिए कितना कठिन है कि वह ईश्वर का नाम न ले। आत्मज्ञानी पुरुष को ईश्वर के स्मरण के सिवा दूसरी किसी बात से आनन्द नहीं प्राप्त होता।" (from notes of Miss Alma Robertson and other pilgrims, November and December 1900.)

सामूहिक प्रार्थना करना

सामूहिक या मिलकर प्रार्थना करने के संबन्ध में अब्दुल-बहा ने यों कहा था:—

"आदमी कह सकता है कि जब चाहूँ प्रार्थना करूँ, विशेषकर उस समय जब मेरा मन ईश्वर की ओर लगा हो, उस समय चाहे मैं निर्जन वन में, नगर में या और कहीं भी हूँ। किसी ख़ास दिन जहाँ दूसरे लोग दुआ माँगने के लिए जमा होते हैं मैं वहाँ क्यों जाऊँ। किसी ख़ास समय जब दूसरे लोग मिलकर प्रार्थना करने के लिए जमा हैं मैं उनमें क्यों सम्मिलित होऊँ, जब कि उस समय मेरा मन प्रार्थना करने के लिए उत्सुक भी न हो। अर्थात् मेरे मन की दशा प्रार्थना करने के योग्य भी न हो।"

"मन में इस प्रकार के विचार करना व्यर्थ है, क्योंकि जहाँ बहुत लोग इकट्ठे होते हैं वहाँ प्रभाव अधिक पड़ता है। अकेले दो सिपाही अलग-अलग लड़ते हुए एक सेना की सी शक्ति नहीं रखते। इस आध्यात्मिक संग्राम में यदि सब सिपाही इकट्ठे होकर लड़ें तो उनकी सम्मिलित मनोवृत्तियाँ एक दूसरे की सहायता करती हैं और उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकृत हो जाती हैं।" (from notes taken by Miss Ethel J. Rosenberg.)

यद्यपि अब्दुल-बहा ने ऊपर लिखी वाणी में सामूहिक प्रार्थना की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है जिसमें आत्मा को मिल कर प्रार्थना करने से बल प्राप्त होता है किन्तु आपने यह शिक्षा नहीं दी कि बहाई प्रार्थना समुदायिक संध्या है (जिस प्रकार बड़ी सभाओं में कभी कभी किया जाना या मुस्लिम भाई शुक्रवार के दिन करते हैं।) संध्या (अनिवार्य प्रार्थनाएँ) जो बहाउल्लाह ने बताई हैं वह व्यक्तिगत रूप से एकान्त में करने की हैं। एकत्रित होकर प्रार्थना करना बहाई शिक्षा नहीं है सिवाय उस प्रार्थना के जो मृत्यु-काल के अवसर पर पढ़ी जाती है।

आपदाओं से मुक्ति

ईश्वरावतारों की शिक्षा के अनुसार रोग या आपदाएँ ईश्वरीय आज्ञाओं का उल्लङ्घन करने से आती हैं। अब्दुल-बहा का मत है कि भूकम्प, आंधी, तूफान, दरयाओं में बाढ़ आदि उपद्रवों का कारण भी परोक्ष रूप से यही है।

अपराधों या भूलों के बाद जो कष्ट आते हैं, उनका हेतु बदला लेना नहीं बल्कि सुधारना और शिक्षा देना होता है। यह ईश्वर की पुकार है जो मनुष्य को यह कहती है कि तू सच्चे मार्ग से भटक गया है। अगर कष्ट भयानक है तो केवल इस लिये कि पापाचरण का भय और भी अधिक भयानक है और 'पापों का फल मृत्यु है'।

जिस प्रकार आज्ञा भंग का परिणाम विपत्ति है इसी प्रकार आज्ञापालन करना विपदाओं से मुक्ति पाने का साधन है। यह कोई संयोग या अनिश्चय की बात नहीं। ईश्वर से मुंह मोड़ना दुःखों का कारण है और मन को ईश्वर की ओर लगाये रखना अवश्य सुख संपत्ति की जड़ है।

क्योंकि सारा मानव संसार एक देह के समान है इसलिये किसी आदमी का कल्याण उसके अपने ही व्यवहार पर निर्भर नहीं, बल्कि उसके पड़ोसियों के व्यवहार का भी इसमें बहुत कुछ संबन्ध है। यदि एक आदमी भूल करता है तो सभी थोड़ा बहुत दुःख भोगते हैं। इसके विरुद्ध यदि एक आदमी अच्छा काम करता है तो सभी को उससे लाभ होता है। प्रत्येक पुरुष को किसी हद तक अपने पड़ोसी का बोझ उठाना पड़ता है और सबसे श्रेष्ठ मनुष्य वह है जो सब से अधिक बोझ उठाता है।

महात्मा लोग सदा से बहुत कष्ट सहते आये हैं और ईश्वरावतारों ने तो सबसे अधिक कष्ट भोग किया है। 'इकान' नामक पुस्तक में बहाउल्लाह कहते हैं:—

"यह आप सुन चुके हैं कि पैगंबर और उनके साथियों ने कितने कष्ट भोगे हैं। किस प्रकार दरिद्रता रोग और घृणा को उन्होंने सहा, किस प्रकार उनके अनुयायिओं के सिर काट काट कर शहरों में भेट के तौर पर दिये गये।"

इसका यह कारण नहीं कि महात्मा लोग और पैगंबर औरों से अधिक दण्ड के भागी होते हैं। नहीं, वह तो प्रायः दूसरों के अपराधों के बदले कष्ट भोगते हैं और कष्ट भोग पसंद करते हैं। उनका मतलब अपने कल्याण से नहीं बल्कि संसार भर के कल्याण से होता है। मनुष्य जाति के सच्चे हितकारी की प्रार्थना इसलिये नहीं होती कि वह आप दरिद्रता, रोगों और दुःखों से बचे, बल्कि इसलिये होती है कि मनुष्य-मात्र की अज्ञान से, भूलों से, और रोगों से, जो प्रायः उन पर आते हैं, रक्षा हो। वह यदि अपने लिये धन वा स्वास्थ्य की कामना करते हैं तो उसका उद्देश्य भी ईश्वरीय साम्राज्य की सेवा करना होता है, और यदि उन्हें धन तथा आरोग्य प्राप्त न हो तो भी वह अपने भाग्य पर सर्वथा सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते हैं। वह इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि यदि ईश्वर के मार्ग पर चलते चलते उन पर विपत्ति आती है तो इसमें भी कोई भलाई वा गूढ़ रहस्य है।

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"दुःख या शोक हम पर अकस्मात् से नहीं आते हमारी पूर्ति के लिये ईश्वर ही कृपा करके उन्हें भेजता है। जब दुःख या शोक आता है

सब आदमी आसमान पर स्थित ईश्वर को स्मरण करता है जो इसको सब प्रकार के दुःखों से मुक्त करने में समर्थ है। मनुष्य जितना अधिक कष्ट भोग सहता है उतना ही अधिक अपने बोये आध्यात्मिक बीजों के फल प्राप्त करता है।" (*Wisdom of Abdul-Baha.*)

पहले पहल देखने में तो बड़ा अन्याय प्रतीत होता है कि एक निरपराध मनुष्य किसी अपराध के लिए दण्ड भोग करे, पर अब्दुल-बहा हमें विश्वास दिलाते हैं कि यह केवल बाह्य दृष्टि से अन्याय मालूम होता है और अन्त में पूर्ण न्याय अवश्य प्रकट होगा। इन्होंने कहा है:—

"बालक बच्चे और निर्बल जो अत्याचारियों के अत्याचार का निशाना बनते हैं, वह उन पर ईश्वर की अपार दया का चिन्ह है। उन्हें इस कष्टभोग का बदला अगले सँसार में बहुत अच्छा मिलेगा। मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि यह ईश्वर की दया इस नाशवान सँसार के ऐश्वर्य और सुखोपभोग से कहीं अधिक अच्छा है।"—(*Tablets of Abdul-Baha*, vol. ii. p. 337.)

प्रार्थना और प्रकृति का नियम

कई लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते कि प्रार्थना में कुछ प्रभाव है, क्योंकि उनके विचारों के अनुसार प्रार्थना के स्वीकार होने पर प्रकृति के नियमों का भंग होता है। नीचे लिखा उदाहरण इस उलझन को सुलझा देगा। अगर हम चुंबक को लोहे के छोटे छोटे टुकड़ों के ऊपर पकड़ कर रखें तो यह टुकड़े उड़ उड़ कर उसके साथ चिमट जाएंगे, परन्तु इससे आकर्षण के नियम का भंग नहीं होता। आकर्षण की शक्ति लोहे के इन टुकड़ों पर पहले का सा ही प्रभाव रखती है। परन्तु अब इन टुकड़ों पर उस शक्ति से बड़ी दूसरी शक्ति काम में लाई गई है।

जिसका काम भी वैसा ही नियमबद्ध और निश्चित है जैसा आकर्षणशक्ति का । बहाई समझते हैं कि प्रार्थना भी उन बड़ी शक्तियों को काम में लाती है जो शक्तियां साधारण शक्तियों की उपेक्षा कम उपयोग में आई हैं, परन्तु ऐसा मान लेने का कोई कारण नहीं कि यह शक्तियां नियम का पालन नहीं करतीं जैसा कि भौतिक शक्तियां करती हैं। भेद केवल इतना है कि इन शक्तियों का पूर्ण रूप से अध्ययन नहीं किया गया और न अनुभव में लाकर देखी गई हैं, इसलिये हमारे अज्ञान के कारण हमें इन शक्तियों के काम रहस्य-भरे और अनन्त प्रतीत होते हैं।

दूसरी एक और अड़चन मन को उलझाने वाली यह है कि लोगों की समझ में प्रार्थना एक ऐसी छोटी सी शक्ति है जो उन बड़े बड़े फलों को जो प्राय: उसमें माँगे जाते हैं, नहीं दे सकती। यह अड़चन भी नीचे लिखे दृष्टान्त से सरल हो जायेगी । एक छोटी सी शक्ति किसी तालाब के प्रवहण द्वार पर लगा दी जाय तो वह प्रवाह की प्रखर शक्ति को वश में करके उसे नियमबद्ध बना देती है या अगर वही शक्ति किसी महासागर में चलने वाले बड़े भारी जहाज़ में जोड़ दी जाय तो उस बड़े जहाज़ को वश में करके उसे सीधे रास्ते पर चलाती है। बहाई विचार में वह शक्ति जो प्रार्थना को स्वीकार कराती है वह ईश्वर की अपार शक्ति है। प्रार्थना करने का केवल यह कर्तव्य है कि वह अपनी प्रार्थनारूपी छोटी सी शक्ति से ईश्वरीय प्रसाद के प्रवाह का वह मार्ग खोल दे या उसे सीधा करदे। ईश्वर का प्रसाद उन लोगों की सहायता के लिये सदा तत्पर रहता है जिन्होंने जान लिया है कि वह किस प्रकार उससे सहायता ले सकते हैं।

बहाईयों की प्रार्थनाएँ

बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा ने अपने अनुयायिओं के लिए भिन्न भिन्न समय और भिन्न भिन्न प्रयोजन सिद्धि के लिए असंख्य रूपों की प्रार्थनाएं लिखी हैं। इनके भाव की महत्ता और इनकी आत्मसंबन्धी गहराई का प्रत्येक पढ़ने वाले पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता, पर सची महिमा और शक्ति का पूरा निश्चय तभी होता है जब इनका पढ़ना जीवन का मुख्य धर्म और दैनिक कर्तव्य समझ लिया जाता है। दुर्भाग्यवश स्थानाभाव से हम विवश हैं कि उन प्रार्थनाओं में से उदाहरणमात्र के लिए केवल थोड़ी सी प्रार्थनाएँ ही यहाँ लिख सकेंगे। आशा है, बाकी प्रार्थनाओं को जानने के लिए पाठकगण अवश्य अन्य पुस्तकों का अवलोकन करेंगे।

"हे ईश्वर ! अपनी कृपा को मेरा भोजन और अपने साक्षात्कार को मेरा पेय बना। मेरी धारणा तेरी इच्छा के अनुसार हो और मेरे काम तेरी आज्ञाओं के अनुसार। मेरी सेवाएँ तुझे स्वीकृत हों और मेरे काम तेरे समक्ष प्रशंसा के योग्य हों। मैं केवल तुझसे सहयता मांगू और मेरा घर तेरे रहने का पवित्र हर्म्य हो। तू अमोल, सर्वव्यापक और स्नेही है।"—(Bahaullah.)

"ऐ मेरे स्वामी, मेरे ईश्वर ! मैं इस बात की साक्षी देता हूँ कि तूने मुझ को इसलिये उत्पन्न किया है कि मैं तुझे पहचानूं और तेरी पूजा करूं। मैं इस समय स्वीकार करता हूँ कि मैं अकिञ्चन और तू सर्वसमय है, मैं दरिद्र और तू धनी है। तेरे बिना दूसरा कोई ईश्वर नहीं। तूही रक्षक और स्वयं सिद्ध है।"—(Bahaullah.)

"ऐ मेरे ईश्वर, ऐ मेरे ईश्वर ! अपने सेवकों के हृदयों को एक कर। अपना उद्देश्य उन पर प्रकट कर। वह तेरी आज्ञाओं का पालन

करें और तेरे नियमों पर चलें । हे ईश्वर ! उनके प्रयत्नों में उनकी सहायता कर और उन्हें बल प्रदान कर कि वह तेरी सेवा करें । हे ईश्वर ! उन्हें अपने पर मत रहने दो बल्कि ज्ञान के आलोक से उनका पद पद पर संचालन कर और अपने प्रेम से उनके हृदयों को प्रसन्न कर । अवश्य तूही उनका सहायक और स्वामी है ।"—(Bahaullah.)

"ऐ कृपालु ईश्वर ! तूने सब मनुष्यों को एक ही उपादान से उत्पन्न किया है । तेरी आज्ञा है कि सब एक ही घर के रहनेवाले बन कर रहें । तेरी पवित्र दृष्टि में वह सब तेरे सेवक हैं और सब मनुष्य तेरी ही छत्रछाया में आश्रित हैं, सब के सब तेरे प्रसाद का भोजन पाते और तेरी ही ज्योति के प्रकाश से चमकते हैं ।"

"हे ईश्वर ! तू सब पर कृपालु है और सब का भरण-पोषण करता है, सबका आश्रय है, तू ने ही सब को जीवन प्रदान किया है, तूने ही सब को बुद्धि और विद्या से अलंकृत किया है, और सब तेरी ही दया के समुद्र में निमग्न हैं ।"

"हे कृपालु ईश्वर ! सबको एक कर । सब धर्म एक हो जायें और क़ौमों को एक करें ताकि वह एक दूसरे को एक ही वंश का प्ररोह और सारी पृथ्वी को एक ही घर जानें । सब पूर्ण शान्ति से मिलजुल कर रहें ।"

"हे ईश्वर ! मनुष्य मात्र की एकता का झंडा खड़ा कर ।"

"हे ईश्वर ! परिपूर्ण और महती शान्ति को स्थापित कर ।"

"हे ईश्वर ! सब के हृदयों को मिला कर एक कर दे ।"

"ऐ कृपालु पिता, हे ईश्वर ! अपने प्रेम के सौरभ से हमारे हृदयों को तृप्त कर, अपने नेतृत्व के ज्योति से हमारी आँखों को प्रकाशित कर, अपने शब्दों की माधुरी से हमारे कानों को तृप्त कर, और अपनी प्रकृति का सुदृढ़ आश्रय हमें प्रदान कर ।"

"तू सर्व समर्थ और सर्वशक्तिमान् है, तू क्षमा करने वाला है, तू मनुष्यमात्र के दोष या न्यूनताओं को उपेक्षा दृष्टि से देखता है।" (Abdul-Baha.)

"हे सर्वशक्तिमान ईश्वर ! मैं पापी हूँ पर तू क्षमा करने वाला है। मैं दोषों का घर हूँ और तू दया का सागर है, मैं अज्ञान के अन्धकार में हूँ पर तू क्षमा का ज्योति रूप है।"

"इसलिये ऐ दयानिधान ईश्वर ! मेरे अपराधों को क्षमाकर और अपना अनुग्रह मुझे प्रदान कर, मेरे दोषों को न देख और मुझे आश्रय दे, अपने धैर्य के सागर में मुझे निमग्न कर और मेरी सब आधियां और व्याधियां दूर कर।"

"मुझे शुद्ध और पवित्र बना। अपनी पवित्रता के भण्डार में से कुछ अंश मुझ को प्रदान कर, ताकि खेद और शोक दूर हो जायें और हर्ष तथा प्रसन्नता प्राप्त हो, अधीनता और निराशा आनन्द और विश्वस्तता में बदल जाये और डर के स्थान में उत्साह आ जाये।"

"तू निश्चय ही क्षमाशील और दयालु है तथा उदार और स्नेहमय है।" (Abdul-Baha).

"ऐ दयामय ईश्वर ! मुझे ऐसा हृदय दो जो आपके प्रेम की ज्योति से दर्पण के समान चमके और मेरे अन्दर ऐसे विचार भर दो जो आपके प्रसाद से सारे संसार को गुलाब के बागीचे के रूप में पलट दें। तू दया सागर कृपालु और सब कुछ देने वाला है।" (Abdul-Baha.)

बहाई प्रार्थनाएँ यद्यपि महत्त्वपूर्ण हैं तो भी नियत और परिमित शब्दों में ही बंद नहीं हैं। बहाउल्लाह की शिक्षाओं के अनुसार मनुष्य का सारा जीवन ही प्रार्थनामय होना चाहिये। सचाई से किया हुआ दैनिक कृत्य भी प्रार्थना है। प्रत्येक विचार, वचन या कार्य, जो ईश्वर चिन्तन या परोपकार में लगा है, सच्चे अर्थों में प्रार्थना है।

अध्याय सातवाँ

स्वास्थ्य और आरोग्य

"ईश्वर की ओर मन लगाने से शरीर, मन और आत्मा को आरोग्य वा शान्ति मिलती है।" (Abdul-Baha.)

देह और आत्मा

बहाई शिक्षा के अनुसार मानवदेह आत्मा की उन्नति में अस्थायी सहकारी होता है, और जब इसका प्रयोजन सिद्ध हो जाता है तो इसे छोड़ दिया जाता है। जैसे अंडे का खोल बच्चे की अभिवृद्धि में अस्थायी सहकारी होता है और जब वह उद्देश्य सिद्ध हो जाता है तो यह टूट जाता है और इसे त्याग दिया जाता है। अब्दुल-बहा कहते हैं कि भौतिक देह अमर होने के योग्य नहीं, क्योंकि यह अणुओं और परमाणुओं (atoms and molecules) के संयोग से बनी एक संयुक्त वस्तु है, और संयोग से बनी अन्य वस्तुओं के समान ही अपने समय पर टूट जाती है।

देह को आत्मा का सेवक होना चाहिये, न स्वामी। पर यह अधीन, आज्ञाकारी और कुशल सेवक हो। इसके साथ भी ऐसा ही व्यवहार होना चाहिये जैसा कि एक ईमानदार सेवक का हक़ है। यदि इसके साथ अच्छा वर्ताव न किया जाय तो बीमारियाँ और क्लेश भोगने पड़ते हैं जिसका परिणाम स्वामी और सेवक दोनों के लिये अहितकर होता है।

जीवनमात्र की एकता

जीवन के असंख्य स्वरूप और अपरिमित श्रेणियों की एकता बहाउल्लाह की शिक्षाओं का प्रधान अङ्ग है। हमारा शारीरिक स्वास्थ्य हमारे मन, आचार और आत्मा के स्वास्थ्य (शुद्धि) से इतना संबद्ध है, और अपने अनुगामियों के व्यक्तिगत तथा जातीय स्वास्थ्य (सुजीवन) से भी, इतना ही नहीं बल्कि सब प्राणियों और वृक्षों तक के जीवन से भी इतना संबन्ध है कि इनका एक दूसरे पर प्रभाव मानव अनुभव से कहीं अधिक पड़ता है।

इसलिये धर्मावतार (बहाउल्लाह) की कोई भी आज्ञा, चाहे वह जीवन के किसी भी भाग से संबन्ध रखती हो, ऐसी नहीं जिसका संबन्ध शारीरिक स्वास्थ्य से न हो। कुछ शिक्षाएं तो अन्य शिक्षाओं की अपेक्षा प्रत्यक्ष दैहिक स्वास्थ्य से ही संबन्ध रखती हैं, जिनकी अब हम नीचे परीक्षा आरम्भ करते हैं।

सादा जीवन

अब्दुल-बहा कहते हैं—

"मितव्ययता मानुषिक समृद्धिशीलता का आधार है। लुटाऊ आदमी सदा कष्ट भोगता है। अमिताचरण ऐसा पाप है जो क्षमा नहीं किया जा सकता। हमें कभी आकाशबेल की नाईं दूसरों के सहारे नहीं रहना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य को कोई धन्धा करना चाहिये, चाहे वह मानसिक हो अथवा हाथों से करने का हो और उसे ऐसा पवित्र और वीरों की नाईं शुद्ध जीवन व्यतीत करना चाहिये जिसका अनुकरण दूसरे लोग करें। ऐसे स्वादिष्ट भोजनों की अपेक्षा जिनका दाम दूसरों की गाढ़ी कमाई से प्राप्त किया जाए बासी रोटी के टुकड़े पर सन्तुष्ट

रहना अत्युत्तम है। सन्तुष्ट मनुष्य का चित्त सदा शान्त और अडोल रहता है।" (*Baha'i Scriptures*, p. 453.)

मांसभोजन का निषेध नहीं, परन्तु अब्दुल-बहा कहते हैं—

"भविष्य में अन्न और फल ही भोजन होगा। समय आयेगा जबकि मांसभोजन सर्वथा बंद हो जावेगा। आयुर्वेद विद्या अभी अपने शैशव में है तो भी उसने सिद्ध कर दिया है कि हमारा प्राकृतिक भोजन वह है जो पृथ्वी से उत्पन्न होता है।" (*Ten Days in the Light of Akka*, by Julia M. Grundy.)

मादक और नशीली वस्तुएँ

बहाउल्लाह ने मद और नशा देने वाली वस्तुओं का, बीमारी में औषध के अतिरिक्त, व्यवहार करने का निषेध किया है।

अब्दुल-बहा लिखते हैं:—

"ऐ ईश्वर के प्यारो! अनुभव ने इस बात को दिखाया कि तंबाकू, मद्य और अफ़ीम को छोड़ने से स्वास्थ्य, शक्ति, मानसिक आनन्द, बुद्धि-शक्ति, और दैहिक विक्रम की वृद्धि होती है।" (*Tablets of Abdul-Baha*, vol. iii. pp. 581-585.)

आनन्दभोग

बहाई शिक्षा मध्यावस्था पर आश्रित है, अधिक कष्टभोग नहीं सिखाती। जीवन से संबन्ध रखने वाली भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सुन्दर और उत्तम वस्तुओं के उपभोग करने के लिये केवल प्रेरणा ही नहीं करती बल्कि आज्ञा देती है। बहाउल्लाह कहते हैं—"अपने आपको उन वस्तुओं से वञ्चित न रखो जो तुम्हारे लिये उत्पन्न की गई हैं।" फिर उन्होंने

कहा है—"यह तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम्हारे मुखमण्डल पर आह्लाद और हर्ष के चिन्ह दिखाई दें।"

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"जो भी पदार्थ उत्पन्न किये गये हैं, सब मनुष्य के लिये हैं, जो सृष्टि में सर्वोत्तम है। इसे ईश्वर के दिये इन पदार्थों के लिये सदा कृतज्ञ रहना चाहिये। सभी भौतिक वस्तुएँ हमारे लिए हैं, ताकि हम अपनी कृतज्ञता द्वारा यह समझना सीख लें कि जीवन ईश्वरीय प्रसाद है। यदि हम जीवन से उदास होते हैं तो हम कृतघ्नता करते हैं, क्योंकि हमारा भौतिक और आध्यात्मिक जीवन ईश्वरीय कृपा का प्रत्यक्ष चिन्ह है। इस लिये हमें प्रसन्न रहना चाहिये और सब वस्तुओं की प्रशंसा और गुण ग्रहण करने चाहियें।" (*Divine Philosophy.*)

इस प्रश्न के उत्तर में कि, बहाई शिक्षा में जो जूए और लॉटरी का निषेध है, क्या उसका सभी खेलों से संबन्ध है, अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"नहीं, कुछ खेल निर्दोष हैं यदि उन्हें मनोविनोद के लिये खेला जाय तो कोई हानि नहीं होती, परन्तु इस बात का भय अवश्य होता है कि मनोविनोद कहीं समय के वृथा खोने का रूप धारण न कर ले। ईश्वरीय धर्म में समय का वृथा खोना किसी प्रकार भी स्वीकृत नहीं, परन्तु वह मनोविनोद, जिससे मानसिक थकान दूर हो और शारीरिक शक्ति बढ़े, अवश्य ग्राह्य है।"

पवित्रता

"अक़दस" नामक पुस्तक में बहाउल्लाह कहते हैं—

"मनुष्यों में तुम पवित्रता का स्वरूप बनकर रहो। सभी अवस्थाओं में तुम्हारे आचरण और व्यवहार विशुद्ध और परिष्कृत हों। तुम्हारे वस्त्रों

में गन्दाई का कोई चिन्ह दीख न पड़े। निर्मल और पवित्र जल में स्नान करो। जो पानी एक बार बर्तने में आचुका है उसे फिर व्यवहार में लाने की आज्ञा नहीं। हम अवश्य चाहते हैं कि तुम्हें पृथ्वी पर स्वर्ग मे रहने वाले दिव्य पुरुष बने देखें ताकि तुमसे ऐसे संस्कारों का स्रोत बह निकले जो सद्भागी मनुष्यों के हृदयों में जाकर उनके आनन्द का साधन बने।"

मिर्जा अबुल फजल अपनी पुस्तक "*Baha'i Proofs*" के ८९ पृष्ठ पर इन आज्ञाओं का महत्त्व उन देशों के लिये, विशेष कर एशिया के उन भागों के लिये बहुत अधिक बताते है. जहाँ घरेलू कामों, यहाँ तक कि नहाने और पीने के लिये भी बहुत कर गन्दे पानी का उपयोग होता है, और जहाँ भयानक अपवित्रता और गंदगी ही इधर उधर दिखाई देती है जिसके कारण सहज में दूर हो सकने वाले रोग और कष्ट फैले रहते हैं।

यह अवस्थाएँ, जिनके बारे में लोगों का यह विचार हो चुका है कि धर्म या मत ऐसा करने की आज्ञा देता है, एशिया के निवासियों से केवल वही मनुष्य दूर कर सकता है जिसके विषय में लोगों का दृढ़ विश्वास हो कि यह ईश्वर की आज्ञा से कह रहा है। यदि इस बात के साथ कि, पवित्रता धार्मिकता की संगिनी है, यह बात भी स्वीकार कर ली जाये कि पवित्रता धार्मिकता का प्रधान अङ्ग है, तो पश्चिम के देशों में भी अद्भुत परिवर्तन हो जाये।

धर्मावतारों की आज्ञाओं के पालन करने का फल

साधारण जीवन, सफाई, मद्य और अफ़ीम से परहेज आदि स्वास्थ्य विधान की आज्ञाएँ ऐसी स्पष्ट हैं कि इन पर

आलोचना करने की आवश्यकता नहीं, तो भी उनके महत्त्व पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। यदि इन आज्ञाओं का सर्व-साधारण में प्रचार हो जाये तो संसर्ग से होने वाली बहुत सी बीमारियों और कई अन्य प्रकार के रोगों से शीघ्र लोगों का पीछा छूट जाये। साधारण स्वास्थ्य विधान के नियमों की अवहेलना तथा मद्य और अफ़ीम का सेवन करने से जो जो रोग उत्पन्न होते हैं वह गणनातीत हैं। इसके अतिरिक्त इन आज्ञाओं का पालन करने से केवल स्वास्थ्य का ही सुधार न होगा बल्कि सदाचार और चरित्र पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा। मद्य और अफ़ीम शरीर या स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष रूप में प्रभाव डालने से बहुत पहले मनुष्य के सदाचार या मन की वृत्तियों पर गुप्त रूप से बुरा प्रभाव डाल देती है, इसलिये इनसे परहेज़ करने से शारीरिक लाभ की अपेक्षा सदाचार संबन्धी और आध्यात्मिक लाभ कहीं अधिक होता है। सफ़ाई के संबन्ध में अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"बाह्य पवित्रता यद्यपि शरीर मात्र से संबन्ध रखती है पर इसका आध्यात्मिक जीवन पर भी ख़ासा प्रभाव पड़ता है। देह को निर्मल और पवित्र रखने का गुण मनुष्य की आत्मा पर भी प्रभाव डालता है।"
(*Tablets of Abdul-Baha*, vol. iii, p. 585.)

स्त्री पुरुष के परस्पर संबन्ध के बारे में ईश्वरावतारों ने जो आज्ञाएँ दी हैं, यदि उनका पालन किया जाये तो एक और घातक रोगों के बड़े कारण की निवृत्ति हो जाये। सूज़ाक और आतशक की बीमारियाँ, जो अनेकों छोटे बड़े सदोष और निर्दोष सहस्रों

मनुष्यों के स्वास्थ्य का नाश कर रहीं हैं, शीघ्र नष्ट होकर स्मृति शेष रह जायें।

यदि न्याय, पारस्परिक सहायता, पड़ोसियों से आत्मीय जनों का सा प्रेम रखने की आज्ञाओं का पालन किया जाये तो फिर एक ओर निवास की तंगी, श्रम की अधिकता, निकृष्ट दारिद्र तथा दूसरी ओर आत्मप्रियता, आलस्य तथा अधम विलासिता मनुष्य के चरित्र, मानसिक और दैहिक विनाश का कारण क्यों कर बनें।

मूसा, बुद्ध, मसीह, मोहम्मद और बहाउल्लाह की दी हुई आचार और स्वास्थ्य विषय की शिक्षाओं का साधारण रूप में पालन करने से जितनी अधिक रोगों की निवृत्ति हो सकती है, उतनी वैद्यों और संसारभर के स्वास्थ्य विषयक नियमों का पालन करने से नहीं हो सकती। सच तो यह है कि इन आज्ञाओं का जितना अधिक पालन होगा उतना ही अधिक सर्वसाधारण का स्वास्थ्य अच्छा होगा। बचपन या यौवन में ही मृत्यु का ग्रास बनने के स्थान में, जैसा कि आजकल प्रायः देखने में आता है, मनुष्य उन सारभूत फलों के समान, जो टहनी से गिरने के पूर्व वहीं पक कर मृदु हो जाते हैं, पूर्ण वृद्धावस्था तक जीवित रहेंगे।

ईश्वरावतार वैद्य के रूप में

हम ऐसे संसार में रहते हैं जहां अज्ञात समय से ईश्वरावतारों का आज्ञा का पालन करना नियम नहीं बल्कि अपवाद समझा जा रहा है, जहां ईश्वरीय प्रेम की अपेक्षा स्वार्थपरता बहुत

अधिक है, जहां सीमाबद्ध जाति विशेष के लाभों को सर्वसाधारण के लाभ की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया जाता है, जहां सर्व-साधारण के जातीय और आध्यात्मिक कल्याण की अपेक्षा भौतिक उन्नति और व्यक्तिगत आनन्द पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इससिये इसमें भयङ्कर कलह, वैर, विरोध, अत्याचार, धनित्व और दरिद्रता का असीम आधिक्य आदि ऐसी दशाएं उत्पन्न होगई हैं जिनसे शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोगों की वृद्धि हो रही है। परिणाम यह हुआ है कि मानव जाति का समग्र वृक्ष आज रोग ग्रस्त है और इस वृक्ष का पत्ता पत्ता आर्त दशा में है। पवित्रात्मा लोग भी दूसरों के पाप के कारण कष्ट भोग रहे हैं। चिकित्सा की आवश्यकता है, न केवल सर्व-साधारण मानव समाज की, बल्कि जातियों और व्यक्तियों की चिकित्सा की आवश्यकता है। इसलिये बहाउल्लाह ने अपने पूर्ववर्ती महानुभावों के समान केवल यही नहीं बताया कि स्वास्थ्य रक्षा किस प्रकार करनी चाहिये बल्कि यह भी बताया है कि स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर उस को फिर से किस प्रकार सुधारना चाहिये। संसार की दैहिक और मानसिक दोनों प्रकार की व्याधियों को हटाने के लिये एक महान वैद्य के रूप में उनका आगमन हुआ है।

भौतिक उपायों से चिकित्सा

आजकल पाश्चात्य देशों में मानसिक तथा आध्यात्मिक उपायों से रोगों की चिकित्सा पर फिर से विश्वास लाया जा रहा है। इसमें संदेह नहीं कि आजकल बहुत से लोग, उन्नीसवीं सदी में रोगों और उन की चिकित्सा के विषय में लोगों के जो

विचार थे, उनके विरोधी बन गये हैं और उन का इस बात पर से बिलकुल विश्वास उठ गया है कि भौतिक चिकित्सा या स्वास्थ्य-रक्षा के विधानों से किसी प्रकार का भी लाभ हो सकता है। बहाउल्लाह रोगों के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की चिकित्सा का महत्त्व स्वीकार करते हैं। वह कहते हैं कि चिकित्सा का ज्ञान और कला का विकास, अभिवृद्धि और पूर्णता अवश्य होनी चाहिये, ताकि चिकित्सा के सभी प्रकार उचित रूप में सर्वोत्तम लाभ के लिये व्यवहार में लाये जायें, जब बहाउल्लाह के परिवार के लोग रोगग्रस्त हुए थे तो उन्होंने चिकित्सा-वृत्ति के एक वैद्य को बुलाया था और अपने सभी अनुयायिओं को उस से इलाज करवाने की सलाह दी थी। उन्हों ने कहा था "जब तुम किसी रोग में ग्रस्त हो जाओ तो चतुर वैद्यों से सम्मति ग्रहण करो।" (*Book of Aqdas.*)

यह आज्ञा बहाईयों के सभी कलाओं तथा विज्ञान के निस्बत के विचारों से बराबर मिलती है। सभी प्रकार के विज्ञान और कलाओं का, जिनसे मानव समाज का हित होना सम्भव है, चाहे वह भौतिक ही क्यों न हो, आदर और उन्नति करनी चाहिये। विज्ञान के द्वारा मनुष्य भौतिक सँसार पर अधिकार प्राप्त कर लेता है, परन्तु अज्ञान से वह उनका अधीन दास बन जाता है।

बहाउल्लाह लिखते हैं:—

"आवश्यकता पड़ने पर वैद्यक चिकित्सा की उपेक्षा मत करो, परन्तु जब रोग-निवृत्ति हो जाय तो उसे छोड़ दो। रोगों की चिकित्सा अधिकत: परहेज़ से करो और औषध सेवन से जहां तक हो सके बचो। यदि तुम्हारा प्रयोजन किसी एक बूटी से सिद्ध हो सकता हो तो मिश्रित औषधों का सेवन मत करो। जब स्वास्थ्य अच्छा हो, औषधियों से दूर

रहो, परन्तु आवश्यकता पर उनका सेवन करो।" —(Tablet to a physician.)

अब्दुल-बहा अपने एक लेख में कहते हैं:—

"ऐ सत्य के गवेषको ! रोगों की चिकित्सा के दो प्रकार हैं, एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। पहला प्रकार पार्थिव औषधों के प्रयोग के द्वारा निष्पन्न होता है और दूसरा प्रकार ईश्वर से प्रार्थना करना और उसकी ओर मन लगाना है। दोनों प्रकार व्यवहार में लाने चाहियें। यह दोनों प्रकार परस्पर विरोधी नहीं हैं। चिकित्सा के भौतिक प्रकार को इस विचार से ग्रहण करना चाहिये कि वह उसी की दया और अनुग्रह से प्राप्त हुआ जिसने वैद्यक विज्ञान को संसार में प्रकाशित और प्रचलित किया है, ताकि उसके सेवक चिकित्सा के इस प्रकार से भी यथा-समय लाभ उठायें।"—(*Tablets of Abdul-Baha*, vol. iii, p. 587.)

इन्होंने कहा है कि यदि हमारे मूर्खतापूर्ण और अस्वाभाविक रहनसहन से हमारी स्वाभाविक रुचियां और प्रवृत्तियां बिगड़ न गई होतीं तो उचित भोजन और आरोग्यवर्धक फल यह दोनों हमारे जीवन का उसी प्रकार संचालन करते जैसे पशुओं का करते हैं। एक 'प्रश्नोत्तरी' में (p. 296) लिखे चिकित्सा पर रोचक वार्तालाप में इन्होंने निर्णायक उत्तर दिया है कि:—

"इसलिये यह स्पष्ट है कि भोजन और फलों के द्वारा रोगनिवृत्ति संभव है परन्तु अभी इन दिनों वैद्यक विज्ञान अधूरा है, इसलिये यह तत्त्व लोगों की समझ में नहीं आ सकता। जब औषध विज्ञान पूर्णता को प्राप्त हो जाएगा तब भोजन, प्राकृतिक वस्तुएं, सुगन्धित फल और शाक तथा उष्ण या शीतल जल ही चिकित्सा के लिये उपयोग में लाये जायेंगे।"

जब चिकित्सा का भौतिक प्रकार व्यवहार में लाया जाता है तब भी जो शक्ति आरोग्य प्रदान करती है, वह वास्तव में ईश्वरीय ही है, क्योंकि जड़ी-बूटियों या खनिज पदार्थों में जो शक्ति है, वह ईश्वर ही की दी हुई है। "सभी वस्तुएं ईश्वर पर निर्भर हैं।" औषध तो एक बाह्य स्वरूप या प्रकार हैं जिसके बहाने से हम ईश्वरीय चिकित्सा प्राप्त करते हैं।

अभौतिक प्रकारों से चिकित्सा

वह कहते हैं कि भौतिक उपायों के सिवा चिकित्सा के और भी कई प्रकार हैं। जिस प्रकार छूत की बीमारियां हैं, इसी प्रकार छूत का स्वास्थ्य भीं है। भेद केवल इतना है कि छूत की बीमारियों का उग्र और शीघ्र असर होता है पर छूत के स्वास्थ्य का थोड़ा और धीमा प्रभाव पड़ता है। बहुत प्रबल प्रभाव तो रोगी की मानसिक अवस्थाओं से होता है और इन अवस्थाओं को सुनिश्चित करने में 'सम्मति या सलाहों' का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। भय, क्रोध और चिन्ता आदि स्वास्थ्य को बहुत हानिप्रद हैं, परन्तु आशा, प्रेम और आनन्द इत्यादि बहुत लाभदायक हैं।

बहाउल्लाह ऐसा कहते हैं:—

"निश्चय ही, प्रत्येक अवस्था में सन्तोष अत्यन्त आवश्यक है। इस से मनुष्य रोग और क्लान्ति से बचा रहता है। शोक और खेद के अधीन न हो जाओ, यह बड़े से बड़े दुःख का कारण है। ईर्षा शरीर को क्षीण करती हैं और क्रोध कलेजे को दग्ध कर देता है। इन दोनों से दूर रहो तब तुम शेर बने रहोगे।"—(Tablet to a physician.)

और अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"आनन्द हमें पर लगा देता है। हर्ष के समय हमारी शक्ति बढ़ी

और बुद्धि तीव्र हो जाती है। पर जब हम पर शोक आता है तो शक्ति हमें छोड़ जाती है।" (*Wisdom of Abdul-Baha.*)

मानसिक चिकित्सा का एक और स्वरूप बताते हुए अब्दुल-बहा लिखते हैं कि इसका परिणाम यह होता है किः—

"एक सबल मनुष्य के किसी निर्बल पर, जिसे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि इस सबल मनुष्य के आत्मिक बल से मैं अच्छा हो जाऊंगा, मन की पूर्ण एकाग्रता से सबल और निर्बल दोनों में किसी सीमा तक एक प्रकार का संबन्ध उत्पन्न हो जाता हैं। सबल मनुष्य रोगी को अच्छा करने में पूर्ण यत्न करता हैं, और रोगी का यह दृढ़ विश्वास होता हैं कि मुझे इससे आरोग्य प्राप्त होगा। इन मानसिक संस्कारों के प्रभाव से ज्ञान-तन्तुओं में एक प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है, और फिर यही संस्कार और उत्तेजना रोगी मनुष्य के स्वास्थ्य लाभ का कारण बन जाएँगी।"—*Some Answered Questions*, p. 294.)

परन्तु चिकित्सा के इन उपायों का प्रभाव सीमाबद्ध सा होता है और कदाचित् भीषण रोगों में यह उपाय स्वास्थ्य प्रदान न भी कर सकें।

पवित्र आत्मा की शक्ति

"चिकित्सा का सिद्धमत उपाय पवित्र आत्मा की शक्ति है। "यह उपाय मेल, दृष्टि या उपस्थित पर निर्भर नहीं। रोग हलका हो या भारी, देहों का मेल हो या न हो, रोगी और चिकित्सक का परस्पर कोई संबन्ध हो या न हो, यह चिकित्सा पवित्र आत्मा की शक्ति से होती रहती है।"—(*Some Answered Questions* p. 295.)

अक्तूबर १६०४ में कुमारी ऐथल रोसन बर्ग से बातचीत करते समय अब्दुल-बहा ने कहा था किः—

"पवित्रात्मा के द्वारा जो चिकित्सा होती है, उसे किसी विशेष ध्यान या मेल जोल की आवश्यकता नहीं। यह तो पवित्रात्मा की प्रार्थना, कामना या इच्छा से ही हो जाता है। रोगी चाहे पूर्व में रहता हो और चिकित्सक पश्चिम में, चाहे रोगी और चिकित्सक का परस्पर कोई परिचय न हो, परन्तु ज्योंही पवित्रात्मा मनुष्य अपने मन को ईश्वर की ओर लगाता है और प्रार्थना करना आरम्भ करता है त्योंही बीमार अच्छा हो जाता है। जो ईश्वरीय अवतार हैं, और जिन्हें उच्च स्थान प्राप्त हैं, उनके पास यह ईश्वर-दत्त शक्ति हुआ करती है।"

इस प्रकार की चिकित्सा-शक्ति मसीह और उसके कृपापात्रों ने की। दूसरे भी अपने अपने समय के पवित्रात्मा लोग इसी प्रकार की चिकित्सा करते आये हैं। बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा में भी यह शक्ति थी, और उनके विश्वस्त भक्तों को भी ऐसी शक्ति मिलने का वचन दिया गया है।

रोगियों का बर्ताव

आध्यात्मिक चिकित्साविधि को पूर्णतया व्यवहार में लाने के लिये रोगियों, चिकित्सकों, रोगी के मित्रों और उसकी जाति के लिये भी कई एक कर्तव्य पालन करना आवश्यक हैं।

रोगी का प्रधान कर्तव्य यह है कि वह अपने मन को निरन्तर ईश्वर की ओर लगाये रखे और उसकी शक्ति तथा इच्छा पर पूरा भरोसा रखे और निश्चय करे कि जो कुछ ईश्वर करता है उसी में भलाई है। अगस्त १९१२ में अमेरिका की एक महिला से अब्दुल-बहा ने कहा था कि:—

"यह सब संकट दूर हो जायेंगे और तुम्हें दैहिक तथा आत्मिक पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होगा। तुम्हें विश्वास तथा निश्चय होना चाहिये कि

बहाउल्लाह के प्रसाद और अनुग्रह से सभी कुछ तुम्हारे लिये प्रमोदजनक हो जायगा। परन्तु तुम्हें अपना मुँह ईश्वरीय ज्योतिमय राज्य की ओर फेरना चाहिये और मन को इस प्रकार उधर लगाना चाहिये जैसे मेरी-मैगडालन ने मसीह की ओर लगाया था। मैं तुम्हें निश्चय दिलाता हूँ कि तुमको दैहिक आत्मिक दोनों प्रकार का स्वास्थ्य अवश्य प्राप्त होगा। तुम इसके योग्य हो। मैं तुम्हें शुभ समाचार देता हूँ कि तुम इस योग्य हो, क्योंकि तुम्हारा हृदय पवित्र है। आशा और विश्वास रखो, प्रसन्न रहो और आनन्द मनाओ।"

यद्यपि इस विशेष दशा में तो अब्दुल-बहा ने पूर्ण दैहिक स्वास्थ्य प्राप्त करने का निश्चय दिलाया है, परन्तु प्रत्येक दशा में वह ऐसा नहीं करते, यहां तक कि जो व्यक्ति दृढ़ विश्वास रखता है उसे भी ऐसा निश्चय नहीं दिलाते। अक्का में एक यात्री से उन्हों ने कहा था:—

"जो प्रार्थनाएं रोग निवृत्ति के लिये लिखी गई हैं, वह दैहिक और आत्मिक दोनों प्रकार की रोग निवृत्ति के लिये हैं। यदि चिकित्सा हितकर समझी जायगी तो अवश्य उसकी स्वीकृति दी जायेगी। क्योंकि चिकित्सा कभी कभी दूसरी बीमारियों का कारण हो जाती है, इसी कारण ईश्वरेच्छा कई प्रार्थनाओं को स्वीकृत नहीं करती। ऐ प्रभू की दासी! पवित्रात्मा की शक्ति सांसारिक और आत्मिक दोनों रोगों को नष्ट करती है।"—(*Daily Lessons Received from Akka.* p. 95.)

उन्होंने एक रोगी को और लिखा था:—

"निश्चय ही ईश्वरेच्छा कभी कभी ऐसा काम करती है जिसका कारण समझना मानव शक्ति के बाहर है। हेतु और कारण प्रकट हो जायेंगे। तुम ईश्वर पर विश्वास और श्रद्धा रखो, और अपने आप को

ईश्वर की इच्छा के अधीन कर दो। निश्चय ही तुम्हारा ईश्वर-स्नेही, कारुणिक और दयालु है, और वह तुम्हें अपनी दया का पात्र बनायेगा।"
(*Star of the West*. vol. viii. p. 232.)

उनका कथन है कि आत्मिक स्वास्थ्य से दैहिक स्वास्थ्य की भी प्राप्ति होती है, परन्तु दैहिक स्वास्थ्य कई बातों पर निर्भर है, जिनमें से कई एक मनुष्य की शक्ति के बाहर हैं। इसलिये प्रत्येक दशा में परिपूर्ण आत्मिक अवस्था भी मनुष्य के दैहिक स्वास्थ्य का कारण नहीं बनती। पवित्र से पवित्र स्त्रियाँ और पुरुष भी कभी कभी रोगों से पीड़ित हो जाया करते हैं।

फिर भी सच्ची आध्यात्मिक स्थिति का शारीरिक स्वास्थ्य पर जो प्रभाव पड़ता है वह साधारण अनुमान की अपेक्षा कहीं अधिक प्रबल होता है, और बहुत सी अवस्थाओं में रोग निवृत्ति का पर्याप्त कारण होता है। एक अंग्रेज महिला को अब्दुल-बहा ने लिखा था—

"आपने अपनी शारीरिक दुर्बलता के बारे में लिखा है। मैं बहाउल्लाह की महिमा से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपके आत्मा को बलिष्ट बनाये और आत्मशक्ति के द्वारा आप का शरीर स्वस्थ हो जाये।"

फिर इन्होंने कहा है कि:—

"ईश्वर ने मनुष्य को ऐसी अद्भुत शक्तियां दी हैं कि वह सदा अपनी दृष्टि को उच्च रख सकता है, और अन्य प्रसादों के साथ ईश्वरीय कृपा से स्वास्थ्य को भी अच्छा रख सकता है। परन्तु खेद है कि मनुष्य ईश्वरीय कृपाओं का कृतज्ञ नहीं। वह प्रमाद की निद्रा में सोया पड़ा रहता है और ईश्वर के किये हुए महान अनुग्रहों की ओर ध्यान नहीं देता, और ईश्वर के प्रकाश से मुंह मोड़ कर अँधेरे मार्ग में चलता है।"
—(*Wisdom of Abdul-Baha*, p. 16.)

चिकित्सक या स्वास्थ्य देनेवाला

आध्यात्मिक शक्ति से चिकित्सा करने की शक्ति निःसन्देह प्रत्येक व्यक्ति को थोड़ी या बहुत अवश्य प्राप्त है। परन्तु जिस प्रकार कई मनुष्यों को गणित या संगीत में अधिक योग्यता प्राप्त होती है इसी प्रकार कइयों को चिकित्सा शास्त्र में विशेष नैपुण्य प्राप्त होता है। इन लोगों को चिकित्सा वृत्ति स्वीकार करनी चाहिये। दुर्भाग्यवश इस समय संसार प्राकृतिक पदार्थों की ओर इतना झुक गया है कि उसकी आत्मिक चिकित्सा की सम्भवता पर से दृष्टि ही हट गई है। अन्य शक्तियों के समान चिकित्सा की करामात को समझना, उसे सीखना, उसमें नैपुण्य प्राप्त करना चाहिये ताकि वह चरम सीमा तक उन्नत हो जाये। इस समय सम्भवतः संसार में सहस्रों मनुष्य ऐसे हैं जिनमें चिकित्सा करने की शक्ति स्वभावतः बहुत अधिक है, परन्तु यह ईश्वर दत्त शक्ति उनमें सुप्त और निष्क्रिय अवस्था में पड़ी है। जब मानसिक आत्मिक चिकित्सा की सम्भवता का निश्चय हो जायगा तो चिकित्सा की कला में भारी परिवर्तन हो जायगा, यह विशिष्ट हो जायगा और इसका गुण अपरिमित रूप में बढ़ेगा, और जब चिकित्सक के इस नवीन ज्ञान और शक्ति के साथ रोगी के विश्वास और आशा का भी मेल होगा तब तो इसका परिणाम बड़ा ही अद्भुत दृष्टिगोचर होगा।

बहाउल्लाह कहते हैं—

"ईश्वर पर हमारा विश्वास होना चाहिये। उसी चिकित्सक, ज्ञाता और सहायक के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है। पृथ्वी या आकाश में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो ईश्वर के अधिकार से बाहर हो।"

"ऐ वैद्य ! रोगियों की चिकित्सा आरम्भ करने से पूर्व ईश्वर का, जो प्रलय के दिवस का स्वामी है, नाम ले, फिर उन वस्तुओं को व्यवहार में ला जिन्हें ईश्वर ने अपने जीवों की चिकित्सा के लिए नियत किया है। मेरे जीवन की सौगन्ध वह वैद्य जो मेरे प्रेम के मद से मस्त हो, उसका आगमन ही आरोग्य है और उसके निश्वास दया और आशा हैं। देह के कल्याण के लिए ऐसे वैद्य का आंचल पकड़ो, क्योंकि उसकी चिकित्सा में ईश्वर कृपा सम्मिलित है।"

"सब प्रकार के विज्ञानों में यह एक ज्ञान अधिक महत्व रखता है, क्योंकि मही को जीवन देने वाले ईश्वर की ओर से यह सब से बड़ा आश्रय है, जिसके द्वारा वह अपने प्राणियों की देहों की रक्षा करता है, और उसी ने इस विद्या को सब विद्याओं और ज्ञानों का शिरोमणि निश्चित किया है। क्योंकि आज के लिए तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम मेरे विजय के लिए कटिबद्ध हो जाओ।"

"कहो, ऐ मेरे ईश्वर ! तेरा नाम मेरे लिए आरोग्य और तेरी स्मृति मेरा इलाज है, तेरा सामीप्य मेरी आशा, तेरा प्रेम मेरा सानन्द साथी और तेरी दया इस और अगले संसार में मेरा चिकित्सक और सहायक हो। निःसन्देह तू जानने वाला, देने वाला और चतुर है।" (Tablet to a physician.)

अब्दुल-बहा लिखते हैं:—

"जिसके अन्दर बहाई प्रेम भरा है, जिसने और सब कुछ भुला दिया है, उसके मुँह से पवित्र आत्मा की ध्वनि सुनाई देगी और उसका हृदय जीवन के तत्व से भरपूर होगा। मोतियों की लड़ी जैसे शब्द उसके मुँह से निकलेंगे और उनके हाथ रखने से ही सब रोग दूर हो जायेंगे।"—(*Star of the West* vol. viii, p.233.)

"ऐ पवित्र और आध्यात्मिक मनुष्य ! तू ईश्वर की ओर ऐसे हृदय

से ध्यानासक्त हो या जो उसके प्रेम का अनुरागी हो और उसकी स्तुति में मग्न हो, उसके राज्य की ओर ताक रहा हो, और जो आनन्द, मस्ती प्रेम, उत्कण्ठा, हर्ष और सौमनस्य की दशा में पवित्रात्मा से सहायता पाने का अभिलाषी हो । ईश्वर अपने समीप की एक आत्मा के द्वारा रोग और अस्वस्थता को हटाने में तुम्हारी सहायता करेगा ।"

"हृदयों और देहों की चिकित्सा करने प्रवृत्त रह, और ईश्वर की ओर मन लगा कर रोगियों को नीरोग करने की कामना करते रहो, और ईश्वर के नाम की शक्ति और उसके प्रेम के द्वारा आरोग्य प्राप्त करना तुम्हारा लक्ष्य हो ।"—(*Tablets of Abdul-Baha*, vol. iii, pp. 628, 629.)

किस प्रकार सब सहायता कर सकते हैं ?

रोग की चिकित्सा करना केवल रोगी और वैद्य से ही संबन्ध नहीं रखता बल्कि यह सब का काम है । सेवा और सहानुभूति सच्चरित्र और सद्विचार, और विशेषकर प्रार्थना के द्वारा सभी को सहायता करनी चाहिये, क्योंकि सभी उपायों में प्रार्थना सर्वोत्तम है । अब्दुल-बहा कहते हैं कि "दूसरों के लिये प्रार्थना करना अवश्य फलप्रद होगा ।" रोगी के मित्रों पर भी एक बड़ी ज़िम्मेवारी होती है, क्योंकि इनका प्रभाव, चाहे अच्छा हो या बुरा, अत्यन्त प्रत्यक्ष और प्रबल होता है । रोग की कितनी एक अवस्थाओं में परिणाम निःसन्देह रोगी के माता पिता, मित्रों और पड़ोसियों के उपचार पर प्रधानता से निर्भर होता है ।

रोगी के सब ज्ञात भाई भी रोग की प्रत्येक दशा में कुछ न कुछ प्रभाव रखते हैं । प्रत्येक व्यक्ति में चाहे यह प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर न भी हों, परन्तु समष्टि में यह प्रभाव बहुत

प्रबल होता है। प्रत्येक व्यक्ति जातीय वायु मण्डल के प्रभाव के अन्तर्गत होता है, चाहे यह प्रभाव धार्मिक वा आर्थिक, पुण्य का हो या पाप का, हर्ष का हो या विषाद का, और प्रत्येक व्यक्ति इस वायुमण्डल को बनाने में भाग लेता है। संसार की वर्तमान अवस्था में किसी व्यक्ति के लिये पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करना संभव न हो, परन्तु यह सब के लिये संभव है कि वह पवित्र आत्मा की स्वास्थ्यप्रदायिनी शक्ति का सकाम साधन बने, और इस प्रकार वह अपने शरीर पर तथा अपने साथियों पर स्वास्थ्यवर्धक और सहायताप्रद प्रभाव डाले।

बहाईयों के और किसी कर्त्तव्य पर इतना अधिक और बार बार जोर नहीं दिया गया जितना कि रोगियों को अच्छा करने पर दिया गया है। बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा दोनों ने स्वास्थ्य लाभ के निमित्त बड़ी उत्तम प्रार्थनाओं की रचना की है।

सवर्ण युग

बहाउल्लाह ने इस बात का निश्चय दिलाया है कि रोगियों, चिकित्सकों और सर्वसाधारण जात भाइयों के मिथः प्रेममय सहयोग से तथा चिकित्सा के भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों प्रकारों के उपायों का उचित प्रयोग करने से एक ऐसा सुवर्ण युग आयेगा जब ईश्वरीय शक्ति से शोक आनन्द में और सब रोग स्वास्थ्य में बदल जायेंगे। अब्दुल-बहा कहते हैं कि जब लोग ईश्वरीय संदेश को समझ लेंगे, सब कष्ट दूर हो जायेंगे। फिर उन्होंने कहा है:—

"जब भौतिक और आध्यात्मिक संसार का खूब मेल मिलाप हो जायगा, जब मन पवित्र और विचार निर्मल हो जाएँगे, तो पूर्ण संगठन

हो जायगा और इस शक्ति से पूर्ण प्रकाश देखने में आयेगा, दैहिक और आध्यात्मिक सब रोग दूर हो जाएँगे।" (*Tablets of Abdul-Baha* vol. ii, p. 309.)

स्वास्थ्य का उचित व्यवहार

इस अध्याय के अन्त में अब्दुल-बहा की दी हुई उन शिक्षाओं का, जो इन्होंने दैहिक स्वास्थ्य के उचित व्यवहार के विषय में दी हैं, वर्णन करना अच्छा होगा। वाँशिंगटन के बहाईयों को लिखी अपनी एक तख़्ती में इन्होंने लिखा है:—

"यदि दैहिक स्वास्थ्य और शारीरिक पुष्टि का उपयोग ईश्वरीय साम्राज्य के निमित्त किया जाये तो यह अत्यन्त ग्राह्य और प्रशंसनीय होगा, और यदि यह सर्व साधारण मानव जाति के हित में उपयुक्त हो, चाहे इससे उनका भौतिक हित साधन ही क्यों न होता हो, पर सद्-नुष्ठान का साधन बने, तो भी यह ग्राह्य है। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य और समृद्धि को इन्द्रियों की तृप्ति के लिए व्यवहार में लाया जाये, पशुओं के समान जीवित रखा जाये, और बुरे कामों मे लगाया जाये, तो ऐसे स्वास्थ्य से बीमारी कहीं अच्छी है। प्रत्युत ऐसे जीवन से तो मृत्यु ही बहुत अच्छी है। यदि आप स्वास्थ्य चाहते हैं, तो इसे ईश्वरीय राज्य की सेवा के निमित्त चाहो। मैं आशा करता हूँ कि आप पूर्ण विवेकबुद्धि, दृढ़ संकल्प, पूरा स्वास्थ्य, और दैहिक तथा आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करोगे ताकि आप शाश्वत जीवन के स्रोत से पानी पीयें और ईश्वरीय अनुमोदन के भाव से साहाय्य प्राप्त करें।"

अध्याय आठवाँ

धर्मों की एकता

"ऐ संसार के लोगो ! इस सबसे बड़े अवतार का प्रधान गुण यह है कि हमने पुस्तक में से उन सब बातों को हटा दिया है जो विरोध विद्वेष और वैमनस्य का कारण थीं, और उन बातों का उल्लेख किया है जो एकता, स्नेह और पारस्परिक सहानुभूति का कारण हैं। आनन्द के भागी वह लोग हैं जो ईश्वर की दी आज्ञाओं का पालन करते हैं।" (Bahaullah in *Tablet of the world.*)

उन्नीसवीं सदी के मतभेद

संसार की एकता का विच्छेद कदाचित् दूसरी सदियों में इतना न हुआ होगा जितना कि उन्नीसवीं सदी में हुआ। कई सदियों से बड़े बड़े मतों के अनुयायी (अर्थात् जरथोस्ती, मूसाई, बौद्ध, ईसाई और मुसलमान आदि) साथ साथ रहते चले आ रहे थे। परन्तु आपस में प्रेमभाव बनाए रखने के स्थान में वह एक दूसरे के साथ शत्रुता रखते और लड़ाई झगड़ा करते चले आये। इतना ही नहीं बल्कि प्रत्येक मत में शाखाएं निकल आईं और उनके टुकड़े टुकड़े हो गये। एक संप्रदाय के अंदर दूसरा संप्रदाय निकल आया जो आपस के प्राणान्तकारी वैरी बनते गये। यद्यपि मसीह ने कहा था—"तुम आपस में ऐसा प्रेम करो कि उसी प्रेम से सब लोग जान लें कि तुम मेरे शिष्य हो।"

मोहम्मदसाहिब कहते हैं—"यह तुम्हारा धर्म (दीन) एक ही धर्म है। ईश्वर ने तुमको वह धर्म (faith) दिया है जो उसने नूह को दिया था, और जिसे हमने तुम पर प्रकट किया है। यही हमने इब्राहीम, मूसा और मसीह को दिया था और कहा था कि इस धर्म पर विश्वास लाओ और फ़िरकों में मत बँट जाओ।" प्रत्येक बड़े बड़े मत के प्रवर्तक ने अपने अनुयायिओं को यही शिक्षा दी कि वह प्रेमपूर्वक और एक होकर रहें। परन्तु प्रत्येक दशा में प्रवर्तक का उद्देश्य एक बड़ी हद तक मानसिक क्षुद्रता, पक्षपात, रीतिरिवाजों के मानने, दुराचार, कुटिलता, वैर विरोध और पार्थक्य में डूब गया। बहाई युग के आरम्भ में संसार में परस्पर विरोधी मत-मतान्तरों की इतनी भरमार थी कि मानव इतिहास में कदाचित् ऐसी कभी देखने में न आई होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि लोग उस समय प्रत्येक संप्रदाय के धार्मिक विश्वास और भिन्न भिन्न रीतिरिवाजों तथा कई प्रकार के धार्मिक नियमों का अनुभव कर रहे थे।

इसी समय मनुष्यों की एक वृद्धिशील संख्या निर्भीकता से प्रकृति के नियमों और मतों की मूल भित्तियों की गवेषणा और सूक्ष्म परीक्षा में अपनी शक्ति को लगा रही थी। साइंस के नये नये ज्ञान वेग से प्राप्त किये जा रहे थे और जीवन की अनेक समस्याओं को सुलझाने के लिये नये नये उपाय ढूंढे जा रहे थे। नये नये आविष्कारों अर्थात् इंजन वाले जहाज, रेलगाड़ी, डाक और मुद्रण यन्त्र से भिन्न भिन्न प्रकार के विचारों को फैलाने में सहायता मिली।

धर्म और विज्ञान के परस्पर विरोधी विचारों में भयंकर युद्ध

हो रहा था। ईसाई संसार में बाइबल का तर्कवाद भौतिक विज्ञान के साथ मिलकर बाइबल के प्रामाण्य पर, जो सदियों से धार्मिक विश्वास का आधार समझा जा रहा था, झगड़ रहा था और किसी हद तक उसके प्रामाण्य का खण्डन कर रहा था। लोगों की एक बड़ी संख्या, जो प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी, ईसाई धर्म की शिक्षाओं को सन्देह की दृष्टि से देखने लग गई थी। पादरी लोग भी एक बड़ी संख्या में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने धार्मिक सिद्धान्तों के विषय में सन्देह या अविश्वास रखते थे।

विचारों की यह उत्तेजना और प्रवाह, जिनके साथ साथ लोगों के यह भाव भी वृद्धि प्राप्त कर रहे थे कि प्राचीन धार्मिक सिद्धान्त और रीति रिवाज़ अधूरे हैं, और लोग ज्ञान और बुद्धि की पूर्णता के लिये गवेषणा और प्रयत्न कर रहे हैं। केवल ईसाई धर्म में ही नहीं, बल्कि सब देशों की जातियों और धर्मों में कुछ किसी न किसी रूप में प्रकट हो रहे थे।

बहाउल्लाह का सन्देश

उस समय, जबकि यह विरोध-दुर्दशा अन्तिम सीमा पर पहुँची हुई थी, बहाउल्लाह ने अपनी दुंदुभी बजाई और कहाः—

"सब लोग एक मत में वा धर्म में आ जाएँ, सब लोग परस्पर भ्रातृभाव से रहें, मनुष्य मात्र में स्नेह और एकता के बन्धन दृढ़ हो जाएँ, धार्मिक मतभेद जाता रहे, और जातियों का भेद भाव सर्वथा दूर हो जाए। यह झगड़े, हत्याकाण्ड और वैर विरोध बंद होने चाहियें। सब लोग एक परिवार के समान प्रेम भाव से रहें।" (प्रो० ब्राउन को दिये हुए संदेश में)

निःसन्देह यह एक उज्ज्वल सन्देश है, परन्तु इसमें जो आदेश हैं उन्हे व्यवहार में कैसे लाया जाए? सहस्त्रों वर्षों से ईश्वरावतार इन बातों को कहते चले आये, कवि इनके गीत गाते आये, साधु महात्मा लोग इनका उपदेश करते आये, परन्तु मत-भेद दूर न हुआ और झगड़े, हत्याकाण्ड और विरोध बन्द न हुए। अब ऐसी कौनसी बात है जिससे यह सिद्ध होता है कि यह चमत्कार अब पूरा होने वाला है। क्या संसार की स्थिति में कोई नवीन परिवर्तन होगये हैं? क्या मानव स्वभाव वैसा ही नहीं है जैसा कि पहले था? और क्या जब तक संसार विद्यमान है यह वैसा ही न रहेगा? जब दो मनुष्य अथवा दो जातियाँ एक ही वस्तु की इच्छा रखती हों तो क्या वह भविष्य में परस्पर संग्राम न करेंगी जैसा कि प्राचीन काल से करती आई हैं? यदि मूसा, बुद्ध, मसीह और मोहम्मद संसार की एकता स्थापित करने में सफल नहीं हुए तो क्या बहाउल्लाह सफल हो जाएँगे? जब प्राचीन सभी मत बिगड़ कर फ़िरकों में बँट गये तो क्या बहाईयों की भी यही दशा न होगी? आओ, हम देखें कि बहाई शिक्षा इन प्रश्नों का और इसी प्रकार के अन्य प्रश्नों का क्या उत्तर देती है।

क्या मनुष्य का स्वभाव बदल सकता है?

शिक्षा और धर्म इसी धारणा पर स्थित हैं कि मनुष्य का स्वभाव बदल सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि साधारण सी गवेषणा भी हमें यह दिखाएगी कि सजीव पदार्थ के संवन्ध में जो कुछ हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं वह यह है कि वह परिवर्तन पाये बिना नहीं रह सकता। परिवर्तन के बिना जीवन

का रहना ही संभव नहीं। जहाँ तक कि खनिज्ञ पदार्थ भी परिवर्तन के बिना नहीं रह सकते और जीवन की परिधि में हम अपनी दृष्टि को जितना ऊँचा करें उतना ही इस परिवर्तन को हम अद्भुत, पेचीदा और विभिन्न प्रकार का पाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक श्रेणी के प्राणियों के विकास और अभिवृद्धि में हमें दो प्रकार के परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। एक मन्द, क्रमिक और लगभग अनुभव में भी न आनेवाला, और दूसरा त्वरित, आकस्मिक और विस्मयावह। विकास की विशेष अवस्थाओं में दूसरा परिवर्तन देखने में आता है। खनिज पदार्थों यह विशेष अवस्थाएँ हमें पिघलती और उबलती हुई दशा में प्राप्त होती हैं अर्थात् उस समय जब ठोस वस्तु एकाएक तरल हो जाती है या तरल वस्तु गैस में बदल जाती है। उद्भिद् पदार्थों (पौदों) में भी यह विशेष अवस्थाएँ अनुभव में आती हैं, विशेषकर उस समय जब बीज अङ्कुर के रूप में और डोडी पत्ते के रूप में आ रही होती है। जीवजन्तुओं में तो यह अवस्था बातबात में नज़र आती है, जैसे छोटा सा कीड़ा तितली में बदल जाता है, चूज़ा अण्डे से निकलता है और बचा माँ के पेट से पैदा होता है। उच्च श्रेणी के जीवन धारियों में भी हमें इस प्रकार को परिवर्तन प्रायः नज़र आते हैं, अर्थात् जब मनुष्य "नये सिरे से जन्म लेता है" और उसका सारा अस्तित्व अपने लक्ष्य, अपने चरित्र और अपनी चेष्टाओं में एकाएक बदल जाता है। ऐसी विशेष अवस्थाएँ उस समय प्रायः सभी जातियों या समुदायों में एक ही समय नज़र आने लगती हैं जब एकाएक बसन्त में सब उद्भिज पदार्थ एकाएक अंकुरित होकर नया जीवन प्राप्त करते हैं।

बहाउल्लाह कहते हैं कि जिस प्रकार नीची श्रेणियों के प्राणी

नये और परिपूर्ण जीवन को अकस्मात् प्राप्त करने का समय पाते हैं वैसे ही मनुष्य के लिये भी एक 'विशेष अवस्था' अर्थात् नये जन्म का समय आने को है। उस समय जीवन की वह प्रणाली, जो इतिहास के आरम्भ से लेकर इस समय तक जारी है, शीघ्र और सदा के लिये बदल जायगी, और मनुष्यमात्र जीवन की एक नवीन प्रणाली में प्रविष्ट होगा जो पुरातन जीवन से उसी प्रकार भिन्न होगी जैसे तितली अपने पहले रूप से और पक्षी अण्डे से भिन्न होता हैं। सब के सब मनुष्य नये अवतार के प्रकाश में सत्य की नई दृष्टि प्राप्त करेंगे, जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से सारा जगत प्रकाशित हो जाता है और सब लोग स्पष्ट देखने लगते हैं जब कि एक घड़ी पूर्व अन्धकार में सब कुछ धुँधला और छुपा-सा होता है। अब्दुल-बहा कहते हैं कि "मानवशक्ति का यह एक नया प्रवाह है, संसार के सभी प्रदेश प्रकाशमय हो रहे हैं, और इसमें सन्देह नहीं कि संसार एक पुष्पोद्यान या स्वर्ग बन जायगा।" प्रकृति के बहुत से उदाहरण इस विचार का समर्थन करते हैं। अतीत समय के सब ईश्वरावतारों ने एक स्वर से ऐसे ज्योतिमय समयके आने की भविष्य वाणियां की हैं। समय के लक्षणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि मनुष्य के विचारों में महान और क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं और शिक्षाएँ अब भी उन्नति में हैं।

इस पर भी यदि निराशावादी लोग यही कहें कि बाकी सब चीजें बदल सकती हैं पर मानव प्रकृति नहीं बदल सकती तो इससे बढ़ कर व्यर्थ और निराधार युक्ति और क्या होगी।

एकता के लिये पहला उद्योग

धार्मिक एकता को बढ़ाने के लिए बहाउल्लाह त्यागिता और

सहिष्णुता का आदेश देते हैं, और अनुयायिओं को सब मतों के लोगों से हर्ष और प्रीति के साथ मेल जोल रखने की आज्ञा देते हैं। अपनी 'अन्तिम इच्छा और निर्वाणपत्र' में उन्होंने लिखा है:—

"प्रभु ने अपनी पुस्तक 'किताब-उल-अक़्दस' में झगड़ा फ़साद करने का सर्वथा निषेध किया है। यही बड़े से बड़े अवतार के रूप में ईश्वर की आज्ञा है, और यह वह आज्ञा है जिसे उसने रद करने या सुधारने से बाहर रखा है, और अपनी प्रबल अनुमति से विभूषित किया है।"

"ऐ संसार के लोगो! ईश्वरीय धर्म प्रेम और ऐक्य के निमित्त है, इसे शत्रुता और संग्राम का कारण न बनाओ। हमारी बड़ी आशा यही है कि बहाई लोग सदा इस महा मंत्र का उच्चार करेंगे, "देखो प्रत्येक वस्तु प्रभु की है"। यह मंगलमय पवित्रशब्द पानी के समान ईर्षा और द्वेष की आग को बुझा देगा जो लोगों की छातियों और हृदयों में सुलग रही है। केवल इसी वाक्य के प्रभाव से संसार भर के भिन्न भिन्न मतों के अनुगामी लोग एकता का प्रकाश प्राप्त कर सकेंगे। निःसन्देह ईश्वर सत्य है, सत्य के मार्ग पर ले जाता है और वह सर्व समर्थ, कृपालु और दानशील है।"

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"सब मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह पक्षपात को छोड़ दें और सब एक दूसरे की गिरजों और मसजिदों में जायें, क्योंकि इन सभी प्रार्थना मन्दिरों में ईश्वर का नाम लिया जाता है। जब सब एक ही ईश्वर की पूजा के लिये जमा होते हैं तो उसमें भेद ही क्या रहा। इन में शैतान की कोई भी पूजा नहीं करता। मुसलमानों को चाहिये वह ईसाइयों के गिरजों और यहूदियों के प्रार्थनामन्दिरों में जायें और इसी प्रकार दूसरे लोगों

को भी मुसलमानों की मसजिदों में जाना चाहिये। थोड़े से निराधार पक्षपात और भ्रमात्मक विश्वासों के कारण वह एक दूसरे से पृथक हुए रहते हैं। अमेरिका में मैं यहूदियों के प्रार्थनामन्दिरों में गया जो ईसाइयों के गिरजों के समान हैं और मैंने सब जगह ईश्वर ही की पूजा होते देखी।"

"उन में से बहुत से स्थानों में मैंने ईश्वरीय धर्म की मूल भित्ति पर वार्तालाप किया और मैंने वहां ईश्वरीय पैगंबरों और पवित्र अवतारों की सचाई के प्रमाण भी दिये। मैंने उन्हें अन्धविश्वास छोड़ देने के लिये प्रोत्साहन दिया। इसी प्रकार सब संप्रदायों के मुखियाओं को चाहिये कि वह एक दूसरे के प्रार्थनामन्दिरों में जायें और ईश्वरीय धर्म के प्रधान तत्व और सत्यता पर वार्तालाप करें। इन्हें चाहिये कि एक दूसरे के प्रार्थनामन्दिरों में जा कर परस्पर प्रेम और एकता से ईश्वराराधन करें और आपस के वैर विरोध को त्याग दें।"—(*Star of the West* vol. ix, No. 3, p. 37.)

अगर यह पहले कदम ही उठाये जाते और भिन्न-भिन्न संप्रदायों में परस्पर मित्रता और सहिष्णुता स्थापित की जाती तो आज संसार में कैसा विचित्र परिवर्तन हो गया होता। परन्तु सच्ची एकता स्थापित करने के लिए इस से भी अधिक कुछ और करने की आवश्यकता है। मतभेद या जातिभेद के रोग के लिये सहिष्णुता सिद्ध औषध है, परन्तु यह इसकी पूर्ण चिकित्सा नहीं। यह रोग के मूल कारण को दूर नहीं करती।

अधिकार की समस्या

अतीत समय में साम्प्रदायिक भिन्न-भिन्न समुदाय एकता स्थापित करने में इसलिये असफल रहे कि उनके मानने वालों

ने अपने अपने मत को ही सर्वश्रेष्ठ समझा और उनके नियमों को ही ईश्वरीय नियम समझा। परिणाम यह हुआ कि यदि किसी दूसरे ईश्वरावतार ने किसी विभिन्न सन्देश की घोषणा की तो उसे लोगों ने सत्य का शत्रु समझा। इन्हीं कारणों से प्रत्येक जाति में भिन्न-भिन्न मत या फ़िरके खड़े हो गये। प्रत्येक मत के मानने वालों ने किसी एक को धर्मावतार स्वीकार कर लिया और मत के प्रवर्तक के वचन विशेष को परम सत्य मान कर दूसरों को भ्रान्त कहना आरम्भ कर दिया। यह स्पष्ट है कि जब तक ऐसी दशा बनी रहेगी तब तक संसार में सच्ची एकता स्थापित नहीं हो सकती। बहाउल्लाह इस के विपरीत आदेश देते हैं कि सभी ईश्वरावतार ईश्वरीय सन्देश लेकर आये थे। प्रत्येक ने अपने अपने समय में लोगों को ऐसी उच्च शिक्षाएं दीं कि लोग आने वाले ईश्वरावतारों की शिक्षाओं को समझने के योग्य हो गये। उन्होंने प्रत्येक मत के मानने वालों को पुकार-पुकार कर कहा है कि वह अपने अपने ईश्वरावतारों की ईश्वरीय वाणी को मानने से इनकार न करें बल्कि दूसरे ईश्वरावतारों की भी वाणी या सन्देशको स्वीकार करें ताकि उन्हें पता लग जाये कि यह सब शिक्षाएँ वास्तव में एक हैं और मनुष्य-मात्र की शिक्षा और एकता के लिये एक बड़ी आयोजना के अंग हैं। वह सब मतों के मानने वालों को कहते हैं कि वह अपने-अपने ईश्वरावतारों का सम्मान और आदर अपने जीवन को मानव समाज की उस एकता को सिद्ध करने में लगा कर करें, जिसके लिये उन्होंने बहुत परिश्रम किया और बड़े कष्ट सहे। महारानी विक्टोरिया को लिखे पत्र में उन्होंने सारे संसार को एक ऐसे रोगी मनुष्य की समता दी है जिसका रोग बहुत बिगड़ चुका है क्योंकि रोगी बेसमझ वैद्य के वश में पड़ गया

है। उन्होंने बताया है कि उपाय कि सप्रकार फलीभूत हो सकता है:-

"इस रोग की ईश्वर निर्मित सिद्ध औषध तथा सर्वोत्तम उपाय यह है कि पृथ्वी पर रहने वाले सब लोग एक मत और एक नियम के मानने वाले हो जायें, और यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कोई चतुर, पूर्ण, और प्रभावशाली वैद्य न मिल जाय। मुझे अपने जीवन की सौगन्ध। यही सर्वथा सत्य है, बाकी सब भ्रम रूप हैं।"—(*Gleanings*, p. 255.)

उत्तरोत्तर आकाशवाणी

धार्मिक एकता स्थापित करने में सबसे बड़ी रुकावट भिन्न-भिन्न ईश्वरावतारों की भिन्न-भिन्न वाणियाँ हैं। जिस बात को एक ने अच्छा कहा, दूसरे ने उसीको बुरा कह दिया। फिर किस प्रकार दोनों सच्चे हो सकते हैं? और दोनों अपनी-अपनी वाणी को ईश्वरीय इच्छा के अनुसार होने का दम कैसे भर सकते हैं? यह निश्चय है कि सत्य एक है और वह बदल नहीं सकता। निःसन्देह सचाई एक है और यह बदल नहीं सकती, परन्तु पूर्ण सत्य अवश्य ही लोगों की समझ की वर्तमान धारा की पहुँच से दूर है, और उसके संबन्ध में हमारे विचार अवश्य बदलते रहेंगे। ज्यों ज्यों समय बीतता जायेगा, हमारे आरम्भिक अधूरे विचार ईश्वर की कृपा से अधिकाधिक उन्नत होते जायेंगे। कुछ ईरानी बहाईयों के लिये लिखी एक तख्ती में बहाउल्लाह कहते हैं—

"ऐ लोगो! ईश्वरीय वाणी लोगों की योग्यता के अनुसार प्रकट होती है, जिससे आरम्भ में लोग उन पर अमल कर सकें। दूध मात्रा के अनुसार दिया जाता है ताकि संसार रूपी बालक संसार में प्रविष्ट होकर एकता के न्याय-भवन में अपनी स्थिति प्राप्त कर सकें।"

आरम्भ में दूध ही बच्चे को ऐसी शक्ति देता है कि वह बड़ा होकर अधिक ठोस वस्तुओं को पचाने में समर्थ होता है। यह कहना कि एक अवतार अपने समय में जो शिक्षा देता था, सच्चा है, और इसी लिये दूसरा अवतार, जो दूसरे समय में दूसरे प्रकार की शिक्षा देता था, भूल करता है ऐसा ही है जैसे कोई कहे कि क्योंकि नवजात बालक के लिये दूध ही उत्तम भोजन है इसलिये बड़ा होने पर भी दूध ही देना ठीक है, और ठोस वस्तु देने की प्रेरणा करने वाला भूल करता है। अब्दुल-बहा कहते हैं-

"प्रत्येक ईश्वरीय वाणी दो भागों में विभक्त होती है। पहला भाग अत्यावश्यक और अनश्वर जगत् से संबन्ध रखता है। यह ईश्वरीय सत्य का विकास और अत्यावश्यक सिद्धान्त होता है। यह ईश्वरीय प्रेम का प्रकाश है। सभी धर्मों में यह अमर और अपरिवर्तनशील होता है। दूसरा भाग अनश्वर या स्थायी नहीं होता। यह व्यावहारिक जीवन इच्छा और क्रिया कलाप से संबन्ध रखता है और प्रत्येक ईश्वरावतार के समय की आवश्यकताओं और मानव विकास के अनुसार बदलता रहता है। उदाहरण के लिये जैसे मूसा के समय में एक छोटी सी चोरी के अपराध में हाथ काट दिये जाते थे, उनके समय में आँख के बदले आँख और दांत के बदले दांत का नियम व्यवहृत होता था। परन्तु क्योंकि मसीह के समय में यह नियम अच्छे नहीं माने जाते थे, इसलिये रद कर दिये गये। इसी प्रकार तलाक का रिवाज इतना व्यापक होगया था कि उससे विवाह के नियमों का कोई महत्व न रह गया था, इस लिये मसीह ने तलाक की प्रथा को अनुचित ठहरा दिया।"

"समय की आवश्यकता के अनुसार महात्मा मूसा ने प्राणदण्ड के दस नियमों का विधान किया था। उस समय में इन कठोर नियमों

के विना मानव जाति की रक्षा और शान्ति की स्थापना सर्वथा असम्भव थी, क्योंकि इसराईल के बच्चे इस समय ताह के निर्जन वनों में रहते थे जहाँ न तो न्यायालय और ना ही कारागृह थे। परन्तु मसीह के समय में इन नियमों की आवश्यकता न थी। धर्म या मत के दूसरे भाग का इतिहास महत्त्व का नहीं है, क्योंकि इसमें केवल वर्तमान जीवन के ही रीति रिवाजों का वर्णन होता है, परन्तु ईश्वरीय धर्म की मूल भित्ति एक है और ईश्वरावतार बहाउल्लाह ने उसे फिर से नया बनाकर दिखाया है।" (*Divine Philosophy.*)

ईश्वरीय धर्म केवल एक है और सभी पैगंबरों ने इसी की शिक्षा दी है, और यह एक सजीव और वृद्धि शील वस्तु है, निर्जीव और अपरिवर्तनशील नहीं है। मूसा की शिक्षा एक डोडी के समान है और मसीह की शिक्षाएँ फूल के समान हैं, परन्तु बहाउल्लाह की शिक्षाएँ फल हैं। डोडी फूल का विध्वंस नहीं करती और नाही फूल फल का विनाश करता है। यह एक दूसरे का नाश नहीं बल्कि पूर्ण करते हैं। डोडी के परदे गिर जाते हैं ताकि फूल खिल जाये और फल की उत्पत्ति और परिपाक के निमित्त फूल के पत्तों का गिर जाना अवश्यंभावी है। क्या डोडी के परदे और फूल की पत्तियाँ अपने-अपने समय में व्यर्थ और सारहीन थीं जो उन्हें त्याग दिया जाता। नहीं, अपने-अपने समय में दोनों ठीक और आवश्यक थीं। उनके विना फल का उत्पन्न होना ही असम्भव था। यही उदाहरण सभी पैगंबरों की शिक्षाओं पर लागू होता है। उनके बाह्य नियम समय के अनुसार बदलते गये, परन्तु प्रत्येक वाणी ने अपने से पहले की वाणी को पूरा किया है। न वह एक दूसरे से अलग हैं और नहीं उनमें कोई भेद प्रतीत होता है, बल्कि यह ईश्वरीय धर्म के

इतिहास की भिन्न-भिन्न कक्षाएँ हैं जो एक दूसरे के बाद डोडी और फूल के समान प्रकट हुए और अब उनका फल लाने का समय आ गया है।

पैगंबरों की निर्भ्रान्तता

बहाउल्लाह कहते हैं कि जिसे पैगंबरी का स्थान या पदवी से भूषित किया जाता है उसे अपनी पदवी को प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त साधन भी दिये जाते हैं, उसको यह दावा करने का अधिकार होता है कि सब लोग उसकी आज्ञा का पालन करें और उसे यह भी अधिकार होता है कि वह अपने पूर्ववर्ती पैगंबरों की शिक्षा को रद्द करदे बदल दे या परिष्कृत कर दे। 'इकान' नामक पुस्तक में लिखा है:—

"यह उस करुणानिधान की करुणा से और दयासागर की दया से बहुत दूर है कि वह अपने बंदों के नेतृत्व के लिये अपने सेवकों में से किसी एक को चुने और उसे अपने अधिकार को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त और पूर्ण प्रमाण देने की सामर्थ्य न दे और उस पर विश्वास न लानेवालों को दण्ड न दे। नहीं, उस चराचर के स्वामी की उदारता ने तो अपने स्वरूप को प्रकट करने के द्वारा सभी चराचर को अपने साथ ले रखा है।"

"प्रत्येक ईश्वरीय अवतार का प्रयोजन यह होता है कि वह मतों या धर्मों में गुप्त या प्रकट, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परिवर्तन या रूपान्तर पैदा करे। क्योंकि यदि संसार की व्यवहार-धारा बदलने योग्य न हो तो ईश्वर का अवतार धारण करना ही व्यर्थ हो जाये।"

ईश्वर ही एक निर्भ्रान्त शक्ति है और पैगंबर भी निर्भ्रान्त होते हैं, क्योंकि उनका संदेश ईश्वरीय संदेश है जो ईश्वर ने उनके द्वारा संसार को दिया है। यह संदेश तब तक दुर्बल रहता है

जब तक उसी या किसी दूसरे पैगंबर के दिये दूसरे संदेश से बाधित न हो।

ईश्वर ही सर्वोच्च वैद्य है जो अकेला संसार के रोगों का सच्चा निदान जान कर उनके लिये उचित औषध का निश्चय कर सकता है। एक औषध जो एक समय के लिये उचित हो सकती है दूसरे समय के लिये वैसी नहीं रहती, क्योंकि इस समय रोगी की अवस्था और तरह की हो गई होती है। यदि वैद्य एक औषध को बदलकर दूसरी औषध नियत करे और रोगी पहली औषध पर ही अड़ा रहे तो इसका अर्थ यह होगा कि रोगी का वैद्य पर विश्वास नहीं बल्कि अविश्वास है। यहूदियों के मन को यह सुन कर शायद चोट लगेगी जब उन्हें यह कहा जायगा कि सहस्रों वर्ष पूर्व मूसा ने संसार के रोगों की जो औषध बताई थी वह अब बेकार है, ईसाइयों के हृदयों को भी वैसा ही धक्का लगेगा जब उन्हें कहा जायेगा कि मसीह के निर्धारित उपाय में मोहम्मद साहिब ने एक आवश्यक और उपयोगी विशेषता स्थापित की है, और ठीक इसी प्रकार मुसलमान भी यह सुन कर दुखी होंगे कि बाब या बहाउल्लाह को मोहम्मद साहिब की आज्ञाओं को बदल देने का अधिकार है, परन्तु बहाईयों की यह धारणा है कि ईश्वर की सच्ची भक्ति उसके सब पैगंबरों का आदर करने में है, और उस के अन्तिम अवतार की आज्ञाओं को अक्षरशः पालन करने में है, क्योंकि उस के समय के लिये वही पैगंबर या अवतार भेजा गया है। केवल इसी प्रकार की भक्ति से सच्ची एकता स्थापित की जा सकती है।

सब से बड़ा ईश्वरावतार

सब पैगंबरों के समान ही बहाउल्लाह ने भी अपने कर्तव्य

(मिशन) की घोषणा बहुत ही अभ्रान्त रूप से की है।

'अक़दस' में जो तख़्ती विशेष कर ईसाइयों को लक्ष्य करके लिखी गई थी, उन्होंने लिखा है:—

"निःसन्देह, पिता आगया है, और वह वचन, जो ईश्वरीय राज्य में तुम्हें दिया गया था, पूरा हो गया है। यह वह वाणी है जिसे बेटे ने छुपाया था जब उसने अपने आसपास खड़े लोगों से कहा था कि तुम उसे अभी सह नहीं सकते। परन्तु जब नियत समय समाप्त हुआ और वह घड़ी आ गई तो यह वाणी इच्छा के प्रकाश से चमक उठी। ऐ पुत्रो (ईसाइयो), सावधान हो जाओ, इसे पीछे न कर दो बल्कि इसका लड़ पकड़ो। यह तुम्हारे लिये उन सब बातों से श्रेष्ठ है जो कुछ तुम्हारे हाथ में है। निःसन्देह सत्य की भावना नेतृत्व के लिये आ गई है। सच जानो, जो कुछ वह कहता है अपनी ओर से नहीं कहता बल्कि सर्वज्ञ और बुद्धिनिधान ईश्वर की ओर से कहता है। यह वही है जिस की महिमा को पुत्र ने बढ़ाया है। ऐ लोगो! जिसे तुम लिये बैठे हो छोड़ो और उसको पकड़ो जिसकी आज्ञा उसने तुम्हें दी है, जो शक्तिशाली और विश्वासनीय है।"

और १८६७ में ऐड्रियानोपल से पोप को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा है:—

"सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि वर्णन तुझ को वर्ण्य से दूर रखे और पूजा पूज्य से पृथक कर दे। सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान को देखो। वह संसार के जीवन की रक्षा के लिये और पृथ्वी भर के निवासियों को यह कहने के लिये आया है। ऐ लोगो! ईश्वरीय प्रकाश के अरुणोदय के स्थान की ओर आओ। एक घण्टे के लिये भी विलम्ब न करो। क्या तुम धर्म पुस्तक पढ़ चुके हो और भी ईश्वरीय महिमा को देखने में असमर्थ हो?"

"ऐ पठित समुदाय ! यह तुम्हें शोभा नहीं देता। कहो, यदि तुम इस बात को मानने से इनकारी हो तो फिर तुम ईश्वर पर विश्वास लाने में कौन सा प्रमाण देते हो, वह प्रमाण उपस्थित करो।"

जिस प्रकार इन पत्रों में ईसाइयों को बताया गया है कि अंजील में की हुई प्रतिज्ञाएं पूरी हो गईं, उसी प्रकार मुसलमान, यहूदी, जरथोस्ती और अन्य मतों के लोगों को बताया गया है कि उनकी धर्म पुस्तकों में लिखे आशा वचन पूर्ण हो चुके हैं। वह सब मनुष्यों को ईश्वर की भेड़ें कह कर पुकारते हैं जो अब तक भिन्न भिन्न समूहों में या भिन्न भिन्न खेड़ों में बँटे थे। अपने सन्देश को उन्होंने ईश्वरीय सन्देश कहा है और बताया है कि वह एक अच्छे गडरिये के समान है जो समय आने पर अपनी बिखरी हुई भेड़ों को एक समुदाय में जमा करने और सब रुकावटों को दूर करने आया है, जिस से वह सब एक समुदाय में और एक नेता के अधीन हों।

एक नवीन स्थिति

पैगंबरों के बीच बहाउल्लाह की स्थिति अभूतपूर्व और अनुपम है, क्योंकि उन से अवतार धारण के समय संसार की अवस्था भी अभूतपूर्व और अनुपम थी। धर्म, विज्ञान, कला और सभ्यता के विकास के एक लंबे और विचित्र प्रवाह के बाद अब कहीं संसार एकता की शिक्षा के योग्य हुआ है। वह रुकावटें, जो गत शताब्दियों में संसार की एकता को असम्भव बना रही थीं, बहाउल्लाह के प्रकट होने के समय शिथिल पड़ गईं, और १८१७ में उन के जन्म के बाद और विशेषकर उनकी शिक्षाएँ आरम्भ होने के बाद से यह रुकावटें एक अत्यन्त विस्मयजनक

रीति से अपना अस्तित्व खो रही हैं। इसका कारण चाहे कुछ भी हो पर यथार्थता में किसी को सन्देह नहीं।

पहले पैगंबरों के समय में केवल भौगोलिक प्रतिबन्ध सांसारिक एकता के लिये पर्याप्त थे। पर वह प्रतिबन्ध अब दूर हो गये हैं। मानव इतिहास में यह पहला समय है जब कि मनुष्य पाताल अर्थात भूगोल के पर भाग में रहने वालों से भी शीघ्र और सहज में बात-चीत कर सकता है। योरप में जो घटनाएँ कल हो चुकी हैं, संसार के प्रत्येक भाग में आज जान ली जाती हैं। अमेरिका में जो भाषण आज हुआ है वह योरप, एशिया और अफ्रीका में आज ही पढ़ लिया जाता है।

दूसरी बड़ी रुकावट भाषाओं की थी। विदेशी भाषाओं की शिक्षा और अध्ययन के आशिर्वाद से यह बड़ी रुकावट भी बड़ी हद तक दूर हो गई हैं, और इस बात की कल्पना के अनेक आधार हैं कि संसार भर की एक राष्ट्रभाषा की शीघ्र ही रचना होगी जिसका अध्ययन और अध्यापन संसार भर के विद्यालयों में आरम्भ हो जायेगा। तब यह रुकावट सर्वथा दूर हो जायेगी।

तीसरी बड़ी रुकावट धार्मिक पक्षपात और अनुदारता थी। वह भी अब हट रही है। मानव हृदय अधिकाधिक उदार हो रहे हैं। लोगों की शिक्षा अब सांप्रदायिक दलों के पुरोहितों के हाथों से निकलती जा रही है, और नवीन तथा अधिक उदार विचारों को अलग अलग रहने वाले और प्राचीन विचारों के भी लोगों के हृदयों में प्रविष्ट होने से अब कोई रोक नहीं सकता।

इस प्रकार बहाउल्लाह सब से पहले बड़े धर्मावतार हैं जिनका संदेश संसार के प्रत्येक भाग में अपेक्षाकृत थोड़े समय में फैल

गया है। थोड़े समय के अन्दर ही बहाउल्लाह की प्रमुख शिक्षाएँ और लेख इतर भाषाओं में अनुवादित हो कर संसार भर के पढ़ सकने वाले प्रत्येक पुरुष स्त्री और बालक को बिना क्लेश के प्राप्त हो सकेंगे।

बहाई प्रकाश की पूर्णता

संसार भर के सब मतों में पूर्णता और सर्वाङ्ग सुन्दरता की दृष्टि से बहाई प्रकाश बड़ा ही अभूतपूर्व और अनुपम है। मसीह, मूसा, जरथोस्त, बुद्ध और श्रीकृष्ण के संबन्ध के जो लेख हम उद्धृत कर सकते हैं, वह बहुत ही थोड़े हैं, उनमें आजकल के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर नहीं प्राप्त होते। यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि जो सामान्य शिक्षाएँ इन्हीं की कही जाती हैं वह वास्तव में इन्हीं की है अथवा तो बाद के समय में किसी और ने धर्मों की एकता कही हैं। मुसलमानों के पास उनके पैगंबर के जीवन घटनाओं के संबन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिये कुरान और हदीस के अन्य पुस्तक भण्डार अधिक पूर्ण और पर्याप्त है, परन्तु खुद मोहम्मद साहिब ईश्वर की तरफ से प्रेरीत होते हुए भी अनपढ़ थे और उनके अनुयायी भी प्राय: अनपढ़ ही थे। उनकी शिक्षाओं को कलमबन्द करने और फैलाने में जो प्रकार व्यवहार में लाये गये,वह भी कई दृष्टियों से असन्तोषजनक थे और उनकी सत्यता भी बहुत संदेहपूर्ण है। इसका परिणाम यह हुआ कि भिन्न भिन्न खुलासा करने से और विरोधी अभिप्राय द्वारा पहले मतों के समान इसलाम में भी दलबंदी और असन्तोष फैल गया।

इसके विरुद्ध बाब और बहाउल्लाह के लेख अनेक, सरस और शक्ति-सम्पन्न हैं। क्योंकि इन दोनों के लिये जनसमुदाय

में भाषण करना बंद था और इनका अधिकांश समय जेल ही में बीता था, इसलिये इन्होंने अपना बहुत-सा समय लिखने में ही बिताया। इसका परिणाम यह हुआ कि बहाई संप्रदाय सची धर्मपुस्तकों से इतना भर गया कि कोई भी पूर्ववर्ती संप्रदाय इसकी समता नहीं कर सकता। कई एक तत्त्वों की, जिन पर अतीत काल के नबियों ने धुँधला-सा और अपूर्ण प्रकाश डाला था, उन्होंने स्पष्ट और पूरी व्याख्या कर दी है और सत्य के उन सनातन सिद्धान्तों से, जिनकी सभी धार्मिक नेताओं ने शिक्षा दी हैं, उन समस्याओं को सुलझाने में जो आजकल उपस्थित हो रही हैं, काम लिया है, यह वह अड़चीली और अति कठिन समस्याएं हैं जो प्राचीन नबियों या पैगंबरों के समय में कभी सुनी तक न थीं। यह बात सन्देह से रहित है कि यही धार्मिक तत्वों का अक्षुण्ण भण्डार भविष्य में समझ की भूल न होने देगा और भूतकाल की समस्याओं को, जो विविध संप्रदायों और जातियों का परस्पर मेल होने में विघ्न रूप हैं, सुलझाकर अपना शक्तिमय प्रभाव दिखायेगा।

बहाई प्रतिज्ञा पत्र

बहाई संप्रदाय एक दूसरे प्रकार से भी अनुपम और अभूतपूर्व है। अपनी मृत्यु से पूर्व बहाउल्लाह ने एक लेख लिखा जिसमें उन्होंने अपनी आशाओं को पूरा करने के लिये अपने ज्येष्ठ पुत्र अब्दुल-बहा को (जिन्हें वह 'शाखा' या 'बहुत बड़ी शाखा' कहा करते थे) नियत करते हुए लिखा था कि इन्हें हमारी शिक्षाओं की व्याख्या करने का पूरा अधिकार है और इस बात की घोषणा की कि यह हमारी शिक्षाओं का जो अर्थ निकालें या

जैसी व्याख्या करें, उसका प्रामाण्य वैसा ही स्वीकार करना चाहिये जैसा स्वयं उनके (बहाउल्लाह) शब्दों का। अपने निर्वाण पत्र (Will) में उन्होंने कहा है—

"मेरी पुस्तक 'अक़दस' में जो कुछ लिखा गया है, उस पर ध्यान दो, 'जब मेरी सत्ता का समुद्र सूख जाये और मेरे प्रकाश की पुस्तक सम्पूर्ण हो जाये, तो उसकी ओर मन लगाओ जिसे ईश्वर ने भेजा है, जो प्राचीन जड़ से निकली हुई एक शाखा है।' इस पवित्र और धन्यतम गीति में 'सबसे बड़ी शाखा' की ओर इशारा है।"

और "शाखा की तख़्ती" में जहाँ उन्होंने अब्दुल-बहा का स्थान निर्दिष्ट किया है, लिखा है:—

"ऐ लोगो ! शाखा के प्रकट होने के लिये ईश्वर का धन्यवाद करो, क्योंकि यह तुम पर उसकी अवश्य महती कृपा है और तुम्हारे लिये एक बड़ा आशीर्वाद है, इसी के द्वारा एक सूखी या निर्जीव हड्डी को सजीव किया गया है। जो कोई इस पर विश्वास लायेगा, ईश्वर पर विश्वास लायेगा, और जो कोई इससे मुँह मोड़ेगा वह मेरे ऐश्वर्य से मुँह मोड़ेगा, मेरे प्रमाण का निषेध करेगा और अपराधियों में गिना जायेगा।"

बहाउल्लाह की मृत्यु के बाद अब्दुल-बहा को अपने घर पर और लंबी यात्राओं में संसार के सभी देशों और सभी विचारों के लोगों से बातचीत करने के बहुत अवसर मिले। इन्होंने उन सबके प्रश्नों को, उनकी अड़चनों को और उनकी आपत्तियों को ध्यान से सुना और उनके उत्तर भी यथार्थ और पूर्णरूप से दिये। यह उत्तर बड़ी सावधानी से लेख-बद्ध कर लिये गये हैं। लगातार कई सालों तक अब्दुल-बहा धार्मिक शिक्षा देते रहे और उन शिक्षाओं को नये जीवन की विविध समस्याओं पर व्यवहार

में भी लाते रहे। उनके अनुयायिओं में जब कभी कोई मतभेद उठ खड़ा होता तो वह इन्हें बताते और इनसे सप्रमाण उत्तर पाकर सन्तुष्ट हो जाते थे, और इस प्रकार भविष्य में समझ की भूल होने का भय बहुत कम रह गया है।

इसके अतिरिक्त बहाई धर्म की आत्मिक या ईश्वर संबन्धी स्थिति इस बात से और भी प्रकट है कि अब्दुल-बहा के बाद आकाशवाणी के अनुवाद करने का काम अब्दुल-बहा के वसीयतनामे के अनुसार एक के बाद दूसरे "रक्षकों" को सौंपा गया है। इस लिये धर्म अपने सारे युग में भिन्न भिन्न अनुवादों के टुकड़े टुकड़े कर देने वाले प्रभावों से सुरक्षित रहेगा और ना ही इस में कोई ऐसा विघ्न पड़ेगा जो अनात्मक मत के फैलने से धर्म के करता की वाणी के घटिया अर्थ करने से पड़ता है। बहाउल्लाह ने सामाजिक उन्नति के लिये एक अन्तर्जातीय न्यायालय स्थापित किया है जिसके चुनाव और कर्तव्यों के संबन्ध में अब्दुल-बहा के वसीयतनामे में स्पष्टतया लिखा हुआ है। यह सर्वोच्च पारबन्धिक संस्था, जिसका सभापति एक के बाद दूसरा "रक्षक" होगा न केवल उन समस्याओं के संबन्ध में नये कानून बना सकती है जिनका आकाशवाणी में वर्णन नहीं है, परन्तु परिस्थिति के बदलने पर अपने बनाए हुए कानूनों के स्थान में दूसरे कानून भी बना सकती है। इससे यह निश्चित होता है कि धर्म के लिए सदा एक जीती जागती संस्था बनी रहेगी। चूंकि इसका आधार विश्वव्यापी सत्यता पर है इस लिए इसमें ऐसी शक्ति है कि प्रत्येक युग और प्रत्येक पीढ़ी की आवश्यकता और स्थिति के अनुसार हो सकता है।

चूंकि बहाउल्लाह पर विश्वास लाने से उनकी प्रकट की हुई या अब्दुल-बहा द्वारा स्थापित की हुई सामाजिक शिक्षाओं और संस्थाओं पर भी विश्वास लाना अनिवार्य है इसलिए कोई बहाई कोई अलग संप्रदाय स्थापन नहीं कर सकता और ना ही संप्रदायवाद के लिए कोई बहाना बना सकता है। इस धर्म का मुख्य उद्देश्य सब जातियों और क़ौमों को एक धर्म और एक प्रबन्ध के अधीन लाना है।

अब्दुल-बहा कहते हैं :—

"इस प्रचार का शत्रु वह है जो बहाउल्लाह की वाणी का विवरण करने का यत्न करता है और अपनी योग्यता के अनुसार उस पर रंग चढ़ाता है, फिर कुछ लोग उसके पीछे लग जाते हैं, और इस प्रकार एक नया फिरका बनाकर अपने स्थान को ऊँचा करने के अभिप्राय से प्रचार में द्वैध उत्पन्न कर देता है।" (*Star of the West*, vol. iii, p. 8.)

एक दूसरी तख़्ती (लू) में इन्होंने लिखा है :—

"यह द्वैध फैलाने वाले लोग समुद्र की सत्ता पर जमा हुई झाग की मानिन्द हैं। आज्ञा के समुद्र से एक लहर उठेगी जो 'अब्हा' के राज्य को शक्ति से उस झाग को किनारे पर खदेड़ फेंकेगी। यह दूषित विचार जो मनुष्य के स्वार्थ और दुरिच्छा से उत्पन्न होते हैं, नष्ट हो जायेंगे, परन्तु ईश्वरीय आज्ञा या प्रचार स्थायी और सुरक्षित रहेगा।" (*Star of the West*, vol. x, p. 95.)

यदि कोई मनुष्य धर्म का त्याग करना चाहे तो कोई उसे रोक नहीं सकता। अब्दुल-बहा कहते हैं कि "ईश्वर किसी को बाध्य नहीं करता कि वह आध्यात्मिक बने। मनुष्य को अपनी

इच्छा के अनुसार चलना आवश्यक है"। परन्तु फिर भी आध्यात्मिक आशा या व्यवहार ने बहाई संप्रदाय के अन्दर दलबंदी होना सर्वथा असंभव कर दिया है।

धर्मोपदेश वृत्ति नहीं है

बहाई प्रचार की एक बड़ी विशेषता यह है कि इस में धर्मोपदेश वृत्ति (वेतन लेकर धर्म गुरु का कार्य करना) नहीं माना जाता। शिक्षकों की जीवन यात्रा के लिये यदि कोई अपनी इच्छा से कुछ देना चाहे तो भले ही दे दे और बहुत से बहाई लोग अपना अधिकांश समय धर्म प्रचार में ही लगाते हैं, परन्तु सब बहाईयों से यह आशा की जाती है कि वह समय और योग्यता के अनुसार ही प्रचार कार्य में भाग लें और किसी जाति विशेष को पौरोहित्य के लिये पृथक् करके नियत नहीं किया गया।

प्राचीन समय में पुरोहितों का होना आवश्यक समझा जाता था, क्योंकि लोग अनपढ़ और अशिक्षित थे और वह धार्मिक क्रिया-कलाप के अनुष्ठान तथा न्याय करने में धर्माचार्यों पर निर्भर रहा करते थे। अब समय बदल गया है, शिक्षा दिन बदिन बढ़ती जा रही है, और यदि बहाउल्लाह की आज्ञाओं का पालन करना आरम्भ हो जाये तो संसार भर की सब कन्याएँ और बालक उचित शिक्षा प्राप्त करेंगे। तब प्रत्येक व्यक्ति धर्म-पुस्तकों को स्वयं पढ़ सकेगा और मस्तिष्क के झरने से जीवन का जल अपने लिये स्वयं प्राप्त कर सकेगा। बहाई संप्रदाय में ऐसे छोटे मोटे धार्मिक क्रिया कलाप हैं ही नहीं जिन का संपादन करने के लिये किसी जाति विशेष को पुरोहित नियत किया जाये,

और न्याय का काम उन अधिकारियों के सुपुर्द किया गया है जो इस काम के लिये नियत किये गये हैं।

बालक के लिये शिक्षक का होना आवश्यक है, परन्तु सच्चे शिक्षक का कर्तव्य यह होगा कि वह अपने विद्यार्थी को ऐसा योग्य बना दे कि वह शिक्षक के बिना काम कर सके, अर्थात् वह अपनी आँखों से देख सके, अपने कानों से सुन सके और अपनी बुद्धि से समझ सके। इसी प्रकार मानव जाति के बाल्यकाल में पुरोहित की आवश्यकता है, पर उसका सच्चा कर्तव्य यह है कि वह मनुष्यों को अपने पांव पर खड़ा करे, अर्थात् लोग ईश्वरीय वस्तुओं को अपनी आँखों से देखें, उन्हें अपने कानों से सुनें और अपनी बुद्धि से समझें। अब इन पुरोहितों का काम पूरा हो चुका है और बहाई शिक्षा का उद्देश्य यह है कि उनके काम को चरम सीमा तक पहुँचाये और लोगों को ईश्वर के सिवा बाकी सब की अधीनता से छुड़ा दे, जिससे कि वह ईश्वरावतार की ओर स्वयं अपना मन लगा सकें। जब सबकी दृष्टि एक केन्द्र की ओर लग जायेगी तब गड़बड़ और भ्रम न रहेंगे और ज्यों-ज्यों उस केन्द्र के समीप होते जायेंगे त्यों-त्यों वह एक दूसरे के समीप होते जायेंगे।

———

अध्याय नवमा

सच्ची सभ्यता

"ऐ ईश्वर के लोगो ! अपने आप में मस्त न रहो। संसार के कल्याण और जाति को सुधारने में मन लगाओ।" (बहाउल्लाह)

धर्म सभ्यता का अधार है

बहाई विचारों के अनुसार जीवन की व्यक्तिगत और जातीय समस्याएँ इतनी जटिल और दुरूह हैं कि उन्हें साधारण मनुष्य की बुद्धि सुलझाकर ठीक नहीं कर सकती। केवल सर्वज्ञ ही पूर्ण रूप से सृष्टि के उद्देश्य को जानता है और वही बता सकता है कि वह उद्देश्य कैसे सिद्ध हो सकता है। पैगंबरों के द्वारा वह मनुष्यमात्र को उनके जीवन का सच्चा उद्देश्य और उन्नति का सीधा मार्ग दिखाता है। इसलिये सच्ची सभ्यता का स्थिर होना पैगंबरों की वाणी पर विश्वास पूर्वक अमल करने पर निर्भर है। बहाउल्लाह कहते हैं:—

"संसार के प्रबन्ध और मानव जाति की शान्ति का सब से बड़ा साधन धर्म है। धार्मिक स्तम्भों की दुर्बलता ने अशिक्षितों का हौसला बढ़ा दिया है और उन्हें वाचाल और उद्धत बना दिया है। मैं सच कहता हूँ कि जैसे धर्म का ऊँचा दर्जा नीचा किया जायेगा, वैसे ही धूर्तों की उद्दण्डता बढ़ेगी और अन्त में विप्लव का कारण बनेगी।"

"पश्चिम के लोगों की सभ्यता को देखो, उसने संसार भर में कैसी अशान्ति फैला दी है। बहुत बुरे-बुरे हथियारों की सृष्टि हुई और उनसे मानव जीवन का इतनी क्रूरता से विध्वंस हुआ जिसे संसार ने आज तक न देखा और न सुना है। इन अत्यन्त बढ़ी हुई तीव्र बुराइयों का सुधार तब तक नहीं हो सकता जब तक संसार भर की जातियाँ एक होकर किसी एक धर्म में संमिलित न हो जाएँ।"

"ऐ बहा के अनुयायिओं! प्रत्येक ईश्वरीय आज्ञा संसार की रक्षा के लिये सबल और सुदृढ़ आश्रय है।" (Words of Paradise.)

योरप और साधारणतः सारे संसार की वर्तमान अवस्था कई साल पहले लिखी हुई इस वाणी की सचाई का प्रत्यक्ष प्रमाण ईश्वरीय आज्ञा की अवहेलना और नास्तिकता के दौर दौरे के साथ अव्यवस्था और विनाश भी भयंकर मूर्ति धारण किये हुए हैं और जब तक हृदय और लक्ष्य का परिवर्तन जो प्रत्येक सच्चे धर्म का स्वाभाविक और आवश्यक कार्य है, न हो तब तक संसार का सुधार अत्यन्त असम्भव जान पड़ता है।

न्याय

'गुप्तशब्द' (Hidden Words) नाम की छोटी सी पुस्तक में, जिसमें बहाउल्लाह ने पैगंबरों की शिक्षा का सार संक्षेप में वर्णन किया है, व्यक्तिगत जीवन के संबन्ध में यह आदेश लिखा है कि तू उत्तम, पवित्र और प्रकाशमय हृदय का स्वामी बन।" फिर आगे सच्चे जातीय जीवन का मूल सिद्धान्त यह बताया है कि—

"ऐ आत्मा के पुत्र! न्याय मुझको सब से प्रिय है। यदि तू मुझ को चाहता है तो इसकी अवहेलना मत कर। इसके द्वारा तुझे ऐसी

शक्ति प्राप्त होगी कि तू वस्तुओं को दूसरों की आँखों से नहीं बल्कि अपनी आँखों से देखेगा, और उन्हें अपनी बुद्धि से जानेगा किसी दूसरे की बुद्धि से नहीं।"

जातीय जीवन में सब से पहली आवश्यकता इस बात की है कि सब व्यक्ति झूठ से सच का, ग़लत से सही का विवेक करने की योग्यता प्राप्त करें और वस्तुओं के सच्चे तत्त्व को देखने में समर्थ हों।

आध्यात्मिक और जातीय अन्धेपन का सब से बड़ा कारण और जातीय जीवन की उन्नति का बड़े से बड़ा शत्रु स्वार्थपरता है। कुछ ईरानी जरथोस्ती बहाईयों की तख़्ती (लू) में बहाउल्लाह लिखते हैं:—

"ऐ बुद्धि के पुत्रो! पतला सा आँख का परदा आँख को संसार की वस्तुओं और उसमें के तत्व को देखने से रोक रखता है। अब सोचो कि यदि हृदय के नेत्र पर लोभ का भारी परदा पड़ा हो तो उसका क्या परिणाम होगा।"

"ऐ लोगो! लोभ और ईर्षा का अन्धकार आत्मिक प्रकाश को इसी प्रकार छुपाये रहता है जैसे बादल सूर्य की किरणों को ढांप रखता है।"

दीर्घ काल के अनुभव के बाद अब मनुष्यों को पैगंबरों की इस वाणी की सत्यता पर विश्वास होने लगा है कि स्वार्थपरता के विचार और कार्य निःसन्देह जाति के विनाश का कारण बनते हैं, और यदि मनुष्य बुरी मौत मरना नहीं चाहते हो तो प्रत्येक का कर्तव्य है कि पड़ोसियों की वस्तुओं को उसी दृष्टि से देखे जिससे वह अपनी वस्तुओं को देखता है और अपने लाभ या हित को मानव जाति के लाभ या हित के अधीन कर दे। इस प्रकार प्रत्येक का हित निःसन्देह सिद्ध होगा। बहाउल्लाह कहते हैं—

"हे मानव पुत्रो ! यदि तुम ईश्वर की दया चाहते हो तो अपने हित पर ध्यान मत दो और उन बातों पर ध्यान दो जिनसे मानव जाति का भला हो सके यदि तुम न्याय चाहते हो तो तुम औरों के लिये वह पसंद करो जो तुम अपने लिये पसंद करते हो।"—(*Words of Paradise.*)

शासन

बहाउल्लाह की शिक्षा में सच्चे सामाजिक संगठन को दो प्रकार से वर्णन किया गया है। एक तो वह है जो उन तख्तियों (पत्रादि) में जो आपने बादशाहों को भेजी थीं कहा गया है। इस में उस शासन विधान संबन्धी बातें हैं जो बहाउल्लाह के समय में था। दूसरा उस नए संगठन के संबन्ध में है जिसका सञ्चालन स्वयं बहाईयों के अंदर करना है। इसलिए ऐसे लेखों में स्पष्टतया मत-भेद दिखाई पड़ता है। जैसे:—

"एक अद्वैत परमात्मा ने, जो ही हर महिमा के योग्य है, मनुष्यों के हृदयों को ही केवल अपना धन समझा है और सदा ऐसा ही समझता रहेगा, इसके अतिरिक्त और जो कुछ भी है चाहे वह थल संबन्धी हो या जल संबन्धी, धनदौलत हो या सम्मान, उसने वह भूपालो को दे दिया है।" और "इस युग में सब मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह सब से महान नाम (बहाउल्लाह) का आश्रय लें और मनुष्य मात्र में एकता स्थापित करें। परमात्मा के सिवाय न तो कोई कहीं भाग कर जा सकता है और न ही उस के लिए शरण लेने का कोई स्थान है।" (*Gleanings*, pp. 203, 206).

इन दो बातों में प्रकट रूप से जो भेद प्रतीत होता है वह

इस समय जाता रहता है जब हम उस भेद को देखते हैं जो बहाउल्लाह ने "लघु शान्ति" और "महा शान्ति" के बीच रक्खा है। जो तख्तियाँ (पत्रादि) बहाउल्लाह ने भूपालों को लिखीं उनमें आपने उनको आदेश दिया कि वह सब एकत्रित हों और राजनीतिक शान्ति को बनाए रखने, शस्त्रों को कम करने और दीनों के भार और भय को दूर करने का प्रबन्ध करें। परन्तु आप के वचनों से यह स्पष्टतया प्रकट है कि यदि वह समय की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करेंगे तो इसका परिणाम यह होगा कि युद्ध और क्रान्तियां होंगी जिनके कारण पुराना विधान छिन्न भिन्न हो जाएगा। इसलिए एक ओर तो आपने यह फरमाया कि "मनुष्यमात्र को इस समय जिस वस्तु की आवश्यकता है वह यह है कि वह उन लोगों का आज्ञापालन करें जिनके हाथ में अधिकार है" और दूसरी ओर यह कहा है कि "वह लोग जो संसार का नाशमान द्रव्य बटोर कर परमात्मा से कुटिलता पूर्वक विमुख हो गए हैं ऐसे लोगों ने लोक और परलोक दोनों खो दिए हैं। शीघ्र ही परमात्मा अपनी प्रबल शक्ति से उनको उनके द्रव्य से वञ्चित कर देगा और दयालुता उन पर से हटा लेगा......ऐ लोगो! हमने तुम्हारे लिए एक समय नियत किया है। यदि तुम उस नियत समय तक परमात्मा की ओर न लौटे तो वह तुम्हें कड़े रूप पकड़ेगा और सब ओर से तुम पर आपत्तियों की बौछाड़ करेगा......आने वाली क्रान्तियों और उपद्रवों के चिन्ह अब भी दिखाई दे रहे हैं, क्योंकि वर्तमान विधान में भारी त्रुटियाँ है......हमने वचन दिया है कि हम संसार में तुझे विजयी बनाएँगे और अपने धर्म को सब लोगों में उच्च बनाएँगे, चाहे कोई बादशाह भी तेरी सहायता न करें।" (*Gleanings*, pp. 209, 214, 216, 248.)

"जब परमात्मा की यह इच्छा हुई कि संसार में सुख शान्ति और इसके वासियों की उन्नति की आवश्यकताओं को प्रकट करे तो फरमाया: समय आएगा जब एक विश्वव्यापी सभा स्थापन करने की कड़ी आवश्यकता को सब लोग मान लेंगे। संसार के शासक और नरेश इसमें उपस्थित होने पर बाध्य होंगे और इसकी बात चीत में भाग लेकर उन को ऐसे ढंग सोचने पड़ेंगे जिनके द्वारा मनुष्यमात्र में महा शान्ति स्थापन हो। ऐसी शान्ति के लिए आवश्यक है कि बड़े बड़े राज्य संसार के लोगों की सुख शान्ति के निमित्त परस्पर मिल कर रहना निश्चित करेंगे। यदि कोई नरेश दूसरे पर आक्रमण करे तो शेष सब मिल कर उठेंगे और उसको रोकेंगे।"—(*Gleanings.* p. 249.)

ऐसे उपदेश द्वारा बहाउल्लाह ने उन शर्तों को प्रकट किया जिन के अधीन परमात्मा के इस पूर्णावतार के युग में शासन की ज़िम्मेदारियों का पालन करना चाहिये। जहाँ आप ने सर्वदेशी एकता पर ज़ोर दिया वहाँ आपने शासकों को प्रकट रूप से सावधान किया कि युद्ध का होते रहना उनकी शक्ति को नष्ट कर देगा। अब देखिए कि जो कुछ संसार में इस समय हो रहा है वह इस चेतावनी की कैसे पुष्टि करता है। सारी सभ्य जातियों में ऐसे प्रबल आन्दोलन उत्पन्न होगए हैं जो उनकी शक्ति का नाश कर रहे हैं और युद्धकला ने इतनी उन्नति कर ली है कि किसी एक पक्ष को विजय प्राप्त नहीं हो सकती। "अब जो तुमने महा शान्ति को स्वीकार नहीं किया तो इस लघुशान्ति को पकड़ो ताकि शायद इससे तुम्हारी और तुम्हारे आश्रितों की दशा सुधर जाए ......परमात्मा ने जो महान् उपाय और प्रबल साधन संसार का दुःख निवारण करने के लिए बताया है वह यह है कि इसके

तमाम लोग एक विश्वव्यापी धर्म को ग्रहण कर लें। यह कदापि प्राप्त नहीं हो सकता सिवाय एक शक्तिशाली चतुर और ज्ञानवान् वैद्य के।"—(*Gleanings*, pp. 254, 255.)

लघुशान्ति का तात्पर्य अन्तर्राष्ट्रीय एकता है और महाशान्ति का तात्पर्य आत्मिक, राजनीतिक, आर्थिक व कारोबारी एकता है।

"शीघ्र ही वर्तमान विधान लपेट लिया जाएगा और इसके स्थान में एक नया विधान फैला दिया जाएगा।" (Gleanings, p. 7.)

प्राचीन काल में राज्य का कर्तव्य यह होता था कि वह सांसारिक और बाह्य बातों को देखे किन्तु, इस युग में राज्य के काम के लिये इन बातों की आवश्यकता है कि नेतृत्व, आत्मत्याग, परोपकार और आत्मिक ज्ञान के गुणों वाला हो और यह बातें केवल उन लोगों में पाई जाती हैं जिनका चित्त परमात्मा की ओर लगा हुआ हो।

राजनैतिक स्वतन्त्रता

बहाउल्लाह ने यद्यपि स्थानीय, जातीय, और अन्तर्जातीय शासनों का पूर्णतया प्रजातन्त्रात्मक या प्रतिनिधी-सत्तात्मक होना सर्वोत्तम परमोपयुक्त बताया है पर उन्होंने कहा है कि जब तक मानव समाज व्यक्तिगत और जातीय दोनों प्रकार के विकास की बहुत ऊँची सीढ़ी पर न पहुँच जाय तब तक ऐसे शासन का स्थापित होना असम्भव है। ऐसे लोगों को जो अशिक्षित हैं, स्वार्थ-परायण हैं, शासन के अनुभव से सर्वथा शून्य हैं, उन्हें एकाएक शासनभार सौंप देना विनाश का कारण होगा। जो आदमी स्वतन्त्रता को बुद्धि पूर्वक व्यवहार में लाने की योग्यता नहीं रखते, उनके लिये स्वतन्त्रता जैसी भयानक और हानिकर

वस्तु दूसरी कोई नहीं है। 'अक़दस' में बहाउल्लाह ने लिखा है :—

"हम देखते हैं कि कुछ लोग स्वतन्त्रता के इच्छुक हैं और उस पर गौरव समझते हैं, परन्तु यह स्पष्ट अज्ञान की दशा में हैं। ऐसे लोगों को स्वतन्त्रता देने से ऐसी दुर्व्यवस्था फैलती है कि जिससे उत्पन्न हुई आग बुझाई नही जा सकती। इस प्रकार तुमको सर्वज्ञ और सर्वदर्शी चेतावनी देता है। तुम्हें जान लेना चाहिये कि पूर्ण स्वतन्त्रता के अवतार तो पशु हैं। जो वस्तु मनुष्य लिये योग्य है कि वह उन नियमों के अधीन रहे, जो उसे अपने अज्ञान और धूर्त लोगों के धोखे से बचाएंगे। स्वतन्त्रता मनुष्य को शिष्टाचार का उल्लङ्घन कराती है और प्रभाव की पद्वी से रहित कर देती है और इसे दुराचारी बना देती है। मनुष्यों को भेड़ों का खेड़ समझो। उनके लिये कोई गडरिया अवश्य होना चाहिये। निश्चय जानो कि यह असन्दिग्ध सत्य है। हम कई अवस्थाओं में स्वतन्त्रता की अनुमति देते हैं और कई अवस्थाओं में नहीं। वास्तव में हम हरचीज़ से ज्ञात है कह दें : स्वतन्त्रता मेरी आज्ञाओं के पालन में है। यदि लोग उस आदेश पर चलेंगे जो हमने प्रकाशमय अन्तरिक्ष से उनके लिये प्रकट किया है तो वह निश्चय ही पूर्ण स्वतन्त्रता को प्राप्त करेंगे। केवल वही सुखी है जिसने प्रभु की सर्वोपरी इच्छा का हेतु समझा है जिससे उसने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया। कह दो कि तुम्हारे लिये ईश्वराराधन ही हितकर स्वतन्त्रता है और जिसने उसका स्वाद पाया है वह इस स्वाद के बदले में आकाश और पृथ्वी का राज्य लेना भी पसन्द न करेगा।"

गिरी हुई जातियों या वंशों को उन्नत करने के लिये ईश्वरीय शिक्षा बहुत लाभकारी औषध है। जब लोग और राजनीतिज्ञ इन शिक्षाओं के बन्धनों से मुक्त हो जायेंगी।

शासकवर्ग और प्रजागण

बहाउल्लाह अत्याचार और कठोरता का बड़े ज़ोर से निषेध करते हैं। गुप्त शब्द (Hidden Words) में उन्होंने लिखा है:—

"ऐ अत्याचार करनेवालो ! अत्याचारों से अपना हाथ खींच लो क्योंकि मैंने सौगन्द ली है कि मैं अन्याय को कभी क्षमा न करूँगा। यह मेरी प्रतिज्ञा है जो मैंने सुरक्षित तख्ती में अटल आज्ञा रूप से लिखी है और इस पर अपने सम्मान की मोहर लगा दी है।"

वह लोग जिनके हाथ में नियम बनाने का काम दिया गया है, उन्हें चाहिये कि:—

"मन्त्रणा की रस्सी को दृढ़ता से पकड़ें और फिर जो बातें मनुष्यों की रक्षा, समृद्धि, कल्याण और शान्ति के साधन हों उन्हें काम में लायें, क्योंकि यह काम यदि किसी दूसरे प्रकार से किया जायेगा तो झगड़े अशान्ति का कारण होगा।" (Tablet of the World.)

दूसरी ओर, लोगों को भी चाहिये कि वह नियमों के मानने वाले और राजभक्त बने रहें। उनको चाहिये कि वह जातियों की दशा का सुधार करने के लिये शिक्षा पद्धतियों और दूसरी शुभ आयोजनाओं के प्रचार में शासकों का हाथ बँटायें।

बहाउल्लाह कहते हैं—

"प्रत्येक देश में जहाँ इस जाति के लोग रहते हों, उन्हें चाहिये कि उस देश की सरकार से भक्ति-भाव, सत्यता और आज्ञाकारिता का व्यवहार करें।" (Glad Tidings.)

"ऐ ईश्वर के लोगो ! साधुता और विश्वसनीयता से अपने आपको भूषित करो, फिर सदाचार और सत्कार्यों से अपने स्वामी की सहायता

करो। हमने तुम को अपनी पुस्तकों, पत्रों, लेखों और तख्तियों (लूओं) के द्वारा विद्रोह और लड़ाई झगड़ों से दूर रहने को कहा है और उससे हमारा अभिप्राय तुम्हारी उन्नति और अभिवृद्धि के अतिरिक्त और कुछ नहीं।" (Tablet of Ishraqat.)

तैनाती और उन्नति

किसी आदमी को किसी पद पर तैनात करते समय केवल इस बात का ध्यान होना चाहिये कि अमुक आदमी में उस पद के कार्यभार को सँभालने की योग्यता है या नहीं। इस सर्वोच्च विचार के अतिरिक्त बाकी सब अर्थात् बड़प्पन, जातीय या आर्थिक स्थिति, कुलीनता, अपनी मित्रता आदि की उपेक्षा करनी चाहिये। "इश्राकात" में बहाउल्लाह कहते हैं—

"पाँचवाँ इश्राक यह है कि सरकार या राजा को अपनी प्रजा की अवस्था का ज्ञान हो और इसे अधिकार देने में योग्यता और गुणों का ही ध्यान रखना चाहिये। प्रत्येक शासक और बड़े अधिकारी को इस बात पर नियम से आरूढ़ होना चाहिये, ताकि विश्वसनीय पुरुषों के योग्य पदों पर विश्वासघाती को आरूढ़ होने का संयोग न मिले और ना ही रक्षकों का पद भक्षक ग्रहण कर सकें।"

साधारण विचार से ही यह बात प्रकट हो जायगी कि जब यह सिद्धान्त सर्वसाधारण में स्वीकृत होंगे और इन पर अमल किया जायेगा तो हमारे जातीय जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा। जब प्रत्येक व्यक्ति को वह पद दिया जायगा जिसके लिये उसकी बुद्धि और विद्या उसे विशेष रूप से योग्य ठहराती हैं तो वह अपने काम को मन लगाकर करेगा और उस काम में निष्णात हो जायगा, जिससे उसको और संसार को अपरिमित लाभ होगा।

आर्थिक समस्याएँ

बहाई शिक्षाएँ धनी और निर्धन के बीच आर्थिक संबन्ध को सुधारने की आवश्यकता पर बड़ा जोर देती हैं। अब्दुल-बहा कहते हैं--

"लोगों की अवस्थाओं का प्रबन्ध ऐसा होना चाहिये कि दरिद्रता का लोप ही हो जाये, प्रत्येक व्यक्ति जहाँ तक सम्भव हो सके अपनी स्थिति और अधिकार के अनुसार सुख और चैन से जीवन बिता सके। हम संसार में देखते हैं कि एक ओर तो वह आदमी हैं जो धन से भरपूर हैं और दूसरी ओर वह हैं जो भूखे मर रहे हैं, एक वह हैं जो बड़े-बड़े महलों में रहते हैं और दूसरे वह हैं जिन्हें सिर छुपाने के लिए भी स्थान प्राप्त नहीं। व्यवहार की यह दशा सर्वथा अनुचित है और इस का अवश्य इलाज होना चाहिये, परन्तु इलाज में बड़ी सावधानता होनी चाहिये। मनुष्यों में पूर्ण समता स्थापित कर देने से इसका सुधार नहीं हो सकता। ऐसी समता को मनोमोहक या भ्रममात्र है और सर्वथा अव्यवहार्य है। ऐसी समता यदि स्थापित भी कर ली जाय तो वह देर तक टिकी नहीं रह सकती, और यदि उसकी सत्ता सम्भव ही हो गई तो सारे संसार की व्यवस्था नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी। मानव संसार में नियमों की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये। ईश्वर ने मानव सृष्टि में उनके लिये यही निर्णय किया है। एक बड़ी सेना के समान, मानव जाति को सेना पति, कप्तान, अन्य छोटे अधिकारी और सिपाही और उनके अधिकारों का नियन्त्रण आदि सभी बातों की आवश्यकता है। सुप्रबन्ध स्थापित करने के लिये श्रेणियों की कल्पना बहुत आवश्यक है। सेना में सबके सब जरनैल ही नहीं होते और न सबके सब सिपाही ही होते हैं जिनमें कोई बड़ा अधिकारी न हो।"

"इसमें सन्देह नहीं कि कई अनन्त सम्पत्ति के स्वामी हैं और दूसरे दारिद्रय की शोचनीय अमस्था में पड़े हैं, इन अवस्थाओं का नियमन और सुधार अवश्य होना चाहिये। सम्पत्ति और दारिद्रय की कोई सीमा निर्धारित होनी चाहिये। दोनों में अति अच्छी नहीं। जब हम दारिद्रय को भूखों मरने तक की दशा में पहुँचा देखते हैं तो यह बात स्पष्ट प्रतीत हो जाती है कि अत्याचार कहीं न कहीं विद्यमान है। मनुष्यों को चाहिये कि वह इन बातों पर अपने आप को उभारें और ऐसी अवस्थाओं को बदल डालने में विलंब न करें जिनसे लोगों की एक बड़ी संख्या दारिद्रय के कष्ट में पिसती चली जा रही है।"

"धनियों का कर्तव्य है कि वह अपनी अपरिमित धन राशि में से निर्धनों को कुछ दें, उन्हें चाहिये कि वह अपने हृदयों को कोमल बनाएं, उनमें करुणापूर्ण भाव भरें और उन दुखियारों पर जो जीवनोपयोगी सामग्री के न मिलने से भयंकर कष्ट भोग कर रहे हैं, ध्यान दें।"

"अवश्य कोई विशेष नियम बनाने चाहियें जो इस दारिद्रय और सम्पत्ति की पराकाष्ठा को संयत करें। प्रत्येक देश की सरकार को ईश्वरीय नियम प्रचलित करने चाहियें जो सबके साथ समान न्याय करें। जब तक यह न होगा ईश्वरीय नियमों का पालन न होगा।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

प्रजा का धन

अब्दुल-बहा की सम्मति है कि जहां तक संभव हो सके प्रत्येक नगर, ग्राम या ज़िले के अर्थ संबन्धी विषयों का प्रबन्ध उसके अपने हाथ में हो और वह आय का कुछ भाग केन्द्रीय सरकार को दिया करे। धनागम का प्रधान मार्ग आमदनी पर समुचित कर होना चाहिये। यदि किसी मनुष्य की आमदनी

उसके घरेलू खर्च से अधिक नहीं तो उसपर कर नहीं लगाना चाहिये, परन्तु जब आमदनी घर खर्च से अधिक हो तो उस पर कर अवश्य होने चाहियें, और इस घर खर्च से अधिक आय की ज्यों ज्यों वृद्धि होती जाय त्यों त्यों कर भी बढ़ता जाना चाहिये।

दूसरे ओर यदि कोई आदमी बीमारी, खेती खराब हो जाने या किसी दूसरे कारण से, जिसकी ज़िम्मेवारी उस पर न आती हो, वर्षभर के लिये अपने घरेलू खर्च चलाने के योग्य पर्याप्त धन कमाने में असमर्थ रहे तो उसको अपना और परिवार का निर्वाह करने में धन की जितनी कमी आती हो उतना धन प्रजा के धन (public funds) में से दे देना चाहिये।

आय के द्वार और भी कई होंगे, जैसे लावारिस जायदाद, खानें, पृथ्वी में दबा हुआ धन और इच्छापूर्वक दिये हुए चंदे। खर्च करने की मदें बूढ़ों की, अनाथों कीं, स्कूलों की, अन्धे और बहरों की सहायता तथा प्रजा के स्वास्थ्य की रक्षा होंगी ! इस प्रकार सबके कल्याण और सुख का प्रबन्ध किया जायगा।

इच्छा-पूर्वक हिस्सा लेना

केन्द्रीय प्रबन्धकारिणी सभा को स्थायी शान्ति स्थापित करने के लिये १६१६ में लिखे एक पत्र में अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक शिक्षा यह है कि प्रत्येक मनुष्य दूसरों को इच्छापूर्वक अपने धन का हिस्सेदार बनाये। यह इच्छा पूर्वक हिस्सेदारी कानून के बल से स्थापित की गई समता से कहीं बढ़कर है और इसमें यह बात भी शामिल है कि आदमी अपने आप को दूसरों से अच्छा न जाने, बल्कि अपने जीवन और सम्पत्ति का दूसरों के निमित्त त्याग करे। यह बात बल प्रयोग से न चलाई जाए

कि एक कानून बना कर लोगों को उस पर चलने के लिए बाध्य किया जाये। प्रत्युत ऐसा होना चाहिये कि लोग स्वयं अपना जीवन और धन प्रसन्नता से दूसरों पर न्योछावर करें, और गरीबों के लिये अपनी इच्छा से खर्च करें जैसे ईरान में बहाई लोग करते हैं।"

सबको काम करना चाहिये

आर्थिक प्रश्न के संबन्ध में बहाउल्लाह का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आदेश है कि सब मनुष्य किसी न किसी सार्थक काम में अवश्य लगे रहें। जातीय छत्ते में कोई भी निकम्मा न होना चाहिये, जाति में कोई भी स्वस्थ आदमी विना कमाये, खाने वाला न होना चाहिये। उन्होंने कहा है:—

"तुम में से प्रत्येक का कर्तव्य है कि किसी कला या व्यवसाय को सीखे। इस प्रकार के धन्धे में तुम्हारी प्रवृत्ति को हमने सत्य ईश्वर की प्रार्थना के समान माना है। लोगो! ईश्वर की दया और प्रसादों पर ध्यान दो, फिर सायंप्रात: उसका धन्यवाद करो।"

"अपने समय को आलस्य और व्यर्थ कामों में नष्ट न करो और ऐसे काम में अपने आप को लगाये रखो जिससे तुमको और दूसरों को लाभ पहुँचे। इस तख्ती (पत्र) में जिसके आकाश मण्डल से सत्य का सूर्य और ईश्वरीय वाणी प्रकट हुई है, ऐसी ही आज्ञा दी गई है। ईश्वर के आगे वह आदमी अत्यन्त घृणा का पात्र है जो निकम्मा बैठा मांगता रहता है। सो तुम ईश्वर पर भरोसा रख कर, जो कारणों का भी कारण है, व्यवसाय की रस्सी को पकड़े रहो।" (Glad Tidings.)

आजकल व्यापार के संसार में दूसरे लोगों के उद्योग या कारोबार को बन्द करने और निष्फल बनाने में तथा व्यर्थ के झगड़े बखेड़े और संघर्ष उत्पन्न करने में लोगों की शक्ति कितनी

अधिक खर्च हो रही है। और ऐसी ही दूसरे मार्गों में, जो उनसे भी बढ़कर हानिकर हैं, कितनी अधिक शक्ति लग रही है! यदि सबको काम मिल जाय और सब काम करें. चाहे वह काम मस्तिष्क का हो या हाथ का, पर वह मानव जाति को लाभदायक हो, जैसा कि बहाउल्लाह आज्ञा देते हैं, तब स्वास्थ्य, सुख और उत्तम जीवन के लिये जो भी आवश्य वस्तुएँ हैं, सबको आवश्यकतानुसार काफ़ी मिला करेंगी। फिर चिन्ता, उपवास, धनाभाव या ग़रीबी, व्यापारिक दासत्व, स्वास्थ्य बिनाशक परिश्रम का नाम तक न रहेगा।

धन-संबन्धी नियम

बहाई शिक्षाओं के अनुसार धन का उचित रीति से कमाना और उचित रीति से उपयोग करना यह दोनों बातें सम्मान और प्रशंसा के योग्य हैं। सेवाओं का पूरा पूरा पारितोषिक दिया जाना चाहिये। 'तराज़ात' की तख़्ती (पत्र) में बहाउल्लाह कहते हैं:—

"बहाई लोगों को चाहिये कि वह किसी को उचित पारितोषिक या वेतन देने से इनकार न करें और बुद्धिमान लोगों का आदर करें। सबसे न्यायसंगत बातचीत करें और लाभदायक वस्तुओं की कदर करें।"

ब्याज के बारे में बहाउल्लाह ने 'इश्राक़ात' की तख़्ती (पत्र) में लिखा है:—

"बहुत से लोगों को इस बात की आवश्यकता प्रतीत होती है, क्योंकि यदि ब्याज लेने की आज्ञा न हो तो बहुत से कारोबार रुक जायें। ऐसे आदमी, जो 'क़र्ज़े हसन'—'उत्तम ऋण' के सिद्धान्त के

अनुसार लोगों को रुपया दें (अर्थात् देनेवाला बिना व्याज दूसरे को आवश्यकता पर धन दे और लेने वाला समय पर प्रसन्नता से उसे लौटा दे) बहुत कम मिलते हैं। इसलिए अपने सेवकों पर कृपा करने के अभिप्राय से हमने उन्हें इतर व्यापारों के साथ जो इस समय संसार में प्रचलित हैं, रुपये पर भी लाभ उठाने का व्यवसाय नियत कर दिया है। अर्थात् रुपये पर व्याज लेना नियम-संगत, अनुज्ञात और पवित्र कहा गया है,परन्तु इस आज्ञा का पालन न्याय औचित्य से होना चाहिये। ईश्वरीय लेखनी ने इसकी सीमा निर्धारित करना उचित नहीं समझा और यह ईश्वरीय चातुरी सेवकों की सुविधा के लिये है। हम ईश्वरीय मित्रों को न्याय और औचित्य से व्यवहार करने की सम्मति देते हैं, ताकि सबों का स्नेह और दया एक दूसरे के प्रति प्रकट हो।"

"इन बातों का व्यवहार में लाना न्याय सभा के अधीन रखा गया है, जिससे वह समय की आवश्यकतानुसार बुद्धिमत्ता से इनको व्यवहार में लाये।"

व्यापारिक दासत्व की निवृत्ति

'अक़दस' में दासता का सर्वथा निषेध किया गया है, और अब्दुल-बहा ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि केवल मनुष्यों की दासता ही नहीं बल्कि व्यापार की दासता भी ईश्वरीय नियमों के प्रतिकूल है। सन् १९१२ में जब यह अमेरिका गये हुए थे तब इन्होंने अमेरिका निवासियों से कहा था—

"सन् १८६० और १८६५ के मध्यवर्ती समय में आप लोगों ने एक अचंभे की बात की, वह यह कि आपने मनुष्यों की दासता की प्रथा को बन्द कर दिया। पर अब उससे भी अधिक अचंभे की

एक बात करनी होगी, वह यह कि आप लोग व्यापार की दासता को भी अवश्य बन्द कर दें।"

"आर्थिक प्रश्नों का सुलझना अमीर और गरीबों के परस्पर विरोध या लड़ाई झगड़ों से सिद्ध न होगा, बल्कि दोनों की पारस्परिक हितैषिता से सिद्ध होगा। तब अवस्था की सच्ची और स्थायी समता प्राप्त होगी।"

"बहाई लोग न तो बल-प्रयोग, अत्याचार और अनुचित व्यवहार ही करते हैं, न वह विद्रोह-पूर्ण कामनाएँ रखते और न वर्तमान सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकारी उत्तेजना फैला कर उपद्रव खड़ा करते हैं।"

"समय आ रहा है कि लोग दूसरों के गाढ़े परिश्रम से धन संचय न कर सकेंगे। धनी लोग इच्छापूर्वक अपना धन बाँटा करेंगे। वह धीरे-धीरे स्वभाव से ही अपने मन की प्रेरणा से इस काम में प्रवृत्त होंगे। युद्ध या मार काट से इसकी प्राप्ति कभी न होगी।" (Star of the West, vol. vii, No. 15, p. 147).

आपस में प्रेमपूर्वक मन्त्रणा और सहयोग करने से, न्याय-पूर्वक एक दूसरे के काम में हिस्सा लेने और मुनाफ़ा बाँटने से धनी और श्रमजीवियों के स्वार्थ की उत्तम रक्षा हो सकेगी। हड़तालें और द्वारावरोध आदि कठोर अस्त्रों का प्रयोग न केवल उन व्यवसायों पर ही तत्काल बुरा प्रभाव डालेगा, बल्कि इससे सारी जाति को हानि पहुँचेगी। इसलिए सभी सरकारों का यह कर्तव्य है कि वह ऐसे उपाय ढूंढें जिनसे झगड़े निपटाने के लिये इस प्रकार के क्रूर उपायों का अवलंबन न करना पड़े। सन् १९१२ में न्यू हैंपशायर के डबलिन नगर में अब्दुल-बहा ने कहा था—

"अब मैं तुम्हें ईश्वरीय नियमों के संबन्ध में कुछ बताता हूँ।

ईश्वरीय नियम के अनुसार काम करने वालों को उनके दैनिक वेतन पर ही न रहने दिया जाय, बल्कि सब कामों में सहभागी बनाना चाहिये। जातीयता का प्रश्न बड़ा जटिल है। यह मज़दूरी पाने के लिये हड़तालें करने से सिद्ध न होगा। संसार की सब सरकारों को मिलकर एक परिषद् नियत करनी चाहिये। इस परिषद् के मेंबर पार्लियामेंटों और जातियों से भद्रपुरुष चुने जाने चाहियें। इन सदस्यों को बुद्धि और शक्ति से ऐसे उपाय ढूंढ निकालने चाहियें जिनसे न तो धनियों (सरमायादारों) को ही हानि सहनी पड़े और न श्रमजीवी लोग ही पराया मुँह ताकते रहें। वह बड़ी सावधानी से इन नियमों को बनायें और फिर सर्व-साधारण में उनकी घोषणा करदें कि काम करने वालों और सरमायादारों के अधिकारों की पूर्ण रक्षा की जायेगी। जब दोनों पक्षों के समझौते से ऐसे नियम प्रचलित हो जायें तो फिर यदि कहीं हड़ताल हो जाय तो सब सरकारें मिलकर उसका प्रतिरोध करें। यदि ऐसा न हुआ तो वर्तमान अवस्था विशेष कर योरोप में भयङ्कर विनाश का दृश्य दिखाएगी। भयानक घटनाएँ घटेंगी।"

"योरप के सर्वव्यापी संग्राम के अन्य कारणों के साथ यह प्रश्न भी एक बड़ा कारण होगा। सम्पत्ति, खानों और फैक्टरियों के मालिकों को चाहिए कि वह अपने कर्मचारियों को मज़दूरी देने के अतिरिक्त उन्हें अपनी आय के हिस्सेदार बनायें, अपने मुनाफे में से एक अच्छा भाग उन्हें दें, जिस से वह अपनी मज़दूरी के अतिरिक्त कारखाने की आय में से कुछ भाग प्राप्त कर सकें और इस प्रकार अपने काम को जी लगा कर किया करें।" (Star of the West, vol. viii, No. 1, p. 7.)

वसीयत और वपौती

बहाउल्लाह कहते हैं कि प्रत्येक पुरुष जीवनकाल में अपनी सम्पत्ति को जिस तरह चाहे खर्च करने के लिये स्वतन्त्र है और प्रत्येक का यह कर्तव्य समझा गया है कि वह एक निर्वाणपत्र (वसीयत) लिखे और उसमें बताये कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी सम्पत्ति को किस प्रकार उपयोग में लाया जाये। यदि कोई आदमी बिना वसीयत लिखे ही मर जाये तो उसकी सम्पत्ति के मूल्य का अनुमान लगाकर नियत भागों में सात प्रकार के अधिकारियों में, (अर्थात् सन्तान, पत्नी या पति, माता, पिता, भाई, बहन, और अध्यापक में) बाँट देना चाहिये। इन सातों में प्रत्येक का अधिकार क्रम से भाग नियत किया गया है। यदि इनमें से एक या अधिक अधिकारी न हों तो उसका या उनका भाग प्रजा के कोष में डाल दिया जायगा और वह गरीबों, अनाथों और विधवाओं की सहायता में तथा अन्य लोकोपयोगी कामों में खर्च किया जायेगा। यदि मृत व्यक्ति का उत्तराधिकारी कोई भी न हो तो उसकी सारी सम्पत्ति प्रजा का धन समझा जायेगा।

बहाई नियमों में कोई भी नियम ऐसा नहीं जो किसी को अपनी सम्पत्ति किसी एक व्यक्ति के नाम, जिसे वह चाहे, लगा जाने से रोकता हो, परन्तु बहाई लोग स्वभावतः अपना निर्वाण-पत्र उस स्वरूप का लिखा करेंगे जो स्वरूप बहाउल्लाह ने लावारिस जायदाद के संबन्ध में नियत किया है और जिसके द्वारा इस प्रकार की सम्पत्ति का विभाग बहुत से अधिकारियों में हो सकता है।

पुरुषों और स्त्रियों में समता

जातीय नियमों में एक नियम, जिसे बहाउल्लाह ने बड़े महत्त्व का समझा है, यह है कि स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के समान ही होने चाहियें। जो अधिकार, जो रियायतें, जो शिक्षा और जो अवसर पुरुषों को मिलते हैं स्त्रियों को भी वैसे ही मिलने चाहियें।

वह बड़ा साधन, जिसके द्वारा वह स्त्रियों की स्वतन्त्रता को व्यवहार में लाना चाहते हैं, सर्वसाधारण में शिक्षा है। कन्याओं को बालकों के समान ही उच्च शिक्षा देनी चाहिये। वास्तव में कन्याओं की शिक्षा और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि समय पर यही मातायें बनेंगी और भावी सन्तान की प्रारम्भिक शिक्षा इन्हीं के हाथ में होगी। बच्चे हरी और कोमल शाखाओं के समान होते हैं, यदि इनका आरम्भिक निरीक्षण वा शिक्षा ठीक रीति से हो तो यह सीधे बढ़ते हैं और यदि आरम्भिक शिक्षा अच्छी नहीं तो यह टेढ़े मेढ़े हो जाते हैं और जीवनभर उन पर आरम्भिक शिक्षा का प्रभाव रहता है। इसलिये यह कितनी महत्त्व की बात है कि लड़कियों की शिक्षा उत्तम और बुद्धिपूर्ण होनी चाहिये।

पश्चिम की यात्राओं के समय अब्दुल-बहा को कई बार इस विषय पर बहाई शिक्षाओं की व्याख्या करने का समय मिला था। जनवरी १९१३ को लंदन में 'स्त्री स्वतन्त्रता समाज' की बैठक में इन्होंने कहा था:—

"मानव समाज एक पक्षी के समान है, जिसके दो पक्ष या पर हैं,

एक पुरुष और दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पत्त सुदृढ़ न होंगे और सम्मिलित प्रयत्न से हिलाये न जाएंगे, पत्ती आकाश की ओर उड़ नहीं सकता। इस समय के प्रवाह के अनुसार स्त्रियों के लिये आगे बढ़ना और जीवन के प्रत्येक भाग में पुरुषों के समान होकर काम करना आवश्यक है। उन्हें पुरुषों के समान बनना चाहिए और पुरुषों के समान ही उन्हें अधिकार मिलने चाहिएँ। यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है और बहाउल्लाह के मूल सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त है।"

"कई वैज्ञानिकों ने यह कहा है कि पुरुष का मस्तिष्क स्त्री के मस्तिष्क से भारी होता है और इसी आधार पर यह लोग पुरुषों को स्त्रियों से उत्तम कहा करते हैं। पर जब हम परीक्षा करते हैं तो देखते हैं कि बहुत से ऐसे भी पुरुष हैं जिनके सिर छोटे हैं, उनके मस्तिष्क भी अवश्य इसी लिये छोटे होंगे, पर उनकी बुद्धि तीव्र और समझने की शक्ति बलवती होती है। इसी प्रकार बहुत से पुरुष बड़े बड़े सिरों वाले हैं, जिनके मस्तिष्क अवश्य भारी होंगे, परन्तु वह मूर्ख और बेसमझ हैं। इसलिए यह सिद्ध हुआ कि मस्तिष्क का परिणाम बुद्धि की अधिकता का कारण नहीं।"

"जब पुरुष अपनी श्रेष्ठता के संबन्ध में यह प्रमाण उपस्थित करते हैं कि स्त्रियों ने ऐसे बड़े बड़े काम नहीं किये जो पुरुषों ने किये थे तो वह एक सारहीन युक्ति देते हैं जो इतिहास के सर्वथा विरुद्ध है। यदि इन्हें इतिहास का अच्छा ज्ञान होता तो यह लोग जान लेते कि अतीत-काल में भी बहुत सी स्त्रियाँ हुई हैं जिन्होंने बहुत बड़े बड़े काम किये और वर्तमान समय में भी बहुत सी स्त्रियाँ हैं जो बड़े बड़े काम कर रही हैं।"

इस समय अब्दुल-बहा ने ज़ेनोबिया और अतीत काल की

दूसरी स्त्रियों के बड़े बड़े कामों का वर्णन कर सुनाया और अन्त में मरियम मैगडेलिन का, जो अपने विश्वास पर उस समय भी दृढ़ रही जब कि दूसरे लोग हिल गये थे चरित्र वर्णन करते हुए कहा—

"हमारे समय की स्त्रियों में क़ुरातुल ऐन है, जो एक मुसलमान पुरोहित (मुल्ला) की पुत्री थी। बाब के आविर्भाव के समय इसने ऐसा उत्साह और शक्ति दिखाई कि जो कोई भी इसका भाषण सुनता अत्यन्त विस्मित हो जाता। अचिन्त्य काल से ईरानियों की प्रथा रहते भी इसने परदा करना छोड़ दिया और यद्यपि पुरुषों के साथ संभाषण रीतिविरुद्ध समझा जाता था, यह वीर ललना बड़े से बड़े विद्वानों के साथ वादविवाद करती और प्रत्येक सभा में उन्हें नीचा दिखाती थी। ईरान की सरकार ने इसको कैद कर लिया और गलियों में इस पर पत्थर फेंके गये। नास्तिक (काफिर) कह कर इसे देश से निकाल दिया गया, और प्राणदण्ड की धमकी दी गई, परन्तु इसने अपनी बहनों को स्वतन्त्रता दिलाने का जो पक्का निश्चय कर लिया था उससे कभी न हिली। इसने बड़ी वीरता से अत्याचार और यातनाएँ सहीं। कारागार में रहते भी इसने कइयों को अपने विचारों का साथी बनाया। एक ईरानी मन्त्री को, जिसके घर में यह बंदी थी, इसने कहा 'जितना शीघ्र चाहो तुम मुझे मार सकते हो पर तुम स्त्रियों की स्वतन्त्रता की धारा को नहीं रोक सकते।' अन्त में इसके दुख-भरे, जीवन का अवसान समीप आगया, परन्तु मरने के दिन इसने सर्वोत्तम वस्त्र पहने, जैसे किसी बरात की शोभा बढ़ाने जारही हो। इसने ऐसी वीरता और उत्साह से अपने जीवन का उत्सर्ग किया कि देखनेवाले विस्मय और आश्चर्य से काँप उठे। सचमुच यह महिला बड़ी बहादुर थी। बहाई संप्रदाय में आज भी कई ईरानी स्त्रियाँ हैं जो उत्साह की धनी और

कविता की तीव्र प्रतिभा से अलंकृत हैं। वह बहुत मधुर और प्रगल्भ भाषण करने वाली हैं और बड़ी-बड़ी सभाओं में जाकर भाषण करती हैं।"

"स्त्रियों को उन्नति के पथ पर अग्रसर होना चाहिये। विज्ञान, साहित्य और इतिहास में उन्हें निष्णात होना चाहिये, जिस से मानव समाज पूर्णता को प्राप्त हो। शीघ्र ही वह अपना अधिकार प्राप्त करेंगी। पुरुष देखेंगे कि स्त्रियाँ बड़ी उमंग और बड़े रोब के साथ जातीय और नैतिक जीवन को उन्नत कर रही हैं, युद्धों को रोक रही हैं और कष्ट भोग और समान अवसर प्राप्त करने के लिये उत्सुक हो रही हैं। मैं तुम्हें जीवन के प्रत्येक भाग में उन्नत होती देखना चाहता हूँ, तब तुम्हारे मस्तक शाश्वत संमान के मुकुट से चमक उठेंगे।"

स्त्रियाँ और नया युग

जब स्त्रियों की अभिलाषाओं पर उचित ध्यान दिया जायेगा और जातीय कामों के प्रबन्ध में स्त्रियों को अपनी इच्छा प्रकट करने की स्वतन्त्रता मिल जायेगी, तो हमें आशा है, कि उन विषयों में जहाँ मनुष्यों के शासन के समय अत्यन्त शोचनीय अवहेलना से काम लिया जाता था, अधिक उन्नति होगी, अर्थात् स्वास्थ्य, सन्तोष, शान्ति और व्यक्तिगत जीवन का मूल्य समझने की ओर अधिक प्रवृत्ति होगी। इन विषयों की उन्नति का परिणाम अत्यन्त लाभदायक और हितकर होगा। अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"पिछले समय में संसार का शासन बल प्रयोग से होता था और मनुष्य अपने दैहिक और मानसिक दोनों प्रकार के गुणों की उन्नति और प्रबलता के कारण स्त्रियों को अपने अधीन रखता रहा। पर अब दाँव पलट रहा है। बल प्रयोग के दिन बीतते जा रहे हैं और मानसिक

स्फूर्ति, निपुणता तथा प्रेम और सेवा के आत्मिक गुण, जिनमें स्त्रियों को अधिक नैपुण्य प्राप्त है, विजय प्राप्त कर रहे हैं। इसलिये नये युग में मानव हस्तक्षेप कम होगा और स्त्रियों के व्यवहार की अभिवृद्धि होगी, या यों कहें कि नया युग वह युग होगा जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों सभ्यता के तराजू में एक समान तोले जायेंगे।"

बलप्रयोग के उपायों का निषेध

बहाउल्लाह अपने अनुयायिओं को और बातों में जिस प्रकार बल प्रयोग करने से रोकते हैं उसी प्रकार स्त्रियों की स्वतन्त्रता में बाधा डालने से उन्हें मना करते हैं। ईरान, मिस्र और सीरिया की स्त्रियों ने जातीय जीवन के बहाई तरीकों का उत्तम निदर्शन दिखाया है। इन देशों में मुसलमान स्त्रियाँ जब घर से बाहर जाती हैं तो अपने मुँहों पर बुरका डालकर जाती हैं। बाब ने संकेत किया था कि स्त्रियाँ नये युग में इस अनुचित बन्धन से मुक्त कर दी जायेंगी, परन्तु बहाउल्लाह ने अपने भक्तों को आज्ञा दी कि यदि कोई सदाचार संबन्धी प्रश्न बीच में उपस्थित न हो, तो वह नियत नियमों या रीतियों का अनुसरण करते रहें जब तक कि लोग समझदार न हो जायें, अन्यथा वह अपने पड़ोसियों में घृणा के पात्र बनेंगे और व्यर्थ के वैर विरोध अपने ऊपर लेंगे। इसलिये बहाई स्त्रियाँ, यद्यपि अच्छी तरह जानती हैं कि पर्दा की प्रथा समझदार लोगों के लिये कष्टकर और अनावश्यक है, चुपचाप इस कष्ट को सहती जारही हैं, जिससे कि वह पर्दा की प्रथा को बंद करके अन्धविश्वासी लोगों की घृणा और विरोध का कारण न बनें। प्राचीन प्रथा के पालन का कारण भय नहीं, बल्कि शिक्षा की शक्ति और सच्चे धर्म के

जीवनदान और परिवर्तनकारी प्रभाव पर अटल श्रद्धा है। इन देशों में रहनेवाले बहाई लोग अपने लड़कों और विशेषकर लड़कियों को उत्तम शिक्षा देने में बहाई सिद्धान्तों का प्रचार करने में अपनी शक्ति लगा रहे हैं। वह अच्छी तरह जानते हैं कि ज्यों ज्यों नया जीवन बढ़ेगा और लोगों में फैलता जायगा त्यों त्यों संकुचित प्रथाएँ और पक्षपात धीरे धीरे बंद हो जायेंगे, ठीक उसी प्रकार जैसे बसन्त में जब सूर्य के प्रकाश में पत्ते और फूल निकलते हैं तो डोडी के छिलके स्वयं झड़ जाते हैं।*

शिक्षा

शिक्षा अर्थात् मनुष्यों को सिखाना और उन्हें सन्मार्ग पर ले जाना और उनके मानसिक भावों का विकास करना और सुधारना सभी अवतारों का मुख्य उद्देश्य संसार के आरम्भ से ही चला आया है, और बहाई शिक्षाओं में तो स्पष्ट शब्दों में शिक्षा के मौलिक महत्त्व और असीम संभवताओं को स्वीकृत किया गया है। सभ्यता का प्रधान हेतु शिक्षक ही है और उसका काम मानव कामनाओं का उच्चतम स्थान है। शिक्षा माता के पेट से आरम्भ होती है और जिस प्रकार मानव जीवन का अन्त नहीं उसी प्रकार इसका भी अन्त नहीं है। यह विशुद्ध जीवन-यात्रा के लिये अत्यन्त आवश्यक और जातीय तथा व्यक्तिगत जीवन के कल्याण की मूल भित्ति है। जब ठीक रीति से शिक्षा देने की प्रथा सर्वसाधारण में प्रचार होगी तो मनुष्यों में बड़ा परिवर्तन हो जायगा और संसार स्वर्ग बन जायगा।

---

* यह बात उस सामाजिक उन्नति से स्पष्टतया प्रकट होती है जो तुर्की प्रजातान्त्रिक राज्य के अधीन वहाँ हुई है।

इस समय यथार्थ रूप में शिक्षित मनुष्य का अस्तित्व एक कौतुक-मात्र है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य झूठे पक्षपातों, भ्रमपूर्ण सिद्धान्तों और बुरे स्वभावों का धनी है। यह दुर्गुण बचपन में ही इसमें भर दिये गये हैं। बहुत ही थोड़े आदमी ऐसे होंगे जिन्हें बचपन से ही यह सिखाया गया होगा कि वह ईश्वर को अपने पूरे मन से प्यार करें, अपने जीवन का उसके निमित्त उत्सर्ग करदें, मनुष्यों की सेवा अपने जीवन का प्रधान उद्देश्य समझें और अपनी शक्ति को उत्तम रीति से उन्नत करें, जिस से वह इन्हें परोपकार में लगा सकें। उत्तम शिक्षा का यह अत्यावश्यक गुण है, इसमें सन्देह नहीं। केवल गणित, व्याकरण, भूगोल, भाषा आदि के तत्त्वों को कण्ठस्थ कर लेना सभ्य और उपयोगी जनों को उत्पन्न करने में अपेक्षाकृत व्यर्थ है।

बहाउल्लाह कहते हैं कि शिक्षा सर्व साधारण में होनी चाहिये।

"आज्ञा है कि प्रत्येक पिता अपने पुत्र और पुत्रियों को लिखने पढ़ने की और तख्ती (पत्र) में जो कुछ आज्ञा है, उसकी भी शिक्षा दे। (इस विषय में) जो मनुष्य इस आज्ञा की उपेक्षा करता है तो न्याय परिषद् को चाहिए कि यदि वह मनुष्य धनी हो तो उससे उतना धन ग्रहण कर ले जितना उसके बच्चों के लिये पर्याप्त हो और यदि वह निर्धन है तो उसके बच्चों की शिक्षा का भार न्याय परिषद् के ऊपर है। निःसन्देह हमने न्यायपरिषद् को निर्धनों और अर्थियों का आश्रय बनाया है।"

"जिसने अपने पुत्र या किसी दूसरे के बच्चे को शिक्षा दी है उसने मेरे ही बच्चों में से किसी एक को शिक्षित बनाया है।" (Tablet of Ishraqat.)

"स्त्री या पुरुष व्यापार, खेती या किसी और व्यावसाय से जितना धन अर्जित करें उसका कुछ भाग किसी विश्वास-पात्र मनुष्य के पास अपनी सन्तान की शिक्षा के लिये अवश्य रख छोड़ें। उस जमा किये धन का उपयोग न्याय परिषद् के मेम्बरों की सम्मति के अनुसार अपने बच्चों की शिक्षा में करें।" (Tablet of the world.)

स्वभाव के मुख्य भेद

बहाई विचार के अनुसार बच्चे का स्वभाव कोई मोम की तरह नहीं है कि उसे अध्यापक अपनी इच्छा से जैसा चाहे ढाल ले। नहीं, प्रत्येक बालक ईश्वरदत्त आचरण और व्यक्तित्व का स्वामी होता है, जिनका विकास किसी विशेष प्रकार से उत्तम लाभ के निमित्त हो सकता है, और यह प्रकार प्रत्येक अवस्था में विभिन्न होता है। कोई दो मनुष्य ऐसे नहीं मिल सकते जिनकी योग्यता और बुद्धि एक सी हो और कोई भी सच्चा शिक्षक दो प्रकृतियों को बलपूर्वक एक ही सांचे में ढालने का यत्न कभी न करेगा। सच तो यह है कि वह एक प्रकृति को भी बल से किसी सांचे में ढालने का प्रयत्न न करेगा। वह बालकों की विकासोन्मुख शक्तियों का आदर पूर्वक निरीक्षण करेगा, उन्हें प्रोत्साहन देगा और उनकी रक्षा करेगा, और उन्हें ऐसा आहार और सहायता प्रदान करेगा जिसकी उन्हें आवश्यकता है। उसका काम एक ऐसे बागवान का सा है जो भिन्न पौदों की देखभाल करता है। एक पौदे को तेज़ धूप की आवश्यकता है तो दूसरे को शीतल छाया की, एक को पानी का किनारा प्रिय है तो दूसरे को पहाड़ की सूखी चोटी, एक रेत में हराभरा होता है तो दूसरा चिकनी मट्टी में पलता है। प्रत्येक की आवश्यकता उचित रूप से पूरी

करनी चाहिये। अन्यथा उसके आन्तरिक गुण कभी पूर्ण रूप से विकसित न होंगे। अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"पैगंबर लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि मानव जाति पर शिक्षा का बड़ा प्रभाव पड़ता है परन्तु वह कहते हैं कि मन और बुद्धि सब के स्वभावत: भिन्न भिन्न हैं। हम देखते हैं कि एक ही जाति के और एक ही वंश के, एक ही अवस्था के, यहाँ तक कि एक ही कुटुम्ब के और एक ही अध्यापक से पढ़े हुए बालकों की बुद्धि और मन एक दूसरे से भिन्न भिन्न होते हैं। खोल (Shell) को चाहे कितना चमकाओ उससे मोती की चमक कभी नहीं बढ़ती। काला पत्थर विश्वप्रकाशक हीरा नहीं बनेगा। कांटेदार झाड़ी का कितना भी विकास या सुधार क्यों न किया जाये पर वह उत्तम वृक्ष का रूप कभी नहीं पा सकती। कहने का हेतु यह है कि मानव रत्न की परिनिष्ठित प्रकृति शिक्षण या सुधारण से बदल नहीं जाती, हाँ, उसका प्रभाव अवश्य अद्भुत होता है। इसी प्रभाव की शक्ति से मनुष्य की स्वाभाविक बुद्धि, गुण और योग्यता का प्रकाश होगा।"—(Tablet of Abdul-Baha, vol. iii, p. 577.)

चरित्र सुधार

शिक्षा में सबसे बड़ी महत्त्व की बात चरित्र-सुधार है। इसके लिये आदेश की अपेक्षा उदाहरण का अधिक प्रभाव पड़ता है और बच्चे के माता पिता की जीवनी और चरित्र तथा अध्यापक और सहवास भी इस संबन्ध में बड़ा महत्त्व रखते हैं।

ईश्वरीय अवतार मनुष्य-मात्र के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक हैं, उनकी शिक्षाएँ उनके जीवन की कहानियाँ, ज्योंही बच्चे समझने के योग्य हों, उनके हृदयों में बैठानी चाहियें। विशेष कर सबसे बड़े शिक्षक बहाउल्लाह के वचन तो बड़े ही महत्त्व के हैं, क्यों-

कि उन्होंने उन मूल सिद्धान्तों का प्रकाश किया है जिनके आधार पर भावी सभ्यता का निर्माण होगा। उन्होंने कहा है:—

"अपने बच्चों को वह बातें सिखाओ जो ईश्वरीय लेखनी द्वारा लिखी गई हैं। शक्ति और बड़प्पन के आकाश से जिस ज्ञान ज्योति का अवतरण हुआ है, उसकी उन्हें शिक्षा दो। उन्हें दयासागर की तख्तियाँ (लुएँ) कण्ठस्थ कराओ, ताकि वह 'मश्रि-कुल-अज़कार' (महा प्रार्थनागृह) के विशाल मन्दिरों में मधुर स्वर से गाया करे।"—(Star of the West, vol. ix, No. 7. p. 81.)

कला, विज्ञान और शिल्प

कला, विज्ञान, शिल्प तथा अन्य वृत्त्युपयोगी बातों की शिक्षा भी वैसी ही महत्त्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है। बहाउल्लाह कहते हैं:—

"विद्या मनुष्य के लिये परों के समान या कहीं चढ़ने के लिये सीढ़ी के समान है। विद्या प्राप्त करना सबके लिये अत्यावश्यक है, परन्तु ऐसी विद्या या विज्ञान प्राप्त करना चाहिये जिससे संसार का उपकार हो सके, ऐसा विज्ञान जो शब्दों से आरम्भ हो और केवल शब्दों पर ही समाप्त हो जाय न सिखाना चाहिये। संसार भर के लोगों पर कला और विज्ञान जानने वालों का बड़ा अधिकार होता है। वास्तव में मनुष्य का सच्चा भण्डार विद्या है। विद्या ही से मनुष्य सम्मान, सम्पत्ति, हर्ष, आनन्द, सुख और उन्नति प्राप्त करता है।"—(Tablat of Tajalliyat.)

अपराधियों से व्यवहार—

अपराधियों के साथ व्यवहार करने की उचित रीति क्या है, इस पर बात-चीत करते हुए अब्दुल-बहा ने कहा था:—

"सबसे बड़ी आवश्यक बात यह है कि लोगों को इस रीति से शिक्षा देनी चाहिये जिससे अपराध हो ही नहीं। लोग अपराध करने से इतना डरें और कतरायें कि उनके सामने अपराध एक बड़े दण्ड, भारी निन्दा, और महान् कष्ट का रूप धारण करे। ऐसी अवस्था में कोई अपराध ही न होगा, जिसके लिये दण्ड देने की आवश्यकता पड़े।"

"यदि कोई आदमी किसी को सताये, दुखाये या अन्याय करे और पीड़ित व्यक्ति भी यदि पीड़ा देने वाले के साथ वैसा ही व्यवहार करे तो यह बदला कहलायेगा। यह निन्दनीय है। यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का मान करे तो दूसरे का कोई अधिकार नहीं कि वह भी पहले का अपमान करे। यदि वह ऐसा करेगा तो यह बदला होगा, और बदला बहुत निन्द्य है। बल्कि उसको चाहिये कि वह उस के साथ बुराई के बदले भलाई करे और केवल उसको क्षमा ही न करदे प्रत्युत सम्भव हो तो सताने वाले की सेवा करे। ऐसा आचरण मनुष्य के योग्य है, क्योंकि बदला लेने से उसको क्या लाभ होगा। दोनों कार्य एक से हैं, यदि बुरे हैं तो दोनों बुरे हैं। भेद केवल इतना ही होगा कि एक पहले किया गया और दूसरा बाद।"

"परन्तु प्रत्येक जाति को समाज-रक्षा या आत्म-रक्षा का पूरा अधिकार है। कोई जाति हत्यारे से घृणा या द्वेष नहीं रखती बल्कि दूसरों की रक्षा के लिये वह हत्यारे को कैद करती या दण्ड देती है।"

"मसीह ने जब यह कहा था "यदि कोई तुम्हारी एक गाल पर चपेड़ मारे तो दूसरी भी उसके सामने कर दो" इससे उनका विचार लोगों को निजी बदला लेने से रोकने का था। इसका यह अभिप्राय कभी न था कि यदि एक भेड़िया भेड़ों के खेड़ में आकर उन्हें खाने लगे तो उसे उत्साहित किया जाये। यदि मसीह देखते कि एक भेड़िया

भेड़ों के खेड़ में घुस आया है और भेड़ों का नाश करने लगा है तो वह अवश्य उसको रोकते ।"

"जातियों की बनावट या स्थिति न्याय पर निर्भर है । तब क्षमा से मसीह का विचार यह नहीं था कि अगर कोई जाति तुम पर आक्रमण करती है, तुम्हारे घर जलाती है, तुम्हारा सामान लूटती है, तुम्हारी स्त्रियों पर आघात करती है, तुम्हारे बच्चे और तुम्हारे संबन्धियों पर प्रहार करती है, तुम्हारे मान को पद-दलित करती है, तो भी इन अत्याचारी शत्रुओं के सम्मुख तुम विनम्र और क्षमाशील बने रहो और उन्हें अत्याचार और उपद्रव करने दो । कभी नहीं, मसीह के यह शब्द तो दो व्यक्तियों के परस्पर आचरण के साथ संबन्ध रखते हैं । यदि एक मनुष्य दूसरे को दुखाता है तो पीड़ित को चाहिये कि पीड़क को क्षमा करदे । परन्तु प्रत्येक जाति को मानव अधिकारों की रक्षा करनी चाहिये । एक बात और कहने को रहती है, वह यह हैं कि जातियां दिन रात दण्ड विधान की रचना में और दण्ड देने के नये नये साधनों और प्रकारों की कल्पना करने में लगी हुई हैं । वह कारागृह बनवाती हैं, बेड़ियां और जंजीरें तैयार करती हैं, निर्वासन और बहिष्कार के लिये स्थान नियत करती हैं और अनेक प्रकार की कठोरताओं और यातनाओं की सृष्टि करती हैं, और समझती हैं कि इन उपायों से अपराधियों का दमन हो जायगा, परन्तु वास्तव में यह बातें चरित्र का नाश और सदाचार को भ्रष्ट करने हो का कारण बन रही हैं । इसके विरुद्ध जातियों को चाहिये कि पूरे प्रयत्न और उत्साह से ऐसी चेष्टा करें जिससे लोगों में शिक्षा का पूर्ण प्रचार हो, ताकि लोग प्रति दिन उन्नति के पथ पर अग्रसर हों, ज्ञान और विज्ञान में आगे बढ़ें, गुण प्राप्त करें, अपने चरित्र को अच्छा बनायें जिससे अपराध हो ही नहीं ।"—(Some Answered Questions, pp. 307-312.)

वर्तमान पत्रों (प्रेस) का प्रभाव

बहाउल्लाह ने इस बात को अच्छी तरह स्वीकार किया है कि लोगों में शिक्षा और ज्ञान का प्रसार करने के लिये और सभ्यता का प्रचार करने के लिये प्रेस, यदि ठीक रीति से उपयोग में लाया जाये तो, बड़े महत्त्व का साधन है। उन्होंने लिखा है—

"आज पृथ्वी के रहस्य खुल गये और दृष्टि के सामने विद्यमान हैं और त्वरा के साथ प्रकाशित हो रहे समाचार पत्रों के पृष्ट वास्तव में संसार के दर्पण हैं, यही विभिन्न जातियों के कार्यों और व्यवहारों को दिखाते हैं, वह दोनों उन्हें स्पष्ट करके दिखाते हैं और सुनने का साधन बनते हैं। समाचार पत्र एक ऐसा दर्पण है जिसको सुनने, देखने और बोलने की शक्ति प्राप्त है। यह अद्भुत और बड़ी वस्तु है।"

"परन्तु यह सम्पादक और लेखक के हाथ में है। इन्हें चाहिये कि स्वार्थ और पक्षपात से रहित और समदृष्टि तथा न्याय के आभूषण से अलंकृत हों, और बातों की जहां तक संभव हो पूरी खोज करें, जिससे बात की तह तक पहुँच कर उस पर लेखनी चलायें। इस पीड़ित के विषय में जो कुछ समाचार पत्रों में लिखा गया है उसका अधिकांश सत्य से दूर है। उत्तम भाषण और सत्यवादिता स्थिति और अधिकार में उस सूर्य के समान उच्चकोटि पर हैं जो ज्ञान के आकाश की पराकाष्ठा से उदित हुआ है।"—(Tablet of Tarazat.)

———

अध्याय दशमा

शान्ति का मार्ग

"अवश्य ही यह सेवक आज संसार को नया जीवन देने और इस के निवासियों को एक सूत्र में बांधने के लिये आया है। जो ईश्वर चाहता है, वह पूरा हो ही रहेगा और तू संसार को प्रकाशमय (अब्हा) स्वर्ग बना हुआ देखेगा।"—(Bahaullah, in Tablet to Rais.)

विरोध का मिलाप से मुकाबिला

पिछली सदी में वैज्ञानिकों ने जानवरों और वनस्पतियों में सत्ता के लिये संग्राम और जातीय जीवन की उलझनों का बहुत अध्ययन किया है, इनमें बहुतों ने अपने पथ-दर्शन के लिये उस सिद्धान्त का आश्रय लिया जो प्रकृति की निम्न श्रेणियों में प्रचलित है। इस प्रकार उनके अनुसन्धान का फल यह हुआ कि वह प्रति-द्वन्द्विता और विरोध को भी जीवन की आवश्यकताओं में समझने लगे और उन्होंने यह निश्चित किया कि समाज के दुर्बल साथियों को निर्दयता से मार डालना न सिर्फ उचित ही है प्रत्युत भविष्य में जाति की उन्नति का अन्यावश्यक साधन है। इसके विरुद्ध बहाउल्लाह कहते हैं कि यदि हम उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ना चाहते हैं तो पीछे की ओर पशुओं पर दृष्टि डालने के स्थान में हमारी दृष्टि आगे और ऊपर की ओर लगी रहे, और हम पशुओं को नहीं बल्कि ईश्वरावतारों को अपना पथ-दर्शक बनायें।

ऐक्य, मिलाप और दया के जो सिद्धान्त ईश्वरावतारों ने हमें सिखाये हैं वह पशुओं के सत्ताप्रति-द्वन्द्व के सिद्धान्त से सर्वथा विपरीत हैं। हमें दोनों में से किसी एक को अवश्य ग्रहण करना होगा, क्योंकि दोनों का एक में समावेश नहीं हो सकता। अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"प्राकृतिक संसार में सत्ताप्रति-द्वन्द्व की तूती बोल रही है, जिसका परिणाम यह है कि जो सबल है वह जीवित है। 'सबल ही जीवित रहे' यही नियम सब झंझटों की जड़ है। मनुष्यों के परस्पर विद्वेष, वैर और लड़ाई झगड़ों का कारण भी यही सिद्धान्त है। इसी के कारण भौतिक संसार में अत्याचार, स्वार्थप्रियता, बल प्रयोग, दूसरों के अधिकारों को छीनना आदि दोष, जो पशुओं में पाये जाते हैं, प्रचलित हो गये हैं। इसलिये जब तक संसार में विषय-वासना का दौर दौरा है तब तक सफलता और समृद्धि असम्भव है। प्रकृति युद्धप्रिय, लहू की प्यासी और अत्याचार की सहेली है, क्योंकि यह सर्वशक्तिमान् ईश्वर से अनभिज्ञ है। इसी लिये पशुओं में स्वभाव से ही निर्दयता के गुण पाये जाते हैं।"

"इसलिये मनुष्यों के स्वामी (परमेश्वर) ने बड़ी दया और प्रेम से ईश्वरावतारों को भेजा और पवित्र पुस्तकों का प्रकाशन किया ताकि ईश्वरीय शिक्षा के द्वारा मनुष्य प्रकृति के दोषों से और अज्ञान के अन्धकार से मुक्त हो कर सच्चे गुण और आध्यात्मिक लगाव प्राप्त करे और दयालुता की तरङ्गों का स्थान बने।"

"खेद है, लाख बार यही अज्ञानमूलक पक्षपात, अस्वाभाविक भेद-भाव और वैर विरोध के सिद्धान्तों को अब भी लोग एक दूसरे के प्रति प्रकट कर रहे हैं और इस प्रकार उन्नति के मार्ग में बाधा डाल रहे हैं।

इस पतन का कारण केवल यही है कि लोगों ने ईश्वरीय सभ्यता के सिद्धान्तों का सर्वथा त्याग कर दिया और पैगंबरों की शिक्षाओं को भुला दिया है।"(—Star of the West, vol. viii, p. 15.)

सबसे बड़ी शान्ति

सब युगों में ईश्वरीय अवतारों ने भविष्य वाणियां की हैं कि लोगों में शान्ति और सद्भाव उत्पन्न होगा। जैसा कि हमने पहले पढ़ा है कि बहाउल्लाह बड़े जोरदार और श्रद्धेय शब्दों में इन भविष्यवाणियों का समर्थन करते हुए कहते हैं कि उनके पूरा होने का समय समीप आ गया है। अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"इस विचित्र दौर में संसार बदल जायेगा और मानव जाति शान्ति और सौन्दर्य से विभूषित होगी। विरोध, झगड़ों और हत्याओं के स्थान में प्रेम, सचाई और मेल मिलाप की स्थापना होगी। सब जातियों, सब लोगों और सब देशों में स्नेह और एकता का उदय होगा। सहकारिता और सहयोग स्थापित होगा और युद्धों का सर्वथा अन्त हो जायेगा। व्यापक शान्ति का तंबू पृथ्वी के मध्यभाग में लगेगा और जीवन वृक्ष का इतना प्रसार होगा कि उसकी छाया पूर्व और पश्चिम दोनों पर पड़ेगी। सबल और दुर्बल, धनी और निर्धन, विरोधी दल और वैर रखने वाली जातियाँ, जो भेड़िये और भेड़ के बच्चे, चीते और मेमने, शेर और बछड़े के समान हैं, परस्पर पूर्ण प्रेम, मैत्री, न्याय और औचित्य का व्यवहार करेंगी। संसार में ईश्वरीय विज्ञान और जीवन रहस्यों के सच्चे ज्ञान के साथ विज्ञान का खूब प्रसार होगा।"— (Some Answered Questions, p. 73.)

धार्मिक पक्षपात

इस बात को अच्छी तरह समझने के लिये कि अति महती

शान्ति की स्थापना किस प्रकार होगी, आओ हम पहले उन सिद्धान्तों को परख लें जो अतीत काल में युद्ध का कारण बने और देखें कि बहाउल्लाह ने उन कारणों को दूर करने के क्या उपाय बताये हैं।

संग्राम का सबसे बड़ा कारण धार्मिक पक्षपात है। इसके संबन्ध में बहाउल्लाह की शिक्षाएँ स्पष्ट रूप से दिखाती हैं कि भिन्न भिन्न धर्मों के लोगों में वैर विरोध का कारण सच्चा धर्म नहीं, बल्कि उसका अभाव है और सच्चे धर्म के स्थान में झूठे पक्षपात, अनुकरण और ईश्वरीय वाणी का उलटा अर्थ उसके कारण हैं।

पैरिस में वार्तालाप करते हुए अब्दुल-बहा ने कहा थाः—

"धर्म का काम तो यह है कि वह हृदयों को मिलाये और लड़ाई झगड़ों को संसार से दूर करे, इससे आध्यात्मिक भावों का उदय होना चाहिये और प्रत्येक आत्मा को प्रकाश और जीवन प्राप्त होना चाहिये। यदि धर्म ही वैर, घृणा और भेदभाव का कारण बनता है, तो अच्छा है, यह नहीं हो और ऐसे धर्म से परे रहना ही सच्चा धर्म है। क्योंकि यह एक सीधी बात है कि औषध का काम व्यथा को दूर करना है, पर यदि औषध से व्यथा की वृद्धि होने लगे तो उसे छोड़ देना ही अच्छा है। जो धर्म प्रेम और एकता का कारण नहीं वह धर्म ही नहीं।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

फिर इन्होंने कहा हैः—

"मानव इतिहास के आरम्भ से लेकर आज तक संसार के विभिन्न धर्मों के लोग एक दूसरे को फटकारते और झूठा बताते चले आये हैं। वह आन्तरिक घृणा और वैर रखकर एक दूसरे से अलग रहते चले आये हैं। धार्मिक युद्धों के इतिहास पर विचार करो। एक धार्मिक महा संग्राम दो सौ वर्ष तक जारी रहा। जब कभी क्रूसेडर (सलीप के लिये

लड़ने वाले) विजय पाते तो मुसलमानों को मारते, लूटते और कैदी बनाकर ले जाते थे, और जब मुसलमान विजयी होते तो वह भी आक्रमणकारियों की मार काट करने में कसर न रखते थे।"

"इस प्रकार दो सौ वर्ष तक वह ऐसा ही करते रहे। जब जोश आता, लड़ पड़ते और दुर्बल होने पर ढीले पड़ जाते थे। अन्त में योरप के धार्मिक लोग एशिया से चले गये और अपने पीछे विनाश की भस्म छोड़ गये और जाकर उन्होंने अपनी जातियों को विपर्यस्त और निर्जीव दशा में पाया। यह केवल एक 'धर्मयुद्ध' का वृत्तान्त है।

"धार्मिक संग्राम बहुत हुए हैं। ईसाइयों के दो दलों (अर्थात् कैथलिक और प्रोटेस्टेंट) के विरोध और भेदभाव का यह फल हुआ कि नौ लाख प्रोटेस्टेंट शहीद हुए। कितने ही जेलों में गल सड़ गये। इन कैदियों के साथ कैसा निर्दयता का व्यवहार किया जाता था! यह सब धर्म के नाम पर होता था!"

"ईसाई और मुसलमान यहूदियों को शैतान और ईश्वर के शत्रु समझते थे। इसलिये उनको धिक्कारते और उन पर अत्याचार किया करते थे। यहूदियों की एक भारी संख्या तलवार के घाट उतारी गई, उनके घर जला और गिरा दिये गये, उनके बच्चे कैदी बना लिये गये। यहूदी भी ईसाइयों को काफ़िर और मुसलमानों को मूसा के नियमों का विघातक और शत्रु समझते थे। इसलिये वह उनसे बदला लेने में कभी न छोड़ते और आज तक उन्हें धिक्कारते रहते हैं।"

"बहाउल्लाह के प्रकाश का पूर्व से अरुणोदय हुआ तो उसने मनुष्यमात्र की एकता का वचन पूरा करने की घोषणा की। उन्होंने मनुष्यमात्र को संबोधन करके कहा—तुम सब एक ही वृक्ष के फल हो। दो वृक्ष नहीं हैं, कि उनमें से एक ईश्वर का हो और दूसरा शैतान का हो। हमें चाहिए कि हम एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार करें। हमें

किसी जाति को शैतान की जाति समझना उचित नहीं, बल्कि हमें चाहिए कि हम मनुष्यमात्र को ईश्वर का सेवक समझें। अधिक से अधिक यह बात है कि कुछ लोग अनजान हैं, उन्हें सिखाना और मार्ग दिखाना चाहिए। कुछ लोग बेसमझ हैं, उन्हें समझाना चाहिए। कुछ लोग बच्चों के से हैं, उन के बढ़ने में सहायता करनी चाहिए। कई रोगी हैं, उनका आचरण अच्छा नहीं, उनका इलाज करना चाहिए जबतक कि उनका आचरण सुधर न जाए। रोगी से, इसलिए कि वह रोगी है, घृणा न करनी चाहिए, बच्चे से, इसलिए कि वह बच्चा है, परे न रहना चाहिये, बेसमझ पर, इसलिए कि उस में समझ नहीं है, उपेक्षा दृष्टि न रखनी चाहिये। इन सबका प्रेम पूर्वक इलाज, शिक्षण, सुधार और सहायता करनी चाहिए। प्रत्येक काम इस अभिप्राय से करना चाहिए कि संपूर्ण मानव जाति प्रसन्नता और परम सुख से ईश्वर की छत्र-छाया में निवास करे।" (Star of the West, vol. viii, p. 76.)

जाति और देश के पक्षपात

बहाई संप्रदाय का मनुष्य मात्र की एकता का सिद्धान्त युद्ध के एक दूसरे कारण को भी जड़ से उखेड़ता है, अर्थात् जातीय पक्षपात को भी उड़ा देता है। कुछ जातियाँ यह समझती हैं कि वह दूसरी जातियों से ऊंची हैं और "बलिष्ठ ही जीवित रहे" इस सिद्धान्त के आधार पर यह स्वीकार कर बैठी हैं कि अपनी उच्चता के कारण उन्हें अधिकार है कि वह दुर्बल जाति के साथ अपने लाभ के लिये जैसा चाहें क्रूरता का व्यवहार कर सकती हैं, बल्कि चाहें तो उन्हें जड़ से भी उखाड़ सकती हैं। संसार के इतिहास के अनेक कृष्णतम पृष्ठ इस सिद्धान्त के निर्दयता पूर्ण अनुसरण के उदाहरण स्वरूप हमें दीख पड़ते हैं। बहाई विचार

के अनुसार सभी जातियों के लोग ईश्वर की दृष्टि में एक से हैं। सभी अद्भुत आन्तरिक योग्यता रखते हैं जिसे उन्नत करने के लिये उचित शिक्षा की आवश्यकता है, और प्रत्येक जाति ऐसा काम कर सकती है जिससे मानव जीवन के अवनत होने की अपेक्षा उन्नत और पूर्ण होने की संभावना हो सकती है।

अब्दुल-बहा कहते हैं :—

"जातीय पक्षपात केवल धोखा और स्पष्ट भ्रम है, क्योंकि ईश्वर ने हम सबको एक ही जाति में उत्पन्न किया है। आरम्भ में भिन्न भिन्न भूप्रदेशों की न कोई परिधि थी और नाही उनकी कोई हदबन्दी थी। कोई जाति किसी भूप्रदेश की विशेष स्वामिनी न थी। ईश्वर की दृष्टि में विविध जातियों में कोई भेदभाव नहीं है। फिर मनुष्य इस प्रकार के पक्षपातों का शिकार किसलिए बनते है। ऐसे धोखे के कारण उत्पन्न हुए युद्ध को हम कैसे जारी रख सकते हैं? ईश्वर ने मनुष्यों को इसलिए उत्पन्न नहीं किया कि वह एक दूसरे का विनाश करते रहें। प्रत्येक जाति, वंश और सम्प्रदाय अपने आसमानो पिता के प्रसाद का एकसा भाग प्राप्त करते हैं।"

"तात्त्विक भेद केवल ईश्वरीय नियमों पर श्रद्धा और उनका पालन करने के दर्जों पर होता है। कुछ लोग मानव अन्तरिक्ष में उज्ज्वल प्रकाश के समान हैं और दूसरे लोग धुँधले प्रकाश वाले तारों की समता रखते हैं।"

"मानव जाति के प्रेमी सबसे ऊँचे हैं, चाहे वह किसी जाति, सम्प्रदाय या रंग के हों।" (Paris Talks, p. 136.)

जातीय पक्षपात के समान स्वदेश भक्ति और राज्यनैतिक पक्षपात भी बिगाड़ का सबब है। अब समय आ गया है कि

संकुचित देशभक्ति और जाति प्रेम को ऐसा उदार और व्यापक बना दिया जाय कि जिस से सारा संसार ही अपना देश और अपनी जाति समझा जाये। बहाउल्लाह कहते हैं:—

"पिछले समयों में कहा जाता था कि अपने देश से प्रेम रखना ही धर्म या विश्वास (Faith) है, परन्तु इस अवतार के दिनों में ईश्वरीय जिव्हा ने बताया है कि "उस मनुष्य की विशेष महिमा नहीं है जो केवल अपने देश से प्रेम रखता है, बल्कि महिमा के योग्य वह आदमी है जो सारे संसार से प्रेम करता है।" इन उदार शब्दों के द्वारा उसने मानवविहङ्गमों को उड़ने का एक नया प्रकार सिखाया और बन्धन तथा अन्धपरम्परा को पुस्तक से हटा दिया।" (Tablet of the World.)

दूसरे देशों को अपने अधिकार में लाने की कामना

बहुत से युद्ध इसलिये हुए कि दो या अधिक विरोधी जातियाँ किसी भूप्रदेश को अपने अधिकार में लेना चाहती थी। अधिकार का लोभ व्यक्तियों की तरह जातियों में भी बराबर लड़ाई झगड़े का कारण बनता चला आया है। बहाई विचार के अनुसार भूमि यथार्थ में किसी व्यक्ति या जाति की नहीं, बल्कि साधारण रूप से मनुष्यमात्र की है या यों कहें कि केवल एक ईश्वर की है और सब लोग उसके मुजारे हैं।

बनगाजी के युद्ध के समय अब्दुल-बहा ने कहा था:—

"बनगाजी की लड़ाई का समाचार सुनकर मेरे मन को बड़ा दुःख हुआ। मुझे यह जान कर आश्चर्य होता है कि मनुष्यों में अभी तक राक्षसपन विद्यमान है। अन्यथा यह कैसे संभव हो सकता है कि मनुष्य प्रातः काल से सायंकाल तक लड़ाई करते जायें, एक दूसरे की

हत्या करें और अपने ही जात भाइयों का लहू बहायें। और वह भी किस लिए, केवल किसी भूखण्ड को अपने अधिकार में करने के लिए ! पशु भी जब लड़ते हैं तो उनकी लड़ाई का कोई न कोई पूर्ववर्ती उचित कारण होता है। यह कैसी भयङ्कर बात है कि मनुष्य, जो उच्चतर राज्य के अधिकारी हैं, एक भूखण्ड की प्राप्ति के निमित्त अपने जातभाइयों को मार डालने या पद-दलित करने पर उतर आयें। इतनी उच्च श्रेणी का प्राणी भूमि जैसी छोटी सी वस्तु प्राप्त करने के लिए लड़ाई करे !"

"भूमि किसी एक की नहीं बल्कि सब की है। भूमि मनुष्य का घर नहीं है, यह तो उसका समाधि स्थान है।"

"मनुष्य कितना भी महान् विजयी क्यों न हो, कितने देशों को अपने अधीन क्यों न कर ले, पर वह इन विध्वस्त किए भू-प्रदेशों में किसी एक को भी पूर्ण रूप से अपने अधिकार में नहीं रख सकता, सिवाय उस छोटे से एक टुकड़े के जिसमें उसकी कब्र तैयार करनी है।"

"यदि लोगों की दशा को सुधारने के लिए या सभ्यता फैलाने के लिए, अधिक भूमि की आवश्यकता हो तो शान्ति पूर्वक आवश्यकतानुसार कोई भी प्रदेश अवश्य बढ़ाया जा सकता है। युद्ध तो मनुष्य ने अपनी वासना को तृप्त करने के लिए बनाया है। केवल थोड़े से मनुष्यों की सांसारिक वासना को तृप्त करने के लिए, अनन्त घर बरबाद किए जाते और सहस्रों स्त्री पुरुषों के हृदय टुकड़े टुकड़े कर दिए जाते हैं।"

"मैं तुम सब को आदेश देता हूँ कि तुम अपने पूरे मन से अपने विचारों को प्रेम और एकता पर लगाओ। जब युद्ध के भाव का उदय हो तो शान्ति के बलवत्तर भाव से उसका विरोध करो। घृणा के भाव को प्रेम के अधिक शक्तिशाली भाव के द्वारा निर्मूल कर देना चाहिये। जिस समय सिपाही हत्या के लिए अपनी तलवारें निकालते हैं, ऐसे

समय पर ईश्वर के सिपाही एक दूसरे के हाथ पकड़ें। इस प्रकार पवित्र हृदय और विशुद्ध भाव से काम करो ताकि ईश्वर की दया से मनुष्यों का राक्षसपन सर्वथा दूर हो जाये। मत समझो कि संसार में शान्ति की स्थापना करना एक असम्भव कल्पना है। ईश्वरीय अनन्त महिमा के आगे कोई असम्भव बात नहीं है। यदि तुम सच्चे हृदय से संसार की सब जातियों से प्रीति करना चाहते हो तो तुम्हारी यह आध्यात्मिक और सच्ची कामना फैलकर दूसरों की भी कामना बन जायगी और यह कामना इतनी प्रबल हो जायगी कि मनुष्यों के हृदयों में स्थान प्राप्त करेगी।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

सर्वसाधारण भाषा

युद्ध के बड़े बड़े कारणों और उसे रोकने के उपायों पर विचार करने के बाद अब हम महती शान्ति स्थापन के उन सक्रिय उपायों की विवेचना करते हैं जिन्हें बहाउल्लाह बता गये हैं। सबसे पहली संसार भर की एक साधारण भाषा नियत करने के संबन्ध में है। 'अक़दस' पुस्तक और बहुत सी अन्य तख्तियों (पत्रों) में उसका वर्णन आया है। 'इश्राक़ात' की तख़्ती में उन्होंने लिखा है:—

"छठा इश्राक (प्रकाश) मनुष्यों में एकता और प्रेम है। एकता ही से संसार में ईश्वरीय धर्म का प्रकाश सदा फैलता आया है और एकता का सबसे बड़ा साधन यह है कि लोग एक दूसरे के भाषणों और लेखों को समझें। हम अपने पत्रों में पहले ही आज्ञा दे चुके हैं कि 'न्याय सभा' के अधिकारियों को चाहिए कि वह या तो वर्त्तमान भाषाओं में से किसी एक को स्वीकार कर लें या किसी नवीन भाषा की सृष्टि कर लें, इसी प्रकार लिपियों में भी किसी साधारण लिपि को

ग्रहण कर लें और संसार भर की पाठशालाओं में बच्चों को इसी भाषा और इसी लिपि मे शिक्षा दें जिससे संसार एक देश और एक परिवार दिखाई देने लगे।"

लगभग उसी समय जबकि बहाउल्लाह की यह आज्ञा संसार को पहले पहल सुनाई गई, पोलैंड में एक बच्चा पैदा हुआ, जिसका नाम 'लोडोविक जामिन होफ' रखा गया। उसे यह आदेश हुआ कि वह इस आज्ञा को कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करे। बचपन में ही एक सर्व साधारण भाषा का विचार लोडोविक के जीवन का प्रधान उद्देश्य बन गया और उसके प्रयत्नों का फल यह हुआ कि उसने एक भाषा का, जो ऐस्परेंटो नाम से प्रसिद्ध है, उद्भावन किया और उसे सर्वसाधारण में प्रचलित करने की चेष्टा की। यह भाषा इस समय पैंतीस वर्षों से अनुभव में लाई जा रही है और सब प्रकार से संसार की माध्यमिक भाषा होने के योग्य सिद्ध हो चुकी है। इसमें एक बड़ा लाभ यह है कि यह अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच भाषाओं के सीखने में जितना समय लगता है उसके बीस हिस्से कम समय में सीखी जा सकती है। ऐस्परेंटो के एक सहभोज में जो कि सन् १९१३ के फरवरी महीने में पैरिस में दिया गया था, अब्दुल-बहा ने कहा था:—

"आज योरप में भेदभाव का बड़ा कारण भाषाओं का भिन्न भिन्न होना है। हम कहते हैं कि यह आदमी जर्मन है, यह इटालियन है, यह अंग्रेज़ और वह फ्रांसीसी है। यद्यपि वह सब एक ही मानव जाति से संबन्ध रखते हैं तथापि भाषा इनके मध्य में एक बड़े भेद का कारण बन गई है। यदि इन सब की कोई एक साधारण भाषा होती तो यह सब एक ही समझे जाते।"

"चालीस वर्ष से अधिक समय हो चुका है जब महात्मा बहाउल्लाह ने सर्वसाधारण भाषा के विषय में अपना मत प्रकट किया था। उन्होने कहा था कि जब तक संसार में किसी एक सर्वसाधारण भाषा का आश्रय न लिया जायेगा तब तक संसार के भिन्न संप्रदायों और जातियों में ऐक्य स्थापित न हो सकेगा। क्योंकि हम देखते हैं कि समझ की भूलें मनुष्यों को आपस में मिलने नहीं देतीं और यह भूलें सर्वसाधारण भाषा के बिना दूर नहीं हो सकतीं।"

"साधारणतः पूर्व के निवासी सब लोग पश्चिम के रहने वालों से परिचित नहीं होते और ना ही पश्चिम के निवासियों की पूर्व के निवासियों से कोई सहानुभूति दीखती है। इन सब के विचार एक पिटारी में बंद हैं। सर्वसाधारण भाषा में ही इस पिटारी को खोलने की शक्ति है। यदि हमारे पास कोई सर्वसाधारण भाषा हो तो पश्चिम के देशों की पुस्तकों का उस भाषा में आसानी से अनुवाद हो सकता है और पूर्व के लोग उन से परिचित हो सकते हैं। इसी प्रकार पूर्वी देशों की पुस्तकें उसमें अनुवादित हो सकती हैं और पश्चिम के लोग सहज में उन से लाभ उठा सकते हैं। पूर्व और पश्चिम के एक होने का बड़ा साधन यही साधारण भाषा होगी। यह संसार भर को एक घर बना देगी और मानव उन्नति का सब से प्रबल साधन होगी। यह मानव जाति के ऐक्य की मात्रा को बढ़ायेगी और सारे संसार को सब की साधारण सम्पत्ति बनायेगी। यह विभिन्न जातियों में मिथः प्रेम-बन्धन का कारण बनेगी।"

"अब ईश्वर की कृपा से कि डाक्टर ज़ामिन होफ ने ऐस्परेंटो भाषा की सृष्टि कर डाली है। सर्वसाधारण भाषा में पारस्परिक व्यवहार के जो गुण होने चाहियें वह सब उसमें हैं। इस उत्तम कार्य के लिये हम सब को उन का कृतज्ञ होना चाहिये क्योंकि उन्हों ने अपने जात

भाइयों की बड़ी सेवा की है। अपने भक्तों के अथक प्रयत्नों और आत्मोत्सर्ग से ऐस्परेंटो एक बड़ी और सर्व साधारण भाषा बन जाएगी। इसलिए हमें उचित है कि हम में से प्रत्येक इस भाषा को सीखें और जहाँ तक सम्भव हो इसके प्रचार का यत्न करे ताकि प्रतिदिन इस का प्रभाव बढ़ता जाये और संसार भर की जातियाँ तथा सरकारें इसे स्वीकार कर लें, और यह भाषा सब पाठशालाओं के पाठ्य विषयों का प्रधान अङ्ग बन जाये। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में जितनी अन्तर्जातीय परिषदें या सभाएँ होंगी उनकी सब कार्यवाही ऐस्परेंटो में होगी ताकि सभी को केवल दो भाषाएँ सीखनी पड़ें, अर्थात् एक मातृभाषा और दूसरी माध्यमिक भाषा अर्थात् ऐस्परेंटो । उस समय संसार की सब जातियों में पूर्ण ऐक्य स्थापित हो जायेगा। विचार तो करो कि आज भिन्न भिन्न जातियों में परस्पर पत्र व्यवहार में कितनी कठिनाई हो रही है। कोई मनुष्य पचास भाषाएँ भी क्यों न जानता हो, फिर भी वह भी ऐसे देश पाएगा जिनकी भाषा से वह अनभिज्ञ है। इसलिये मैं आशा करता हूँ कि तुम पूर्ण प्रयत्न करोगे कि ऐस्परेंटो दूर दूर तक फैल जाये।"

यद्यपि ऊपर लिखी बातें ऐस्परेंटो के पक्ष में स्पष्ट और प्रोत्साहन देने वाली हैं तो भी यह सच है कि जब तक न्यायालय इस विषय पर बहाउल्लाह के कथनानुसार ध्यान न देगा तब तक बहाई धर्म न तो ऐस्परेंटो के पक्ष में होगा और न ही किसी दूसरी प्रचलित या नई बनाई हुई भाषा के पक्ष में होगा। वास्तव में अब्दुल-बहा ने एक तख्ती में जिसमें आपने "एकता के दीपकों" का वर्णन किया है उस में भाषा की एकता को सब से अन्त में रक्खा है जिसका प्रयोजन यह है कि यह बात उस

समय तक पूरी नहीं होगी जब तक संसार देशों की, जातियों की और धर्मों की एकता को प्राप्त न कर लेगा। इसलिए इस मध्यकाल में यह अनुमान लगाना असम्भव है कि जब अन्त में एक विश्वव्यापी सहायक भाषा के चुनाव का समय आ जाए तो क्या होगा।

राष्ट्र संघ (League of Nations)

एक और आदेश, जिस पर बहाउल्लाह ने बार बार जोर दिया है, वह है कि शान्ति की स्थापना के लिये सब जातियों की एक सभा स्थापित होनी चाहिये। सन् १८६५ में महारानी विक्टोरिया को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा था:—

"ऐ शासकों के मण्डल ! अपने मतभेद दूर करो, तब तुम्हें न तो इतनी बड़ी सेना की आवश्यकता होगी और ना ही इतनी बड़ी युद्ध-सामग्री की, केवल उतनी आवश्यकता रह जाएगी जिससे अपने देश और प्रजा की रक्षा हो सकेगी। ऐ सम्राटों के मण्डल ! एक हो जाओ, क्योंकि इस प्रकार मतभेद की वायु रुक जायेगी और तुम्हारी प्रजा विश्राम और सुख प्राप्त करेगी। यदि तुम में से कोई दूसरे के विरुद्ध उठ खड़ा हो तो तुम सब मिल कर उसका सामना करो, क्योंकि यही स्पष्ट और प्रत्यक्ष न्याय है।"

सन् १८७५ में अब्दुल-बहा ने सर्व राष्ट्र संघ (League of Nations) स्थापित होने की भविष्यवाणी की थी जो इस समय विशेषतया हृदय-ग्राहिणी होगी क्योंकि अब ऐसी सभा स्थापित करने के लिये बड़े बड़े यत्न हो रहे हैं*। इन्होंने कहा था:—

"इसमें सन्देह नहीं कि सच्ची सभ्यता का झंडा संसार के मध्य में

*लेखक ने यह लेख १९१९–१९२० में लिखा था।

उस समय खड़ा होगा जब कि कुछ उच्च विचार के भद्र शासक, जो सहानुभूति और स्नेह की सृष्टि के चमकते हुए सूर्य हैं, उत्कट इच्छा और सुदृढ़ मानसिक शक्ति के साथ अग्रसर होकर संसार भर की शान्ति के प्रश्न पर सम्मिलित होकर विचार करेंगे, और अपने विचारों को काम में लाने के साधनों को दृढ़ता से पकड़ कर सारे संसार के शासकों का मिलाप स्थिर कर देंगे, और एक पक्का समझौता और दृढ़ संगठन ऐसी शर्तों के साथ आपस में करेंगे कि उन से किसी प्रकार घृणा करना संभव ही न हो। जब संसार के सब राष्ट्र अपने प्रतिनिधियों के द्वारा अपना मत प्रकट करके इस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर कर देंगे, जो वास्तव में एक सार्वजनिक शान्ति बनाये रखने की सन्धि होगी, और जिसे संसारभर के लोग पवित्र समझेंगे, तब संसार की सम्मिलित शक्तियों का कर्तव्य होगा कि वह इस महत्त्वपूर्ण सन्धि को उत्तरोत्तर सुदृढ़ बनाते जायें और उसका प्रचार करें।"

"इस सार्वजनिक सन्धि में प्रत्येक राष्ट्र की सीमा और उसके नियम और रीतिनीति निर्धारित होनी चाहिये। भिन्न राज्यों के सन्धि-पत्र, प्रबन्ध और कारोबार इसमें लिखे जाने चाहियें। इसी प्रकार प्रत्येक राज्य के सैनिक या शस्त्र बल को भी पूर्णतया नियत कर देना भी आवश्यक है, क्योंकि यदि एक राज्य युद्ध की अधिक तैयारी करेगा तो इस से दूसरे राज्यों में खलबली मच जायेगी। इस शक्तिशाली मेल की बुनियाद ऐसे तरीके पर डालनी चाहिये कि यदि एक राज्य किसी एक नियम को भी भंग करे तो संसार के बाकी सभी राज्य मिल कर उस पर आक्रमण करके उसे अधीन ही न करें बल्कि सारी मनुष्य जाति मिल कर ऐसे राज्य का तख्ता पलट दे।"

"यदि संसार के रोगी देह को इस प्रकार की हितकर औषध दी

जायगी तो यह अवश्य सार्वजनिक समता और न्याय के द्वारा इसके कष्टों को पूर्ण रुप से दूर करने का कारण होगी।"—(Mysterious Forces of Civilization, pp. 134-140.)

बहाई दृष्टिकोण से "सर्व राष्ट्र संघ" संसार के संगठन और सुख शान्ति के प्रति बहाउल्लाह की शिक्षाओं का यथायोग्य पालन नहीं करता। बहाई लोग लघुशान्ति (अन्तर्राष्ट्रीय समझौता करने के निमित्त राजनीतिक देशों की चेष्टा) और बहाउल्लाह की महान् शान्ति में बड़ा भेद रखते हैं। केवल बहाउल्लाह की महान् शान्ति ही सफल हो सकती है, क्योंकि इसमें सामाजिक समस्याओं का आधार आत्मिक एकता पर रक्खा गया है। इसलिए १७ वीं दिसम्बर १६१६ को अब्दुल-बहा ने यूं फरमायाः—

"इस समय विश्वव्यापो शान्ति बड़ी महत्त्वपूर्ण समस्या है। किन्तु दिलों की एकता आवश्यक है, ताकि इस मामले की नींव पुष्ट और सुरक्षित हो जाए और इसका भवन पक्का बने...यद्यपि "सर्व राष्ट्र संघ" बनाया गया है तथापि यह विश्वव्यापी शान्ति स्थापन करने में असमर्थ है। परन्तु बहाउल्लाह ने जो सर्वोच्च अदालत का वर्णन किया है वह बड़े बलपूर्वक इस पवित्र काम को पूरा करेगी।"

अन्तर्जातीय पंचायत

बहाउल्लाह ने एक "सर्वराष्ट्रीय पंचायत" अर्थात् न्यायसभा (International Court of Arbitration) के स्थापन की भी आवश्यकता बताई है ताकि जो लड़ाई झगड़े जातियों या राष्ट्रों में उठ खड़े हों वह युद्ध से नहीं बल्कि न्याय और औचित्य से निवृत्त किये जायें।

अगस्त सन् १६११ में, सर्व राष्ट्रीय न्याय सभा के प्रसंग में

जो मोहंक (Mohonk) परिषद् हुई थी उसके मन्त्री को अब्दुल-बहा ने लिखा था:—

"पचास वर्ष पहले बहाउल्लाह ने 'अक़दस' में लोगों को यह आज्ञा दी कि वह सार्वजनिक शान्ति स्थापित करें और संसार के सब राष्ट्रों को इस सार्वजनिक न्याय सभा के ईश्वरीय भोज में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया ताकि राष्ट्रों में प्रादेशिक सीमाओं, जातीय मान और सम्मत्ति के प्रश्न तथा अन्य प्रकार की आवश्यक बातों का निर्णय न्याय के साथ पंचायत के द्वारा हो जाया करे और किसी जाति को इस प्रकार के निर्णय से इनकार करने का साहस न हो। यदि दो राष्ट्रों के बीच में कोई झगड़ा उठ खड़ा हो तो यह अन्तर्जातीय न्याय सभा उसका इस प्रकार निर्णय करे जैसे न्यायधीश दो मनुष्यों का न्याय करता है। यदि कोई राष्ट्र किसी समय इस निर्णय की अवहेलना करे तो संसार के सब राष्ट्र मिलकर उठें और इस विद्रोह को शान्त करें।"

सन् १९११ में पैरिस में बातचीत करते समय इन्होंने कहा:—

"संसार की सब जातियाँ या राष्ट्र मिलकर एक बड़ी न्याय सभा स्थापित करेंगी जिसमें सब जातियों और सब राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुआ करेंगे। इस बड़ी सभा के सदस्य पूरे मेल मिलाप से इकट्ठे हुआ करेंगे। सब अन्तर्जातीय झगड़े इस बड़ी न्याय सभा में पेश हुआ करेंगे और इस न्याय सभा का काम उन सब उलझनों को, जो युद्ध का कारण बन रही हों, सुलझाना और रोकना होगा।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

"सर्व राष्ट्रसंघ" के स्थापित होने से पूर्व पच्चीस वर्ष पहले हेग में सन् १९०० में एक स्थायी पंचायत (न्याय सभा) स्थापित

हुई थी और उसके द्वारा बहुत सी पंचायती सन्धियों पर हस्ताक्षर हुए थे, परन्तु इन सन्धियों में से बहुत सी बहाउल्लाह के विचारपूर्ण प्रस्तावों से पिछुड़ी हुई थीं। कोई दो बड़ी शक्तियों के बीच कोई ऐसी पंचायती सन्धि न हुई जिस में सभी विवादास्पद विषयों पर विचार किया गया हो। जातीय हित, सम्मान और स्वतन्त्रता के विषय के भेदभाव तो विशेष रूप से अपवाद बना दिये गये थे। केवल इतना ही नहीं बल्कि कोई ऐसी प्रभावपूर्ण गारंटी न दी गई थी कि राष्ट्र या जातियाँ, उन सन्धि नियमों का, जिन्हें उन्होंने स्वीकृत किया था, पालन करती रहेंगी। इसके विरुद्ध बहाई प्रस्तावों में सीमा, जातीय सम्मान तथा आत्महित के प्रश्नों का विशेष रूप से समावेश किया गया है और उनकी पीठ पर "सर्व राष्ट्र संघ" की बड़ी गारंटी रखी गई है। जब इन प्रस्तावों को पूर्ण रूप से कार्य में परिणत किया जायेगा तब ही अन्तर्जातीय पंचायत अपना पूरा लाभ पहुँचा सकेगी और युद्ध का कलङ्क संसार से अन्तिम बिदाई लेगा।

शस्त्रों का नियमन

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"संसार की सब हुकूमतों का एक आम समझौता हो जिससे वह एक ही समय अपने अपने शस्त्रों को घटा दें। यदि एक सरकार तो अपने शस्त्रास्त्रों को घटाये पर दूसरी सरकार ऐसा करना स्वीकार न करे तो इससे कोई लाभ न होगा। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय पर संसार के सब राष्ट्रों को एक हो जाना चाहिए ताकि वह मानव जाति के सर्व नाशकारी घातक अस्त्रों का एक ही साथ परित्याग करें। जब तक एक

राष्ट्र, स्थल और जल की सेना का खर्च बढ़ाता रहेगा दूसरे को भी अपने स्वभाविक या कल्पित हित की रक्षा के लिये इस संघर्ष में विवश हो कर ऐसा करना पड़ेगा।" (Diary of Mirza Ahamad Sohrab.)

सामना न करना

धार्मिक संप्रदाय के रूप में बहाईयों ने बहाउल्लाह की हार्दिक आज्ञा के अनुसार अपने लाभ के लिये, यहाँ तक कि अपनी रक्षा के लिये भी सब प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग सर्वथा छोड़ दिया है। ईरान में सहस्रों बाबियों और बहाईयों ने अपने धर्म की खातिर भयानक कष्ट और निर्दयतापूर्ण मौत स्वीकार की। यद्यपि प्रचार के आरम्भिक दिनों में बाबियों ने कई मौकों पर बड़ी वीरता और साहस से तलवार द्वारा अपने बालबच्चों की रक्षा की तथापि बहाउल्लाह ने ऐसा करने का निषेध कर दिया। अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"जब बहाउल्लाह प्रकट हुए तो उन्होंने घोषणा की कि अधिकार या सत्य की रक्षा इन उपायों से कभी न होनी चाहिये बल्कि आत्मरक्षा के लिये भी इन उपायों का प्रयोग वर्जित है। उन्होंने खड्ग के प्रयोग को प्रतिषिद्ध कहा और "धर्म युद्ध" करने का निषेध कर दिया। उन्होंने कहा 'हत्या करने की अपेक्षा तुम्हारे लिए स्वयं मर मिटना अच्छा है।" भक्तों को चाहिये कि वह विश्वास और दृढ़ता से ईश्वरीय धर्म का प्रचार करें। जब भक्त लोग निर्भय और निःशङ्क होकर हृदय की प्रेरणा से ईश्वरीय वाणी का उत्कर्ष सिद्ध करेंगे और जब वह सांसारिक पदार्थों से दृष्टि हटा कर ईश्वर और उसकी शक्ति का आश्रय लेकर लोक-सेवा में प्रवृत्त होंगे तो सत्य की वाणी की विजय होगी। यह धन्यतम आत्माएं

अपने रुधिर से ईश्वरीय धर्म की सत्यता की गवाही देंगी और अपनी सचाई, श्रद्धा, भक्ति और तत्परता से उस गवाही को प्रमाणित करेंगी। धर्म के प्रचार और विरोधियों के दमन करने में ईश्वर समर्थ है। हमें उसे छोड़ किसी और सहायक की आवश्यकता नहीं और शत्रु का सामना करने के लिये अपने जीवन को हथेली पर धरे बैठे हैं तथा आत्म बलिदान का स्वागत कर रहे हैं।" (Written by Abdul-Baha for this book.)

बहाउल्लाह ने अपने प्रचार के एक विरोधी को लिखा था:—

"धन्य ईश्वर! इस संप्रदाय को शस्त्रों की आवश्यकता नहीं। इसके तो सब प्रयत्न संसार में शान्ति स्थापित करने में लगे हैं। इसकी सेना सदाचार, इसके शस्त्र शुभ कामना हैं, और उसका सरदार ईश्वर का भय है। वह धन्य है जो न्याय करता है।"

"ईश्वर की सौगन्ध! यह लोग अपने धैर्य, अपनी शान्ति, अपने त्याग और सन्तोष के कारण न्याय के अवतार बन गये हैं। उनकी नम्रता यहाँ तक बढ़ गई है कि वह किसी को मार डालने के स्थान में स्वयं मारा जाना अधिक पसन्द करते हैं और इस समय इन पृथ्वी भर के पीड़ितों पर वह तत्त्व प्रकट हुआ जो संसार के इतिहास में पहले कभी प्रकट नहीं हुआ, और जिसे लोगों के नेत्रों ने कभी नहीं देखा। अपनी रक्षा के निमित्त एक भी हाथ न उठा कर इन लोगों ने इस प्रकार के भीषण कष्टों को सहन क्यों किया? उनकी इस शान्ति और त्याग का क्या कारण था? यह ईश्वरीय लेखनी से लिखी गई सन्तत शिक्षाएं थीं। क्योंकि उन्होंने संसार के स्वामी की शक्ति और बल के सहारे आज्ञाओं की बागडोर को पकड़ा हुआ था।" (The Epistle to the son of the wolf.)

परिणामों ने बहाउल्लाह की "न सामना करने की नीति" को सारवती प्रमाणित कर दिया है। ईरान में एक एक बहाई बलिदान के बदले नये सौ सौ ने बहाई धर्म ग्रहण किया और जिस निर्भीकता और उत्सुकता से इन शहीदों ने अपने प्रिय जीवन को अपने स्वामी के चरणों पर न्यौछावर किया, उसने संसार के सामने यह सिद्ध कर दिया कि उन्होंने एक ऐसा नवीन जीवन पा लिया था जिसे मृत्यु की विभीषिका डरा नहीं सकती और वह जीवन ऐसे आह्लाद और ऐसे अनुपम विश्वास से पूर्ण था जिसके सामने संसार का आनन्द तुच्छ और कड़े से कड़ा शारीरिक कष्ट वायु से भी लघुतर और क्षुद्र है।

सत्य और धर्म का संग्राम

यद्यपि मसीह के समान बहाउल्लाह ने भी अपने अनुयायिओं को यह आदेश दिया है कि वह व्यक्तिरूप धार्मिक संप्रदाय के रूप से अपने शत्रुओं के साथ न सामना करने और क्षमा करने की नीति का व्यवहार करें, तथापि वह अपने अनुयायिओं का यह भी कर्तव्य बताते हैं कि अत्याचार और अन्याय को दबाने का यत्न करें। यदि किसी एक व्यक्ति पर कोई अत्याचार हो तो उसके लिये उचित है कि वह उस अत्याचारी को क्षमा कर दे और बदला न ले परन्तु किसी जाति या संप्रदाय के लिये यह ठीक नहीं कि वह लूट मार को अपनी सीमा के अंदर विना रोके जारी रहने दे। एक उत्तम सरकार का यह कर्तव्य है कि वह अपराधों का दण्ड दे और यही कर्तव्य जातियों के समुदाय का भी है। यदि एक जाति दूसरी जाति पर अन्याय या अत्याचार करती है तो दूसरी सब जातियों का कर्तव्य है कि वह इस अत्याचार को रोकें। अब्दुल-बहा कहते हैं—

"यह संभव है कि किसी समय लड़ाकू राक्षस प्रकृति के लोग किसी सभ्य जाति पर इस अभिप्राय से आक्रमण करें कि उसके सब मेंबरों का सर्वनाश करके उसका नाम मिटा दें तो ऐसी अवस्था में आत्मरक्षा आवश्यक है।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

आज तक मानव जाति का यह स्वभाव रहा है कि यदि एक जाति दूसरी जाति पर आक्रमण करे तो संसार की अन्य जातियाँ तटस्थ रहती हैं और तब तक ऐसे मामले में हाथ नहीं डालतीं जब तक प्रत्यक्ष रूप से उनके स्वार्थ को धक्का न पहुँचता हो, या धक्का पहुँचाने की धमकी न दी जाये। आत्मरक्षा का भार उसी जाति को चाहे वह कितनी भी दुर्बल या आर्तदशा में हो, उठाना पड़ता था जिस पर आक्रमण किया जाता था। बहाउल्लाह की शिक्षाएँ ऐसे आचरण के सर्वथा विरुद्ध हैं और आत्मरक्षा का भार केवल उसी जाति पर नहीं रखा जाता जिस पर आक्रमण किया गया हो बल्कि सब जातियों को व्यक्तिरूप से और समष्टि रूप से उठाना कर्तव्य कहा गया है, क्योंकि मनुष्यमात्र एक जाति है, इसलिये किसी एक जाति पर आक्रमण सारी जातियों पर आक्रमण के बराबर है और उसका निराकरण भी सभी जातियों का कर्तव्य है। जब उस सिद्धान्त का सर्वसाधारण में अनुसरण होगा तब यदि कोई जाति किसी जाति पर बलप्रयोग करना चाहेगी तो उसे पहले से ही यह मालूम होगा कि उसे केवल एक ही जाति का नहीं बल्कि संसार भर का सामना करना पड़ेगा। अकेला यह ज्ञान ही बड़ी से बड़ी दिलेर और अत्यन्त लड़ने भिड़ने वाली जाति को डराने के लिये पर्याप्त होगा। जब शान्ति-प्रिय जातियों का एक दृढ़ समुदाय बन जायेगा तो युद्ध

एक भूतकाल की बात हो जायेगी। अन्तर्जातीय अशान्ति की भूतकालीन अवस्था से लेकर अन्तर्जातीय पूर्ण शान्ति स्थापित होने के समय तक बलप्रयोग के युद्ध होने की संभावना हो सकती हैं, ऐसी दशाओं में अन्तर्जातीय न्याय, ऐक्य और शान्ति की रक्षा के लिये सैनिक अथवा अन्य आतङ्कपूर्ण उपायों का अनुसरण एक वास्तविक कर्तव्य होगा। अब्दुल-बहा लिखते हैं कि ऐसी दशा में:—

"कभी कभी युद्ध शान्ति का प्रधान कारण और विनाश पुनरुत्थान का कारण हो जाता है। यह संग्राम शान्ति के मधुर संगीत में स्वर संयोग के समान हो, और ऐसे समय में मैं सच कहता हूँ कि यह कठोरता साक्षात् दया और अत्याचार न्याय का सार और युद्ध शान्ति का स्रोत होता है। आज एक शक्तिशाली राजा का सच्चा कर्तव्य यही है कि वह संसार भर में शान्ति स्थापित करे क्योंकि इसका उद्देश्य निःसंदेह संसार भर की जातियों को स्वतन्त्र करना है।"—(Mysterious Forces of Civilization.)

पूर्व और पश्चिम में ऐक्य

एक और सिद्धान्त, जो संसार में पूर्ण शान्ति स्थापित करेगा, वह पूर्व और पश्चिम का एक दूसरे से मिलना है। पूर्ण शान्ति स्थापित करने का उद्देश्य केवल संसार से युद्ध बंद करना ही नहीं बल्कि इसका उद्देश्य पृथ्वी भर के विरोधी दलों में मेल और परस्पर स्नेहपूर्ण सहयोग उत्पन्न करना भी है जिसका फल बड़ा ही कीमती और लाभकारी होगा। पैरिस में बातचीत करते हुए अब्दुल-बहा ने कहा :—

"पहले समय के समान इस समय में भी सत्य का सूर्य सदा पूर्व

से ही उदित हुआ है। मूसा लोगों को शिक्षा देने और मार्ग दिखाने के लिये पूर्व से ही प्रकट हुए। महात्मा मसीह भी पूर्वी आकाश-मण्डल से ही निकले। मोहम्मद साहिब भी पूर्व देश की जाति में से ही प्रकट हुए। महात्मा बाब भी पूर्व के ईरान प्रदेश से ही आविर्भूत हुए। बहाउल्लाह भी पूर्व में रहे और वहीं उन्होंने लोगों को शिक्षा दी। सभी अध्यात्म विद्या के बड़े बड़े अध्यापक पूर्वी संसार से ही प्रकट हुए।"

"यद्यपि मसीह रूपी सूर्य पूर्व से उदय हुआ था तथापि उसका प्रकाश तो पश्चिम में प्रसृत हुआ और वहाँ उसके प्रकाश की वृद्धि पूर्ण रूप में देखी गई। उसकी शिक्षा का ईश्वरीय प्रकाश पश्चिम के संसार में अधिक बल के साथ प्रसृत हुआ जहाँ उसने अपनी जन्मभूमि से बढ़ चढ़ कर उन्नति की।"

"इन दिनों में पूर्व को पदार्थ विद्या में उन्नति करने की और पश्चिम को आध्यात्मिक विद्या में उन्नत होने की आवश्यकता है। यह उचित होगा कि पश्चिम आध्यात्म विद्या प्राप्ति के लिये पूर्व की ओर मुँह मोड़े और उसके बदले में पूर्व को भौतिक विज्ञान दे। इन विद्याओं का अवश्य एक दूसरी से परिवर्तन होना चाहिये। पूर्व और पिश्चम मिलकर एक दूसरे को वह वस्तुएं दें जिनकी उन्हें आवश्यकता है। ऐसा मेल उस सच्ची सभ्यता का सूचक होगा जिसमें आध्यात्मिकता का विकास भौतिक विद्या के बीच से होकर व्यवहार में लाया जायेगा। इस प्रकार एक दूसरे के साथ लेन देन करने से पूर्ण संगठन सिद्ध हो जायेगा, सब जातियां एक हो जायेंगी, एक अद्भुत पूर्णता का लाभ होगा, आपस के प्रेम-बन्धन दृढ़ हो जायेंगे और यह संसार ईश्वरीय महिमा को प्रतिफलित करने के लिये चमकता हुआ दर्पण बन जायेगा।"

"हम सब पूर्व और पश्चिम की जातियों को दिन रात और जान से

इस उच्च आदर्श को कि सब संसार की जातियों में एकता और प्रेम दृढ़ हो जाये, असली जामा पहनाने का पूरा यत्न करना चाहिये। तब प्रत्येक हृदय में आह्लाद होगा, सबकी आँखें खुल जायेंगी, एक अत्यन्त अद्भुत शक्ति प्राप्त होगी और मनुष्यमात्र का आनन्द निश्चित हो जायेगा। यही वह स्वर्ग है जो पृथ्वी पर आने वाला है, जबकि सब मनुष्य इकट्ठे होकर ईश्वरीय राज्य में एकता के तंबू के अंदर जमा हो जायेंगे।"
(Wisdom of Abdul-Baha.)

अध्याय ग्यारहवाँ

अनेक रूप की आज्ञाएँ और शिक्षाएँ

"तुम्हें जानना चाहिये कि सब अवस्थाओं और समयों में समय की आवश्यकता के अनुसार ईश्वरीय आज्ञाएँ परिवर्तित या परिष्कृत हो जाया करती हैं, सिवा प्रेम के नियम के जो एक स्रोत के समान सदा बहता रहता है और कभी परिवर्तित नहीं होता।" (Bahaullah.)

अविवाहित जीवन

मोहम्मद साहिब के समान बहाउल्लाह ने भी अपने अनुयायिओं को अविवाहित जीवन स्वीकार करने का निषेध किया है। तीसरे नैपोलियन को लिखी हुई तख्ती (पत्र) में लिखा है—

"कह दे, ऐ पुरोहितों के समुदाय ! कुटियों में या गुफाओं में अपने आपको बंद न करो बल्कि मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि इन्हें छोड़ दो और उस काम में लग जाओ जो तुम्हारी आत्मा और अन्य सेवकों की आत्मा के लिए हितकर हो।"

"विवाह करो, ताकि तुम मृत्यु के बाद अपने स्थान में किसी को छोड़ जाओ क्योंकि हम तुम को बुराइयों और अपवित्र कामों से रोक कर ईमानदारी के कामों में प्रवृत्त रहने को कहा है। तुम अपने मनमाने सिद्धान्तों को पकड़े बैठे हो और तुमने ईश्वर के सिद्धातों को पीछे फेंक

दिया है। ईश्वर से डरो और मूर्खों जैसे मत बनो। मनुष्य न होता तो मेरी पृथ्वी पर मेरा वर्णन कौन करता और स्वभाव और गुणों का प्रकाश कैसे होता? थोड़ा ध्यान दो और उन में से न हो जिनकी बुद्धियों पर परदा पड़ा है और जो अज्ञान की निद्रा में सोए पड़े हैं। वह (मसीह) जिसने विवाह न किया था, उसे न तो कोई स्थान मिला जहाँ वह रह सकता और न कोई आश्रय मिला जहां वह अपना सिर छुपा सकता, और यह सब लोगों के कामों का फल था जो धूर्त या छलिया हैं। उसकी आत्मा की पवित्रता उन बातों के कारण नहीं थी जो तुम समझे बैठे हो बल्कि उन बातों के सबब से थी जो हम जानते हैं। पूछो, ताकि तुम उसके स्थान को जान सको जो कि संसार भर के निवासियों की कल्पना से ऊपर है। धन्य हैं वह लोग जो जानते हैं।"

क्या यह अद्भुत बात नहीं कि ईसाई फिरकों ने पादरियों के लिये एकान्तवास और अविवाहित जीवन नियत कर दिया है, यद्यपि मसीह ने अपने साथी केवल विवाहित लोग ही चुने थे, और उन्होंने तथा उनके साथियों ने लोगों के साथ मिल जुल कर और साथ रह कर क्रियामय उपयोगिता का जीवन व्यतीत किया?

कुरान में लिखा है:—

"मरियम के पुत्र यसू को हमने अंजील दी और हमने उन लोगों के हृदयों में जिन्होंने इस पर अमल किया, दया और कृपा का भाव भरा। पर उन्होंने अविवाहित जीवन स्वयं अपने लिये स्वीकार किया। हमने तो उनके लिये केवल यह नियत किया था कि वह ईश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा करें पर इसे इन्होंने जैसा चाहिये था वैसा न निभाया।" (Quran, s. lvii, 27.)

अतीत काल में और पिछली अवस्थाओं में अविवाहित जीवन

की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिये कुछ भी कहा गया हो पर बहाउल्लाह कहते हैं कि अब उस श्रेष्ठता का अस्तित्व नहीं, सच भी यही है, क्योंकि यह स्पष्ट बात है कि अच्छे और ईश्वर से भय खाने वाले लोगों की इतनी बड़ी संख्या का अपने जातभाइयों से मेल जोल न रखने और माता पिता के कर्तव्य पालन तथा जिम्मेवारियों से अलग रहने का फल निश्चय ही मनुष्य जाति की आध्यात्मिकता को दुर्बल बनाना होगा।

विवाह

बहाई एक विवाह पर जोर देते हैं, और बहाउल्लाह कहते हैं कि विवाह में कन्या और बालक तथा उनके माता पिता की शर्त होनी चाहिये। 'अक़दस' में उन्होंने लिखा है:—

"निःसन्देह 'बयान' (बाब की बनाई) पुस्तक में विवाह वर और वधू के परस्पर सहमत होने पर ही रखा गया था। क्योंकि हम प्रेम और मैत्री तथा लोगों में ऐक्य उत्पन्न करना चाहते हैं, इसलिये हमने उसके साथ माता पिता की अनुमति की शर्त भी लगा दी है ताकि वैर भाव और मनोमालिन्य पैदा न हो।"

इसी विषय पर एक प्रश्न-कर्ता को उत्तर देते हुए अब्दुल-बहा लिखते हैं:—

"विवाह के विषय में जो प्रश्न किया गया है उसके बारे में ईश्वरीय नियम यह है कि तुम पहले एक स्त्री चुनो और तब संबन्ध की दृढ़ता उसके माता पिता की अनुमति पर निर्भर है। तुम्हारे चुनाव के पहले उन्हें हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं।"—(Tablets of Abdul-Baha, vol. iii, p. 563.)

अब्दुल-बहा कहते हैं कि बहाउल्लाह की इस चेतावनी का फल यह हुआ कि वह मनमुटाव जो ऐसे संबन्धों से ईसाई और मुसलमानों में प्रायः हो जाया करते हैं, बहाईयों में वह लगभग नहीं के बराबर हैं। पत्नी का त्याग (तलाक) भी बहुत कम पाया जाता है। मँगनी के बारे में इन्होंने लिखा है:—

"बहाईयों में मँगनी तब होती है जब दोनों की पूरी स्वीकृति हो और दोनों दलों की हार्दिक संमति हो जाये। दोनों में पूर्ण प्रेम होना आवश्यक है और दोनों को एक दूसरे के आचार व्यवहार से पूरा परिचय होना चाहिये। दोनों के बीच जो प्रतिज्ञाएँ हों वह स्थायी और शाश्वत हों और उनका सार यह हो कि वह दोनों सदा प्रेम-पाश में बंध कर परस्पर मित्रता और ऐक्य बनाये जीवन व्यतीत करेंगे। दुलहिन और कुछ दूसरे लोगों के सामने दूल्हा कहे कि 'निःसन्देह हम ईश्वरेच्छा पर सन्तुष्ट हैं', और दुलहिन इसका उत्तर दे 'निःसंदेह हम ईश्वरेच्छा पर प्रसन्न हैं।"

"बहाई विवाह का अभिप्राय यह है कि स्त्री और पुरुष देह और आत्मा में एक हो जायें ताकि सभी ईश्वरीय संसारों में उन में एकता सदा बनी रहे और एक दूसरे के आध्यात्मिक जीवन को उन्नत करने में सहायता दें। यह है बहाई विवाह संबन्ध।"—(Tablets of Abdul Baha, vol. ii, p. 325.)

पत्नी-त्याग (तलाक)

विवाह के समय त्याग (तलाक) के विषय में भी समय की आवश्यकताओं के अनुसार पैगंबरों की शिक्षाएँ बदलती रही हैं। स्त्री-त्याग के संबन्ध में बहाई शिक्षाओं का वर्णन अब्दुल-बहा इस प्रकार करते हैं:—

"बहाईयों को तलाक से सर्वथा दूर रहना चाहिये जब तक कि कोई विशेष कारण उपस्थित न हो जो उन्हें एक दूसरे से इस आधार पर पृथक हो जाने में विवश करे कि वह एक दूसरे से घृणा करते हैं। ऐसी अवस्था में आध्यात्मिक सभा को सूचना देकर वह पृथक होने का निश्चय कर सकते हैं। फिर वह दोनों पूरे एक वर्ष तक धैर्य से प्रतीक्षा करते रहें। यदि एक वर्ष के भीतर उनमें फिर से स्नेहानुबन्धन न हो जाय तो उनका परित्याग निश्चित समझा जाये। ईश्वरीय राज्य की नींव स्नेह और सद्भाव तथा ऐक्य संबन्धिता और संगठन पर रखी गई है, भेदभाव पर नहीं, विशेष कर पति और पत्नी के बीच में। यदि इन दोनों में एक त्याग (तलाक) का हेतु बनता है तो वह निःसन्देह बड़ी कठिनाइयों में फँसेगा, बड़ी भयंकर विपदाओं का शिकार होगा और बड़ा दुःख भोगेगा।"—(Tablet to the Baha'is of America.)

अन्य बातों के समान तलाक के विषय में भी बहाई लोगों को बहाई शिक्षाओं के अतिरिक्त उस देश के नियमों का भी अवश्य पालन करना होगा जिसमें वह रहते हैं।

बहाई कॅलेंडर (पंचांग)

भिन्न लोगों में और भिन्न समयों में समय विभाग और तिथियों के निश्चित करने के लिये भिन्न रीतियाँ व्यवहार में लाई गई हैं और कुछ एक भिन्न भिन्न कॅलेंडर अब भी दैनिक व्यवहार में आरहे हैं, जैसे योरप के पश्चिम में ग्रेगोरी, योरप के पूर्व में जूलियन, यहूदियों में हिब्रू, और मुसलमान जातियों में महम्मदी।

महात्मा बाब ने उस दौर का जिसकी सूचना देने को वह आये थे, एक नया कॅलेंडर रचकर बड़े महत्त्व का काम किया। ग्रेगोरी कॅलेंडर की तरह इसमें भी चान्द्र मास का त्याग करके सौर वर्ष स्वीकार किया है।

बहाई वर्ष के १६ महीने हैं और प्रत्येक महीने के १६ दिन है (अर्थात् साल के कुल ३६१ दिन हैं) और इसके साथ अठारहवें और उन्नीसवें महीने के बीच वर्ष को पूरा करने के लिये लोंद के दिन हैं (जो आमतौर पर चार, पर लोंद के वर्ष में पाँच होते हैं।) बाब ने महीनों के नाम ईश्वर के नाम पर रखे हैं। बहाईयों का वर्षारम्भ (नया दिन) प्राचीन ईरानियों के नवरोज़ के समान ज्योतिष के आधार पर निश्चित किया गया है, अर्थात् उत्तरायण के मध्यदिवस (March Equinox—२१ मार्च) से उसका आरम्भ होता है। बहाई युग का आरम्भ उस वर्ष से है जिस वर्ष में बाब ने घोषणा की थी। (ई० स० १८४४, हि० स० १२६०।)

वह समय दूर नहीं जबकि संसार की सब जातियों को एक ही कॅलेंडर स्वीकार करना पड़ेगा।

इसलिये यह उचित प्रतीत होता है कि एकता का नया युग एक ऐसा कॅलेंडर स्वीकार करे जो आपत्तियों और कठिनाइयों से रहित हो जिनके कारण संसार का एक बहुत बड़ा भाग इन्हें स्वीकार नहीं करता और यह असम्भव है कि बाब के बनाये वर्तमान कॅलेंडर से बढ़कर कोई दूसरा सादा और सुविधा का कॅलेंडर निर्दिष्ट किया जा सके।

बहाई कॅलेंडर के महीने इस प्रकार हैं।

महीने	अरबी नाम	अनुवाद	आरम्भ के दिन
पहला	बहा	चमक	मार्च २१
दूसरा	जलाल	शोभा	एप्रिल ९
तीसरा	जमाल	सौन्दर्य	एप्रिल २८
चौथा	अज़्मत	गौरव	मई १७
पाँचवाँ	नूर	ज्योति	जून ५
छठा	रहमत	दया	जून २४
सातवाँ	कलमात	वचन	जुलाई १३
आठवाँ	कमाल	पूर्णता	अगस्त १
नौवाँ	असमा	नाम	अगस्त २०
दसवाँ	इज़्ज़त	बल	सितंबर ८
ग्यारहवाँ	मशीयत	इच्छा	सितंबर २७
बारहवाँ	इल्म	ज्ञान	अक्तूबर १६
तेरहवाँ	कुदरत	शक्ति	नवंबर ४
चौदहवाँ	कौल	भाषण	नवंबर २३
पन्द्रहवाँ	मसाइल	प्रश्न	दिसंबर १२
सोलहवाँ	शरफ़	सम्मान	दिसंबर ३१
सत्रहवाँ	सुलतान	साम्राज्य	जनवरी १९
अठारहवाँ	मुल्क	देश	फरवरी ७
	लौंद के दिन	२६ फरवरी से	१ मार्च तक हैं।
उन्नीसवाँ	अला	उच्चता	मार्च २

आध्यात्मिक सभाएँ

अपना सांसारिक जीवन पूरा करने से पहले अब्दुल-बहा ने

बहाउल्लाह की वाणी मे बताई हुई पार्वन्धिक संस्थाओं की नींव रख दी थी। आध्यात्मिक सभाओं के महत्त्व को दर्शाने के लिए अब्दुल-बहा ने आज्ञा दी कि अमुक अनुवाद को छपवाने से पहले कैरो (मिसर देश) की आध्यात्मिक सभा की स्वीकृति प्राप्त करनी चाहिये, यद्यपि आप ने उसे स्वयं देखा था और उस का संशोधन किया था।

आध्यात्मिक सभा का तात्पर्य ६ आदमियों की एक पार्बन्धिक संस्था है जिसे स्थानिक बहाई लोग प्रति वर्ष चुना करेंगे। इस संस्था को यह अधिकार प्राप्त होगा कि बहाईयों के पारस्परिक मामलों का निर्णय किया करे। यह नाम अस्थायी है क्योंकि भावी काल में आध्यात्मिक सभाओं का नाम "न्यायालय" होगा।

गिरजों के प्रबन्ध की अपेक्षा भिन्न रूप से बहाईयों की यह संस्थाएँ धर्म संबन्धी होने के स्थान में सामाजिक रूप की हैं, अर्थात् वह बहाईयों के बीच जो झगड़े व मामले उत्पन्न हों उन का निर्णय आपस में सलाह करके करती हैं। बहाईयों को अपने झगड़ों को सिवल की अदालत में लेजाने की मनाही है। आध्यात्मिक सभाएँ सब बहाईयों में एकता और न्याय का संचार करने की जिम्मेदार हैं। आध्यात्मिक सभा किसी प्रकार भी पादरियों के महकमे के समान नहीं हैं बल्कि इसका काम धर्म का प्रचार करना, बहाईयों को सेवाभाव की ओर रुचि दिलाना, जलसों का प्रबन्ध करना, एकता बनाए रखना, बहाई माल जायदाद की संभाल करना और दूसरी बहाई संस्थाओं और सरकारी मामलों में अपनी संस्था का प्रतिनिधित्व करना है।

स्थानिक और जातीय आध्यात्मिक सभाओं का पूर्ण रूप

अन्तिम अध्याय में समूचे रूप से वर्णन किया गया है, जिस में कि अब्दुल-बहा के वसीयतनामे का वर्णन है किन्तु इसका साधारण काम शौक़ी अफ़ेन्दी ने यूँ बताया है:—

"धर्म का प्रचार करना, इसके ढंग और साधन सोचना, इसको फैलाना, इसको दृढ़ करना यद्यपि धर्म के हितार्थ परमावश्यक है, फिर भी यही एक काम नहीं जिस पर आध्यात्मिक सभाएँ अपना सारा ध्यान लगा दें। ईश्वरावतार बहाउल्लाह और महात्मा अब्दुल-बहा की तख्तियों (पत्रादि) को यदि ध्यान पूर्वक पढ़ें तो प्रतीत होगा कि धर्म के हितार्थ और भी आवश्यक कर्तव्य हैं जो प्रत्येक स्थान की आध्यात्मिक सभाओं को पालन करने चाहियें।"

"उनके लिए यह अनिवार्य है कि वह जागृत और सावधान रहें और भले बुरे की जांच रक्खें, सचेत रहें और शत्रुओं और विघ्न डालने वालों के आक्रमणों से धर्म की रक्षा करें।"

"उन्हें बहाईयों में प्रेम और एकता बढ़ाने का यत्न करना चाहिये और सब के चित्तों से अविश्वास, अप्रेम और परायेपने के भाव को मिटा दें और इसके स्थान में धर्म की सेवा के लिए सच्चा और क्रियात्मक पारस्परिक सहायता का भाव उत्पन्न करें।"

"उन्हें दीनों, दुखियों, नाकारा लोगों, अनाथों, विधवाओं की सेवा के लिए सदा ही भरकस यत्न करना चाहिये, चाहे वह किसी भी वर्ण, जाति या मत के हों।"

"उनको चाहिये कि वह जैसे भी बन पड़े प्रत्येक साधन से नवयुवकों की प्राकृतिक और आत्मिक उन्नति और बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध करें और जब सम्भव हो बहाई विद्यालय स्थापन करें और उन की देख रेख करें और उनकी उन्नति के लिए सर्वोत्तम साधन जुटाएँ।"

"उन्हें चाहिये कि वह बहाईयों के बाकायदा जलसों का और त्योहारों और वार्षिकोत्सवों का प्रबन्ध करें और मनुष्य मात्र के सामाजिक, मानसिक और आत्मिक लाभार्थ विशेष रूप की सभाएँ कराएँ ।"

"उन्हें चाहिये कि वर्तमान समय में जब कि धर्म अपने बालापन में है तमाम बहाई पुस्तकों और अनुवादों की देख भाल करें और सर्व साधारण के बीच बहाई पुस्तकों को पात्र लोगों में सम्मान पूर्वक बाँटें ।"

बहाई संस्थाओं के अन्दर जो शक्तियाँ हैं उनका ज्ञान भली भान्ति तभी प्राप्त होता है जब हम अनुभव करते हैं कि वर्तमान सभ्यता उस आत्मिक बल के अभाव के कारण कितनी शीघ्रता पूर्वक छिन्न-भिन्न हो रही है जो अकेला जिम्मेदारी का भाव और नेताओं के प्रति नम्रता और समाज के प्रत्येक सदस्य के प्रति यथायोग्य वफ़ादारी उत्पन्न करता है ।

बहाई त्योहार, वार्षिकोत्सव और उपवास (व्रत) के दिन

रिज़वान (बहाउल्लाह के प्रकट होने का दिन), २१ अप्रैल से २ मई सन् १८६३ ई० तक ।

नौरोज़ (नया वर्ष), २१ मार्च ।

बाब के प्रकट होने का दिन, २३ मई सन् १८४४ ई०

कावेनंट का दिन (अब्दुल-बहा के पदग्रहण करने का दिन), २६ नवंबर ।

बहाउल्लाह का जन्म दिन, १२ नवम्बर सन् १८१७ ई० ।

बाब का जन्म दिन, २० अक्तूबर सन् १८१६ ई० ।

अब्दुल-बहा का जन्म दिन, २३ मई सन् १८४४ ई० ।

बहाउल्लाह का परलोक गमन, २६ मई सन् १८६२ ई० ।

बाब का धर्म पर बलिदान, ६ जुलाई सन् १८५० ई० ।

अब्दुल-बहा का परलोक गमन, २८ नवम्बर सन् १६२१ ई० ।

उपवास के १६ दिन हैं जो अला के प्रथम दिन अर्थात् २ मार्च से आरम्भ होकर १६ दिन रहते हैं और इनके अन्त होने पर नौरोज़ होता है।

सहभोज

बहाई धर्म का आवश्यक आमोद प्रमोद साल में कई सहभोजों और त्योहारों द्वारा हुआ करता है। १६१२ में मिस्र देश के सिकंदरिया नगर में नौरोज़ पर वार्तालाप करते हुए अब्दुलबहा ने कहा थाः—

"प्रत्येक दौर और नये बँटवारे के समय उत्सव त्योहार और छुट्टियों के दिन ईश्वरीय पवित्र नियमों के अनुसार नियत किये जाते हैं। ऐसे दिनों में सभी वाणिज्य, शिल्प और कृषि कार्य आदि बंद रखने चाहियें। सब मिलकर आनन्द मनायें, जलसे करें, एक समूह बन जायें जिससे जातीय एकता, सहयोग और प्रेम संबन्ध सब के नेत्रों के सामने प्रकाशित हो।"

"क्योंकि यह एक पवित्र दिन होता है, इसलिये न हो तो इसकी उपेक्षा करनी चाहिये न और इसे केवल भोगविलास में बिता कर इसके शुभ फलों से वञ्चित होना चाहिये।"

"इन दिनों में ऐसे कामों की नींव डाली जाये जो लोगों के लिये सदा लाभकारी और मूल्यवान् हों।"

"आज के दिन लोगों को सिखाने के अतिरिक्त और कोई बड़ा परिणाम या फल नहीं है। ईश्वरीय धर्म के प्रेमी सज्जन ऐसे दिनों में निःसन्देह ऐसे स्थायी और लाभकारी काम किया करेंगे जो न केवल बहाईयों के लिये बल्कि सभी जातियों के मनुष्यों के लिए लाभकारी हुआ करेंगे। इस चमत्कार पूर्ण दौर में परोपकार के काम बिना किसी

पक्षपात के मनुष्यमात्र के लिए होते हैं, क्योंकि यह ईश्वरीय दया का प्रकाश (अवतार) है। इसलिए मुझे आशा है कि ईश्वर के मित्रों (बहाई लोगों) में प्रत्येक व्यक्ति मनुष्यमात्र के लिए ईश्वरीय दया का स्वरूप बन जाये।"

नौरोज़ और रिज़वान के सहभोज, बाब और बहाउल्लाह के जन्म दिन के महोत्सव, बाब की घोषणा का दिन (जो अब्दुल-बहा के जन्म दिन भी है) वर्ष में बहाईयों के आनन्द मनाने के दिन (ईदें) हैं। ईरान में यह दिन बागों में जाकर प्रीतिभोजों और आमोद प्रमोद के जलसों में बिताये जाते हैं, जहाँ गाना बजाना होता है, तख्तियाँ (पत्र) और श्लोक पढ़कर सुनाए जाते हैं और उपस्थित सज्जनों के तैयार किये समयोपयोगी संक्षिप्त भाषण भी होते हैं। अठारहवें और उन्नीसवें महीने के भीतर जो लोंद के दिन पड़ते हैं (अर्थात् २६ जरवरी से पहली मार्च तक) उनमें विशेष रूप से बहाईयों का अतिथ्य और सत्कार किया जाता है, भेंटें दी जाती हैं और ग़रीबों और बीमारों की सेवा की जाती है।

बाब के शहीद होने का दिन, और बहाउल्लाह तथा अब्दुल-बहा के प्रयाण के दिन भी बड़ी गम्भीरता से मनाये जाते हैं। जलसे किये जाते हैं और उनमें समयोपयोगी भाषण होते हैं तथा तख्तियाँ और प्रार्थनाएँ पढ़कर सुनाई जाती हैं।

व्रत

लोंद के दिनों के सहभोजों के बाद उन्नीसवाँ महीना व्रतों (रोज़ों) का महीना। इन उन्नीस दिनों में व्रत रखे जाते हैं और सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक खाना पीना सर्वथा बंद रखा जाता

है। व्रतों का महीना क्योंकि उत्तरायण के मध्य दिवस पर समाप्त होता है इसलिये व्रत (उपवास) सदा एक ही मौसम में आते हैं, अर्थात् यह समय शीत और ग्रीष्म का मध्यवर्ती समय होता है। यह व्रत हेमन्त के अत्यधिक शीत और ग्रीष्म के अति कठोर घाम में, जबकि लाभ के स्थान हानि होने की अधिक संभावना होती है, कभी नहीं आते। इसके अतिरिक्त इस मौसम में दिन और रातें सारे भूमण्डल में एकसी होती हैं अर्थात् छः बजे प्रातः सूर्योदय और छः ही बजे सायं सूर्यास्त होता है। छोटे बच्चों, बीमारों, यात्रियों, बहुत बूढ़ों, बहुत निर्बलों, गर्भवती और नव प्रसूता स्त्रियों के लिये व्रत रखना आवश्यक नहीं।

इस बात को सिद्ध करने के लिये कि यह व्रतों के दिन जो बहाई शिक्षा में नियत किये हैं, शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यन्त हितकर हैं, अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं, परन्तु जिस प्रकार बहाई सहभोजों का उद्देश्य केवल उत्तम खाद्य पदार्थों का अशन नहीं बल्कि इसका उद्देश्य ईश्वर की स्मृति है जो कि हमारा आध्यात्मिक भोजन है, इसी प्रकार बहाई व्रतों का उद्देश्य भी केवल भोजन न करना ही नहीं। यद्यपि यह उपवास देह को पवित्र करने में बड़ी सहायता देता है—बल्कि इसका उद्देश्य विषय-वासना से मुक्त होना और ईश्वर के बिना बाकी सभी बातों से विरक्त होना है। अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"व्रत एक चिह्न है। व्रत का अभिप्राय विषय वासना से रहित होना है। दैहिक उपवास इस निवृत्ति का एक स्मृति चिह्न मात्र है। अर्थात् जिस प्रकार एक मनुष्य अपने पेट की वासना को रोक सकता है उसी प्रकार उसे सभी इन्द्रियों की वासनाओं को रोकना चाहिये। परन्तु केवल भोजन न करने का आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह

तो केवल एक चिह्न या स्मृतिमात्र है। इसके अतिरिक्त उसका और कोई महत्त्व नहीं। व्रत का हेतु नहीं कि भोजन सर्वथा न खाया जाये । भोजन करने का सुनहरा नियम यह है कि मनुष्य बहुत अधिक या बहुत कम न खाये । मध्यम दशा आवश्यक है। भारत में एक संप्रदाय है जो भोजन को सर्वथा त्याग देने का अभ्यास करता है । वह भोजन को घटाते घटाते यहाँ तक पहुँच जाते हैं कि सर्वथा भोजन नहीं करते । परन्तु इससे उनकी मेधाशक्ति बहुत क्षीण हो जाती हैं। जो आदमी भोजन न करने के कारण दुर्बल हो गया है वह ईश्वर की न देह से और न बुद्धि से ही कोई सेवा कर सकता है। वह कुछ भी ठीक रूप से नहीं समझ सकता।" (quoted by Miss E. S. Stevens in Fortnightly Review, June 1911.)

मीटिंग

अब्दुल-बहा ने इस बात पर बड़ा जोर दिया है कि बहाई भक्त मीटिंग किया करें, एक स्थान में इकट्ठे होकर ईश्वराराधना किया करें, धर्म शिक्षाओं का अध्ययन और उस पर ऊहापोह किया करें और प्रचार की उन्नति के विषय में मन्त्रणा किया करें। अपनी एक तख़्ती (पत्र) में उन्होंने लिखा है:—

"ईश्वर की इच्छा के अनुसार यह निश्चय किया गया है कि ईश्वरीय मित्रों और दयासागर के सेवकों में प्रतिदिन एकता और सहयोग की वृद्धि होती जाये। जब तक यह दशा प्राप्त न होगी तब तक किसी काम में भी अन्य प्रकार से उन्नति न होगी। एकता और सहयोग की वृद्धि का सब से बड़ा साधन आध्यात्मिक सभाएं हैं। यह बात बड़े महत्त्व की है और ईश्वरीय अनुमति को आकृष्ट करने के लिये चुम्बक के समान है।"—(Tablets of Abdul-Baha, vol. i, p. 125.)

बहाईयों की आध्यात्मिक सभाओं की बैठकों में राजनैतिक और सांसारिक विषयों पर तर्क प्रयोग या वादविवाद न करना चाहिये। भक्तों का एकमात्र उद्देश्य यह होना चाहिये कि वह ईश्वरीय सत्य को सीखें और सिखायें, अपने हृदयों में ईश्वरीय प्रेम भरें, ईश्वराज्ञा का पालन अधिक पूर्णता से करें, और राम-राज्य को लाने में यत्नशील हों। सन् १९१२ में न्यूयार्क में किये एक भाषण में अब्दुल-बहा ने कहा थाः—

"बहाईयों की मीटिंग दिव्य समुदाय की मीटिंग होनी चाहिए। यह सभा दिव्य समुदाय के प्रकाश से प्रकाशित हो। हृदय दर्पण के समान हों जिनमें ईश्वरीय सत्य के सूर्य का प्रकाश प्रतिफलित हो। प्रत्येक सीना एक तारघर के समान हो जिसमें तार का एक सिरा अपनी छाती में और दूसरा दिव्य समुदाय में हो, जिससे दोनों के बीच संदेश आ जा सके। इस प्रकार 'अब्हा' के राज्य के लक्षण प्रकट होंगे और सभी ऊहापोहों में प्रेम की अभिव्यक्ति बलवती होगी। जितना सहयोग ऐक्य और प्रेम तुम में अधिक होगा उतनी ही अधिक ईश्वरीय अनुमति तुम्हारी सहायक होगी और ईश्वरीय सौन्दर्य अर्थात् बहाउल्लाह का साहाय्य और सहकारिता भी उतनी ही अधिक तुम्हारे साथ होगी।"

एक तख्ती (पत्र) में इन्होंने कहा है:—

"इन मीटिंगों में अप्रासङ्गिक वार्तालाप सर्वथा न होने चाहिएं। श्लोकों का उच्चारण और वाणी का पढ़ना ही इसकी परिधि हो और इसमें वही बातें हों जिनका धर्म प्रचार से संबन्ध हो, अर्थात् प्रमाणों की व्याख्या हो, प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रमाण उपस्थित किये जायें, और जीवों के प्रियतम के चिह्न खोज निकाले जाएं। मीटिंग में प्रविष्ट होने वालों को चाहिये कि वह मीटिंग में आने से पूर्व अपने आप को साफ सुथरा

बना लें और अपने मन को 'अब्हा' राज्य की ओर लगा लें तब बड़ी नम्रता और कोमलता के साथ मीटिंग में प्रविष्ट हों और जब तखतियाँ (पत्र) पढ़ी जायें उस समय शान्ति और मौनभाव से बैठें, यदि कोई भाषण करना चाहता हो तो बड़े विनय के साथ उपस्थित व्यक्तियों की अनुज्ञा लेकर स्पष्ट और प्रावाहिक भाषण करे।"

उन्नीसवें दिन का सहभोज

अब्दुल-बहा के परलोक गमन के बाद से बहाई विधान की उन्नति के साथ साथ उन्नीसवें दिन के सहभोज को, जो प्रत्येक बहाई मास के प्रथम दिन मनाया जाता है, विशेष महत्त्व प्राप्त हो गया है, क्योंकि इसमें न केवल सब बहाई मिल कर प्रार्थना करते हैं और सद्ग्रन्थों का पाठ करते हैं बल्कि सारी उपस्थित समस्याओं के संबन्ध में सलाह करते हैं। इसी सहभोज के अवसर पर आध्यात्मिक सभा सारे समाज को अपनी रिपोर्ट देती है और सेवा के लिए नए और उत्तम ढंगों की योजनाओं के संबन्ध में बातचीत करती है।

मश्रिकुल अज़्कार (प्रार्थना मंदिर)

बहाउल्लाह की आज्ञा है कि उसके अनुयायी प्रत्येक देश और नगर में प्रार्थना मन्दिर बनवायें। इन मन्दिरों को वह "मश्रिकुल-अज़्कार" के नाम से पुकारते हैं, इसका अर्थ है "ईश्वर की स्तुति के प्रकाश की अभिव्यक्ति का स्थान।" मश्रिकुल अज़्कार एक नौ द्वारों का भवन है जिस पर एक गुंबद है, निर्माण और शिल्प में जहाँ तक हो सके अत्यन्त सुन्दर है। यह एक बड़े बाग में, जिस में फुहारे लगे हों और वृक्ष और फूल लहलहाते हों, बनाई जाये। इसके आस पास दूसरे भवन भी हों, जिन में

शिक्षा, दान, और अन्य प्रकार के जातीय कार्य हुआ करें, ताकि मन्दिरों में ईश्वर की प्रार्थना के साथ साथ प्रकृति के सौन्दर्य में आत्मिक प्रकाश, कला कौशल की वृद्धि और जातीय अवस्था के सुधार का अमली काम भी होता रहे।

ईरान में बहाईयों को मश्रिकुल-अज़कार बनाने की आज्ञा अब तक नहीं मिली, और इसलिए पहली मश्रिकुल-अज़कार इश्काबाद (रूस) में बनाई गई।

मश्रिकुल-अज़कार के संबन्ध में टेनिसन की पंक्तियाँ याद आती हैं जिनका यहाँ लिख देना बड़ा रोचक होगाः—

"मैंने स्वप्न में देखा है कि पत्थर पर पत्थर रखकर मैंने एक पवित्र भवन तैयार किया, जो न मन्दिर न मसजिद न गिरजा था पर वह इनसे अधिक प्रभावशाली और असाधारण था। इसके द्वार सदा खुले रहते थे, जिससे दिव्य समीर का इसमें संचार हो और सत्य, प्रेम, शान्ति, न्याय आयें और इसमें यह सब आकर निवास करें।" (Akbar's Dream 1892.)

बहाईयों का दूसरा मन्दिर चिकागो (Chicago) के उत्तर में कुछ मील पर झील मिशीगान के तट पर हुआ है। इसका नक़शा लूई बोरजी ने तैयार किया था और इसकी सुन्दर बनावट की ख्याति दूर दूर तक फैल गई है। सन् १९१२ में जब अब्दुल-बहा अमेरीका में थे तो उन्होंने इसका शिलान्यास किया था। शिलान्यास करने के १९ वर्ष पीछे सन् १९३१ में मन्दिर बनकर तैयार हो गया था। इस मन्दिर का नक़शा बनाने वाले के नक़शे के अनुआर इसकी बाहर की चित्रकारी बनावटी पत्थरों द्वारा की गई है जो एक नए ढंग द्वारा हाथ से खोदे हुए साँचों में ढाल कर

बनाए गए हैं। इस प्रकार जो चित्रकारी बनी है वह बड़ी गूढ़ और सुन्दर है और असली पत्थर की अपेक्षा अधिक चिरस्थायी है। सन् १६३५ में इसका कलश बनकर तैयार हो गया था। ईरान के बहाईयों ने भी हाल ही मश्रिकुल अज़कार के लिए एक ऐसा स्थान लिया है जहाँ से तहरान नगर दिखाई पड़ता है।

इस पश्चिम के आदि मदिन्र के संबन्ध में लिखते हुए अब्दुल-बहा फरमाते हैं:—

"ईश्वर की कृपा है कि इस समय संसार के सब देशों से अपनी अपनी शक्ति अनुसार अमेरिका में मश्रिकुल-अज़कार के फण्ड के लिये चन्दे लगातार आ रहे हैं। आदम से लेकर आज तक मानव जाति ने ऐसी बात कभी नहीं देखी कि एशिया के सुदूरवर्ती प्रदेशों से अमेरिका में चन्दे भेजे गये हों। यह सब ईश्वरीय प्रतिज्ञा के द्वारा हुआ है। निःसन्देह यह बात विचारवान् पुरुषों के विस्मय का कारण बन रही है। आशा है कि ईश्वर के भक्त हिम्मत से काम लेंगे और भवन के लिए बहुत सा धन एकत्र करेंगे। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक आदमी अपनी इच्छानुसार काम करने में स्वतन्त्र हो। यदि कोई किसी विभाग में द्रव्य खर्च करना चाहे तो वह करे। उससे किसी प्रकार का झगड़ा न करें परन्तु इस बात का खयाल रखा जाये कि इस समय मश्रिकुल अज़कार का निर्माण बड़े महत्त्व का काम है।"

"मश्रिकुल-अज़कार में नौ तरफें, द्वार, फवारे, रास्ते, फाटक, बाग, फर्श, बरामदे और गुंबज़ होने चाहियें और उसकी बनावट सुन्दर होनी चाहिये। इस भवन का रहस्य बहुत बड़ा है, परन्तु यह इस समय प्रकट नहीं किया जा सकता। इस समय उसका निर्माण बहुत आवश्यक और प्रधान कार्य है। मश्रिकुल अज़कार के साथ दूसरे सहायक भवनों

का होना भी आवश्यक है, इनके बिना मश्रिकुल-अज़कार पूर्ण नहीं समझा जा सकता। वह भवन यह हैं, अनाथ बच्चों के लिये स्कूल, गरीबों के लिये चिकित्सालय और औषधालय, अपाहजों के लिये घर और विज्ञान की उच्च शिक्षा के लिये विद्यालय (College) तथा अतिथिशाला। इस आज्ञा के अनुसार प्रत्येक नगर में एक बड़ी मश्रि-कुल-अज़कार अवश्य बनवाई जानी चाहिये। मश्रिकुल अज़कार में प्रतिदिन प्रभात के समय प्रार्थना हुआ करेगी। मन्दिर में कोई वाद्यन रखा जायगा। साथ के भवनों में आनन्दोत्सव, सेवा प्रार्थना गोष्ठियां अधिवेशन और आध्यात्मिक सत्संग हुआ करेंगे परन्तु मन्दिर में पद्यों का उच्चारण और गाना विना बाजे के हुआ करेगा। तुम मन्दिर के द्वार मनुष्य मात्र के लिये खोल दो।"

"जब स्कूल, विद्यालय, अतिथिशाला, असाध्य रोगियों के लिये वासभवन, उच्च श्रेणी के विज्ञान का अध्ययन करने के लिये विश्वविद्या-लय (University) और दूसरी सर्व साधारण के हित और उपकार के लिये इमारतें बन जायेंगी तो सब जातियों और धर्मों के लिये द्वार खोल दिये जायेंगे। किसी प्रकार का भेदभाव सर्वथा न रखा जायेगा। इसके दान कार्य विना किसी वर्ण और जाति का पक्षपात किये सम्पन्न किये जायेंगे। इसके द्वार मनुष्य मात्र के लिये खुले रहेंगे, किसी के साथ पक्षपात न होगा, सबसे समान प्रेम किया जायेगा। मध्यवर्ती भवन प्रार्थना और आराधना के लिये ही नियत रहेगा। इस प्रकार धर्म और विज्ञान का मेल हो जायगा, और विज्ञान धर्म के अधीन हो कर कार्य करेगा, और दोनों मिल कर मानव संसार को अपने भौतिक और आध्यात्मिक लाभ पहुँचायेंगे।"

मृत्यु के अनन्तर जीवन

बहाउल्लाह कहते हैं कि यह मांसमय शरीर का जीवन हमारे अस्तित्व की अधूरी कक्षा है और शरीर त्याग एक नये जन्म के समान है जिसके द्वारा मनुष्य की आत्मा पूर्णतर और अधिक स्वतन्त्र जीवन में प्रवेश करती है। उन्होंने लिखा है:—

"जान लो कि आत्मा मृत देह से पृथक होकर ऊपर को चढ़ती चढ़ती ईश्वर के सामने जा पहुँचती है, एक ऐसे रूप में कि इस पृथ्वी में पैदा होती फेर बदलीयां या काल चक्र के इन्किलाब उसे बदल नहीं सकते। वह ईश्वर की राज्य-शक्ति और बल की नित्यता के समान सदा स्थायी रहती है और उससे ईश्वर के चिह्न, गुण, दीर्घ दृष्टि और प्रसाद प्रकट होंगे। वह दैविक चिह्न तथा गुण प्रकट करेगी और उसकी माया तथा उदारता दर्शाएगी। मेरी लेखनी अशक्त कि उस महान पद का वर्णन कर सके। ईश्वर के कृपामय हाथ से वह आत्मा एक ऐसे स्थान में पहुँचाई जायेगी जो वर्णन से बाहर है और जिसे कोई सृष्टि का जीव जान नहीं सकता। धन्य है वह आत्मा जो जातियों के भ्रम संशयों से रहित, बड़ी पवित्र हो कर देह से पृथक होती है। निःसन्देह यह ईश्वर की पवित्र इच्छा के वायुमण्डल में विहार करती हैं और स्वर्ग की ऊंची कक्षा में प्रविष्ठ होती हैं। स्वर्ग के सब देवदूत इसकी सेवा करते और इसे घेरे रहते हैं और यह ईश्वरीय अवतारों और महात्माओं से मिलती और उनके साथ बातचीत का सौभाग्य प्राप्त करती और उन्हें संसार के स्वामी ईश्वर के धर्म प्रचार के कार्य में आप बीती सुनाती है।"

"यदि किसी को इस बात का ज्ञान हो सके कि पृथ्वी और आकाश के स्वामी ईश्वर के राज्य में कितना उच्च पद प्राप्त होता है तो वह झट बड़ी उत्कण्ठा से उस अमर, उच्च, पवित्र और प्रकाशमय स्थान की

प्राप्ति के लिये सदा अशान्त रहने लग जावे। आत्मा का स्वरूप क्या होगा, इसका न तो वर्णन ही हो सकता है और न इसके वर्णन की कोई आवश्यकता है, केवल कुछ बातों का जान लेना आवश्यक है। ईश्वरावतार जीवों को मार्ग दिखाने और उन्हें शिक्षित करने आते हैं। उनके प्रकट होने का खास हेतु यह है कि मनुष्य मात्र को शिक्षण दिया जाये ताकि मृत्यु समय प्रभु की ओर तमाम पवित्र और निर्मोह रूप में पहुँच सकें।"

"उन्हीं ऊपर चढ़ी आत्माओं की किरणें लोगों के विकास और जातियों की महत्ता का कारण बनती हैं। वह उस खमीर के समान हैं जो इस पृथ्वी को नया जीवन देता है और जीव द्वारा नये नये शिल्प ज़ाहेर होते हैं। इन्हीं द्वारा बादल कृपा वर्षाते हैं और विविध फल पैदा होते हैं। प्रत्येक वस्तु के लिये एक कारण, प्रेरणा और अस्तित्व का सबब होता है। यह आत्माएँ इस संसार के अस्तित्व का मूल कारण रही हैं और रहेंगी।"

"इस पृथ्वी से आगे की दुनिया में इतनी तो निराली है जितनी यह दुनिया उस दुनिथा से जो एक बालक गर्भ में पाता है।"—(Gleanings.)

इसी प्रकार अब्दुल-बहा लिखते हैं:—

" मनुष्य इस पार्थिव संसार में जिन रहस्यों को नहीं जानता वह सब रहस्य दिव्य संसार में उसे ज्ञात हो जायेंगे और वहां उसे सत्य के सब रहस्य बताये जायेंगे। फिर वह लोगों को अच्छी तरह पहचान जायेगा कि जिनके साथ वह रहा करता था। इसमें सन्देह नहीं कि वह पवित्र आत्माएँ जो पवित्र दृष्टि पा लेती हैं और अन्तर्दृष्टि प्राप्त करती हैं, प्रकाशके राज्य में सब रहस्यों से परिचित हो जाती हैं और प्रत्येक बड़ी

आत्मा के तत्व के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करती हैं। वह उस संसार में ईश्वर के सौन्दर्य का प्रत्यक्ष दर्शन करेंगी। इस प्रकार वह दिव्य गोष्ठी में उपस्थित सब नये और प्राचीन समय के ईश्वरीय मित्रों से मेल करेंगी।"

"मनुष्यों में भेद और तारतम्य उस समय स्वभावतः प्रतीत हो जायगा जब उनका इस नश्वर संसार से प्रयाण होगा। परन्तु यह तारतम्य स्थानीय नहीं बल्कि आध्यात्मिक और भावात्मक है। क्योंकि ईश्वरीय राज्य समय और स्थान से परे है, यह दूसरा संसार और दूसरी सृष्टि है। तुम निश्चय जानों कि ईश्वरीय संसार में आध्यात्मिक प्रियजन एक दूसरे को पहचानेंगे और वह आपस में मेलजोल के अभिलाषी होंगे। इस प्रकार जो प्रेम एक ने दूसरे के साथ किया होगा ईश्वरीय राज्य में भूलेगा नहीं और वह जीवन जो इस भौतिक संसार में बिताया है वह भी स्मृति धारा से लुप्त न होगा।" (Tablets of Abdul-Baha, vol. i, p. 204).

स्वर्ग और नरक

बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा स्वर्ग और नरक की उन कहानियों को जो प्राचीन धर्म पुस्तकों में पाई जाती हैं—जैसे बाईबल में उत्पत्ति की कहानी है—अलङ्कार या गौण समझते हैं, उन्हें अक्षरशः सत्य नहीं मानते। उनके विचारों में स्वर्ग पूर्णता की दशा को कहते हैं और नरक अपूर्णता की दशा को। स्वर्ग ईश्वर की इच्छा और अपने साथियों के साथ अनुकूलता है और नरक ऐसी अनुकूलता का अभाव (प्रतिकूलता) है। स्वर्ग आध्यात्मिक जीवन

और नरक आध्यात्मिक मृत्यु है। इस देह में रहकर भी मनुष्य स्वर्ग अथवा नरक का भोग कर सकता है। स्वर्ग का आनन्द आध्यात्मिक आनन्द है और नरक का दुःख इस आनन्द से वञ्चित होना है।

अब्दुल-बहा कहते हैं :—

"जब मनुष्य धर्म (faith) के प्रकाश के द्वारा पाप के अन्धकार से मुक्ति पाते हैं और सत्य के सूर्य की ज्योति से प्रकाशित होकर सब सद्गुणों से भूषित हो जाते हैं, वह इसे बड़े से बड़ा पारितोषिक समझते हैं और इसे ही यथार्थ में स्वर्ग समझते हैं। इसी प्रकार वह जानते हैं कि विषयों के अधीन रहना, ईश्वर को भुलाये रखना, अज्ञान और पशुता का जीवन बिताना, इन्द्रियों के वश में रहना, सांसारिक वासनाओं में ही सदा मग्न रहना, दोषों में फँसना यह आध्यात्मिक दण्ड हैं। यही सब बड़े से बड़े दण्ड और बड़ी से बड़ी यातनाएँ हैं।"

"इस संसार को छोड़ने पर आध्यात्मिक संसार में जो पूर्णता और शान्ति प्राप्त होती है, ईश्वर के राज्य में जो आध्यात्मिक प्रसाद और जो अनेक तोफ़े मिलते हैं, जो मन और आत्मा की अभिलाषा पूर्ण होती है, और उस नित्य संसार में जो ईश्वर से मेल होता है, यही सब उस संसार के पारितोषिक हैं। इसी प्रकार ईश्वर की विशेष कृपाओं और प्रसादों से वञ्चित रहना और जघन्यतम जीवन सत्ता में पतित होना उस संसार के दण्ड हैं। जो इन ईश्वरीय प्रसादों से वञ्चित रहता है वह यद्यपि मृत्यु के अनन्तर जीवित रहता है परन्तु सत्य के लोग उसे मरा हुआ समझते हैं।"

"उस संसार का धन ईश्वर का सामीप्य है। बस, यह निश्चय है कि जो ईश्वरीय न्यायभवन के समीप हैं वह मध्यवर्ती होने का अधिकार

रखते हैं और इस मध्यस्थता की ईश्वर उन्हें स्वीकृति देता है। यह भी संभव है कि जो लोग धर्म पर श्रद्धा न रखकर पाप करते मरे हैं उनकी भी दशा सुधर जाये, अर्थात् ईश्वर के अनुग्रह से वह क्षमा प्राप्त कर लें, उसके न्याय के द्वारा नहीं क्योंकि विना विचारे देना अनुग्रह है और योग्यता देखकर देना न्याय है। जैसे हमें इन पापी आत्माओं के लिये प्रार्थना करने का यहाँ अधिकार है वैसे ही वहाँ भी अर्थात् ईश्वर के राज्य में भी, हमें यह अधिकार प्राप्त होगा। इसलिये उस संसार में भी वह उन्नति पा सकते हैं। जिस प्रकार यहाँ वह अपनी विनययुक्त प्रार्थना से प्रकाश पा सकते हैं वैसे ही वह उस संसार में भी क्षमा की भिक्षा माँग सकते हैं और प्रार्थना और विनय के द्वारा प्रकाश पा सकते हैं।"

"इस भौतिक देह को छोड़ने से पहले और पीछे दोनों अवस्थाओं में पूर्णता में उन्नति हो सकती है पर अधिकार में नहीं। एक पूर्ण मनुष्य से बड़ा दूसरा कोई भी व्यक्ति नहीं है। इस दशा को पाकर भी आदमी पूर्णताओं से उन्नति लाभ कर सकता है, पर अधिकार में नहीं, क्योंकि पूर्ण पुरुष के अधिकार से बड़ा कोई अधिकार नहीं जिसमें वह जा सके। वह केवल मानव अधिकार में ही वृद्धि पा सकता है, क्योंकि मानवपूर्णताएँ अपरिच्छिन्न हैं। एक आदमी कितना भी बड़ा विद्वान् क्यों न हो पर हम उससे भी बड़े विद्वान् की कल्पना कर सकते हैं। इसलिये जिस प्रकार मानव पूर्णताएँ अनन्त हैं इसी प्रकार इस संसार को त्यागकर भी मनुष्य पूर्णताओं में उन्नति लाभ कर सकता है।" (Some Answered Questions, pp. 259–274.)

दोनों संसारों की एकता

बहाउल्लाह ने जिस मानव एकता की शिक्षा दी है वह केवल

मांसमय मनुष्य तक ही सीमित नहीं, वल्कि उसका संबन्ध जीव मात्र से है चाहे वह देहधारी हो या देह रहित। न केवल वह मनुष्य, जो इस संसार में जीवित हैं वल्कि वह भी जो आध्यात्मिक संसार में हैं, एक ही समुदाय के अंग हैं और दोनों अंग घनिष्ठता से एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। दोनों के बीच आध्यात्मिक मेल जोल असंभव या अस्वाभाविक होने के स्थान में स्थायी और अवश्यंभावी है। जिन लोगों की आध्यात्मिक शक्तियाँ अभी विकसित नहीं हुईं वह लोग इस घने संबन्ध से परिचित नहीं, परन्तु ज्यों ज्यों यह शक्तियाँ विकसित होंगी त्यों त्यों परदे में रहने वालों के साथ संबन्ध अधिकाधिक विशद और निश्चित होते जायेंगे। अवतारों और महात्मा पुरुषों को इन संबन्धों का ऐसा ही प्रत्यक्ष अनुभव है जैसे मनुष्यमात्र को साधारण रूप से देखने और आपस में बातचीत करने का अनुभव होता है।

अब्दुल-बहा कहते हैं—

"अवतारों के अनुभव स्वप्न नहीं होते, बल्कि आध्यात्मिक आविष्कार और निश्चित तत्त्व होते हैं। उदाहरण के लिये जैसे वह कहते हैं कि 'मैंने एक मनुष्य को किसी स्वरूप विशेष में देखा, मैंने उससे यह कहा और उसने यह उत्तर दिया'। यह अनुभव जागृत अवस्था का है और स्वप्नावस्था का नहीं, यही आध्यात्मिक आविष्कार है।"

"आध्यात्मिक आत्माओं में आध्यात्मिक संबन्ध आविष्कार और एक ऐसा मेल जोल है जो कल्पना और भ्रम से परे है, यह एक ऐसा प्रेम संबन्ध है जो काल और स्थान की परिधि से बाहर है। अंजील में लिखा है कि 'ताबूर पहाड़ पर मूसा और ऐलिया मसीह के पास आये' और यह स्पष्ट है कि यह मेल दैहिक नहीं था बल्कि आध्यात्मिक

अवस्था का था। इस प्रकार के व्यवहार सच्चे हैं और मनुष्य की बुद्धि तथा विचारों पर अद्भुत प्रभाव डालते हैं और उनके हृदयों को आकृष्ट करते हैं।" (Some Answer d Questions.)

आध्यात्मिक शक्तियों की उच्चतम स्वाभाविकता को स्वीकार करते हुए उन्होंने समय के पूर्व ही बलपूर्वक उनके विकास के प्रयत्न को अनुचित माना है। यह शक्तियाँ समय पर स्वयं विकसित हो जायेंगी यदि हम उस आत्म-मार्ग पर चलते रहें जो कि धर्मावतारों ने हमारे लिये ढूँढ निकाला है। उन्होंने कहा है:—

"इस संसार में आध्यात्मिक शक्तियों से छेड़-छाड़ करना उस संसार की आत्मिक दशा में हस्तक्षेप करना होता है। यह शक्तियाँ तात्विक हैं, पर स्वभावतः इस संसार में इनका कोई काम नहीं। माता के पेट में बच्चे की आँखें, कान, हाथ पाँव आदि सब होते हैं, परन्तु यह कोई काम नहीं देते। भौतिक संसार में जीवन का पूर्ण उद्देश्य यही है कि तात्विक संसार के लिये अग्रसर हों जहाँ यह शक्तियाँ काम में लाई जाती हैं। यह शक्तियाँ उस संसार से संबन्ध रखती हैं।" (from Miss Buckton's notes, revised by Abdul-Baha.)

मृत आत्माओं से वार्तालाप करने का यत्न भी केवल इसी कारण न करना चाहिये और जड़ कौतुक को निवृत्त करने के लिये ही ऐसा करना उचित है। परदे के एक ओर रहने वालों का दूसरी ओर रहने वालों से प्रेम करना, उनकी सहायता करना और उनके लिये प्रार्थना करना कर्तव्य भी है और अधिकार भी। बहाईयों का यह कर्तव्य रखा गया है कि वह मृत आत्माओं के लिये प्रार्थना किया करें। अब्दुल-बहा कहते हैं:—

उन्नत आत्माओं और ईश्वर के अवतारों की प्रभावमय मध्यस्थता (वसीला) भी उनकी पूर्णताओं में से एक पूर्णता है। मसीह को पृथ्वी पर रहते समय अपने शत्रुओं को भी क्षमा करने के लिये मध्यस्थ होने की शक्ति प्राप्त थी और अब भी उनमें अवश्य वह शक्ति है। अब्दुल-बहा किसी भी मृत व्यक्ति का यह कहे बिना नाम न लेते थे कि 'ईश्वर उसे क्षमा करे' या इस अर्थ के दूसरे शब्द। अवतारों के अनुयायी भी आत्माओं के लिये क्षमा की प्रार्थना करने की सामर्थ्य रखते हैं। इसलिये हमें यह कदापि विचार न करना चाहिये कि कोई आत्माएँ ईश्वर के न जानने के कारण से सदा निन्दित, दुखी और संकट-ग्रस्त रही हैं। प्रभावमय मध्यस्थता (वसीला) उनके लिये भी विद्यमान है।

उस संसार के धनी भी ग़रीबों की वैसे ही सहायता कर सकते हैं जैसे इस संसार के धनी यहाँ के ग़रीबों की कर सकते हैं। प्रत्येक संसार में सभी जीव ईश्वर के हैं, सब का आश्रय सदा वही है। वह कभी उसके आश्रय के विना नहीं रह सकते और न कभी रहे हैं। क्योंकि वह सदा ईश्वर के आगे याचक होते हैं, इस लिये जैसे जैसे प्रार्थना करते रहते हैं वैसे वैसे अधिकाधिक धनी बनते जाते हैं। उनका व्यापार और उनका धन क्या है? उस संसार में उनका आश्रय या साहाय्य क्या है? वह यही मध्यस्थता (वसीला) है। जो आत्माएँ विकास को प्राप्त नहीं हुईं वह पहले आध्यात्मिक धनियों की प्रार्थनाओं से उन्नति लाभ करें और बाद अपनी प्रार्थनाओं से। (Talk to Miss E. J. Rosenberg in 1904.)

फिर इन्हों ने कहा:—

"जो लोग स्वर्गारोहण कर चुके हैं उनके गुण उन लोगों से भिन्न

हैं जो अभी पृथ्वी पर विद्यमान हैं पर दोनों में कोई वास्तविक भेद नहीं। प्रार्थना में दोनों के स्थान और दशाएं एकसी हैं। जिस प्रकार वह तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं तुम भी उनके लिये प्रार्थना करो।" (Abdul-Baha in London, p. 97.)

जब इनसे यह पूछा गया कि क्या प्रेम और विश्वास के द्वारा उन लोगों को भी नये अवतार की सूचना देना संभव है जो उसे बिना सुने ही जीवन त्याग कर गये हैं, तो इन्होंने उत्तर दिया:—

"हाँ, अवश्य, हृदय की की हुई प्रार्थना अवश्य प्रभाव रखती है और उस संसार पर तो उसका बड़ा ही प्रभाव होता है। जो उस संसार में हैं, उन से हम कभी पृथक् नहीं होते। सच्चा और यथार्थ प्रभाव इस संसार में नहीं बल्कि उस संसार में होता है।" (Notes of Mary Handford : Paris 1911.)

दूसरी ओर बहाउल्लाह कहते हैं:—

"जो मनुष्य उस ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार काम करता है जो उसे मिली है उसके लिये दिव्य समुदाय उच्चतम स्वर्ग के लोग और बड़प्पन के गुंबज में रहने वाले लोग ईश्वर की प्रियतम और प्रशंसनीय आज्ञा से प्रार्थना करते रहेंगे।" (Tablet translat d by Ali Kuli Khan.)

जब अब्दुल-बहा से पूछा गया कि इसका क्या कारण है कि कभी कभी मन का मेल किसी ऐसे मित्र हो जाता है जो इस संसार से चल बसा है तो इन्होंने कहा:—

"ईश्वर की सृष्टि का यह नियम है कि दुर्बल सदा सबल का आश्रय लेता है। जिनकी ओर तुम्हारा मन गया है वह कदाचित् ईश्वर की शक्ति और तुम्हारे बीच मध्यस्थ हों जैसे इस संसार में था, परन्तु पवित्र

आत्मा सब मनुष्यों को सबल बनाती है।" (Abdul-Baha in London, p. 97.)

दोष या बुराई का न होना

बहाई तत्त्व-ज्ञान के अनुसार ईश्वरीय एकता के सिद्धान्त का तात्पर्य यह निकलता है कि दोष या बुराई का वास्तविक अस्तित्व कदापि नहीं हो सकता। पूर्ण केवल एक ही हो सकता है। यदि कोई और शक्ति जो उस एक से बाहर या उसके विरुद्ध होती तो वह एक पूर्ण नहीं हो सकता। जिस प्रकार अन्धकार प्रकाश के अभाव या न्यूनता को कहते हैं, इसी प्रकार दोष या बुराई भलाई के न होने या कम होने को कहते हैं। बुरा आदमी वह है जिसके स्वभाव का उत्तम भाग अभी विकास को प्राप्त नहीं हुआ। यदि वह स्वार्थी है तो बुराई उसके अपने आप से प्रेम करने में नहीं क्योंकि सभी प्रकार का प्रेम यहाँ तक कि स्वार्थ पूर्ण प्रेम भी ईश्वरीय प्रेम है। दोष इसमें है कि वह अपने आप से ऐसा क्षुद्र अनुचित और भ्रम पूर्ण प्रेम रखता है और विशेष कर इसमें कि वह ईश्वर और जीवों से इतना कम प्रेम रखता है। वह अपने आप को इस से अधिक नहीं समझता कि वह उत्तम श्रेणी का एक जानवर है और अपनी प्रकृति को वैसे ही पालता है जैसे कोई पालतू कुत्ते का पेट भरता है। भेद केवल इतना है कि कुत्ते को पालने में इतने बुरे परिणाम नहीं निकलते जितने अपनी इन्द्रिय वासनाओं को तृप्त करने में निकलते हैं। अब्दुल-बहा एक तख्ती (पत्र) में कहते हैं:—

"आपका यह कहना कि अब्दुल-बहा ने कुछ भक्तों से कहा है कि बुराई का अस्तित्व नहीं बल्कि यह एक अतात्विक या अप्रमा है, सर्वथा

सत्य है, क्योंकि सबसे बड़ा दोष मनुष्य का पथभ्रष्ट होना और सत्य से दूर रहना है। भ्रम तत्वज्ञान के न होने का नाम है, अन्धकार प्रकाश के अभाव को कहते हैं, अज्ञान ज्ञान के अभाव का नाम है, झूठ सत्य के न होने का नाम है, अन्धापन दृष्टि के न होने को कहते हैं, और बहरापन श्रवण शक्ति के अभाव का नाम है। तात्पर्य यह कि भ्रम, अन्धापन, बहरापन और अज्ञान तात्विक वस्तुएँ नहीं हैं।"

फिर इन्होंने कहा है:—

"सृष्टि में बुराई सर्वथा नहीं है, भलाई ही भलाई है। कुछ स्वभाव या गुण जो बुरे हैं और कुछ लोगों में स्वभाव से पाये जाते हैं यह भी तात्विक नहीं होते। उदाहरण के लिए जैसे एक दूध पीता बच्चा माता के स्तनों से दूध पीते समय इच्छा, क्रोध और लिप्सा के भाव प्रकट करता है। तब यह कहा जा सकता है कि भलाई या बुराई मानव स्वभाव के अंदर विद्यमान है और यह पवित्र भलाई के स्वभाव और सृष्टि के विरुद्ध है। इसका उत्तर यह है कि लिप्सा जिसका अर्थ अधिक चाहना है, यदि इसे उचित समय पर उपयोग में लाया जाये तो यह एक अच्छा गुण है। यदि एक मनुष्य ज्ञान या विज्ञान को अधिक प्राप्त करना चाहे या दया या उदारता और न्याय करने में अधिक कामना रखे तो यह बहुत प्रशंसनीय है। यदि वह अपने क्रोध को भेड़ियों जैसे हिंस्र जन्तुओं के विरुद्ध उपयोग में लाये तो यह उत्तम गुण है, परन्तु यदि वह इन गुणों का उचित व्यवहार नहीं करता तो यह निन्दनीय है।"

"मनुष्य के सभी गुणों का जो उसके जीवन के आधार हैं, यही हाल है। यदि उनका असमय में और अनुचित उपयोग किया जाता है तो वह निन्द्य है। इससे स्पष्ट है कि सृष्टि में सर्वथा भलाई ही भलाई है।" (Some Answered Questions, p. 250.)

जीवन के अभाव का नाम बुराई है। यदि मानव प्रकृति का क्षुद्र भाग अनुचित रूप से विकसित हुआ है तो इसका प्रतीकार यह नहीं कि उस भाग को निर्जीव कर दिया जाय बल्कि प्रतिकार यह है कि उच्च भाग में जीवन की वृद्धि की जाये ताकि दोनों पलड़े बराबर हो जायें। मसीह ने कहा है "मै आया हूँ कि तुम जीवन प्राप्त करो और सर्वथा पूर्णरूप से प्राप्त करो"। इसी की सब को आवश्यकता है, जीवन, पूर्ण जीवन जो वास्तव में जीवन है। बहाउल्लाह का संदेश भी वही है जो मसीह ने दिया था। वह कहते हैं—"आज यह सेवक निश्चय ही इस लिये आया है कि संसार को जीवन प्रदान करे" (रईस को पत्र), और अपने अनुयायिओं को वह कहते हैं:—"आओ, ताकि हम तुम्हें संसार के जीवनदाता बनायें" (Tablet to the Pope.)

अध्याय बारहवाँ

धर्म और विज्ञान

"मोहम्मद साहिब के दामाद अली ने कहा है कि 'विज्ञान (साइंस) से जो बात सिद्ध होती है धर्म से भी वही बात सिद्ध होती है।' जो बात बुद्धिगम्य न हो धर्म उसे स्वीकार न करे। धर्म और विज्ञान साथ साथ हैं और जो धर्म विज्ञान के विरुद्ध है वह सच्चा नहीं है।" (Wisdom of Abdul-Baha)

विरोध का कारण भ्रम है

बहाउल्लाह की मूल शिक्षाओं में से एक शिक्षा यह है कि सच्चा विज्ञान और सच्चा धर्म सदा मिले जुले हैं। सत्य एक है और जब विरोध उत्पन्न होता है तो यह सत्य के कारण नहीं बल्कि भ्रम के कारण होता है। प्राचीन समय से धर्म और विज्ञान नाम धारी वस्तुओं में भयंकर विरोध चला आ रहा है परन्तु यदि हम सत्य के पूर्णतर प्रकाश में इस विरोध का कारण ढूँढें तो प्रतीत हो जायगा कि प्रत्येक समय में इस विरोध का कारण अज्ञान, पक्षपात, अभिमान, लोभ, विचारों की अनुदारता, असहिष्णुता, आग्रह या इसी प्रकार का कुछ और कारण होता है जो धर्म और विज्ञान दोनों के वास्तविक तत्त्व से अणुमात्र संबन्ध नहीं रखता, क्योंकि दोनों का तत्त्व एक है। हकसले ने कहा है—"तत्त्व ज्ञानियों के

बड़े बड़े काम उनकी बुद्धि का इतना फल नहीं होते जितना कि उनकी धार्मिक सहृदयता का प्रत्यक्ष फल होते हैं। सत्य ने उनकी तर्क शक्ति की अधीनता स्वीकार नहीं की बल्कि उनके धैर्य, उनके प्रेम, उनकी एकतानता, और उनके आत्म-त्याग की अधीनता स्वीकार की है। बोले जो एक महान् गणितज्ञ था, हमें निश्चय दिलाता है "भुमिति (Geometry) की विद्या का अधिकार वास्तव में प्रार्थना का अमल है—अर्थात् एक व्याप्य बुद्धि व्यापक से प्रार्थना करती है कि उसे परिमित परिधि में प्रकाश प्रदान किया जाये।" विज्ञान और धर्म के बड़े ईश्वरावतारों ने एक दूसरे के विरुद्ध कभी कुछ नहीं कहा। यह इन संसार के बड़े बड़े शिक्षकों के अयोग्य अनुयायी हैं जो शिक्षा के तत्त्व के नहीं बल्कि अक्षरार्थ के पुजारी होते हैं, बाद में आने वाले धर्मावतारों को सताते और उन्नति का घोर विरोध करते हैं। उन्होंने किसी पुस्तक विशेष का अध्ययन किया होता है जिसे वह बड़ी पवित्र समझते हैं और अपने सीमाबद्ध विचारों के अनुसार उसकी खूबियों और विशेषताओं को बड़े ध्यान और तत्परता से उन्होंने समझा हुआ होता है। वह केवल उसी को सच्चा प्रकाश समझते हैं। यदि ईश्वर अपनी अपार दया से किसी अन्य दिग्भाग से अधिकतर प्रकाश भेजता है और आकाशवाणी की मिसाल इस नये मिसालची के हाथ में औरों की अपेक्षा अधिक प्रकाश देने लगती है तो इसके स्थान में कि वह इस नये प्रकाश का स्वागत करें और प्रकाशमात्र के पितृदेव उस ईश्वर के फिर से कृतज्ञ हों और उसकी पूजा करें, वह क्रोध में आ जाते और भयभीत हो जाते हैं। यह नया प्रकाश उनकी समझ के अनुसार नहीं होता। उसमें न तो कट्टरपने का रंग होता है और

नाही वह प्रकाश उस स्थान से आता है जो स्थान उन्होंने अपने कट्टरपने के विचार से समझ रखा होता है, इसलिये वह उसको बुझाने का सिर तोड़ यत्न करते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि लोगों को पथभ्रष्ट कर दे और उन्हें पाप के मार्ग में ले जाये। ईश्वरावतारों के प्रायः शत्रु इसी प्रकार के होते हैं, यह अन्धों के अन्धे नेता हैं, जो अपने विश्वास्त सत्य के समर्थन में नये और पूर्णतर सत्य का विरोध करते हैं। इसके अतिरिक्त एक और नीचतर समुदाय है जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये सत्य के विरुद्ध संग्राम करता है या आध्यात्मिक मृत्यु और अक्रियता के कारण उन्नति के मार्ग में बाधा डालता है।

अवतारों को सताना

जितने बड़े बड़े धर्मावतार हुए हैं उनके आगमन पर लोगों ने उनसे घृणा की और उनका प्रत्याख्यान किया। इन धर्मावतारों और इनके आरम्भिक अनुयायिओं ने बड़े बड़े अत्याचार सहे और अपने प्राणों और सर्वस्व का ईश्वर के मार्ग में बलिदान किया। हमारे इस समय में भी ऐसा ही हुआ। सन् १८४४ से लेकर आज तक ईरान में कई सहस्र बाबियों और बहाईयों ने धर्म के लिये कड़ी से कड़ी मृत्यु के कष्ट सहे और इससे भी अधिक संख्या ने कारावास, निर्वासन, दरिद्रता और मानहानि का कष्ट भोग किया। अपने पूर्वजों की अपेक्षा इस नये बड़े धर्म ने कहीं बढ़कर 'लहू का बपतिस्मा' पाया है और इसके मानने वाले आज तक शहीद किये जा रहे हैं। साइंस के बड़े ज्ञानीयों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार होता आया है। जिउरदानों ब्रूनो (Giordano Bruno) नामक विज्ञान-वेत्ता को सन् १६०० में

कुफ़र का फ़तवा देकर जीता जला दिया गया था, क्योंकि वह कहता था कि पृथ्वी सूर्य के आसपास घूमती है। इस घटना के थोड़े ही दिन बाद एक अनुभवी तत्वज्ञानी गैलीलिओ को यही सिद्धान्त स्वीकार करने के कारण अपने प्राणों को बचाने के लिये घुटने टेक कर इस सिद्धान्त को त्यागना पड़ा। आगे चलकर डार्विन और वर्तमान समय के भूगर्भ विद्या (Geology) के प्रथमाचार्यों पर उग्र अभियोग लगाये गये, क्योंकि उन्होंने धर्म पुस्तक की इस बात पर आपत्ति की थी कि सृष्टि छः सहस्र वर्ष पूर्व छः दिनों में बनाई गई थी। नवीन वैज्ञानिक तत्त्व का विरोध केवल चर्चों से ही नहीं उठा, किन्तु जिस प्रकार धर्म के कट्टर भक्त उन्नति के विरोधी रहे इसी प्रकार विज्ञान के कट्टर पक्षपाती भी उसकी उन्नति में बाधा करते रहे। अपने समय के नामधारी विज्ञान वेत्ताओं ने कोलंबस की हँसी उड़ाई और उस की आयोजना को इस युक्ति के आधार पर घृणा से ठुकरा दिया कि यदि जहाज समुद्र के पार पहुँच भी जाये तो उसका लौटकर आना असंभव होगा। विद्युत् शक्ति के आरम्भिक तत्त्वज्ञानी गालवनी की तत्कालीन विद्वानों ने हँसी उड़ाई और उसका नाम 'मेंढक नचाने वाला मास्टर' रखा था। हार्वे, जिसने लहू के दौरे का पता लगाया था, अपने समान-व्यवसायी भाइयों के परिहास का पात्र बना और इसी कुफ़र के कारण शिक्षा विभाग की कुर्सी पर से उठा दिया गया। जब स्टीफ़न ने रेल का इंजन तैयार किया तो उस समय के योरोपियन गणितज्ञ बजाय इसके कि अपनी आँखें खोलते और तत्त्व का अध्ययन करते, बहुत देर तक दृढ़ता से सिद्ध करने का यत्न करते रहे कि चिकनी और साफ पटड़ी पर चलने वाला इंजन बोझ कभी न खींच सकेगा, क्योंकि पहिये इधर उधर चक्कर खाते रहेंगे और गाड़ी आगे न

चल सकेगी। इस प्रकार के अनेक उदाहरण प्राचीन और वर्तमान दोनों इतिहासों से और यहाँ तक कि हम अपने समय के भी दे सकते हैं। डाक्टर ज़ामेन होफ को भी अपने अन्तर्जातीय भाषा ऐसपरेंटो के अद्भुत आविष्कार के कारण हँसी, घृणा और मूर्खता पूर्ण विरोध का सामना करना पड़ा, जिसका कोलंबस, गालवानी और स्टीफन ने सामना किया था। ऐसपरेंटो को भी, जो अभी अर्थात् १८८७ में आविष्कृत हुई, अनेक बलिदान करने पड़े।

फिर मेल का अरुणोदय

परन्तु पिछली लगभग आधी शताब्दी से संसार के सामयिक भाव में परिवर्तन हो गया है, सत्य का एक नवीन सूर्य चमक उठा है जिसके प्रकाश में गत शताब्दी के विरोध और वादविवाद विचित्र रूप से अनुपयोगी दिखाई दे रहे हैं। अब वह बड़ी बड़ी डींगें मारने वाले प्रकृतिवादी और निरीश्वरवादी नास्तिक लोग जो कुछ वर्ष पूर्व धर्म या मतों को संसार से निकाल बाहर करने की धमकियां देते थे? उपदेशक कहाँ गये जो बड़े विश्वास से उन लोगों को, जो उनके विश्वास (faith) को नहीं मानते थे, नरक की अग्नि के सुपुर्द करते और जहन्नम की यातनाओं में धकेला करते थे। उनके कोलाहल की गूंज अब भी कभी कभी हमारे कानों में पड़ जाती है, परन्तु उनका प्रकाश शीघ्रता से धीमा पड़ रहा है और उनके सिद्धान्त खोखले दिखाई पड़ रहे हैं। अब हम देख सकते हैं कि वह सिद्धान्त जिन पर तीव्र और मर्मभेदी वाद-विवाद हुआ करते थे न तो सच्चे धर्म से ही संबन्ध रखते हैं और न सच्चे विज्ञान से। कौन ऐसा विज्ञान-वेत्ता है जो अध्यात्म विद्या की गवेषणा के वर्तमान

प्रकाश में यह कहने का साहस रखता है कि मस्तिष्क विचारों को उसी प्रकार उत्पन्न करता है जिस प्रकार यकृत् पित्त को उत्पन्न करता है या यह कहने का कि देह के क्षय के साथ आत्मा का भी क्षय अवश्यंभावी है। अब हम देखते हैं कि यदि विचारों की स्वतंत्रता वास्तव में चाहिए तो उसे आध्यात्मिक और मानसिक विषयों का उच्च ज्ञान होना चाहिये और केवल पदार्थ विद्या तक ही सीमित न रहना चाहिये। हम समझ गये हैं कि प्रकृति या पदार्थों के विषय में हमने अब तक जितना ज्ञान प्राप्त किया है वह उतना ही है जितना समुद्र में से एक बूंद। अभी हमें और बहुत कुछ सीखना बाकी है। इसलिये हम इस बात को बिना संकोच स्वीकार करते हैं कि विचित्र चमत्कारों के संभव का अर्थ प्राकृतिक नियमों का भंग नहीं, बल्कि उसका अर्थ यह है कि वह प्रकृति के सुगूढ़ नियमों के बल का विकास है जो अभी तक अज्ञात हैं जैसे हमारे पूर्वजों को विद्युत् शक्ति और एक्सरेज (वह विद्युत् किरणें जिनकी सहायता से शरीर के आभ्यन्तर भागों का चित्र लिया जाता है) (X-rays) अज्ञात थीं। दूसरी ओर, हमारे प्रमुख धार्मिक नेताओं में कौन ऐसा है जो अब तक यह कहने का साहस रखता हो कि मुक्ति प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि हम इस बात पर पूरा विश्वास रखें कि संसार छः दिनों में बनाया गया था, या यह कि ऐक्सोडस की पुस्तक (Book of Exodus) में मिस्र की महामारियों का जो वर्णन किया गया है वह अक्षरशः सत्य है, या यह कि सूर्य आकाश में ठहर गया था (अर्थात् पृथ्वी ने अपनी गति बंद कर दी थी) ताकि जोशुआ अपने शत्रुओं का पीछा कर सके, या यह कि जो कोई सेंट ऐथनासिस के मत को स्वीकार न करेगा

वह निःसन्देह सदा के लिए विनष्ट हो जायेगा ? इस प्रकार के विश्वासों की स्वरूप से तो आवृत्ति की जा सकती है पर उनकी सत्यता को आज निःसंकोच कौन स्वीकार करता है। इस प्रकार की धारणाएं लोगों के हृदयों से उठ गई और उठ रही हैं। धार्मिक संसार विज्ञान वेत्ताओं का बहुत ऋणी है जिन्होंने पुराने दकियानूसी विचारों की धज्जियां उड़ाने में सहायता दी और सत्य को बेरोक सामने आने दिया। परन्तु वैज्ञानिक संसार सच्चे साधुओं और महात्माओं का इससे भी अधिक ऋणी है जिन्होंने अच्छी और बुरी सभी अवस्थाओं में, अपने आध्यात्मिक अनुभवों के परम सत्य को पकड़े रखा और संशयग्रस्त संसार को इस बात का निश्चय करा दिया कि जीवन आहार विहार से उच्चतर और परोक्ष प्रत्यक्ष से कहीं बढ़कर है। यह विज्ञान-वेत्ता और महात्मा लोग पर्वतों के उच्चतम शिखरों के समान थे जिन्होंने उदय होते सूर्य की प्रथम किरणों को प्राप्त करके अधस्तन संसार पर प्रकट किया, परन्तु अब सूर्य का उदय हो गया है और उसकी किरणें सारे संसार को ज्योतिमय कर रही हैं। बहाउल्लाह की शिक्षाओं में सत्य का उज्ज्वल प्रकाश हुआ है, वह उस हृदय और बुद्धि को सन्तुष्ट करता है जिसमें धर्म और विज्ञान की एकता है।

सत्य की खोज

सत्य की खोज का जो प्रकार बहाई शिक्षाओं में बताया है, उससे विज्ञान और धर्म के पूरे मेल का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। मनुष्य को सब पक्षपात दूर कर देने चाहियें ताकि वह सत्य की खोज बेरोकटोक कर सके।

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"सत्य को प्राप्त करने के लिये हमें चाहिये कि हम सब प्रकार के पक्षपात और अपने संकुचित जातीय विचारों को छोड़ दें और मन को सत्यग्राही तथा उदार बनाएं। यदि हमारा प्याला स्वार्थ से पूर्ण हैं तो जीवन के जल को इसमें स्थान नहीं। अपने आपको सच्चा और बाकी सबों को भूले हुए समझना एकता के मार्ग में बहुत भारी रुकावट है, सत्य की प्राप्ति के लिये एकता की बड़ी आवश्यकता है क्योंकि सत्य एक है।"

"एक सत्य दूसरे सत्य का कभी खण्डन नहीं करता। प्रकाश चाहे किसी भी दीपक से प्राप्त हो अच्छा है। गुलाब का फूल चाहे किसी भी बाग में खिले सुन्दर है। तारा चाहे पूर्व में चमके या पश्चिम में, समान प्रकाश रखता है। पक्षपात का त्याग करो फिर तुम सत्य के सूर्य से प्रेम करने लगोगे चाहे उसका किसी दिशा से उदय हुआ हो। तुम्हें निश्चय हो जायेगा कि सत्य का जो ईश्वरीय ज्योति मसीह में चमका था वही मूसा और बुद्ध में भी प्रकट हुआ था। सत्य की खोज का अभिप्राय यही है।"

"इसका अभिप्राय यह भी है कि हम उन सब बातों को दिल से हटा दें जो पहले सीख रखी हैं क्योंकि वह सब सत्य के मार्ग में बाधा रूप होंगी; यदि हमें नये सिरे से भी शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता पड़े तो भी हमें उससे पीछे न हटना चाहिये। किसी धर्म विशेष अथवा किसी पुरुष विशेष से हमें इतना अधिक प्रेम न करना चाहिये, जिससे हमारी दृष्टि अन्ध होजाये और हम भ्रम के पाश में बद्ध हो जायें। जब इन सब बंधनों से मुक्त होजायेंगे और खुले दिल से खोज करेंगे तब हम अवश्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।"—(Wisdom of Abdul-Baha, p. 127.)

सच्चा आत्म-ज्ञान

बहाई शिक्षा विज्ञान और तत्त्वविद्या के साथ इस विषय में सहमत है कि ईश्वर की अनन्य प्रकृति मानव बुद्धि की पहुँच से बहुत ऊपर है। जिस बल और विश्वास से हक्सले और स्पैंसर यह शिक्षा देते हैं कि आरम्भ के महान् कारण की प्रकृति अविज्ञेय है, उसी प्रकार बहाउल्लाह भी सिखाते हैं कि "ईश्वर सबको समझता है पर उसे कोइ नहीं समझ सकता।" ईश्वर के तत्त्च को जानने का "मार्ग अवरूद्ध और दुर्गम है," क्योंकि व्याप्य व्यापक को कैसे जान सकता है। बिन्दु सुमद्र को अपने में कैसे ले सकता है, या सूर्य की किरणों में दिखाई देने वाला एक त्रसरेणु विश्व को अपने में कैसे ले सकता है । परन्तु सारा विश्व ईश्वर का व्यक्त रूप है। पानी के प्रत्येक बिन्दु में अर्थ के समुद्र छिपे हैं और पत्येक परमाणु में सारे विश्व का भाव अन्तर्हित है जो बड़े से बड़े विज्ञान-वेत्ता की बुद्धि की पहुँच से परे है। पदार्थ विद्या (Physics) को जानने वाले और रसायन शास्त्रज्ञ (Chemists) भौतिक तत्त्व की खोज करते-करते समुदायसे अणु, अणु से परमाणु की ओर बढ़ते गये परन्तु पद पद में गवेषणा की कठिनाइयाँ बढ़ती गई यहाँ तक कि तीव्र से तीव्र प्रतिभा भी आगे न बढ़ सकी और विवश होकर इन्हें उस अज्ञात और अनन्त के आगे चुपचाप सिर झुकाना पड़ा जो गूढ़तम रहस्य में सदा छुपा रहता है।

"ऐ फूल तू दीवार के छेद में खिला है,
मैं तुझे इस छेद में से तोड़ निकालता हूँ,
जड़ के साथ मैं तुझे हाथ में पकड़ता हूँ,

ऐ छोटे से फूल यदि मैं समझ जाऊँ कि,
तू और तेरी जड़ यह सब क्या हैं,
तो मैं अवश्य ईश्वर और मनुष्य को जान लूँ।"—(Tennyson)

यदि एक छेद में खिला फूल जो प्रकृति का एक छोटा सा अंश मात्र है, अपने में इतने गूढ़ रहस्य रखता है जिन्हें तीव्रतम प्रतिभा भी जान नहीं सकती, तो यह कैसे संभव है कि एक साधारण मनुष्य संपूर्ण विश्व का ज्ञान प्राप्त कर सके। किस प्रकार वह सब पदार्थों के अपरिमित कारण की व्याख्या या वर्णन कर सकता है। ईश्वरीय तत्त्व की प्रकृति के संबन्ध में जितने भी कल्पनामय अनुमान हैं वह सब निःसार और भ्रमरूप होकर विलीन हो जाते हैं।

ईश्वर का ज्ञान

यद्यपि ईश्वरीय तत्त्व अज्ञेय है तथापि उसके प्रसाद के चिह्न सर्वत्र प्रकाशित हैं। यद्यपि आरम्भिक कारण मानव बुद्धि से परे है पर उसके कार्य हमारी सब इन्द्रियों को अपनी ओर आकृष्ट कर रहे हैं। जिस प्रकार एक चित्रकार के चित्रों को देखकर पारखी उस चित्रकार के कौशल को जान लेता है उसी प्रकार विश्व के किसी भी विषय का ज्ञान, चाहे वह प्रकृति का हो या मानव स्वभाव का हो, दृश्य पदार्थ का हो या अदृश्य का, ईश्वर के कौशल का ज्ञान है और यह गवेषक को ईश्वरीय सत्य और उसके ऐश्वर्य का सच्चा ज्ञान करा देता है।

"आकाश ईश्वर के ऐश्वर्य को प्रकट करते हैं, और नक्षत्र मण्डल उसकी शिल्पक्रिया को प्रकट करते हैं। दिन दिन से बातें करता है और रात रात को ज्ञान देती है।"—(Ps. Xix.)

ईश्वर के अवतार

सभी वस्तुएं अधिक या न्यून स्पष्टता से ईश्वर के प्रसाद को प्रकट करती हैं जिस प्रकार सभी भौतिक पदार्थ जो सूर्य के सामने हैं इसके प्रकाश को अधिक या न्यून अंश में प्रकट करते हैं। धूम राशि में किरणों का प्रकाश कम होता है, पत्थर में इस से अधिक और खड़िया मिट्टी (चाक) में किरणों की अभिव्यक्ति उससे भी अधिक होती है, परन्तु इनमें से किसी एक में भी उस भास्वर सूर्य की किरणों के स्वरूप और रंग का हमें पता नहीं लग सकता। पर एक उजले दर्पण में किरणों के स्वरूप और रंग का पूरा पता चल जाता है और उनका दर्शन स्वयं सूर्यदेव का दर्शन होता है। इसी प्रकार भौतिक पदार्थ हमें ईश्वर का परिचय देते हैं। पत्थर ईश्वरीय गुणों का थोड़ा बहुत परिचय देता है, फूल इससे अधिक उसका वर्णन करता है, पशु अपनी विचित्र समझ और स्वाभाविक बुद्धि से और चल फिर सकने की शक्ति से उससे भी अधिक परिचय देते हैं। मानव जाति की छोटी से छोटी श्रेणी में हमें अद्भुत शक्तियों का परिचय मिलता है जिससे एक आश्चर्यमय स्रष्टा का पता चलता है। कवि, महात्मा और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों में हमें उससे भी उच्चतर ईश्वरीय प्रकाश दीख पड़ता है परन्तु ईश्वरावतार और धर्म के प्रवर्तक निर्मल दर्पणों के समान हैं जिनके द्वारा ईश्वर का प्रेम और इच्छा बाकी लोगों पर प्रकट होती है। दूसरे मनुष्यों के दर्पण स्वार्थ और पक्षपात की मैल से धुँधले हुए होते हैं, परन्तु यह दर्पण पवित्र और उजले होते हैं जो ईश्वर की इच्छा के पूर्ण भक्त बन गये होते हैं। इस प्रकार वह मनुष्यमात्र के सबसे बड़े शिक्षक बन

जाते हैं। ईश्वरीय शिक्षाएं और पवित्रात्मा की शक्ति जो उनके द्वारा आती है मनुष्यमात्र की उन्नति का कारण बनी है और बनती हैं, क्योंकि ईश्वर मनुष्यों की दूसरे मनुष्यों के द्वारा ही सहायता करता है। प्रत्येक पुरुष जो जीवन चढ़ाव में दूसरों से उच्चतर है, अपने से निम्न श्रेणी के लोगों का सहायक है और जो उच्चतम हैं वह मनुष्यमात्र के सहायक हैं। यह इस प्रकार है, जैसे सब आदमी मानो एक मृदुल (लचकीली) रस्सियों से बँधे हैं। उनमें यदि एक दूसरों की अपेक्षा कुछ ऊँचा हो जाता है तो रस्सियाँ कस जाती हैं। उसके पहले साथी उसे नीचे की ओर खींचते हैं परन्तु वह भी उतनी ही शक्ति से उन्हें ऊपर की ओर खींचता है। जितना अधिक वह ऊँचा होता जाता है उतना ही अधिक बोझ वह नीचे के संसार का अनुभव करता जाता है जो उसे नीचे की ओर खींचता है, और उतना ही अधिक वह ईश्वर पर भरोसा करने लग जाता है जो उसे उनके द्वारा पहुँचता है जो इससे उच्चतर हैं। सबसे ऊँचे बड़े बड़े ईश्वरावतार और मुक्तिदाता "ईश्वर के अवतार" हैं, अर्थात् वह पूर्ण पुरूष जो अपने अपने समय में अद्वितीय और अनुपम थे, जिन्होंने केवल ईश्वर की सहायता के बल से सारे संसार का बोझ उठाया। "हमारे पापों का बोझ उस पर था" यह उनमें से प्रत्येक के विषय में सत्य है। उनमें से प्रत्येक अपने अनुगामियों का "मार्ग, सत्य और जीवन" था। उनमें से प्रत्येक उस प्रत्येक हृदय के लिए ईश्वरीय प्रसाद का द्वार था जो उसे प्राप्त करने का इच्छुक हो। उनमें से प्रत्येक मानव जाति को ऊपर लेजाने के लिए ईश्वरीय आयोजनाओं में अपना अपना काम पूरा करने आया था।

सृष्टि

बहाउल्लाह कहते हैं कि समय की दृष्टि से सृष्टि का कोई आदि नहीं । यह एक बड़े प्रधान कारण का संतत प्रवाह है । स्रष्टा की सृष्टि सदा से है और सदा रहेगी । प्रदेश और उसके रीति रस्म बनें या बिगड़ें पर विश्व की स्थिति बनी ही रहेगी । सभी वस्तुएँ जो एक समय मिली होती हैं, कभी बिछुड़ भी जाती हैं पर उनके मूल अवयव या खण्ड सदा बने रहते हैं । एक संसार, एक फूल या एक देह की सृष्टि का अर्थ यह नहीं कि वह वस्तु अभाव से भाव में आगई बल्कि उसका अर्थ यह है कि उसके बिखरे हुए भिन्न भिन्न अवयव एक रूप में आ गये हैं और जो वस्तु पहले गुप्त थी अब प्रकट होगई है। समय पर यह अवयव फिर बिखर जाएंगे और इनका स्वरूप दृष्टिगोचर न रहेगा पर किसी पदार्थ का वस्तुतः नाश या विध्वंस नहीं होता । पुराने टूटे फूटों से नये जोड़ और स्वरूप सदा बनते रहते हैं। बहाउल्लाह विज्ञानवादियों के इस कथन का समर्थन करते हैं कि संसार की उत्पत्ति का इतिहास छः सहस्र वर्षों से नहीं बल्कि असंख्य या अनन्त वर्षों से चला आ रहा है । विकास की कल्पना उत्पादक शक्ति का निराकरण नहीं करती । यह केवल उसके प्रकाश के प्रकार का वर्णन करने का यत्न करती है और भौतिक विश्व की अद्भुत कहानी, जिसे ज्योतिषी, भूगर्भ विद्या के जानने वाले, पदार्थ विद्या के जानने वाले और प्राणिविद्या के जानने वाले धीरे धीरे हमारी दृष्टि के सामने ला रहे हैं, यदि ठीक रूप से देखा जाये तो यह उस फीकी और अधूरी कहानी से जो यहूदियों की धर्मपुस्तक में दी गई है, हम

में कहीं बढ़चढ़ कर आदर और पूजा के भाव को उभारने की योग्यता रखती है। परन्तु 'उत्पत्ति' नामक पुस्तक (The Book of Genesis) की पुरानी कहानी में यह बड़ा गुण है कि यह केवल थोड़े संकेतों के प्रबल आघातों से कहानी के आवश्यक और आध्यात्मिक अर्थ का निर्देश कर देती है, जिस प्रकार एक निपुण चित्रकार ब्रुश के साधारण से व्यवहार से ऐसे संस्कारों को अङ्कित कर देता है जिन्हें एक अनाड़ी चित्रकार बहुत परिश्रम करने पर भी ठीक रूप से अङ्कित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। यदि भौतिक विस्तार हमें आध्यात्मिक अर्थ से अन्धा रखते हैं तो अच्छा है कि उन्हें छोड़ ही दिया जाये, परन्तु यदि हमने सारे तत्त्व वर्णन के उपयुक्त अर्थ को अच्छी तरह समझ लिया है तो विस्तार की विद्या हमारे विचारों को अद्भुत बड़प्पन और शोभा प्रदान करेगी और एक साधारण सी पाण्डुलिपि (Sketch) के स्थान में इन्हें एक सुन्दर और भड़कीला चित्र बना देगी।

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"पता हो कि आध्यात्मिक दुर्बोध तत्त्वों में से एक तत्त्व संसार का अस्तित्व है, कहने का भाव यह है कि सृष्टि का आरम्भ या अन्त कोई नहीं। पता हो कि स्रष्टा का जीव के बिना कल्पना करना असंभव है, दाता की कल्पना दान के बिना नहीं हो सकती, क्योंकि सभी ईश्वरीय नाम और गुण जीवों की सत्ता की अपेक्षा रखते हैं। यदि हम किसी ऐसे समय की कल्पना करें जिससे जीवों का अस्तित्व न हो तो यह कल्पना ईश्वर के महत्त्व का निषेध करेगी। यदि जीव सर्वथा सत्ताशून्य होते तो यह कभी सत्ता में आ ही नहीं सकते थे। इस लिये क्योंकि एकता का सार अर्थात् ईश्वर की सत्ता शाश्वत और नित्य है और इस

का आदि तथा अन्त नहीं है, इसलिये यह बात स्वयं सिद्ध है कि इस सृष्टि का भी आदि और अन्त नहीं है । परन्तु यह सम्भव है कि संसार का कोई भाग, उदाहरण के लिये जैसे कोई भूगोल नया बन जाय और एक नष्ट हो जाये, पर बाकी भूगोल अस्तित्व में रहेंगे। क्योंकि प्रत्येक भूखण्ड का आरम्भ है तो अवश्य इसका अन्त भी है। प्रत्येक संयोग का चाहे वह समष्टि का हो या व्यष्टि का, उसका वियोग अवश्यंभावी है। भेद केवल इतना है कि कइयों का शीघ्र वियोग होता है और कइयों का धीरे धीरे, परन्तु यह बात असंभव है कि संयुक्त वस्तु का समय पर वियोग हो ही नहीं।" (Some Answered Questions, p. 209.)

मनुष्य का वर्णन

बहाउल्लाह उस प्राणि तत्त्व-वेत्ता के कथन का भी अनुमोदन करते हैं कि जो मानव देह की तिथि का निश्चय करके लाखों वर्षों में उसके विकास का पता देता है। एक अत्यन्त साधारण और तुच्छ रूप से आरम्भ होकर मनुष्य का अगणित युगों से लाँघकर क्रम क्रम से उन्नति करना दिखाया गया है, प्रत्येक क्रम में उसका जटिल से जटिल होना और अच्छे से अच्छा रूप धरना और यहाँ तक कि मनुष्य के वर्तमान देह का चित्र खींचकर दिखाया गया है। प्रत्येक देह क्रमों की एक ऐसी परम्परा को पार करता है कि तरल पदार्थ के एक छोटे से गोल कतरे से एक पूरा मनुष्य बन जाता है। यदि यह बात सत्य है—और इसकी सचाई का खण्डन भी नहीं किया जा सकता—तो फिर मनुष्य की क्या लघुता होगी यदि हम इसी प्रकार की उन्नति मनुष्यमात्र के लिये मान लें। यह बात उस सिद्धान्त से सर्वथा भिन्न और

पृथक् है जो यह कहता कि मनुष्य बंदर से उन्नत होता इस रूप में आ गया है। यह संभव है कि मनुष्य का ढाँचा एक समय मछली का सा हो और उसमें गलछड़े और दुम हो, परन्तु इसे मछली नहीं कह सकते। यह मनुष्य का ढाँचा है, और उसी का ढाँचा रहेगा। कदाचित् मानव देह अपने विकास के विविध क्रमों में प्रत्यक्ष रूप से कई एक पशुओं के सदृश्य दीखती हो तो भले ही दीखे, तो भी यह मानव देह ही थी, और वर्तमान मनुष्य तक (बल्कि भविष्य में हमें निश्चय है, कि इससे भी बढ़ कर कुछ उत्तम बनेगी) उन्नति करने की शक्ति इसमें विद्यमान थी।

अब्दुल-वहा कहते हैं:—

"यह बात स्पष्ट है कि यह पृथ्वी का गोला एक बार ही अपने वर्तमान रूप में नहीं आ गया था बल्कि यह कई श्रेणीयाँ लाँघ कर इस श्रेणी में आया है। मनुष्य ने आरम्भिक अवस्था में पृथ्वी के अंदर, धीरे धीरे विकास प्राप्त किया है। जैसे कि मनुष्य का ढाँचा माता के पेट में क्रम विकास पाता है। एक रूप से दूसरे रूप में बदलता हुआ, एक अवस्था से दूसरी अवस्था में आता हुआ, इस वर्तमान सौन्दर्य, पूर्णता, इस बल और इस शक्ति में प्रकट हुआ है। इसमें सन्देह नहीं कि आरम्भ में यह मार्दव, लावण्य और सुन्दरता न थी और कि इसने केवल क्रम क्रम से ही यह स्वरूप, यह आकृति, यह सौन्दर्य और यह महत्व प्राप्त किया। इस पृथ्वी पर मनुष्य की सत्ता के आरम्भ से इसके वर्तमान श्रेणी और अवस्था तक पहुँचने में अवश्य बहुत समय लगा है। परन्तु मनुष्य अपने अस्तित्व के आरम्भ से ही एक पृथक रूप था। यह भी मान लिया जाये कि कई अङ्गों के चिह्न जो अब नष्ट हो गये हैं, इसमें

पाये जाते हैं तो यह इसके पूर्व रूप की अस्थिरता और निर्मूलता के प्रमाण नहीं हो सकते। अधिक से अधिक इससे यह सिद्ध होगा कि मनुष्य का स्वरूप, इसका अंग विन्यास और संगठन उन्नति कर गये हैं। मनुष्य सदा से मानव रूप में ही रहा है पशु रूप में नहीं।"—(Some Answered Questions, pp. 211—214.)

आदम और हवा की कहानी के विषय में इन्होंने कहा है:—

"इस कहानी का यदि हम वाच्यार्थ लेते हैं, जैसा कि लोगों में प्रसिद्ध है तो यह बात बहुत ही असाधारण प्रतीत होती है, बुद्धि इसको स्वीकार करने में असमर्थ है, क्योंकि ऐसे निबन्ध, ऐसे वर्णन, और इस प्रकार के भाषण और उलाहने एक बुद्धिमान मनुष्य से भी परे हैं फिर ईश्वर का तो कहना ही क्या, वह ईश्वर जिसने इस शाश्वत विश्व को अत्यन्त पूर्ण रूप से संगठित किया है और इन असंख्य निवासियों को पूरी प्रक्रिया, शक्ति और पूर्णता के साथ बनाया है।"

"इसलिये यह आदम और हवा की कहानी जिसमें उनका वृक्ष के फल खाने और स्वर्ग से निकाले जाने का वर्णन आता है, केवल अलंकार मात्र है। इसमें ईश्वरीय रहस्य और व्यापक अर्थ निगूढ़ हैं और यह विचित्र व्याख्याओं के योग्य है।"—(Some Answered Questions, p. 140.)

देह और आत्मा

देह और आत्मा तथा मृत्यु के अनन्तर जीवन के संबन्ध में बहाई शिक्षाएँ मनोविज्ञान या अध्यात्मविद्या के अनुसन्धानों के फलों के साथ सर्वथा मिलती जुलती हैं। जैसा कि हमने देखा, वह कहते हैं कि मृत्यु एक नया जन्म है, अर्थात् देह के कारावास से मुक्त होकर एक विशालतर जीवन में प्रविष्ट होना है और

मरने बाद के जीवन में उन्नति की कोई सीमा निर्धारित नहीं।

वैज्ञानिक प्रमाणों की एक बहुत बड़ी संख्या धीरे धीरे एकत्र हो रही है जो पक्षपात रहित पर बड़े उच्च कक्षा के सूक्ष्म गवेषकों के मत में इस बात को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त हैं कि मृत्यु के अनन्तर जीवन प्राप्त करने के सिद्धान्त में कोई सन्देह नहीं, अर्थात् इस भौतिक देह के विश्लेषण (मरण) के बाद आत्मा का जीवन और उसके कारोबार जारी रहते हैं।

जैसे एफ. डब्ल्यू. एच. मेयरस अपने 'ह्यूमन पर्सनैलिटी' नाम पत्र में, जिसमें वह आत्मिक अनुसन्धान परिषद् (Psychical Research Society) के बहुतेरे अनुसन्धानों का सार लिखा करते हैं, लिखते हैं:—

"निरीक्षण, प्रयोग और परिणामों ने मुझ जैसे बहुतेरे गवेषकों को इस विश्वास पर आकृष्ट कर लिया है कि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परस्पर व्यवहार संबन्ध न केवल संसार के जीवित मनुष्यों के मनों में ही बल्कि जो मन और आत्माएं पृथ्वी पर हैं, या जो आत्माएं वियुक्त होगई हैं उनमें भी होता रहता है। इस आविष्कार से भविष्यवाणी का मार्ग भी साफ हो जाता है।"

"हमने यह सिद्ध कर दिया है कि ठगी, आत्मछलन, धोखा और दम्भ तथा सच्चे प्रकाश भी उस संसार से हम तक पहुँच जाते हैं।"

"आविष्कार से और आकाशवाणी से उन वियुक्त आत्माओं के संबन्ध में, जैसा कि सामना कर सके हैं, कुछ विषय अस्थायी रूप से निश्चित हो चुके हैं। सबसे पहले मैं इस बात पर विश्वास करने का कारण रखता हूँ कि वह एक ऐसी दशा में हैं जिसमें वह प्रेम और बुद्धि में असीम उन्नति कर सकती हैं। उनके पार्थिव अनुराग उन उच्चतम

अनुरागों को एकत्र करते हैं जो अपना सुहाना पूजा और आराधना में पाते हैं। बुराई वह इतना भयंकर नहीं समझतीं जितना वह दासभाव को भयंकर मानती हैं। उनके सामने यह किसी शक्तिशाली स्वतन्त्र सम्राट से मिली नहीं है बल्कि यह इसे मुर्दा बनाने वाली उन्मत्तता समझती हैं, जिससे उच्च आत्माएं बिगड़ी आत्मा को छुड़ाने का यत्न करती हैं। जहन्नम की अग्नि के दण्ड की कोई इतनी आवश्यकता नहीं है, अपने आपका ज्ञान ही मनुष्य के लिये दण्ड या पुरस्कार है, आत्मा का ज्ञान और अपने साथी आत्माओं से मेल या पार्थक्य ही उस संसार में बहुत बड़ा दुःख या सुख है। क्योंकि उस संसार में प्रेम ही वास्तव में आत्मरक्षा है। महात्माओं से मेल जोल केवल अलंकृत ही नहीं करता बल्कि सदा का जीवन देता है। यही नहीं बल्कि आत्मिक समाचार प्रबन्ध के नियमों से यह बात भी प्रमाणित होती है कि यह इस संगत का इस स्थान और समय भी हम पर प्रभाव है। अब तक मृत आत्माओं का प्रेम हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर हमें देता है। इस समय तक भी हमारी प्रेमभरी स्मृति (प्रेम स्वयं एक प्रार्थना है) उन मुक्त आत्माओं की उन्नति में उन्हें सहायता और शक्ति प्रदान करती है।"

यह विचार, जो एक अवधान पूर्वक वैज्ञानिक अनुसंधान पर आश्रित है, वह सचमुच बड़े अचंभे की बात है।

मनुष्यमात्र की एकता

बहाउल्लाह की यह विशेष शिक्षा है "तुम सब एक ही वृक्ष के फल, एक ही शाखा के पत्ते और एक ही बाग के फूल हो।" और इसी जैसी दूसरी यह है "उस आदमी का कोई गौरव नहीं जो अपने देश से प्रेम करता है बल्कि गौरव उसका है जो मनुष्यमात्र

से प्रेम करता हैं।" एकता—अर्थात् मनुष्यमात्र की एकता और ईश्वर की सारी सृष्टि की एकता—उनकी शिक्षा का प्रधान विषय था। यहाँ भी सच्चे धर्म और विज्ञान में मिलान स्पष्ट पाया जाता है। विज्ञान जितनी उन्नति करता जाता है उतनी ही विश्व की एकता और उसके भागों का एक दूसरे पर निर्भर होना स्पष्ट दिखाई पड़ता जा रहा है। ज्योतिषियों का प्रयोग-क्षेत्र पदार्थ विद्या के जानने वालों से, पदार्थविद्या के जानने वालों का रसायनज्ञों से, रसायनज्ञों का प्राणिशास्त्रवेत्ताओं से और प्राणिशास्त्रवेत्ताओं का मनोविज्ञानवेत्ताओं से और इसी प्रकार दूसरों का भी सर्वथा मेल होता जा रहा है। एक अनुसन्धान के क्षेत्र में जो नया आविष्कार होता है उसका दूसरे क्षेत्रों पर नया प्रकाश पड़ता है। जिस प्रकार भौतिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया कि विश्व प्रकृति का प्रत्येक अणु दूसरे अणुओं को आकृष्ट करता और उनपर प्रभाव डालता है, चाहे एक दूसरे से कितना दूर या कितना छोटा ही क्यों न हो। राजकुमार क्रोपोटकिन ने अपनी पुस्तक "म्यूचुअल एड" (पारस्परिक सहायता) नामक पुस्तक में बहुत स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिखाया है कि छोटी श्रेणियों के पशुओं में भी जीवन प्रवाह को जारी रखने के लिये पारस्परिक सहायता आवश्यक है, मनुष्यों के विषय में तो यह है कि सभ्यता की वृद्धि आपस के वैर विरोध के बदले आपस की सहायता की सतत अभिवृद्धि पर निर्भर है।

"एक सबके लिये और सब एक के लिये" केवल यही एक सिद्धान्त है जिस पर जातियाँ उन्नत हो सकती हैं।

एकता का युग

समय के सब लक्षण इस बात का निर्देश कर रहे हैं कि हम

सब मनुष्य मात्र के इतिहास के एक नवीन युग के प्रकाश में आ रहे हैं। आज तक मानव संसार एक गीध की तरह स्वार्थ और प्रकृति पूजा की पक्की चट्टान में घोंसला बना कर रहता था। उड़ने के लिए उसके प्रयत्न भीरुता के और देखने भर के लिए होते थे। पुराने दकियानूसी विचार और रीति रिवाजों के बन्धन में इसकी लालसा प्रति दिन बढ़ती गई, परन्तु अब इसके बन्धन का समय समाप्त हो चुका है और यह विश्वास और बुद्धि के परों के सहारे आध्यात्मिक प्रेम और सत्य के उच्चतर आकाश मण्डल में विहार कर सकता है। यह अब पहिले की तरह जब इसके पर न निकले थे, भूमि पर बँधा न रहेगा बल्कि स्वतन्त्रा के खुले और प्रकाशमय आकाश मण्डल में स्वैर विहार करेगा। इसकी उड़ान को निश्चित और स्थायी बनाने के लिये केवल एक बात की आवश्यकता है। वह यह है कि इसके न केवल पर ही सुदृढ़ हों बल्कि वह पूरे मेल जोल और आपस के सहयोग से उड़ान लगाये।

जैसा कि अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"यह एक पर से उड़ नहीं सकता। यदि यह केवल धर्म के सहारे ही उड़ना चाहेगा तो इसका ठिकाना भ्रमों की कीचड़ में होगा। और यदि यह केवल विज्ञान के ही बल से उड़ने का यत्न करेगा तो इसका अन्त प्रकृति की उपासना के भयावने दलदल में फँसने में होगा।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

विज्ञान और धर्म में पूरा मेल जोल मानव जीवन को उच्चतर बनाने का प्रधान साधन है। जब यह बात सिद्ध हो जायेगी और प्रत्येक बच्चे को न केवल विज्ञान और कला कौशल की ही शिक्षा दी जायेगी बल्कि मनुष्यमात्र से प्रेम करने और ईश्वर

की इच्छा को, जो विकास की उन्नति से और ईश्वरावतारों की शिक्षाओं से ज्ञात हुई, पूरा करने की भी वैसे ही शिक्षा दी जावेगी तब ही—उससे पूर्व नहीं—ईश्वर का राज्य आयेगा और तब ही—उससे पूर्व नहीं—एक बड़ी महती शान्ति के सुफलों से संसार भरपूर होगा।

अब्दुल-बहा कहते हैं :—

"धर्म जब भ्रमों, पुराने रीतिरस्मों और मूर्खता पूर्ण व्यर्थ विश्वासों से रहित होकर विज्ञान के साथ मिल जायेगा उस समय संसार में एकता और पवित्रता देने वाली एक बड़ी शक्ति उत्पन्न होगी जो लड़ाइयों, विरोधों, झगड़ों और फ़सादों पर झाड़ू फेर देगी और तब मानव जाति ईश्वर के प्रेम की शक्ति में संगठित हो जायेगी।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

———

अध्याय तेरहवाँ

भविष्यवाणियाँ जिन्हें बहाई प्रचार ने पूरा किया

"सब से बड़े नाम अर्थात् बहाउल्लाह का प्रकाश वह प्रकाश है जिसका वचन ईश्वर ने अपनी सब पुस्तकों और धर्मग्रन्थों में—जैसे तोरेत, इंजील और कुरान में दिया था।" (Abdul-Baha).

भविष्यवाणियों का अर्थ

सब जानते हैं कि भविष्यवाणियों का अर्थ बहुत कठिन है और संसार के किसी दूसरे विषय पर विद्वानों का इतना मतभेद कभी नहीं हुआ। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं, क्योंकि पवित्र पुस्तकों के अनुसार बहुत सी भविष्यवाणियाँ ऐसे स्वरूप में दी गई हैं कि जब तक उनके पूरा होने का समय नहीं आता वह समझ में नहीं आतीं और उस समय भी केवल वही लोग समझते हैं जिनका हृदय पवित्र है और जो पक्षपात से रहित होते हैं। जैसे डैनियल के स्वप्नों के अन्त में एक वाणी कही गई थी:—

"पर तू, ऐ डैनियल, वाणी को रोक रख और पुस्तक पर मोहर लगा और अन्तिम समय तक बहुतेरे इधर उधर दौड़ धूप करेंगे और ज्ञान की वृद्धि हो जायेगी, और मैंने सुना पर न समझा, तब मैंने कहा, ऐ मेरे स्वामी इन बातों का परिणाम क्या होगा और उसने कहा ऐ डैनियल, जा, क्योंकि वाणी पर मोहर लग गई और यह अन्त समय तक बन्द होगई है।" (Daniel xii, 4-10.)

यदि ईश्वर ने भविष्यवाणियों पर एक नियत समय तक मोहर लगा दी और उनका अर्थ उन अवतारों पर भी प्रकट न किया जिन के मुँह से वह कहलवाई गई थी, तो इसका अभिप्राय यही है कि किसी एक नियत किये ईश्वरीय दूत के, जिसे इन मोहरों को तोड़ कर भविष्यवाणियों में अन्तर्हित अर्थ को प्रकट करने का अधिकार होगा, दूसरा कोई भी यह काम न कर सकेगा। अतीत समय और अतीत कथनों में भविष्यवाणियों और उनके भ्रमपूर्ण अर्थों के इतिहास तथा स्वयं अवतारों के बताये गंभीर अर्थों का विचार करते हुए हमें भूगर्भवेत्ताओं की उन कल्पनाओं को स्वीकार करने में बड़ी कठिनता आती है जो उन्होंने भविष्यवाणियों के अर्थों और उनके पूरा होने के विषय में की हैं। इसलिए जब कोई मनुष्य प्रकट होता है और इन भविष्यवाणियों को पूरा करने की घोषणा करता है तो हमें चाहिये कि उसकी घोषणा को खुले और पक्षपात रहित हृदय के साथ परखें। यदि उसकी घोषणा मिथ्या होगी तो उसका छल झट प्रकट हो जायेगा और किसी को कोई हानि न होगी। परन्तु उन सब लोगों को बड़ा घाटा होगा जो अपनी अनवधानता से ईश्वरीय दूत को मानने से केवल इसलिये इनकार करते हैं कि वह उस रूप में या उस समय प्रगट नहीं हुआ जो रूप या समय उन्होंने अपने मन में समझ रखा था।

बहाउल्लाह के वचनों और उनके जीवन से सिद्ध होता है कि वह सभी पवित्र पुस्तकों में दिये गये वचन (प्रतिज्ञा) का रूप हैं, जिन्हें शक्ति दी गई है कि भविष्यवाणियों की मोहरों को तोड़ें और ईश्वरीय रहस्यों की 'मोहर लगी उत्तम शराब' उपस्थित करें। इसलिये हमें चाहिये कि हम शीघ्रता से उनकी व्याख्याओं

को सुनें और उनके प्रकाश में एकबार फिर अतीत काल के अवतारों की पुरानी और प्रसिद्ध परन्तु रहस्यपूर्ण वाणियों की परीक्षा करें।

ईश्वर का आगमन

अन्तिम दिनों में ईश्वर का आगमन एक ऐसी आध्यात्मिक घटना है, जिसके बारे में सभी ईश्वरावतारों ने भविष्यवाणियाँ की हैं और अपने अत्यन्त सुरीले राग अलापें है। अब प्रश्न यह है कि 'ईश्वर के आगमन' का अभिप्राय क्या है। निःसन्देह ईश्वर सदा अपनी सृष्टि के साथ है, सब में सब के द्वारा और सब पर प्रकट है, वह श्वास नाड़ी से भी अधिक समीप और हाथ पाँव से भी अधिक नज़दीक है। यह ठीक है पर मनुष्य अन्तर्वर्ती अधिक श्रेष्ठ ईश्वर को न देख सकते हैं और नाहीं उस समय तक जबकि वह मानव रूप में आकर उनसे मानव भाषा में बात चीत नहीं करता वह उसकी सत्ता को मान सकते हैं। अपने उच्चतर गुणों को प्रकट करने के लिये ईश्वर सदा से एक-एक मनुष्य को अपना साधन बनाता आया है। प्रत्येक ईश्वरावतार एक मध्यवर्ती (वसीला) था जिसके द्वारा ईश्वर अपने बंदों के पास आया और उसने उनसे वार्तालाप किया। मसीह एक वसीला था और ईसाइयों ने उसके आगमन को यथार्थ में ही ईश्वर का आगमन समझा। उसमें उन्होंने ईश्वर का मुँह देखा और उसके शब्दों में उन्होंने ईश्वर के शब्द सुने। बहाउल्लाह कहते हैं "सब घर वालों के स्वामी, अनश्वर पिता, संसार के उत्पादक और रक्षक का आगमन जो सब ईश्वरावतारों के कथन के अनुसार अन्तिम दिनों में होने वाला है, उस का अभिप्राय सिवा

इसके और कुछ नहीं कि ईश्वर मानवरूप में प्रकट होगा जिस प्रकार वह नासरथ् के यीसू की देह में प्रकट हुआ, केवल इसी समय वह पूर्णतर और अधिकतर प्रकाश के रूप में आया जिसके लिये मसीह और दूसरे अवतारी लोगों के मनों और बुद्धियों को तैयार करने आये थे।"

मसीह के संबन्ध मे भविष्यवाणियाँ

मसीह के राज्य संबन्धी भविष्यवाणियों के अर्थों को ठीक न समझ कर यहूदियों ने ईसा को स्वीकार न किया। अब्दुल-बहा कहते हैं—

"यहूदी आज तक मसीह के आगमन की प्रतीक्षा में हैं और दिन रात ईश्वर से प्रार्थना करते रहते हैं कि हे ईश्वर मसीह को शीघ्र ला। परन्तु जब मसीह आया तो उन्होंने उसका प्रत्याख्यान किया और उसकी हत्या यह कह कर की कि यह वह नहीं जिसकी प्रतीक्षा में हम हैं। देखो, जब मसीह आयेगा तो चिह्न और चमत्कार इस बात के साक्षी होंगे कि यही सच्चा मसीह है। मसीह अज्ञात नगर से आयेगा। वह दाऊद के सिंहासन पर आरूढ़ होगा और देखो, फौलाद की तलवार हाथ में लिये आयेगा और लोहे की छड़ी के साथ शासन करेगा। वह ईश्वरावतारों के नियमों को पूरा करेगा। वह पूर्व और पश्चिम का विजय करेगा और अपने चुने हुए लोगों अर्थात् यहूदियों को सम्मान देगा। वह अपने साथ एक ऐसा शान्ति का शासन लायेगा कि पशु भी मनुष्यों के साथ वैर भाव छोड़ देंगे। भेड़िया और भेड़ का बच्चा एक ही घाट पर पानी पियेंगे और ईश्वर की सारी सृष्टि में शान्ति रहेगी।"

"यहूदी ऐसा ही समझते और यही कहा करते थे क्योंकि वह पवित्र पुस्तकों और उनके तेजोमय तत्त्वों को, जो उनमें थे, नहीं समझते

थे उनको शब्द तो कण्ठस्थ थे पर जीवनप्रद भाव का वह एक अंश भी न समझ पाते थे।"

"सुनिये, मैं उनका अर्थ तुम्हें बताता हूँ। यद्यपि मसीह नासरत से, जो एक ज्ञात स्थान था, आये थे पर आसमान से भी आये थे। उनका देह मरियम से प्रकट हुआ पर उनकी आत्मा आकाश से आई थी। वाणी ही उनके हाथ में खड्ग था जिसके बल से उन्होंने अच्छे बुरे में, सच्चे-झूठे में, ईमानदार और बेईमान में, प्रकाश और अन्धकार में भेद कर दिखाया। इनकी वाणी वास्तव में एक बड़ी तेज़ तलवार थी। जिस सिंहासन पर वह आरूढ़ हुए वह नित्यस्थायी सिंहासन है, जिस पर बैठ कर वह सदा शासन करते हैं। यह सिंहासन स्वर्गीय है, पार्थिव नहीं, क्योंकि पार्थिव सब वस्तुएँ नश्वर हैं परन्तु स्वर्गीय वस्तुएँ कभी नष्ट नहीं होतीं। उन्होंने मूसा के धर्म नियमों का नया अर्थ करके उन्हें पूरा किया और सब अवतारों के कानूनों को भी पूरा किया। उनके शब्दों ने पूर्व और पश्चिम का विजय किया। उनका राज्य नित्य है। जिन यहूदियों ने उन पर विश्वास किया उनको उन्होंने उच्च बनाया। वह स्त्री पुरुष नीची जातियों में उत्पन्न हुए थे परन्तु उनके साथ संबन्ध से यह बड़े और स्थायी प्रभाव के अधिपति होगये। पशुओं का एक दूसरे से मिलकर रहने का आशय यह है कि भिन्न भिन्न जातियाँ और समुदाय जो कभी आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे, अब प्रेम और उदारता से रहेंगे और मसीह रूपी नित्यस्रोत से जीवनरूपी जल मिल-जुल कर पियेंगे।" (Wisdom of Abdul-Baha.)

ईसाइयों की बहुत बड़ी संख्या इन भविष्यवाणियों का मसीह पर घटित होना स्वीकार करती है, परन्तु ऐसी ही दूसरी भविष्यवाणियों के संबन्ध में, जो बाद में आने वाले मसीह के

बारे में हैं बहुत से ईसाई वही धारणा रखते हैं, जो यहूदी मसीह के बारे में रखते हैं। वह आशा करते हैं कि इस भूमण्डल पर एक चमत्कार प्रकट हो जो भविष्यवाणियों के अर्थ को पूरा करे।

बाब और बहाउल्लाह के विषय में भविष्यवाणियां

बहाई कथनों के अनुसार वह भविष्यवाणियाँ जो 'अन्तिम समय' 'अन्तिम दिन' 'नित्य पिता' 'सृष्टि के स्वामी' के आने के संबन्ध में हैं, वह मसीह के बारे में नहीं बहाउल्लाह के बारे में हैं। उदाहरण के लिये 'इसाइयाह' पुस्तक की प्रसिद्ध भविष्य वाणी को लीजिए।

"वह लोग जो अन्धकार में चल रहे थे, उन्होंने एक महान् प्रकाश देखा, वह जो मृत्यु की छाया के नीचे की भूमि पर रहते थे, उन पर एक उज्ज्वल प्रकाश चमका। क्योंकि तू ने उसके बोझ की धुर को, उसके कंधे की लाठी को, उस पर अत्याचार करने वाले के अधिकार को ऐसा तोड़ा है, जैसा कि मदियान के दिन हुआ था। क्योंकि प्रत्येक युद्ध करने वाला सिपाही अपने रुधिर भरे कपड़ों के साथ आग जलाने के लिये ईंधन बनेगा। क्योंकि हमारे लिए एक बच्चे का जन्म हुआ और हमें एक बेटा दिया गया और शासनभार इसके कंधे पर होगा और वह 'अद्भुत मन्त्री' 'शक्तिमान् ईश्वर' 'स्थायी पिता' 'शान्ति का राजकुमार' इन नामों से पुकारा जायेगा। उसके साम्राज्य की वृद्धि और शान्ति की कोई सीमा न होगी। वह दाऊद के सिंहासन पर और उसके राज्य पर आज से लेकर सदा के लिए शासन करेगा और न्याय और नीति का पालन करेगा। सृष्टि के स्वामी का उत्साह यह करेगा।" (Isa, ix, 2–7.)

यह उन भविष्यवाणियों में से एक है जिनका अर्थ प्रायः

मसीह की ओर जोड़ा जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि उसका कुछ भाग मसीह के साथ जोड़ा जा सकता है, परन्तु थोड़ा सा ध्यान यह दिखा देगा कि यह (भविष्यवाणी) बहाउल्लाह के साथ कितनी पूर्णता से मेल खाती है। निःसन्देह मसीह भी प्रकाश लाने वाले और मुक्तिदाता थे परन्तु इनके आगमन पर दो सहस्र वर्ष होने को हुए और पृथ्वी पर लोगों की बहुत बड़ी संख्या अन्धकार में चल रही है और इसरियल के बच्चे तथा बहुतेरे ईश्वर के दूसरे बच्चे अत्याचारियों के शासन के नीचे कराह रहे हैं। इसके विरुद्ध बहाई प्रचार के आरम्भिक कुछ ही दिनों में सत्य का प्रकाश पूर्व और पश्चिम दोनों में चमक उठा है, ईश्वर के पितृभाव और मनुष्यों के भ्रातृभाव का शुभ संदेश संसार के सब देशों में पहुँचाया गया है। बल वाले बड़े बड़े शासक जो सेना के बल से शासन करते थे नष्ट भ्रष्ट हो गये और एक पृथ्वी भर की एकता पैदा हो गई है जो संसार भर की दलित और पीड़ित जातियों को शीघ्र सुख और शान्ति देने की आशा बँधा रही है। बड़ी लड़ाईयां जिन्होंने ईस्वी सन् १६१४ से १६१८ और १६३६ से १६४५ तक सारे विश्व को अभूतपूर्व आग्नेय अस्त्रों से, तरल अग्नि, और बंबों से, इंजनों के ईंधन से संसार को कँपा चुकी है वास्तव में जलने और अग्नि के ईंधन के साथ घटित हुई थी। बहाउल्लाह ने शासन और उसके प्रबन्धों के प्रश्नों पर लेख लिख कर और यह दिखा कर कि उनका उत्तम निर्धारण क्या है, शासन को अपने कन्धों पर इस प्रकार ले लिया कि मसीह ने ऐसा कभी न किया था। 'नित्य स्थायी पिता' 'शान्ति का राजकुमार' की उपाधि के संबन्ध में बहाउल्लाह ने अपने

आप को बार बार पिता का अवतार कहा है, जिसकी मसीह और इसाइयाह ने भविष्यवाणी की थी, परन्तु मसीह ने अपने आप को सदा पुत्र कहा है। बहाउल्लाह घोषणा करते हैं कि हमारा काम पृथ्वी पर शान्ति स्थापित करना है परन्तु मसीह ने कहा है "मैं शान्ति नहीं बल्कि तलवार लाया हूँ" और सच भी यही है कि ईसाइयों के सारे युग में युद्ध और सांप्रदायिक झगड़े ज़ोरों पर रहे।

ईश्वर की महिमा

'बहाउल्लाह' एक अरबी भाषा का शब्द है जिसका अनुवाद है 'ईश्वर की महिमा' और हिब्रू अवतारों ने इस उपाधि का बार बार व्यवहार उसी प्रतिज्ञात रूप के साथ किया है जो अन्तिम दिनों में प्रकट होगा। जैसे इसाइयाह के ४० वें अध्याय में लिखा है:—

"तुम शान्ति दो, मेरे लोगों को सान्त्वना दो, तुम्हारा ईश्वर कहता है। जेरुस्लम को तसल्ली दो और उसे पुकार कर कहो कि उसके विषादमय लड़ाई झगड़ों के दिन बीत गये, उसके अपराध क्षमा किये गये और उसने ईश्वर के हाथों से अपने पापों का बदला दुगुना पाया। अरण्य में एक चीखने वाले की ध्वनि कि "तुम ईश्वर का मार्ग साफ करो, जंगल में हमारे ईश्वर के लिए एक सीधी सड़क तैयार करो। प्रत्येक ढलान समतल किया जाए और प्रत्येक पर्वत और टीला नीचा किया जाए और प्रत्येक टेढ़ा स्थल काट-छांट कर सीधा और विषम किया जाए" और ईश्वर की महिमा का प्रकाश स्पष्ट होगा और सभी मनुष्य इकट्ठे उसे देखेंगे।"

पहली भविष्यवाणी के समान इसका भी कुछ भाग मसीह के अवतार में और कुछ उनके अग्रदूत (पहले प्रकट होने वाले) 'जॉहन बपतिस्मा' देने वाले में पूरा होगया था, परन्तु कुछ भाग ही पूरा हुआ था, क्योंकि मसीह के समय में जेरुस्लेम की लड़ाई अभी समाप्त न हुई थी, कड़ी परीक्षा और अपमान की कई सदियाँ अभी उस पर बाकी थीं। परन्तु बाब और बहाउल्लाह के प्रकाश से उस आकाशवाणी का पूर्ण होना आरम्भ होगया है, जेरुस्लेम के लिये सम्मान के दिन आगये हैं और उसके शान्तिमय उज्ज्वल भविष्य की आशाएँ अब निश्चित हो रही हैं।

दूसरी भविष्यवाणियाँ इसराइल के मुक्तिदाता-ईश्वर की महिमा, पुण्य भूमि के पूर्व से—पवित्र भूमि में आने के बारे में हैं। बहाउल्लाह ईरान में प्रकट हुए जो पैलेस्टाइन से पूर्व की ओर है अर्थात् सूर्योदय की ओर है, और उस पवित्र भूमि में आये जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम चौबीस वर्ष बिताये। यदि वह स्वतन्त्र मनुष्य के समान वहाँ जाते तो लोगों को यह कहने का समय मिलता कि यह एक झूठ या छद्म है जो उसने भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिये किया है परन्तु वह एक निर्वासित और बन्दी की दशा में आये थे। ईरान के शाह और तुर्की के सुलतान ने उन्हें वहाँ भेजा था, जिन पर यह सन्देह ही नहीं हो सकता कि बहाउल्लाह की "ईश्वर की महिमा" वाली घोषणा को सत्य करने के लिये एक युक्ति गढ़ने के अभिप्राय से उन्होंने ऐसा किया है।

ईश्वर का दिन

'ईश्वर का दिन' 'अन्तिम दिन' इस प्रकार की उक्तियों में दिन शब्द से अभिप्राय 'दौर' है। प्रत्येक बड़े बड़े धर्म प्रवर्तक का "एक दिन" था। प्रत्येक सूर्य के समान था। उनकी शिक्षा के लिए एक प्रभात या अरुणोदय होता था। उनका सत्य मन और बुद्धियों को धीरे धीरे अधिकाधिक प्रकाशित करता था यहाँ तक कि वह अपने प्रभाव के उच्चशिखर पर जा पहुँचती थी। तब धीरे धीरे उन का प्रकाश कम होने लगता था, उनके अर्थ बदले जाते और उनकी यथार्थता नष्ट की जाती थी और अन्धकार संसार में छा जाता था, फिर नये 'दिन' का उदय होता था। ईश्वर के सबसे बड़े प्रकाश का दिन अन्तिम दिन या दौर है, क्योंकि यह ऐसा दिन है जिसका कोई अन्त नहीं और इसके ऊपर कोई रात नहीं है। इस प्रकाश का सूर्य कभी अन्त न होगा बल्कि वह मनुष्य की आत्मा को इस संसार और अगले संसार दोनों में प्रकाश देता रहेगा। वास्तव में आध्यात्मिक सूर्य कोई भी कभी अस्त नहीं हुआ। मूसा, क्राइस्ट, मोहम्मद आदि सभी अवतार रूपी सूर्य अन्तरिक्ष में बड़े उज्ज्वल प्रकाश के साथ अब भी चमक रहे हैं। परन्तु पृथ्वी के बनाये बादल उनके प्रकाश को भूमण्डल से छुपा रहे हैं। बहाउल्लाह रूपी सर्वातिशायी सूर्य इन काले बादलों को सदा के लिए हटा देगा ताकि सब धर्मों के लोग सब अवतारों के प्रकाश में सहभागी हों और सहमत होकर एक ईश्वर की आराधना करें जिसके प्रकाश का सब अवतारों ने संसार में प्रसार किया था।

अब्दुल-बहा के बारे में भविष्यवाणियाँ

इसाइयाह, जेरेमियाह, एजकील और ज़करियाह की भविष्य वाणियों में एक ऐसे मनुष्य की ओर संकेत पाया जाता है जो 'शाखा' कहलायेगा। ईसाइयों ने प्रायः इसको भी मसीह पर ही लगाया है, परन्तु बहाई लोग इसका विशेष रूप से अब्दुल-बहा के साथ संबन्ध बताते हैं। ईरान में यह एक साधारण रीति है कि घर के सबसे बड़े बेटे को 'सबसे बड़ी शाखा' कहते हैं और अब्दुल-बहा क्योंकि बहाउल्लाह के ज्येष्ठ पुत्र थे, इसलिए बहाईयों में आमतौर पर यह इसी पदवी से प्रसिद्ध हैं। बहाउल्लाह अपने लेखों में अपने आपको बार बार वृक्ष या जड़ कहा करते हैं और अब्दुल-बहा को 'शाखा' के नाम से बुलाते हैं।

अब्दुल-बहा स्वयं लिखते हैं:—

"अब्दुल-बहा ईश्वर के समझौते का केन्द्र है, और वह शाखा है जो वृक्ष का एक अङ्ग हो। आवश्यक और मूलाधार विश्व का सारा तत्त्व वृक्ष है।" (Star of the West, vol. viii, No. 17. p. 325.)

'शाखा' के विषय में बाइबल की सबसे बड़ी भविष्यवाणी इसाइयाह के ग्यारहवें अध्याय में है—

"जैस्सी के तने से एक छड़ी जैसी कोंपल निकलेगी और उसकी जड़ों से एक शाखा उत्पन्न होगी, और ईश्वर की आत्मा उस पर टिकेगी, बुद्धि और समझ का तत्त्व, मन्त्रणा और सामर्थ्य का तत्त्व, ज्ञान और ईश्वर के भय का तत्त्व (भी उस पर टिकेगा) सदाचार और भक्ति उसकी कमर की पेटी होगी। इस समय भेड़िया भेड़ के बच्चे के साथ रहेगा,

और चीता बकरी के बच्चे के साथ, बछड़ा और शेर का बच्चा और पला हुआ बैल मिल जुल कर रहेंगे, और एक नन्हा बच्चा उनका परिचालन करेगा। वह मेरे पवित्र पर्वत के सब कोनों में किसी को नष्ट या पीड़ित न करेंगे, क्योंकि जिस प्रकार समुद्र पानी से भरा है वैसे ही पृथ्वी ईश्वरीय ज्ञान से परिपूर्ण है। और उस दिन ऐसा होगा कि ईश्वर दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाकर बचे हुए अपने लोगों को असीरिया, मिस्र, पथ्रोस, कुश, ऐलम, शिनार, हमाथ और सामुद्रिक द्वीपों से लौटा लायेगा। और वह जातियों के लिये एक निशान खड़ा करेगा और इसराइल के अनुयायिओं को जो बहिष्कृत किये गये हैं, एकत्र करेगा और जुदाह के बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी के चारों कोनों से इकट्ठा करेगा।"

अब्दुल-बहा इस भविष्यवाणी और 'शाखा' के संबन्ध में दूसरी भविष्यवाणियों के बारे में कहते हैं—

"उस अद्वितीय शाखा के प्रकाश में सब से बड़ी घटना यह होगी कि ईश्वर का झंडा सब जातियों में उन्नत होगा, अर्थात् सब जातियाँ और समुदाय ईश्वर के इस झंडे अर्थात् इस ईश्वरीय शाखा की छाया के नीचे इकट्ठे होंगे और सब एक जाति होजायेंगे। धर्मों और मतों के परस्पर युद्ध, जातियों में आपस के वैरभाव और देशभक्ति के भेदभाव निर्मूल किये जायेंगे। सब एक धर्म, एक विश्वास, एक जाति और एक रूप होजायेंगे, और एक देश में रहेंगे जो यह सारा भूगोल है। सब जातियों में व्यापक शान्ति और सहयोग उत्पन्न होगा। यह अनुपम शाखा सब इसरीयलों को एकत्र करेगा, इसका भाव यह है कि इसके समय में यहूदी लोग पूर्व और पश्चिम में तथा दक्षिण और उत्तर में बिखरे पड़े हैं, पवित्र भूमि में आकर जमा होंगे।"

"अब देखो, यह घटनाएँ ईसा के दौर में नहीं घटीं, क्योंकि सब जाति एक झंडे के नीचे, जिसका अभिप्राय 'शाखा' है, इकट्ठी नहीं हुई थीं। परन्तु इस दौर में, जो समस्त संसार के स्वामी का दौर है, सब जातियाँ इस झंडे की छाया में जमा होंगी। इसी प्रकार संसार में बिखरे हुए इसराइल क्राइष्ट के दौर में पवित्र भूमि में एकत्र नहीं किये गये थे, परन्तु बहाउल्लाह के दौर के आरम्भ से ही यह ईश्वरीय प्रतिज्ञा, जैसी कि ईश्वरावतारों की सब पुस्तकों में स्पष्ट लिखी गई है, पूरी होने लग गई है। तुम देख सकते हो कि संसार के सब प्रदेशों से यहूदी जाति आकर पवित्र भूमि में जमा हो रही है। वह नगरों ग्रामो में अपनी भूमि लेकर बस रहे हैं और प्रतिदिन उनकी वृद्धि होतो जायेगी यहाँ तक कि एक दिन सारा पैलेस्टाइन इनका घर होजायेगा।" (Some Answered Questions, p. 75.)

इस लेख के प्रकाशित होने के बाद पैलेस्टाइन तुर्कों के अधिकार से निकल गया और "मित्र मण्डल तथा संयुक्त शक्तियों" ने पैलेस्टाइन में फिर से यहूदियों के जातीय घर की नीति को स्वीकार कर लिया। महासंग्राम के अनन्तर एक सभा भी स्थापित होगई और अन्तर्जातीय कांग्रेस भी बन गई है, जिसका उद्देश्य धीरे-धीरे शस्त्रबल को घटाना है। अन्तर्जातीय शान्ति की भविष्यवाणी के पूर्ण होने के लिये निःसंदेह यह एक एक आगे को बड़ा कदम बढ़ाना है।

निर्णय का दिन (प्रलय)

मसीह ने कई दृष्टान्तों में निर्णय के बड़े दिन (प्रलय) के विषय में कहा है "जिस समय मनुष्य का पुत्र अपने पिता के

ऐश्वर्य में आयेगा और प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा।" (Matt. xvi. 27.) उन्होंने उस दिन की खेती काटने के दिन से तुलना करते हैं, जब सरकंडे तो जला दिये जाते हैं और गेहूँ जमा कर लिया जाता है।

"ऐसा ही संसार के अन्त में होगा (समय की समाप्ति)। मनुष्य का पुत्र अपने देव दूतों को भेजेगा। वह उसके राज्य में से उन सब वस्तुओं को जो सताती हैं या बुराई करती हैं, जमा करेंगे और जहन्नम (नरक) में फेंक देंगे जहाँ रोने और दांत पीसने के सिवा और कुछ न होगा। उस समय भद्र पुरुष अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमक उठेंगे।" (Matt. xiii, 40-43.)

बाइबल की इस उक्ति और इसी प्रकार की अन्य उक्तियों में व्यवहृत हुए 'संसार का अन्त' इस वाक्यांश ने लोगों को इस धारणा का अवकाश दे दिया कि जब निर्णय का दिन आयेगा तो पृथ्वी एकाएक नष्ट कर दी जायेगी परन्तु यह एक स्पष्ट भ्रम है। इन शब्दों का अर्थ "दौर की समाप्ति या अन्त है" अधिक संगत और ठीक है। मसीह कहते हैं कि ईश्वर का राज्य पृथ्वी और आकाश दोनों पर स्थापित किया जायेगा। वह हमें प्रार्थना करना सिखाते हैं, "तेरा राज्य आये, तेरी इच्छा जैसे आसमान पर पूरी होती है पृथ्वी पर भी हो।" अँगूरी बाग के दृष्टान्त में (लिखा है) जब बाप अर्थात् अँगूरी बाग का स्वामी आयेगा तो वह दुष्ट किसानों का नाश करेगा। वह अँगूरी बाग (संसार) को नष्ट नहीं करेगा बल्कि वह उसे दूसरे किसानों के सुपुर्द करेगा जो समय पर उसे फल पहुँचाया करेंगे। भूमि नष्ट नहीं की जायेगी बल्कि उसे फिर से नई और तैयार की जायेगी। एक

दूसरे मौके पर मसीह ने उस दिन का बयान करते हुए कहा "फिर से उत्पत्ति होगी जब मानव-पुत्र अपने पिता के सिंहासन पर बैठेगा।" सेंट पीटर ने इसकी बसन्त समय से तुलना की है और कहा है "उस दिन वह सब बातें प्रकट होंगी जिनका वर्णन ईश्वर ने संसार के आरम्भ से अपने सब अवतारों के मुँह से किया है। मसीह ने जिस निर्णय के दिन का संकेत किया है उससे प्रकट होता है कि वह और गृहस्थों के स्वामी अर्थात् पिता का आगमन, जिसके विषय में इसाइयाह और पुराने टैस्टमेंट के अवतारों ने भविष्यवाणियाँ की हैं, एक ही हैं। इस समय दुष्टों को कठोर दण्ड दिये जायेंगे और न्याय और सत्य का राज्य पृथ्वी पर वैसा ही स्थापित हो जायेगा जैसा कि आसमान पर है।

बहाई कथन के अनुसार प्रत्येक ईश्वरीय ज्योति (अवतार) का आगमन 'निर्णय का दिन' है, परन्तु बहाउल्लाह के महा ज्योति का आगमन एक वह बड़ा दिन है जिससे इस बड़े दौर का आरंभ होता है जिसमें हम रहते हैं। दुँदुभि-नाद, जिसके बारे में मसीह, मोहम्मद और दूसरे अवतार कहते आये हैं, ईश्वरीय प्रकाश की पुकार होती है जो सब आसमान और पृथ्वी पर रहने वालों के लिये चाहे वह देहधारी हों या देह रहित हों, की जाती है। ईश्वरीय प्रकाश के द्वारा ईश्वर से मेल, उनके लिए जो उससे मिलना चाहते हैं, उसके प्रेम और ज्ञान के स्वर्ग का प्रधान द्वार है और उसके बंदों के साथ प्रेम से रहने का साधन है। इसके विरुद्ध वे लोग जो ईश्वर के नियमों से जिन्हें वह अपने प्रकाश के द्वारा नियत करता है अपने नियमों को अच्छा

मानते हैं, वह स्वार्थ, भ्रम और वैर के नरक में अपने आप को फेंकते हैं।

महान् पुनरुत्थान (कियामत-प्रलय)

निर्णय का दिन पुनरुत्थान अर्थात् मुर्दों के जी उठने का भी दिन है। सेंट पोल कोरिन्थियनों को लिखे पहले पत्र में लिखते हैं:—

"देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँ, हम सब सोंगे नहीं, बल्कि एक क्षण में, एक निमेष में बदल दिये जायेंगे क्योंकि दुंदुभि बजाई जाएगी और सब मुर्दे पवित्र करके उठाए जायेंगे, और हम सब बदल दिये जायेंगे। क्योंकि यह अपवित्रता पवित्रता में और यह मृत्यु अमरत्व में बदल दी जायेगी।" (Cor. v, 51–54.)

इन संदर्भों के अर्थ अर्थात् मृतकों के जी उठने के बारे में बहाउल्लाह अपनी पुस्तक 'इकान' में लिखते हैं—

" 'मृत्यु' और 'जीवन' शब्दों का, जो पुस्तकों में आये हैं, अर्थ है धर्म की मौत वा धर्म का जीवन है। इन अर्थों को न समझने के कारण प्रत्येक प्रकाश में लोगों ने मानने से इनकार किया और पथ दर्शक सूर्य का पथ-प्रदर्शन न पाया और स्थायी सौन्दर्य का अनुसरण न किया। ईसा कहते हैं 'तुम्हारा पुनर्जन्म अवश्यंभावी है।' फिर एक और स्थान में कहते हैं कि "जब तक मनुष्य पानी और आत्मा से जन्म न ले ईश्वर के राज्य में प्रविष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि जो मांस से उत्पन्न हो, वह मांस है और जो आत्मा से उत्पन्न हो वह आत्मा है" (John iii, 5–6.)। इसका अथ यह है कि जो ईश्वरीय ज्ञान के पानी और मसीह की पवित्र आत्मा से नहीं उत्पन्न हुए वह ईश्वर के बड़े राज्य में प्रविष्ट होने के अधिकारी नहीं हैं। सारांश यह है कि वह सेवक जो प्रत्येक प्रकाश में पवित्र तत्त्व की आत्मा और श्वास से जीवन धरते हैं उन्हें

जीवन मिलता और मुर्दों में से जी उठने का अधिकार प्राप्त होता है, और वही ईश्वरीय प्रेम के स्वर्ग में प्रवेश पाते हैं। औरों पर वह दूसरी आज्ञा अर्थात् मृत्यु और अनवधानता लागू होती है और वह अविश्वास की अग्नि और ईश्वरीय यातनाओं में धकेले जाते हैं। यदि तुम ईश्वरीय ज्ञान का थोड़ा सा भी निर्मल जल पी लो तो तुम समझ जाओगे कि सच्चा जीवन हृदय का जीवन है, देह का जीवन नहीं, क्योंकि देह के जीवन में मनुष्य और पशु दोनों एक हैं, परन्तु सच्चा जीवन उन प्रकाशमय हृदय वालों के लिये है जो विश्वास के समुद्र से जल पीते और निश्चय के फल खाते हैं। इस जीवन के बाद मरण और इस अमरत्व के बाद विनाश नहीं। लिखा है कि 'श्रद्धालु पुरुष दोनों अर्थात् इस ओर आने वाले संसारों में जीवित रहता है।' यदि जीवन से दैहिक जीवन ही अभिप्रेत होता तो यह स्पष्ट है मृत्यु उसका अन्त कर देगी।"
pp. 114, 118, 120.)

बहाई शिक्षा के अनुसार पुनरुत्थान का दैहिक जीवन से कोई संबन्ध न होगा। जब एक बार आदमी मर जाता है, तो देह सदा के लिये नष्ट हो जाता है। उसके जोड़ विच्छिन्न हो जाते हैं और उसके अणु फिर कभी उस देह में पुनः संगठित नहीं होते।

पुनरुत्थान का अर्थ किसी व्यक्ति का आध्यात्मिक जीवन में जन्म लेना है। यह ईश्वरीय प्रकाश के द्वारा पवित्र आत्मा के प्रसाद से प्राप्त होता है। क़ब्र जिससे वह उठता है, वह अज्ञान और ईश्वर से विमुख रहने की क़ब्र है। निद्रा जिससे वह जाग उठता है, वह आत्मिक अवस्था की प्रसुप्ति है जिसमें पड़े हुए बहुतेरे ईश्वर के दिन के अरुणोदय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह प्रभात उन सब को प्रकाशित कर देता है जो पृथ्वी पर रहते हैं चाहे

वह देहधारी हों या निर्देह, परन्तु वह आदमी जिनके आध्यात्मिक नेत्र बंद है, इस प्रभात को नहीं देख सकते। पुनरुत्थान का दिन चौबीस घंटों का दिन नहीं है बल्कि यह एक दौर है जिसका अब आरम्भ हुआ है और उस समय तक चलेगा जब तक वर्तमान दौर चलता जायेगा। इस दिन का प्राभातिक तारा 'बाब' था और इसका बहाउल्लाह का महान् प्रकाश है, और इसका चाँद अब्दुल-बहा है। यह तारा-सूर्य और चाँद ऐसे हैं जो अभी अस्त न होंगे और आध्यात्मिक संसार में उस समय में भी चमकते रहेंगे जब वर्तमान सभ्यता के सब चिह्न भूमण्डल पर से नष्ट हो जायेंगे।

मसीह का पुनरागमन

मसीह ने बहुत सी उक्तियों में भविष्य के ईश्वरीय प्रकाश का अन्य पुरुष में संकेत किया है पर किसी किसी उक्ति में उत्तम पुरुष में भी निर्देश किया है। जैसे वह कहते हैं:—'मैं जाता हूँ कि तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ और यदि मैं गया और तुम्हारे लिये स्थान तैयार किया तो मैं फिर आऊँगा और तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा" (John xiv, 2.)। कार्यों के प्रथम अध्याय में लिखा है कि जब मसीह आसमान की ओर उठाये गये तो शिष्यों से कहा गया—"यही यसू जो तुम्हारे पास से उठाया गया है वैसे ही फिर आयेगा जैसे तुमने इसे आसमान पर जाते देखा है।" इन और इसी प्रकार की अन्य उक्तियों के आधार पर बहुत से ईसाई इस आशा में हैं कि मनुष्य का पुत्र जब 'आकाश के बादलों में बड़े ऐश्वर्य के साथ' आयेगा तब वह उसी यसू को उसी देह में देखेंगे जिसमें वह दो सहस्र वर्ष पूर्व जेरुस्लेम

की गलियों में घूमता फिरता था और जिसने दुःख उठाये और सूली पर चढ़ने का कष्ट भोगा। वह आशा करते हैं कि उसके हाथों और पाँवों में जो मेख़ों ने छिद्र किए थे उनमें उँगलियाँ डालकर और उसकी पसलियों में जो भाले ने घाव किये थे उसमें हाथ डालकर देखें। परन्तु स्वयं मसीह के विचार इन आशाओं का खण्डन करते थे। मसीह के समय में यहूदी लोग ठीक इसी प्रकार ऐलियास के पुनरागमन का विचार किया करते थे, परन्तु मसीह ने उनकी भूल उन्हें अच्छी तरह समझा दी और कहा कि वह भविष्यवाणी जिसमें 'ऐलियास का पहले आना' कहा गया है, पूरी हो गई है, प्रथम ऐलियास की देह और रूप में आने से नहीं बल्कि जॉहन बपतिस्मा देने वाले के रूप में, जो ऐलियास की आत्मा और शक्ति लेकर आया है। मसीह ने कहा "और यदि तुम स्वीकार करो तो यही 'ऐलियास'। है जिसका आना यदि आवश्यक था। वह जो कान रखता है, सुने।" इसलिये यह सिद्ध हुआ कि ऐलियास के पुनरागमन का अभिप्राय एक और मनुष्य का अन्य माता-पिता के घर जन्म लेकर आना है जो ईश्वर की ओर से उस शक्ति और आत्मा का स्वामी होगा जिसका ऐलियास स्वामी था। मसीह के इन शब्दों से निश्चय ही यह बात सिद्ध हो गई कि मसीह के पुनरागमन का अभिप्राय एक अन्य पुरुष का अन्य माता से जन्म पाकर आना है जो वैसी ही ईश्वरीय शक्ति और आत्मा को प्रकट करेगा जैसे मसीह ने किया था। बहाउल्लाह कहते हैं कि ऐलियास और मसीह के पुनरागमन की भविष्यवाणी बाब और उसके अपने आगमन से पूरी हो गई।

वह कहते हैं:—

"यदि आज का सूर्य कहे कि मैं कल का सूर्य हूँ तो ठीक है, यदि दिनों की दृष्टि से कहे कि मैं दूसरा हूँ तो भी ठीक है। इसी प्रकार दिनों का विचार करके यदि कहा जाये कि सब दिन एक ही हैं तो संगत और उचित है। पर यदि नाम और रीतियों की दृष्टि से कहा जाये कि यह एक दूसरे से पृथक् हैं तो भी सत्य है, क्योंकि तुम ऐसा ही देखते हो। यद्यपि वह एक ही हैं तो भी प्रत्येक में नाम गुण और कार्य भिन्न भिन्न दीखते हैं जो एक के सिवा दूसरे में नहीं पाये जाते। इसी प्रकार और उदाहरण से पवित्र प्रकाशों (अवतारों) का पार्थक्य अन्तर और एकता के स्थानों का तत्त्व समझ लो ताकि पार्थक्य और एकता के संबन्ध में नामों और गुणों के स्रष्टा के शब्दों का अर्थ तुम्हारी समझ में आ जाये और तुम को इस प्रश्न का उत्तर मिल जाए कि क्यों इस अनन्त सौन्दर्य (पूर्णावतार) ने भिन्न भिन्न युगों में भिन्न भिन्न नाम धारण किए।" (Iqan, p. 21.)

अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"समझ लो कि मसीह के पुनरागमन का अभिप्राय यह नहीं जो लोगों ने समझ रखा है बल्कि यह इस बात का संकेत है कि उसके बाद एक और प्रतिज्ञात पुरुष आने वाला है। वह ईश्वर के राज्य तथा शक्ति साथ लेकर आयेगा, जिसने सारे संसार को घेर रखा है। यह राज्य हृदयों और आत्माओं के संसार पर है भौतिक संसार पर नहीं, क्योंकि यह भौतिक संसार ईश्वर के सामने मक्खी के एक पर बराबर भी नहीं, यदि तुम वह हो, जो जानते हैं, निश्चय मसीह अपने राज्य के साथ ऐसे आरम्भ से, जिसका कोई आरम्भ नहीं, आया और अनन्त अन्त तक अपने राज्य के साथ आयेगा, क्योंकि इन अर्थों में मसीह का अभिप्राय ईश्वरीय तत्त्व से है, जो सारे दिव्य और अदिव्य का सार है,

जिसका न आदि है न अन्त। प्रत्येक दौर में इसी का आविर्भाव, उदय, प्रकाश और अस्त है।" (Tablets of Abdul-Baha, vol. i,p. 138.)

अन्त का समय

मसीह और उसके रसूलों ने बहुत सी निशानियाँ बताई हैं जिनसे मानवपुत्र के पुनरागमन का समय पहचाना जायेगा। मसीह कहते हैं:—

"और जब तुम देखो कि जेरुस्लम सेनाओं से घिरा है तो समझ लेना कि उसका विध्वंस समीप है। क्योंकि यह बदला लेने के दिन होंगे जिनमें सभी उल्लिखित बातें पूरी हो जायेंगी। क्योंकि देश में बड़ा उपद्रव और यहाँ के लोगों पर अनर्थ होगा और वह तलवार के घाट उतरेंगे और बन्दी होकर सब जातियों में पहूँचाये जायेंगे और जेरुस्लेम इतर जातियों से कुचला जायेगा जब तक इतर जातियों की अवधि पूरी न होगी।" (Luke xxi, 20—24.)

फिर इन्होंने कहा है:—

"सावधान रहो कि कोई तुम्हें धोखा न दे क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे कि मैं मसीह हूँ और बहुतेरों को पथभ्रष्ट करेंगे। और तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की किंवदन्तियाँ सुनोगे, देखो घबरा न जाना, क्योंकि इन बातों का होना अवश्यंभावी है, परन्तु वह समय अन्तिम न होगा। क्योंकि एक जाति पर दूसरी जाति तथा एक राज्य पर दूसरा राज्य चढ़ाई करेगा, और तब तब अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी और भूचाल आयेंगे। यह सब बातें संकटों का आरम्भ होगा। उस समय लोग तुम्हें कष्ट देने के लिये पकड़वायेंगे और तुम्हारी हत्या

करेंगे और मेरे नाम के निमित्त सब जातियाँ तुमसे घृणा करेंगी। उस समय बहुतेरे पीड़ित होंगे, एक दूसरे को छलेंगे और एक दूसरे से घृणा करेंगे। और बहुतेरे झूठे अवतार उठ खड़े होंगे और बहुतेरों को पथभ्रष्ट करेंगे। और अधर्म फैल जाने के कारण बहुतेरों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा। परन्तु जो अन्त तक सहन करेगा वह मुक्ति पायेगा और राज्य के इस शुभ समाचार की घोषणा सारे संसार में की जायेगी जिससे सब जातियों में वह साक्षीरूप हो और वह समय अन्त का समय होगा।" (Matt. xxiv. 4–14.)

इन दोनों संदर्भों में मसीह ने स्पष्ट शब्दों में बिना किसी पर्दे या ढकने के उन बातों का दिग्दर्शन करा दिया है जिनका होना मानव-पुत्र के आगमन से पूर्व आवश्यक है। मसीह की इन उक्तियों के बाद की शताब्दियों में यह चिह्न सब के सब पूरे हो चुके हैं। प्रत्येक संदर्भ के अन्तिम भाग में उन्होंने एक ऐसी घटना का संकेत दिया है जिससे (ज्योति के) आगमन की सूचना मिलेगी। पहले संदर्भ में यहूदियों के निर्वासन का अन्त और जेरुस्लेम के फिर से बस जाने का संकेत है। यह दोनों चिह्न हमारे इस युग में अक्षरशः पूरे हो रहे हैं। अब यदि भविष्यवाणी की सत्यता पर हमें विश्वास है तो हमें यह मान लेना होगा कि हम उस 'अन्त के समय में' वास कर रहे हैं जिसका संकेत मसीह ने किया था।

मोहम्मद साहिब ने कुछ निशानियों का ज़िक्र किया है जो पुनरुत्थान के दिन होंगी। कुरान में लिखा है—

"जब अल्लाह ने कहा 'ऐ जेसस! अवश्य मैं तेरी मृत्यु का कारण बनूँगा और उन अभियोगों से तुझे मुक्त करूँगा जो काफ़िर (अधर्मी)

तुझ पर लगाते हैं, और तेरे अनुगामियों (अर्थात् ईसाइयों)को पुनरुत्थान के दिन तक काफिरों (यहूदियों) के ऊपर विजयी रखूँगा और फिर तुम मेरी ओर लौट आओगे और तुम्हारे भेद-भावों का तुम्हारे ही बीच में निर्णय करूँगा'।" (Surat iii. 54).

"यहूदी कहते हैं कि अल्लाह का हाथ बँधा हुआ है। स्वयं इन्हीं के हाथ बँध गये और अपने ही शब्दों से धिक्कृत होंगे। नहीं, उसके तो दोनों हाथ खुले हैं, अपनी इच्छानुसार जो चाहता है देता है। जो कुछ तेरे स्वामी से तुझको मिला है प्रायः उसी के कारण उन लोगों में उत्पात और नास्तिकता बढ़ेगी। हमने उनमें वैर और घृणा के भाव भरे जो पुनरुत्थान के दिन तक बने रहेंगे। जब भी वह युद्ध की आग भड़काते हैं, ईश्वर उसे बुझा देता है।" (Surat v, 69.)

"और वह लोग जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं, हमने समझौता (Covenant) स्वीकार कर लिया है, उन्होंने भी उसे अधिकांशमें भुला दिया है जो कुछ उन्हें सिखाया गया था, हमने उनमें शत्रुता और घृणा भर दी है जो पुनरुत्थान के दिन तक रहेगा और अन्त में ईश्वर उन्हें उनके कामों का वर्णन कह सुनायेगा।" (Surat v. 17.)

यह भविष्यवाणियाँ भी अक्षरशः पूर्ण होगई हैं, यहूदी लोग ईसाईयों और मुसलमानों के अधीन हुए, ईसाई और यहूदी दोनों को फूट और मतभेद ने पृथक् पृथक् कर दिया, और यह भेद मोहम्मद की भविष्यवाणी से लेकर सदियों तक लगातार चलता रहा। अब बहाई युग में (पुनरुत्थान के दिन) इन दशाओं का अन्त होने के लक्षण दिखाई देने लग गये हैं।

पृथ्वी और आकाश पर निशानियाँ

हिब्रू, ईसाई, मुसलमान और बहुत सी अन्य धर्म पुस्तकों में

प्रतिज्ञात पुरुष (Promised One) के आगमन संबन्धी लक्षणों के वर्णन में विचित्र समता पाई जाती है।

जोएल की पुस्तक में लिखा है:—

"और मैं आकाश और पृथ्वी पर आश्चर्यकारी घटना दिखाऊँगा अर्थात् लहू और अग्नि और धूम के स्तम्भ दिखाऊँगा। सूर्य अन्धेरे में और चाँद लहू में बदल जायेगा तब ईश्वर का बड़ा और भयंकर दिन आयेगा। देखो, इन्हीं दिनों में जब मैं जुडाह और जेरुस्लेम के कैदियों को लौटा लाऊँगा, सारी जातियों को इकट्ठा करूँगा और उन्हें जहूसफ्त के मैदान में जमा करूँगा और वहाँ उनके साथ तर्कवाद करूँगा, समूह पर समूह निर्णय के समतल में है, क्योंकि ईश्वर का दिन निर्णय के समतल के समीप आ पहुँचा है। सूर्य और चाँद अन्धकारमय हो जायेंगे और तारे अपना प्रकाश रोक लेंगे। ईश्वर भी ज़िहून से गर्जेगा और जेरुस्लेम से अपनी ध्वनि उठायेगा और पृथ्वी और आकाश काँप उठेंगे परन्तु ईश्वर अपने लोगों का आश्रय या बल होगा।"

मसीह कहते हैं:—

"शीघ्र ही उन दिनों के संकट के बाद सूर्य निस्तेज हो जायेगा और चाँद प्रकाश न देगा, और तारे आकाश से गिरेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिला दी जायेंगी, उस समय मानव-पुत्र का चिह्न आकाश में दीख पड़ेगा, उस समय पृथ्वी की सारी शक्तियाँ शोक-ग्रस्त होंगी और मानवपुत्र को बड़ी शक्ति और महिमा के साथ आसमान के बादलों में से आता देखेंगी।" (Matt. xxiv. 29, 30.)

कुरान में लिखा है:—

"जब सूर्य बंद कर लिया जावे और जब तारे निष्प्रभ हो जावें, जब पर्वत चलने लगें, जब पुस्तक के पन्ने उधेड़ दिये जावें, और जब

आकाश निरभ्र हो जाये और जब नरक उत्तेजित किया जावे।" (Surat lxxxi.)

पुस्तक 'इकान' में इन भविष्यवाणियों की व्याख्या करते हुए बहाउल्लाह कहते हैं कि सूर्य, चाँद, पृथ्वी और आकाश के बारे में जो कुछ कहा गया है वह अलङ्कारमात्र है, उनके केवल अक्षरार्थ न लेने चाहिएँ। अवतारों का विशेष संबन्ध भौतिक प्रकाश नहीं बल्कि आत्मिक पदार्थों से हुआ करता था, भौतिक प्रकाश नहीं बल्कि आत्मिक प्रकाश उनका लक्ष्य होता था। निर्णय के दिन के संबन्ध में जब वह सूर्य का संकेत करते थे तो उनका तात्पर्य सत्य का सूर्य होता था। सूर्य का प्रकाश सबसे बड़ा प्रभाव है, सो हिब्रुओं के लिये मूसा, ईसाइयों के लिए मसीह, मुसलमानों के लिए मोहम्मद सूर्य थे। जब अवतार सूर्य का निस्तेज होना बयान करते थे तब उनका अभिप्राय यह होता था कि इन आध्यात्मिक सूर्यों का पवित्र शिक्षा-रूपी प्रकाश उलटा अर्थ करने और उलटा अर्थ समझने तथा पक्षपात से मलिन हो गया है, उसी कारण से लोग आध्यात्मिक अन्धकार में निमग्न हैं। चाँद और तारे प्रकाश देने के क्षुद्रतर साधन हैं, इसका भाव उन धार्मिक नेताओं और शिक्षकों से है जिनका कर्तव्य लोगों को मार्ग दिखाना और शिक्षा देना है। जब यह कहा गया है कि चाँद प्रकाश न देगा या लहू बन जायेगा और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे, तो इसका अभिप्राय यह है कि धार्मिक नेता लोग अपने कर्तव्य से गिर कर लड़ाई झगड़ों में प्रवृत्त होंगे और धर्माचार्य सांसारिक वासनाओं में लिप्त होकर आसमान से नाता तोड़ कर भौम पदार्थों में ही व्यग्र रहा करेंगे।

इन भविष्यवाणियों के समग्र अर्थ केवल एक ही व्याख्या से

प्रकट नहीं हो जाते बल्कि और भी अर्थ इन आलङ्कारिक संकेतों द्वारा प्रकट किये जा सकते हैं। बहाउल्लाह कहते हैं कि इन शब्दों के दूसरे अर्थ यह हैं कि सूर्य, चाँद और तारों का तात्पर्य प्रत्येक धर्म की धर्म-पुस्तक से है। क्योंकि प्रत्येक प्रकाश में प्रथम प्रकाश (अवतार) के रीतिरिवाज और शिक्षाओं के स्वरूप समय की आवश्यकता के अनुसार बदल जाते हैं, इसलिये इन अर्थों में सूर्य और चांद बदल जाते और तारे तितर बितर हो जाते हैं।

इन भविष्यवाणियों का वाच्यार्थ में अक्षरशः पूरा होना कई अवस्थाओं में व्यर्थ और असंभव होगा, जैसे चांद का लहू बन जाना और तारों का पृथ्वी पर गिर पड़ना। दृश्य ताराओं में छोटे से छोटा तारा भी पृथ्वी से कई सहस्र गुणा बड़ा होता है, यदि उनमें से एक पृथ्वी पर आ गिरे तो दूसरे के लिये भूमि ही बाकी न रह जायेगी। पर कई बातें ऐसी भी हैं जिनके भौतिक और आध्यात्मिक दोनों अर्थ लिये जा सकते हैं। जैसे पवित्र भूमि अवतारों की उक्ति के अनुसार यथार्थ में ही कई सदियों से ऊजड़ और निर्जन बनी रही, पर अब पुनरुत्थान के दिन से इसाइयाह की भविष्यवाणी के अनुसार यह "गुलाब के समान हरी-भरी और पुष्पित" होने लग गई है। समृद्ध प्रदेश बस रहे हैं, कृषि के लिये नहरों का प्रबन्ध हो रहा है, और जहाँ अर्ध शताब्दी से पूर्व केवल एक ऊजड़ मरुभूमि थी, अब अंगूरी बाग और जेतून के बाग लहलहा रहे हैं। निःसन्देह जब मनुष्य अपनी तलवारें तोड़ कर हल फाले, और बर्छियाँ तोड़कर उनके कुदाल बनायेंगे तो सारी पृथ्वी के निर्जन अरण्य और विध्वस्त प्रदेश हरे

भरे हो जायेंगे, और झुलसाने वाली लू और आंधी जो इन वनों और रेतीले मैदानों से उठकर उनके निवासियों को जीवन को असह्य बनाती थी, भूतकाल की वस्तु हो जायेंगी, पृथ्वीभर की जलवायु समशील हो जायेंगी, नगर अपने विषैले धुएँ से जब वायु को अपवित्र और दूषित न बनायेंगे तो प्रत्यक्ष अर्थ से भी "नया आसमान और नयी भूमि" बन जायेंगी।

आगमन का प्रचार

युग के अन्त में उसके आगमन का प्रकार मसीह यह बताते हैं:—

"और वह मानव-पुत्र को शक्ति बड़ी और महिमा के साथ आकाश के बादलों में से आता देखेंगे और दुंदुभि की प्रखर ध्वनि के साथ अपने देवदूतों को भेजेगा; उस समय वह अपने ऐश्वर्य के सिंहासन पर बैठेगा और सब जातियाँ उसके सामने जमा की जायेंगी और उस समय एक को दूसरी से इस प्रकार अलग करेगा जैसे गडरिया भेड़ों को बकरियों से अलग करता है।"—(Matt. xxiv xxv.)

इस संदर्भ और इसी प्रकार के अन्य संदर्भों के विषय में बहाउल्लाह 'इकान' पुस्तक में लिखते हैं—

"आसमान शब्द का तात्पर्य वह उन्नित और उच्चता है जो उस पवित्रात्मा के उन्दम और उसके पूर्ववर्ती अरूणादय का स्थान है। यद्यपि यह पुराणतत्व माता के गर्भ से उत्पन्न होते हैं परन्तु वास्तव में आसमानी आज्ञा से नीचे उतरते हैं, और यद्यपि पृथ्वी पर रहते हैं पर वास्तव में वह महत्व के पलँग पर बैठते हैं, और यद्यपि लोगों में बैठते उठते हैं पर समीप के आकाश में उड़ते फिरते हैं। बिना पाँव हिलाये आत्मा की भूमि पर यात्रा करते और बिना परों के एकता के उन्नत शिखरों पर उड़ते फिरते हैं।"

" 'बादल'से वह बातें अभिप्रेत हैं जो लोगों के अभिमान और वासना के विरूद्ध होती हैं, जैसा कि इस आयत में लिखा है—"इसलिये जब कभी कोई देवदूत तुम्हारे सामने आया, जिसे तुम्हारी आत्मा नहीं चाहती थी तो तुम ने उसका गर्व से प्रत्याख्यान किया उनमें से कइयों को छलिया सिद्ध किया और कइयों को मार डाला।" (Quran,55 56) ऐसे बादल, जैसे आदेशों का बदलना, नियमों (कानूनों) का पलटना, रीतिरिवाजों का बंद करना, साधरण लोगों का न स्वीकार करने वाले पढ़े लिखों से बढ़ जाना और इसी प्रकार मानव-मर्यादा के अंदर उस सनातन सौन्दर्य का प्रकट होना, जैसे खाना-पीना,ऐश्वर्य और दारिद्रय, उन्नति और अवनति, सोना और जागना और वैसी ही और बातें जो लोगों के सन्देह का कारण बनती हैं और उन्हें उस प्रकाश को स्वीकार करने से रोक रखती हैं, आदि।"

"जैसे बादल मनुष्यों की आँखों को भौतिक सूर्य के दर्शन से रोक रखते हैं वैसे ही उपर्युक्त दशाएँ लोगों को उस विचारमय सूर्य को समझने से रोक रखती हैं। क्योंकि इन पवित्रात्माओं (अवतारों) में देखने को दरिद्रता और संकट दीखते थे और शारीरिक आवश्यकताएँ भी वैसी ही थीं, जैसे भूख, प्यास और आकस्मिक घटनाएँ, आदि; इसलिए उन पवित्रात्माओं में ऐसी बातें होतीं देखकर लोग सन्देहों और भ्रमों के सहराज तथा कल्पना, उलझन और विस्मय के जंगलों में भूलते भटकते और अचंभा मानते हुए कहते हैं कि 'यह कैसे हो सकता है कि एक आदमी ईश्वर के यहाँ से आये और पृथ्वी को सब वस्तुओं पर अपना अधिकार प्रकट करे और अपने को सारी सृष्टि की उत्पत्ति का कारण बताये, और फिर भी ऐसी छोटी छोटी बातों में फँस जाये।' प्रत्येक अवतार के कष्टों और विपत्तियों, अपमानों के बारे में तो सुना ही गया है

कि उन्होंने किस प्रकार से कैसे कैसे भयंकर दुःख भोगे, मानहानियाँ और तिरस्कार सहे, किस प्रकार उनके अनुगामियों के सिर काटकर बड़े बड़े नगरों में भेंट के तौर पर भेजे गये और किस प्रकार उन्हें आज्ञा पालन से रोक रखा गया, और धर्म के शत्रुओं के हाथों उन्हें कैसे कष्ट सहन करने पड़े, यहाँ तक कि शत्रुओं ने जी भर उन्हें सताया।"

"सर्व समर्थ ईश्वर इन दशाओं को, जो अपवित्र आत्माओं के प्रतिकूल और लोगों की इच्छाओं के विरुद्ध होती हैं, परख की कसौटी के रूप में लेकर उनसे वह अपने सेवकों को परखता है, और धूर्तों से साधुओं को तथा नास्तिकों से आस्तिकों को पृथक् करता है।"

"यह कथन कि वह अपने देवदूतों को भेजेगा आदि, इन देवदूतों से अभिप्राय उन आत्माओं का है जिन्होंने ईश्वरीय प्रेम की अग्नि से मानव धर्मों (स्वभावों) को जला दिया है और उस महान् और उच्चतम तथा दिव्य महापुरुष के गुणों से भूषित किया है।"

"मसीह के अनुगामियों ने क्योंकि इन अर्थों को नहीं समझा था और यह चिह्न उनकी और उनके विद्वानों की समझ के अनुसार वाच्यार्थ में प्रकट न हुए थे, उन्होंने उस समय से लेकर आज दिन तक पवित्र ईश्वरीय प्रकाशों (अवतारों) पर विश्वास न किया, इसलिये वह सब ईश्वरीय प्रसादों से तथा उस सनातन (ईश्वर) की आश्चर्यमय वाणियों से वञ्चित रहें। यह तो इस पुनरुत्थान के दिन में इन सेवकों की अवस्था है। इतना नहीं जानते कि प्रत्येक प्रकाश में जो लक्षण लिखे हैं प्रत्यक्षरूप से भौतिक संसार में प्रकट होते तो किसकी शक्ति थी कि आपत्ति या विरोध करता, और किस प्रकार पवित्र और अपवित्र, पापी और पुण्यात्मा में भेद किया जा सकता। उदाहरण के लिये, निष्पक्ष हो कर थोड़ा विचार करें कि यदि वह बातें जो अंजील में लिखी हैं

अक्षरशः पूरी होतीं और देवदूत मरियम के पुत्र यसू के साथ भौतिक आकाश के मार्ग से बादलों में से प्रकट होते तो किसका साहस था कि उसका प्रत्याख्यान करता और उसे झूठा कहता या उस पर वाद विवाद करता। मानना या न मानना तो एक ओर रहा, संसार भर के सब आंदोलन झटपट बंद हो जाते और किसी के मुँह से एक शब्द भी विरुद्ध न निकल पाता।" (Book of Iqan, pp. 44–58.)

इन कथनों से यह बात सिद्ध हो गई कि मानवपुत्र एक छोटे से मानव रूप में आयेगा, स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होगा। निर्धन, अनपढ़ और पीड़ित होगा, और पृथ्वी भर के लोग उसका विरोध करने को उद्यत होंगे—यही आगमन का प्रकार एक वह कसौटी है जिससे वह पृथ्वी के लोगों को परखता है और एक को दूसरे से पृथक् करता है, जैसे गडरिया भेड़ों को बकरियों से पृथक् करता है। जिनके आध्यात्मिक नेत्र खुले हैं वह इन बादलों में से उसे देख सकते हैं और प्रकृति तथा महत्त्व का आह्लाद पा सकते हैं—वही ईश्वर का बड़ा महत्त्व जिसे प्रकट करने को वह आता हैं। परन्तु जिनके नेत्र अभी भ्रम और पक्षपात के अन्धकार से बन्द हैं वह केवल काले बादलों को ही देख सकते हैं और धन्यतम सौर प्रभा से वञ्चित रह कर अँधेरे में ठोकरे खाते रहते हैं।

"'देखो, मैं अपने दूत को भेजूँगा और वह मेरे आगे मेरे मार्ग को साफ करेगा, और वह ईश्वर जिसे तुम ढूँढते हो अपने मन्दिर में आयेगा और वह समझौते का दूत भी जिससे तुम खुश होते हो। पर उसके आगमन के दिन में कौन ठहर सकेगा, और उसके प्रकट होने पर कौन है जो खड़ा रहेगा। क्योंकि वह सुनार की आग और धोबी के साबुन

की मानिंद है। क्योंकि देखो, वह दिन आता है जो भट्टी की आग के समान जलेगा तब सब और अभिमानी और दुराचारी डंठलों के समान होंगे। परन्तु तुम पर जो मेरे नाम से डरते हो सत्य का सूर्य प्रकट होगा और उसकी किरणों में स्वास्थ्य होगा।" (Mal. iii, iv.)

यादीः—

"भविष्यवाणियों के पूरा होने का विषय इतना विस्तृत है कि उसे पूरा लिखने के लिए पुस्तक के कई भागों की आवश्यकता है। इस एक अध्याय में छोटा सा लेख लिखने से हमारा अभिप्राय यह है कि उन अर्थों का संक्षिप्त सा रूप दिखा दें जो बहाई लोग करते हैं। विस्तृत व्याख्यान जो डैनियल और सेंट जान ने किये, उन्हें हमने छुआ तक नहीं। यदि पाठक इन्हें देखना चाहें तो "Some Answered Questions" नाम की पुस्तक के कुछ अध्यायों में देखें। बहाउल्लाह की पुस्तक "इकान" में, मिर्जा अबुल फ़ज़ाएल की "बहाई सबूत" नामक पुस्तक में और बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा की कई तख्तियों (पत्रों) में इन भविष्यवाणियों की विस्तृत व्याख्या मिल सकती है।"

अध्याय चौदहवाँ

बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा की भविष्यवाणियाँ

"यदि तू अपने मन में यह कहे कि हम कैसे वह शब्द समझ सकें जो प्रभु ने नहीं कहें ? यदि कोई ईश्वरावतार ईश्वर के नाम से कुछ कहता है, और जो कुछ वह कहे पूरा न हो और वैसी ही घटना न घटे, तो समझ लो कि उसने ईश्वर की ओर से नहीं कहा बल्कि यह उस अवतार ने अपनी कल्पना से कहा है, सो तू उससे न डर ।" (Deut. xviii, 22.)

ईश्वर के शब्दों की उत्पादक शक्ति

ईश्वर और केवल ईश्वर ही उस शक्ति का स्वामी है कि वह जो कुछ चाहता है करता है, और ईश्वर के प्रकाश का सबसे बड़ा प्रमाण उसके शब्दों की उत्पादक शक्ति है—अर्थात् मानव कार्यों की उधेड़बुन में उसकी सामर्थ्य और सब प्रकार के मानव विरोधों पर उसकी विजय । ईश्वरावतार के शब्दों के द्वारा ईश्वर अपनी इच्छा को व्यक्त करता है, और उस वाणी का शीघ्र या कुछ काल के अनन्तर पूरा होना ही उस ईश्वरीय प्रकाश के सच्चा होने का और उस अवतार की घोषणा का यथार्थ में ईश्वरीय घोषणा होने का स्पष्टतम प्रमाण है ।

"क्योंकि जिस प्रकार आकाश से वर्षा होती है और बर्फ पड़ती है और फिर यह दोनों आसमान पर लौट कर नहीं जाते बल्कि पृथ्वी को गीला करते और उसकी उत्पादक-शक्ति को बढ़ाने का कारण बन तेहैं

ताकि बोने वाले को बीज और खाने वाले को रोटी दें, इसी प्रकार मेरी वाणी जो मेरे मुँह से निकलती है, मेरे पास निरुद्देश न फिरेगी, बल्कि मेरी जो इच्छा होगी उसे पूरा करेगी, और इस काम में जिसके लिये मैंने उसे भेजा है उपयुक्त होगी। (Isa. lv, 10, 11.)

जब 'जॉह्न बपतिस्मा देने वाले' के शिष्यों ने मसीह से प्रश्न किया कि क्या "तू वही है जिसे आना है, या हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें" मसीह का उत्तर केवल यही था कि उन्होंने अपनी वाणी की उत्पादक शक्ति की ओर संकेत किया—

"जो कुछ तुम सुनते या देखते हो, जाकर जॉह्न से बयान करो कि अन्धे देखते हैं, लँगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी साफ सुथरे बनाये जाते हैं, बहरे सुनते हैं, और मुर्दे जीवित किये जाते हैं, और दीनों को शुभ संवाद सुनाया जाता है। और वह धन्य है जो मेरे कारण से सताया न जाये।" (Matt. xi, 4. 6.)

आओ, अब हम यह देखें कि कोई सबूत ऐसा भी है जिससे यह प्रकट हो कि बहाउल्लाह की वाणी में भी वह उत्पादक शक्ति है जो ईश्वर की वाणी का प्रधान चिह्न है। बहाउल्लाह ने शासकों को आज्ञा दी कि विश्वव्यापी शान्ति स्थापन करें और इन शासकों ने सन १८६६–१८७० से जो युद्ध जारी रक्खे उनके कारण बहुत से प्राचीन राज्यवंश नष्ट भ्रष्ट हो गये। प्रत्येक युद्ध के पश्चात् विजय फल घटते गए यहाँ तक कि सन् १९१४–१८ के योरपीय युद्ध ने यह अद्भुत ऐतिहासिक बात दरशाई कि युद्ध विजयी और परास्त दोनों के लिए नष्ट करने वाला है।

बहाउल्लाह ने शासकों को आज्ञा दी कि वह अपनी प्रजा के सत्य रूप से विश्वास पात्र बनें और अपने राजनैतिक अधिकारों

को अपनी प्रजा के हित का साधन बनाएँ। सामाजिक कानूनों के बनाने में ऐसी उन्नति हुई है जैसी पहले कभी न हुई थी और जिन देशों ने इस आज्ञा का पालन नहीं किया उनमें क्रान्ति हो गई और नए और अधिक प्रतिनिधित्व पूर्ण शासन-विधान स्थापन हो गए।

बहाउल्लाह ने आज्ञा दी कि धनी और कंगाली को सामाबद्ध कर दिया जाए और उसी समय से निर्वाह के लिए कम से कम दर्जा और आमदनियों पर दर्जावार टैक्स और बपौतियों पर कर लगाये जाने के कानून बनाने की निरन्तर चिन्ता लगी हुई है। अपने मानुषिक और आर्थिक तथा कारोबारी दोनों प्रकार की गुलामी को उड़ा देने की आज्ञा दी और उसी समय से सारे संसार में स्वतंत्रता के लिये उत्तेजना फैली हुई है।

बहाउल्लाह ने आज्ञा दी कि स्त्री तथा पुरुष एक समान हैं। दोनों की ज़िम्मेदारियाँ एक जैसी हैं और उनके अधिकार एक जैसे हैं। जिस समय से यह आज्ञा हुई है उसी समय से वह बन्धन जिन में स्त्रियाँ चिरकाल से पड़ी हुई थीं टूट रहें हैं और स्त्री शीघ्रता पूर्वक पुरुष का साथी और उसके समान होने का यथोचित स्थान प्राप्त करती जा रही है।

आपने आज्ञा दी कि सब धर्मों का आधार एक ही है। और उसी समय से यह दिखाई दे रहा है कि संसार के सब देशों में सत्य पुरुष इस बात की चेष्टा कर रहें हैं कि सहनशीलता और विश्वव्यापी उद्देश के निमित्त सहयोग और पारस्परिक समझौता स्थापित हो जाए। साम्प्रदायिक भाव की जड़ प्रत्येक स्थान में खोखली होती जा रही है और इसकी ऐतिहासिक स्थिति अस्थायी

होती जा रही है। धर्मों के अलग अलग रहने की नींव को इन्हीं शक्तियों ने हिला दिया है जिससे अब कोई जाति अलग रह कर जीवित नहीं रह सकती।

बहाउल्लाह ने आज्ञा दी कि शिक्षा सर्व साधारण में होनी चाहिए और आत्मिक शक्ति का प्रमाण सचाई को स्वतन्त्रता पूर्वक खोजने को बनाया। वर्तमान सभ्यता में इस नये भाव से हलचल पड़ गई है। बालकों के लिए अनिवार्य शिक्षा और युवकों के लिए शिक्षा संबन्धी सुविधाएं जुटाना प्रत्येक सरकार की प्राथमिक राजनीति बन गई है। जो जातियाँ अपने नागरिकों में आत्मिक और मानसिक स्वतन्त्रता को जान बूझ कर रोकने की चेष्टा करती थीं, इसी नीति द्वारा उनके अन्दर क्रान्तियाँ हो गईं और उनकी सीमाओं से बाहर लोग उन पर सन्देह करने और उनसे डरने लग गए।

बहाउल्लाह ने आज्ञा दी कि एक विश्वव्यापी भाषा होनी चाहिए और डाक्टर ज़ैमनौफ़ और दूसरों ने आपकी इस आज्ञा का पालन करके अपने जीवन और अपनी बुद्धि इस काम में लगा दी।

सब से बढ़ कर बहाउल्लाह ने मनुष्य मात्र में एक नया भाव उत्पन्न कर दिया, चित्तों में नई आकांक्षा पैदा की और समाज के लिए नए नियम बनाए। सारे इतिहास में कोई वस्तु ऐसी विचित्र और प्रभावशाली नहीं है जैसी कि वह घटनाएँ जो सन १८४४ में बहाई युग के आरम्भ होने के पश्चात् हुई हैं। वर्ष प्रति वर्ष मृतक प्राचीन काल का बल जो पुराने विचारों, स्वभावों, व्यवहारों और संस्थाओं द्वारा रक्खा जा रहा है घटता जा रहा

है कि मनुष्यमात्र एक अति भयानक और शोचनीय समय से गुज़र रहा है। एक ओर तो हम देखते हैं कि उस प्रकाश द्वारा जो बहाउल्लाह के शब्दों ने उत्पन्न किया है एक नया संसार बनता जा रहा है और दूसरी ओर हम देखते हैं कि जो इस प्रकाश की ओर से अवहेलना बरतते हैं या उसका मुकाबला करते हैं उनमें विनाश और निराशा फैलती जाती है।

यह और ऐसी ही दूसरी अगणित बातें यद्यपि इतनी प्रभावशाली हैं तो भी वह एक सच्चे बहाई को बहाउल्लाह की आत्मिक महानता का ठीक अनुमान नहीं देतीं। उसके लिए तो इस संसार में आपका जीवन और आपके वचनों की अटल शक्ति परमात्मा की इच्छा की ठीक कसौटी है।

अब हम बहाउल्लाह की कुछ एक बड़ी बड़ी भविष्यवाणियों का उल्लेख करके दिखाते हैं कि वह किस प्रकार अक्षरशः पूरी हुई हैं और हो रही हैं ताकि वह इस साक्ष्य को प्रमाणित करने में सबल प्रमाण बनें। इन भविष्यवाणियों के कुछ उदाहरण हम यहाँ देते हैं जिनके प्रामाण्य में कोई मतभेद नहीं हो सकता। उनके पूरा होने से पूर्व ही यह संसार में प्रकाशित और विदित हो चुकी थीं। वह पत्र, जो उन्होंने संसार के भिन्न भिन्न राजाओं को लिखे थे और जिनमें यह भविष्यवाणियाँ लिखी पाई जाती हैं, एक पुस्तक (Suratul-Haykal) में संग्रह किये गये हैं जो चालीस वर्षों से अधिक समय हुआ, बंबई में पहले पहल प्रकाशित हुई थी। तब से उसके कई संस्करण निकल चुके हैं। हम अब्दुल-बहा की उल्लेख योग्य भविष्यवाणियों के भी कुछ उदाहरण यहाँ देंगे।

नेपोलियन तृतीय

सन् १८६६ ई० में बहाउल्लाह ने फ्रांस के इस सम्राट् को एक पत्र (तख्ती) भेजा, जिसमें उसे उसकी युद्ध प्रियता और पूर्ववर्ती एक पत्र (तख्ती) की अवहेलना की निन्दा करते हुए कहा:—

"तू ने जो काम किये हैं उन्हीं के कारण तेरे शासन का प्रबन्ध बिगड़ जायेगा और तेरे कर्मों के फल से तेरा राज्य तेरे हाथ से निकल जायेगा, फिर तू अपने आपको बड़े संकट पूर्ण घाटे में पायेगा, और वहां सब लोगों को संकट घेर लेंगे, यदि तू इस प्रचार में आकर सीधे मार्ग से आत्मा का पीछा न करेगा। क्या तुझे अपने दबदबे का घमंड है? मुझे अपने जीवन की सौगन्ध, यह स्थायी नहीं है और शीघ्र ही इसका ह्रास होगा यदि तू इस सुदृढ़ रस्सी को नहीं पकड़ता। हम देखते हैं कि अपमान तेरे पीछे दौड़ता चला आ रहा है और तू असावधान है।"

नेपोलियन ने, जो अपनी शक्ति की ठीक पूर्णता पर था, इस चेतावनी पर कुछ ध्यान न दिया। दूसरे वर्ष उसका प्रशिया (जर्मनी) से युद्ध छिड़ा और इसे पूरा विश्वास था कि इसकी सेनाएँ शीघ्र बर्लिन तक पहुँच जायेंगी, पर जिस अपमान की सूचना उसे बहाउल्लाह ने दी थी, उसने उसे आ घेरा। सार-ब्रुक, बैसिन वर्ग और मैटस पर उसे पराजित होना पड़ा और फिर अन्त में सीड़ान पर उसकी ऐसी भयंकर पराजय हुई कि वह स्वयं कैद हो गया। फिर वह बन्दी की अवस्था में प्रशिया पहुँचाया गया और इसके दो वर्ष बाद इस महाभिमानी सम्राट का इंगलैंड में कष्टमय अन्त हुआ।

जर्मनी

बहाउल्लाह ने नैपोलियन पर विजय पाने वाले को भी वैसी

ही कठोर चेतावनी दी और उसने भी उस पर कोई ध्यान न दिया और अन्त में उसका परिणाम भी वैसा ही भयंकर हुआ। पुस्तक 'अक़दस' में जिसका प्रणयन ऐड्रियानोपल में आरम्भ हुआ और 'अक्का' की कैद के आरम्भिक वर्षों में समाप्ति हुई, जर्मनी के कैसर को यों संबोधन करके कहा गया है—

"ऐ बर्लिन के सम्राट् ! उसकी अवस्था का स्मरण कर जो ऐश्वर्य में तुझसे कहीं बढ़ चढ़ कर था (अर्थात् नैपोलियन तृतीय) और जिसका दर्जा तुझसे कहीं बड़ा था। वह अब कहाँ है, और उसके अधिकृत देश क्या हुए ? समझदार बन, और उनकी श्रेणी में मत दाखिल हो जो मोह की नींद में सोये हैं। उसने ईश्वर की तख्ती (पत्र) को पीछे फेंक दिया जब कि हमने उसे उस कष्ट की सूचना दी जो अत्याचारियों के समुदाय से हमें प्राप्त हुई (परन्तु उसने तनिक ध्यान न दिया), और इस प्रकार अपमान और पतन ने उसे सब ओर से घेर लिया, यहाँ तक कि वह बड़ी भारी हानि उठाकर धूल में मिल गया। ऐ बादशाह ! उसकी दशा पर ध्यान दे और उन पर भी विचार कर जो तुझ जैसे हैं जिन्होंने देश जीते और ईश्वर के सेवकों पर शासन किया और ईश्वर उन्हें महलों से कब्रों में ले गया। शिक्षा ग्रहण कर और उनकी श्रेणी में आ जो ईश्वर से डरते हैं।"

"ऐ राइन नदी के किनारो ! हमने तुमको लहू से भरा देखा है क्योंकि क्रान्ति और विद्रोह की तलवारें तुम पर खींची गई थीं और दूसरी बार फिर ऐसा होगा। हम बर्लिन की चीख पुकार सुन रहे हैं, यद्यपि आज वह प्रत्यक्ष रूप से मान और ऐश्वर्य में है।"

सन् १९१४—१८ के बीच जर्मनी की विजयों के समय और

विशेषकर १९१८ के वसन्त ऋतु में जर्मन सेनाओं के महान् आक्रमण के समय बहाईयों के विरोधी ईरानियों ने इस भविष्य वाणी को बहुत दूर दूर तक फैलाया, इस अभिप्राय से कि बहाउल्लाह की यह भविष्यवाणी भूठी थी, परन्तु विजयी जर्मनों के यही आक्रमण उनकी भयानक पराजय में बदल गये। तब बहाई प्रचार के विरोधियों के प्रयत्न उल्टे उन्हीं पर पड़े और वह कीर्ति जो उन्होंने स्वयं इस भविष्यवाणी को दी, ईरान में ईश्वरीय प्रचार के फैलने में सहायक सिद्ध हुई।

ईरान

पुस्तक 'अक़दस' जो अत्याचारी मुज़फ़रउद्दीन के राज्य की बड़ी अभिवृद्धि के समय लिखी गई थी, बहाउल्लाह तेहरान के नगर को, जो ईरान की राजधानी और उनकी (बहउल्लाह की) जन्मभूमि है, आशीर्वाद देते हुए कहते हैं:—

"ऐ तेहरान की भूमि ! तू किसी प्रकार भी विषण्ण न हो। ईश्वर ने तुझे संसार के हर्ष का प्रभात बनाया है। यदि वह चाहेगा तो तेरे सिंहासन पर किसी ऐसे को धन्य बनायेगा जो न्याय से शासन करेगा और ईश्वर की भेड़ों को जमा करेगा जिन्हें भेड़ियों ने बिखेर दिया है। निःसन्देह वह बहाई लोगों के साथ आनन्द और प्रसन्नता से व्यवहार करेगा। देखो, वह ईश्वर की दृष्टि में लोगों का सार होगा।"

"आनन्द मनाओ कि ईश्वर ने तुझे प्रकाश की पूर्व दिशा बनाया है क्योंकि तू ईश्वरीय प्रकाश की उत्पत्ति का स्थान है। शीघ्र ही तुझ पर व्यवहार परिवर्तन होगा और अराजकतावादी तुझ पर राज्य करेंगे। नि संदेह तेरा ईश्वर बुद्धिमान् और सब वस्तुओं में व्याप्त है। अपने

सर्व समर्थ स्वामी के प्रसाद से निश्चय रख । निःसंदेह वह अपनी प्रेमभरी दृष्टि को कभी तुझ पर से न हटायेगा। इन कष्टों और आपदाओं के अनन्तर शीघ्र ही तुझको शान्ति प्राप्त होगी । इस प्रकार आश्चर्यमय पुस्तक में निर्णय हुआ है ।"

अभी ईरान इस संकट से निकल ही रहा है, जिसकी बहाउल्लाह ने सूचना दी थी, कि पार्लियामेंट का शासन वहाँ स्थापित हो चुका है और लक्षण अधिकतर बता रहे हैं कि उज्ज्वलतर समय समीप है।

तुर्की

बहाउल्लाह ने तुर्की के सुलतान और उसके प्रधान मन्त्री अलिपाशा को सन् १८६८ ई० में जबकि वह तुर्की के कारावास में बंद थे, बड़ी गम्भीरता पूर्वक संकटभरी चेतावनियाँ लिख कर भेजीं। अक्का की बैरक से सुलतान को उन्होंने लिखाः—

"ऐ वह मनुष्य ! जो अपने को सबसे बड़ा समझता है, शीघ्र ही तेरा नाम मिट जायेगा और तू अपने को बड़े घाटे में पायेगा। तेरे विचार में संसार को आनन्द देनेवाला और उसे जीवित करनेवाला शान्ति स्थापक (बहाउल्लाह) राज विद्रोही और दण्ड योग्य है। इन स्त्रियों ने, बालकों ने और दुध मुँहे बीमार बच्चों ने क्या अपराध किया है कि यह तेरे अत्याचार, यातनाओं और घृणा के पात्र बन रहे हैं। तूने उन आत्माओं की एक बड़ी संख्या को कैद कर रक्खा है, जिन्होंने तेरे देश में किसी प्रकार विरोध नहीं खड़ा किया और जिसने तेरे शासन के विरुद्ध कोई विद्रोह नहीं किया, यहीं नहीं बल्कि जो एकान्त में दिनरात शान्ति पूर्वक ईश्वर के ध्यान में निमग्न रहते हैं। जो कुछ उनके पास था,

तेरे अत्याचारों ने वह उनसे छीन लिया। ईश्वर के सम्मुख एक मुट्ठीभर मिट्टी तेरे इस राज्य, शान, साम्राज्य और अधिकृत प्रदेशों से बढ़कर है। यदि वह चाहे तो तुझको रेत के कणों के समान बिखेर दे। वह समय दूर नहीं, जब उसका प्रकोप तुझ पर पड़ेगा। तुम में बगावतें उठ खड़ी होंगी और तुम्हारा देश खण्ड खण्ड किया जायेगा। तब तुम रोओ पीटोगे और कोई सहायक या शरण तुम्हें न मिलेगा। देखते रहो, ईश्वरीय प्रकोप तुम पर आनेवाला है, शीघ्र ही तुम उन बातों को देख लोगे जो ईश्वर की लेखनी से प्रकट हुई हैं।" (Star of the West, vol. ii, p. 3.)

और अलिपाशा को उन्होंने लिखा:—

"ऐ रईस! तू ने वह काम किया है जिससे मोहम्मद, खुदा का अवतार, उच्चतम स्वर्ग में रो पड़े। संसार ने तुझे इतना गर्वित कर दिया है कि उस चेहरे से तू विमुख हो गया जिसके प्रकाश से दिव्य समुदाय के लोग प्रकाशित हुए। शीघ्र ही तू अपने को बड़े घाटे में पायेगा। तू ने ईरान के शाह से मिलकर मुझे हानि पहूँचानी चाही, यद्यपि मैं तेरे पास उस सर्व समर्थ और महत्तम के अरुणोदय के स्थान से ऐसे प्रचार को साथ लिये आया हूँ जिससे ईश्वर के कृपापात्रों के नेत्र शीतल होते हैं।"

"क्या तू समझता है कि तू उस आग को बुझा सकता है जिसे ईश्वर ने विश्व में प्रज्वलित किया है। नहीं, उसके सच्चे आत्मा की सौगन्ध, जो कुछ तू ने किया है उससे ज्वाला और भी अधिक बढ़ गई और आग खूब भड़क उठी है। शीघ्र ही यह संसार भर में फैल जायेगी। शीघ्र ही यह रहस्य की भूमि (अर्थात् ऐड्रियानोपल) और अन्य प्रदेश बदल जायेंगे और सुलतान के हाथ से निकल जायेंगे। फसाद उठेंगे, चीख पुकार बढ़ेगी, तुमारे प्रान्तों में उत्पात मचेंगे और सब व्यवहार

गड़बड़ हो जायेंगे, इसका कारण यही दुर्व्यवहार होगा जो अत्याचारियों ने इन कैदियों (बहाउल्लाह और उसके अनुगामियों) के साथ किया। शासन बदल जायेगा और दशा यहाँ तक बिगड़ जायेगी कि ऊजड़ टीलों पर रेत हाय हाय करेगा, पहाड़ों पर वृक्ष रोएंगे और सब वस्तुओं से लहू बहेगा और लोग बड़े संकट में दीख पड़ेंगे...।"

"इस प्रकार उस विधाता और बुद्धिसागर ने निर्णय किया है जिसकी आज्ञा को पृथ्वी और आकाश में कोई नहीं टाल सकता और नहीं उसे राजा महाराजा उस काम से रोक ही सकते हैं जो वह करना चाहता है। आपत्तियाँ इस प्रदीप का स्नेह (तैल) हैं और उन्हीं से इसका प्रकाश अधिक होता है, यदि तू जानने वालों में से है (तो समझ लेगा)। अत्याचारियों के किये सब विरोध इस प्रवाह के डिंडिम हैं और इन्हीं के द्वारा ईश्वरीय प्रकाश और उसका प्रचार संसार के लोगों में अधिक व्यापक और प्रसृत होता है।"

फिर 'अक़दस' पुस्तक में उन्होंने लिखा है:—

'ओ बिन्दु! जो दो समुद्रों के तीरों पर स्थित है (कुस्तुन्तुनिया), अन्याय का सिंहासन तुझ पर स्थापित हुआ है और विद्वेष की अग्नि तुझपर इतनी जलाई जा रही है कि महान् गृहस्वामी और वह लोग जो इस उच्च सिंहासन के आस पास खड़े हैं, इस पर रो रहे हैं। हम देख रहे हैं कि मूर्ख बुद्धिमानों पर शासन कर रहा है और अन्धकार प्रकाश को खदेड़ रहा है और निःसंदेह तू स्पष्ट अभिमान में डूबा पड़ा है। क्या तुझको तेरी बाह्य शोभा ने गर्वित कर दिया? सृष्टि के स्वामी की सौगन्ध, तू शीघ्र ही नष्ट कर दिया जावेगा और तेरी बेटियाँ और विधवाएँ और वह जो तुझमें रहते हैं सिआपा करेंगे। इस प्रकार सर्वज्ञ और बुद्धिसागर तुझे पहले ही से सूचना देता है।"

इन चेतावनियों के दिये जाने के बाद जो सन्तत आपत्तियाँ इस बड़े साम्राज्य पर आईं वह स्वयं इन प्रभावमय भविष्य-वाणियों की एक बोलती हुई व्याख्या है।

अमेरिका

'अक़दस' पुस्तक में जो लगभग पचास वर्ष पहले लिखी गई थी, अमेरिका को बहाउल्लाह ने इस प्रकार लिखा—

"ऐ अमरीका के शासको और प्रजातन्त्र के रईसो ! उस वाणी को सुनो जो अरुणोदय के स्थान से उठी है, यह कि, मुझ बोलने वाले और सर्वज्ञ के बिना कोई ईश्वर नहीं है। न्याय के हाथों से टूटे हुए अङ्गों को बांधो, अपने स्वामी, शासक बुद्धिसागर के दण्ड से अत्याचारी के दृढ़ अङ्गों को तोड़ दो।"

अब्दुल-बहा ने अमेरिका की यात्रा के समय अपने अधिकांश पत्रों में इस आशा, प्रार्थना और विश्वास को प्रकट किया कि—सर्वसाधारण शान्ति का झंडा पहले अमेरिका में खड़ा होगा। सिनसिनाटी, ओहाइयो में ५ नवंबर सन् १६१२ इन्होंने कहा:—

"अमेरिका एक सौम्य जाति है जो सारे संसार के लिए शान्ति लाने वाली है जिसका प्रकाश सब देशों पर पड़ रहा है। दूसरी जातियाँ अमेरिका की तरह देशी झगड़े झाटों से बरी नहीं हैं, इसलिए वह सार्वजनिक शान्ति को नहीं ला सकतीं। परन्तु ईश्वर की कृपा है कि अमेरिका का सारे संसार के साथ मेलजोल है और यह जाति भ्रातृभाव और सर्व-साधारण शान्ति का झंडा खड़ा करने योग्य है। जब अमेरिका सर्व-साधारण शान्ति का झंडा खड़ा करेगा तो सारा संसार पुकार उठेगा कि

हमें स्वीकार है। सारे संसार की जातियाँ बहाउल्लाह की शिक्षाओं को जो पचास वर्ष पहले प्रकट हुई थीं, स्वीकार करेंगी। अपने पत्रों में वह सारे संसार की पार्लियामेंटों को कहते हैं कि वह अपने योग्यतम बुद्धिमानों को एक अन्तर्देशीय पार्लियामेंट (परिषद्) में जमा करें जो जातियों के सब झगड़ों का निबटारा करे और शान्ति स्थापित करे। तब मनुष्यों की वह पार्लियामेंट हमें दीख पड़ेगी जो अवतारों ने स्वप्न में देखी थी।"
(Star of the West, vol. vi, p. 18.)

बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा की शिक्षाओं को अमेरिका के निवासियों ने बहुत हद तक मान लिया और संसार के किसी भी देश ने बहाई शिक्षाओं को ऐसे वेग से स्वीकार नहीं किया जैसा कि अमेरिका ने किया है। इस ज़िम्मेवारी को कि अमेरिका एक सर्वसाधारण शान्ति-परिषद् बुलाए, इस देश ने अभी तक पूरा नहीं किया और बहाई लोग बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा में है कि देखें भविष्य में क्या क्या विकास होते हैं।

महा संग्राम

बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा दोनों ने कई मौकों पर अद्भुत सचाई से सन् १६१४–१८ के महा संग्राम के विषय में भविष्यवाणियां कीं। २६ अक्तूबर सन् १६१२ को सेक्रेमेंटो, केलिफोर्निया में अब्दुल-बहा ने कहा:—

"योरप इस समय एक बारूदख़ाना बन रहा है। यह भक से बंब के एक ढेर की तरह है जिसे केवल एक चिनगारी उड़ा दे सकती है और केवल एक चिनगारी सारे योरप को आग लगा सकती है, विशेषकर इस समय जब बलकान का प्रश्न संसार के सामने है।"

अमेरिका और योरप के बहुत से भाषणों में इन्होंने इसी प्रकार की चेतावनियां दीं। अक्तूबर सन् १६१२ को केलिफोर्निया के एक दूसरे भाषण में इन्हों ने कहा :—

"हम उस महा संग्राम के समीप हैं जिसका उल्लेख दिव्य-वाणी सोलहवें अध्याय में किया गया है। अब से केवल दो वर्ष का समय बाकी है, तब एक छोटी सी चिनगारी योरप में आग लगा देगी।"

"सब देशों में जातीय असन्तोष और प्रतिदिन बढ़ते हुए धार्मिक भ्रम, जिनका आध्यात्मिक राज्य के पूर्वक होना अवश्यंभावी है, इस समय विद्यमान हैं और यह डैनियल और जोहन्ना की भविष्यवाणियों के अनुसार सारे योरप में आग लगा देंगे।"

"ई० सन् १६१७ तक सब एकतन्त्र राज्यों का अन्त हो जायेगा और क्रान्तियों के भूकम्प पृथ्वी को हिला देंगे"। (Reported by Mrs. Corinne True in The North Shore Review, September 26, 1914, Chicago, U. S. A.)

महा संग्राम के बहुत समीप के दिनों में इन्होंने कहा:—

"सब सभ्य जातियों का एक सर्व साधारण संग्राम बहुत समीप है। एक महान् परिवर्तन शीघ्र आने को है। संसार एक हृदय कंपाने वाले महा संग्राम के द्वार पर है। बड़ी बड़ी सेनाएं और लाखों मनुष्य संग्राम के लिये बुलाये जारहे हैं और सीमान्तों पर नियुक्त किये जारहे हैं। इन्हें भयंकर युद्ध के लिये तैयार किया जारहा है। एक साधारण सी रगड़ उनसें एक भयावह धमाका उत्पन्न करेगी और फिर एक ऐसी

आग लगेगी जिसकी समता मानव इतिहास में कहीं न मिलेगी"। (at Haifa, August 3, 1914.—Star of the West, vol. v, p. 163.)

संग्राम के अनन्तर सामाजिक कष्ट

बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा दोनों ने एक अत्यन्त बड़े जातीय कष्टों और आपत्तियों के संबन्ध में भी भविष्य वाणियाँ की और कहा कि यह आपत्तियां इस अधार्मिकता और पक्षपात, अज्ञान और अन्ध विश्वास का फल होंगी जो उस समय संसार में फैल रहे होंगे। अन्तर्जातीय महान् सैनिक संघर्ष इस उत्थान का एक आकार था।

जनवरी १९२० की एक तख्ती (पत्रिका) में आप ने लिखा है :—

"हे सत्य के प्रेमियो, हे मनुष्य मात्र के सेवको! चूँकि आप के उच्च विचारों और भावों की मधुर सुगन्धि मुझ तक आई है इसलिए मैं अनुभव करता हूँ कि मेरी आत्मा आप लोगों को सन्देश देने के लिए स्वयं प्रेरित हो रही है।"

"अपने हृदयों में विचारो कि इस समय संसार कैसे कष्टों और क्लेशों में डूबा हुआ है, किस प्रकार संसार की जातियाँ मानुषिक रक्त से लिथड़ी पड़ी हैं, नहीं नहीं, उनकी मिट्टी तक भी लहू से रंगी हुई है। युद्ध ज्वाला ने ऐसी भीषण अग्नि प्रचण्ड की है कि संसार ने इस के बराबर न तो अपने प्राचीन काल में न मध्यकाल में और न वर्तमान काल में देखी है। युद्धरूपी चक्की चली और असंख्य मानुषिक सिरों को पीस डाला, नहीं नहीं इसके भेंट चढ़ने वालों की दशा तो इस से बुरी हुई। फलते फूलते देश नष्ट भ्रष्ट हो गए, नगर के नगर

भूमितल से मिला दिए गए, बसते हुए गाँव खंडहर बना दिए गए, पिताओं से पुत्र जाते रहे और पुत्र पिता हीन हो गए, माताएं अपने जवान पुत्रों के शोक में लहू के आंसू रोईं नन्हे नन्हे बालक अनाथ हो गये और विवाहित युवतियां बेठौर ठिकाने हो गईं। सारांश यह कि मनुष्य सर्व प्रकार से पतित हो गया। अनाथ बिलबिला रहे हैं, माताओं का विलाप आकाश मंडल में गूंज रहा है।"

"इन सब घटनाओं का वास्तविक कारण जातीय, सामाजिक और साम्प्रदायिक तथा राजनैतिक पक्षपात है और इस पक्षपात का मूल कारण बोदी गाथाएं हैं जो हृदयों में जमी हुई हैं, चाहे यह गाथाएँ साम्प्रदायिक हों या जातीय हों, सामाजिक हों या नैतिक हों। जब तक इन गाथाओं का लेश मात्र भी शेष रहता है मनुष्य रूपी भवन की नींव सुरक्षित नहीं है और स्वयं मनुष्यमात्र भी निरन्तर भय में है।"

"अब इस प्रकाशमान युग में जबकि सारी सृष्टि का सार प्रकट कर दिया गया है और सारी रचना का गुप्त भेद स्पष्ट कर दिया गया है, जब सचाई की पौ ने फट कर संसार के अन्धकार को प्रकाशित कर दिया है क्या यह यथोचित है कि ऐसा भयानक रक्तपात जो संसार पर ऐसा नाश लाता है जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती, उसे होने दिया जाए। ईश्वर की शपथ है कि यह नहीं हो सकता।"

"मसीह ने सारे संसार के लोगों को शान्ति और मेलजोल की शिक्षा दी। उसने पतरस को आज्ञा दी थी कि वह अपनी तलवार को म्यान में रक्खे। यह मसीह की इच्छा और उसकी शिक्षा थी किन्तु आज जो उसके नाम लेता हैं उन्होंने तलवार नंगी की हुई है। इन लोगों के कामों और अंजील की स्पष्ट शिक्षा में कितना भेद है!"

"साठ वर्ष बीते बहाउल्लाह सूर्य्य के सदृश ईरान के आकाशवृत्त से सूर्य्य की नाईं चमके और घोषणा की कि संसार अन्धकार में लिपटा

हुआ है और यह अन्धकार विनाशकारी परिणामों से परिपूर्ण है और इसका फल एक भयानक युद्ध होगा। अपने कैदखाने के नगर अक्का से आपने जर्मनी के सम्राट् को स्पष्टतया लिखा कि एक घोर युद्ध होगा और बर्लिन में रोना पीटना पड़ जाएगा। इसी प्रकार अक्का नगर में तुर्की के सुलतान के अन्यायपूर्वक कैदी होते हुए आपने उसको स्पष्टतः और ज़ोरदार शब्दों में लिखा कि कुस्तुन्तुनिया में बड़ी गड़बड़ होगी— ऐसी कि उसके बालक और स्त्रियाँ बिलबिलाएंगी और चिल्ला चिल्ला कर रोएंगी। सारांश यह कि आपने संसार के सारे शासकों के नाम पत्र लिखे और उनमें जो भविष्यवाणियाँ की थीं वह सब पूरी हो गई हैं। आपकी महान् लेखनी द्वारा युद्ध को रोकने के लिए उपदेश लिखे गए संसार भर में फैल चुके हैं।"

"आपका प्रथम उपदेश सत्य की खोज करना है। आपने फरमाया कि अंधाधुन्ध अनुकरण मनुष्य की आत्मा को मार देता है किन्तु सत्य की खोज संसार को पक्षपात के अंधकार से मुक्त करती है।"

"आपका दूसरा उपदेश मनुष्यमात्र की एकता है। सारे मनुष्य एक भेड़ के समान हैं और ईश्वर दयालु गडरिये के सदृश है। वह सब पर अपनी बड़ी दयालुता प्रदान करता है और सब को एक समझता है। तू ईश्वर की सृष्टि में कोई भेद न पाएगा। वह उसके दास हैं और उसकी दया के आकांक्षी हैं।"

"आपका तीसरा उपदेश यह है कि धर्म एक अति पुष्ट किला है। इसको एकता का प्रेरक होना चाहिए न कि शत्रुता और घृणा का कारण। यदि धर्म से शत्रुता और घृणा उत्पन्न होती हों तो इसका त्याग कर देना ही श्रेष्ठ है क्योंकी धर्म एक औषधि के समान है। यदि औषधि से रोग बढ़े तो ऐसी औषधि का त्याग करना ही उचित है।"

"इसी प्रकार साम्प्रदायिक, जातीय, सामाजिक और नैतिक पक्षपात मनुष्यमात्र की नींव को खोखला करनेवाले हैं। इन सबका परिणाम रक्तपात होता है। यह सब मनुष्य मात्र का नाश करते हैं। जब तक यह रहेंगे युद्ध का भय भी लगा रहेगा। इसका एकमात्र उपाय विश्वव्यापी शान्ति है और यह तभी होगा जब एक महा न्यायालय स्थापित हो जाएगा जिसमें सारे राज्यों और सारी जातियों के प्रतिनिधि होंगे। सारे जातीय और अन्तर्जातीय झगड़े इस न्यायालय में पेश होंगे और जो कुछ वह निर्णय करेगा वह मनवाया जाएगा। यदि कोई राज्य उसे मानने से इन्कार करेगा तो सारा संसार उसके विरूद्ध उठ खड़ा होगा।"

"आपके उपदेशों में स्त्री व पुरुष के अधिकारों की समानता भी हैं और इसी प्रकार के और उपदेश हैं जो आपकी लेखनी ने लिखे हैं।"

"इस समय यह प्रकट हो गया है कि यह सिद्धान्त संसार का वास्तविक जीवन हैं और इसकी वर्तमान दशा के वास्तविक दर्शक हैं। अब तुम जो मनुष्य मात्र के सेवक हो तुमको उचित है कि जी जान से यत्न करो कि संसार प्राकृतिकपन और मानुषिक पक्षपात से निवृत्त हो जाए ताकि यह ईश्वर के प्रकाश से प्रकशमान हो जाए।"

आपने नवम्बर १९१९ में एक वार्तालाप में कहा:—

"बहाउल्लाह ने बार बार भविष्यवाणी की कि एक ऐसा समय आयेगा कि जब अधार्मिकता और उसके फलस्वरूप अराजकता फैल जायेगी। यह गड़बड़ी उस बढ़ती हुई स्वतन्त्रता के कारण से उत्पन्न होगी जो उन लोगों में जो इसके लिए तैयार नहीं, फैल जायेगी और फल यह होगा कि लोगों के लाभ के लिये गड़बड़ी को दबाने के निमित्त एक बार कठोर शासन का अस्थायी रूप से अनुसरण करना पड़ेगा।

"अब यह बात स्पष्ट है, कि प्रत्येक जाति पूरी स्वाधीनता और स्वतन्त्राचरण की इच्छुक है परन्तु कुछ जातियाँ इसके लिए तैयार नहीं हैं। संसार की वर्तमान अवस्था अधार्मिकता की है जिसका परिणाम अराजकता और विद्रोह ही हैं। मैं सदा से कहता आया हूँ कि महा संग्राम के बाद शान्ति की आयोजना अरुणोदय के समान है, सूर्योदय के समान नहीं।"

ईश्वरीय राज्य का आगमन

इन संकटमय समयों में भी ईश्वरीय प्रचार बढ़ता जायेगा। व्यक्तिगत सत्ता के लिए, या समुदाय, सम्प्रदाय तथा जातीय लाभ के लिये स्वार्थपूर्ण प्रयत्नों के कारण से जो आपदाएँ उत्पन्न होंगी उनको दूर करने के निमित्त लोग सब और से निराश होकर ईश्वरीय वाणी की ओर झुकेंगे जिसमें उन (आपदाओं) का सच्चा प्रतीकार बताया गया है। ज्यों ज्यों आपदाएँ बढ़ेंगी त्यों त्यों लोग उनके अनन्य उत्तम उपाय की ओर झुकेंगे। सुलतान को लिखे पत्र में बहाउल्लाह कहते हैं:—

"ईश्वर ने हरे भरे खेतों के लिये प्राभातिक किरणों के समान आपदाओं को बनाया है और यह आपदाएँ उस प्रदीप की बत्ती हैं जिससे पृथ्वी और आसमान प्रकाशित होते हैं। आपदाओं से ही उसका प्रकाश चमका और उसकी स्तुति लगातार प्रकाशित होती रही। पूर्व समय और गत शताब्दियों में उसका यही प्रकार चला आया है।"

बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा दोनों स्पष्ट शब्दों में आध्यात्मिकता की भौतिकता पर निश्चयात्मक और अवश्यंभावी विजय की भविष्यवाणी कहते हैं। सन् १९०४ में अब्दुल-बहा ने लिखा था :—

"इस बात का निश्चय जानो कि आपदाएँ और संकट बढ़ते जायेंगे और लोग विपद्ग्रस्त होंगे। हर्ष और प्रसन्नता के सब द्वार बंद हो जायेंगे। भयंकर युद्ध छिड़ेंगे। निराशा और आशाओं का विच्छेद लोगों को घेर लेगा यहाँ तक कि वह विवश होकर ईश्वर की ओर लौटेंगे। तब एक बड़ी प्रसन्नता का प्रकाश दिशाओं को प्रकाशित करेगा और 'या बहा-उल-अब्हा' को ध्वनि चारों ओर गूँज उठेगी।" (Tablet to L. D. B. quoted in Compilation on War and Peace, p. 187.)

फरवरी १९१४ ई० में जब अब्दुल-बहा से प्रश्न किया गया कि बड़ी बड़ी शक्तियों में से कोई विश्वास लायेगी या नहीं, तो उन्होंने उत्तर दिया:—

"सारे संसार के लोग विश्वास लायेंगे। यदि तुम प्रचार की आरम्भिक अवस्था के साथ आज की अवस्था की तुलना करो तो तुम जान जाओगे कि ईश्वरीय प्रचार कितने वेग से अग्रसर हो रहा है, और इस समय ईश्वरीय प्रचार ने सारे संसार को घेर लिया है। इसमें सन्देह नहीं कि संसार के सब लोग ईश्वरीय प्रचार की छाया में शरण लेंगे।" (Star of the West, vol. ix, p. 31.)

यह कहते थे कि यह बात बहुत समीप है और इसी वर्तमान सदी में ही निष्पन्न होगी। फरवरी १९१३ ई० में थियासोफिस्टों (आत्मवादियों) में भाषण करते हुए इन्होंने कहा:—

"यह सदी सत्य के सूर्य की सदी है। यह पृथ्वी पर ईश्वर का राज्य स्थापित होने की सदी है।" (Star of the West, vol. ix, p. 7.)

डैनियल की पुस्तक की अन्तिम दो आयतों में बड़े ज़ोर के शब्दों में कहा गया है:—

"वह धन्य है जो प्रतीक्षा करता है और एक सहस्र तीन सौ पैंतीस दिनों तक आता है। परन्तु अपने मार्ग पर चला जा जब तक कि अन्तिम समय आये, क्योंकि तू चैन पावेगा और अपने सम्पत्ति पर दिनों में उठ खड़ा होगा।"

विद्वानों ने इन शब्दों के अर्थों के गोरखधन्धे को सुलझाने की बड़ी चेष्टाएँ की हैं। भोजन समय के एक वार्तालाप में जिसमें इस पुस्तक का (मूल) लेखक भी विद्यमान था, अब्दुल-बहा ने कहाः—

"१३३५ दिनों से मतलब मोहम्मद की यात्रा से १३३५ सौर वर्ष हैं।" (मदीना से मक्का को जाना मोहम्मदी युग का आरम्भिक दिन है)

क्योंकि यात्रा ६२२ हि० सन् में हुई थी, इसलिये ६२२ + १३३५ = १९५७ ई० सन् होता है। जब यह प्रश्न हुआ कि इन १३३५ दिनों के अन्त में हम क्या देखेंगे तो इन्होंने कहा :—

"सर्वसाधारण में शान्ति दृढ़ता से स्थापित हो जायेगी, और एक सर्वसाधारण भाषा प्रचलित हो जायेगी। समझ की भूलें सब मिट जायेंगी। बहाई प्रचार संसार के कोने कोने में फैल जायेगा और मनुष्य मात्र की एकता स्थापित हो जायेगी। बड़ा उज्ज्वल समय होगा।"

अक्का और हैफ़ा

मिर्ज़ा अहमद सोहराब अक्का और हैफ़ा के बारे में अब्दुल-बहा की यह भविष्यवाणी अपनी डायरी में दर्ज करते हैं, जब कि यह हैफ़ा के एक बहाई पथिकशाला की एक खिड़की के समीप बैठे थे। यह १४ फरवरी १९१४ का दिन थाः—

"पथिक शाला से दृश्य बड़ा ही मनमोहक दीखता है विशेषकर इसलिये कि यह बहाउल्लाह के समाधिमन्दिर के ठीक सामने है। आने वाले समय में अक्का और हैफ़ा के बीच का जो अन्तर है उसमें लोग बस जायेंगे दोनों नगर एक दूसरे से मिल जायेंगे और बड़े भारी नगर के दो अन्त के भाग बन जायेंगे। इस दृश्य को देखते, मैं अब भी स्पष्ट रूप से यह देख रहा हूँ कि यह संसार भर का एक व्यापारिक केन्द्र बनेगा। यह एक बड़ी आधे दायरे की खाड़ी अति सुन्दर बंदरगाह में बदल जायेगी जहाँ सब जातियों के जहाज़ शरण और रक्षा पाने आया करेंगे। सब जातियों के बड़े-बड़े जहाज़ इस बंदरगाह पर आया करेंगे और संसार के प्रत्येक भाग से लाखों पुरुषों और स्त्रियों को अपने अन्दर लेकर आया करेंगे। पहाड़ और समतल विशाल भवनों और प्रासादों से भर जायेंगे। शिल्पक्रिया और वाणिज्य प्रचलित होगा और सब के हित के लिए शिक्षामन्दिर बनवाये जायेंगे। सब जातियों की सभ्यता और संस्कृति के प्रसून यहाँ आया करेंगे जो अपने परिमल को मिलाकर मानव भ्रातृभाव का मार्ग तैयार करेंगे। अद्भुत उद्यान वाटिकाएँ उपवन और आराम सब ओर बनाये जायेंगे। रात के समय वह बड़ा नगर बिजली के प्रकाश से चमचमा उठेगा। अक्का से हैफ़ा तक सारा बंदरगाह प्रकाश का एक मार्ग होगा। कार्मेल पहाड़ के दोनों ओर बड़े-बड़े लाइटहौस बनाये जायेंगे जो आते जाते जहाजों को मार्ग दिखाने का काम करेंगे। स्वयं कार्मेल पहाड़ शिखर से लेकर मूलतक प्रकाश के समुद्र में डूबा हुआ होगा। कार्मेल पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए लोग तथा जहाज़ के यात्री ऐसा दृश्य देखा करेंगे जो संसार ने आज तक कभी नहीं देखा।"

"पहाड़ के प्रत्येक भाग से 'या बहा-उल-अब्हा' की ध्वनि गूँजा

करेगी और प्रभात होने से पूर्व आत्मा को आनन्दित करने वाली ध्वनियाँ सुरीले गीतों के साथ सर्व शक्तिमान् के सिंहासन की ओर उठा करेंगी। निःसंदेह ईश्वर के मार्ग रहस्य पूर्ण और अज्ञेय हैं शिराज़ और तेहरान में, बग़दाद और कुस्तुन्तुनिया में, एड्रियानोपल, हैफ़ा और अक्का में भला बाह्य संबन्ध क्या है ? ईश्वर धीरे धीरे इन भिन्न भिन्न नगरों में अपनी निश्चित और शाश्वत आयोजना के अनुसार काम करता रहा ताकि वह भविष्यवाणियाँ जो पूर्ववर्ती अवतारों ने की थीं, पूरी हों। संपूर्ण अंजील ईश्वर की इस प्रतिज्ञा के सुवर्णसूत्र से अनुप्रोत है कि मसीह फिर सन्तों के साथ पृथ्वी पर अवतीर्ण होंगे और हज़ार बरस तक पूर्ण सुख और शान्ति का राज्य करेंगे। यह अवश्यंभावी और निश्चित है कि ईश्वर इस प्रतिज्ञा को अपने ठीक समय पर प्रकट (पूर्ण) करेंगे। उसका एक भी शब्द पूरा हुए बिना न रहेगा।"

अध्याय पन्द्रहवाँ

अतीत की स्मृति और भविष्य की आशा

"ऐ मित्रो ! मैं इस बात की साक्षी देता हूँ कि प्रसाद पूर्ण है, तर्क दृढ़, प्रमाण सुव्यक्त है, और साक्ष्य प्रमाणित हुआ है। अब देखना है, विरक्ति के मार्ग तुम्हारे उद्योग क्या प्रकट करते हैं। इस प्रकार ईश्वरीय प्रसाद तुम पर पृथ्वी और आसमान में रहने वालों पर पूर्ण हुआ। सब ईश्वर की महिमा है, वह सब वाणियों का स्वामी है।"—(बहाउल्लाह के गुप्त शब्द)

प्रचार की प्रगति

स्थानाभाव से संसार भर में बहाई धर्म की प्रगति का विस्तृत वृत्तान्त लिखना असंभव है। इस रोचक विषय के लिये कई अध्यायों की आवश्यकता है जिन में ईश्वरीय प्रचार के शहीदों और अग्रगण्यों के हृदय वेधक वृत्तान्त लिखे जायें पर फिर भी उनका थोड़ा सा संक्षिप्त वृत्त यहाँ लिखना पर्याप्त होगा।

इस प्रकार के आरम्भिक अनुगामियों को ईरान में अपने भाइयों के हाथ से प्रबल विरोध, बन्धन और निर्दयता के व्यवहार सहने पड़े, परन्तु उन्होंने इन सब आपदाओं, कष्टों और परीक्षाओं को अत्यन्त धीरता से सहन किया। उन्हें उनके अपने लहू में बपतस्मा दिया गया। क्योंकि उनमें से कई सहस्रों ने अपनी

जानें शहीद कीं, कई सहस्र पीटे गये, उनके घर बार छीन लिये गये, उन्हें निर्वासन का दण्ड दिया गया और अनेक प्रकार के अन्य दुर्व्यवहार उनके साथ किये गये। साठ वर्ष या इसके अधिक समय तक यदि कोई मनुष्य ईरान में बाब या बहाउल्लाह के उपर श्रद्धा की पुष्पाञ्जलि चढ़ाता तो उसकी सब सम्पत्ति लूट ली जाती, उसकी स्वतन्त्रता और उसके प्राण तक संदेह में पड़ते। तो भी यह पशुपने के आग्रहपूर्ण विरोध ईश्वरीय प्रचार की प्रगति को इससे अधिक न रोक सके जितना कि धूलि धूसर बादल सूर्य के सामने आकर उसके प्रकाश को रोक रखते हैं।

ईरान ❀ के एक कोने से दूसरे कोने तक तकरीबन प्रत्येक छोटे बड़े नगर ग्राम और यहाँ तक कि निगृह लोगों में भी बहाई विद्यमान हैं। कुछ तो गाँव के गाँव ही बहाई हैं, और कुछ बड़ी संख्या पाई जाती है। यह लोग उन दलों या समुदायों में आये हैं जो आपस में सिरों के वैरी थे, पर अब घनी मित्रता से

❀ लार्ड कर्ज़न अपनी पुस्तक 'पर्शियन क्वैश्चन' में जो सन् १८९२ ई० में अर्थात् जो बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के वर्ष में छपी है, लिखता है—

ईरान में बाबियों की संख्या, इस समय जो अनुमान लगाया गया है, कम से कम पाँच लाख है, परन्तु उन लोगों के साथ बातचीत करने से जो इस विषय की अच्छी तरह जाँच पड़ताल कर सकते हैं, मेरा अपना विचार है कि कुल संख्या दस लाख के लगभग है। वह जीवन की प्रत्येक धारा में पाये जाते हैं। मन्त्रियों और राजसभा के सभ्यों से लेकर सेवकों और सारथियों तक में भी यह विद्यमान हैं। इनकी कार्य-वाहियों के प्रधान नेता स्वयं मुसलमान पुरोहित हैं। यदि बहाई धर्म इस प्रगति से, जिससे वह इस समय बढ़ रहा है, बढ़ता गया तो हब

रहते हैं, उनका भ्रातृभाव केवल आपस के बीच में ही बद्ध नहीं बल्कि सर्वत्र उन सब मनुष्यों के साथ उनका स्नेह है जो मनुष्य-मात्र के प्रेम और ऐक्य की वृद्धि के लिये, पक्षपात और झगड़ों को हटाने के लिए और संसार में ईश्वरीय राज्य स्थापित करने के लिये कटिबद्ध हैं। इससे बढ़कर और क्या चमत्कार हो सकता है! केवल यही एक काम है जिसे संसार भर में निष्पन्न करने के लिये यह लोग लगे हुए हैं और जिसका पूर्ण होना सबसे बड़ा चमत्कार होगा। लक्षणों से मालूम हो रहा है कि यह बहुत बड़ा चमत्कार भी धीरे धीरे पर निश्चय से सामने आ रहा है।

तुर्किस्तान, अमेरिका, भारतवर्ष और बर्मा में बहाईयों की संख्या सहस्रों तक पहुँच चुकी है। जर्मनी, इटली, स्विटजर्लैंड और फ्रांस में बहाई सभाएं स्थापित हो गई हैं और उनकी आध्यात्मिक प्रगति की परिधि प्रतिदिन विशाल होती जा रही है। इनमें से कुछ एक देशों में ईश्वरीय प्रचार की सेवा के लिये मासिक पत्र निकलने लगे हैं। प्रायः सब देशों में बहाईयों की कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन नियम पूर्वक हुआ करते हैं जिनमें उस देश के भिन्न भिन्न भागों के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं।

जापान से भी एक मासिक पत्र जापानी और ऐसपरेंटो

समय दूर नहीं कि यह ईरान से मुसलमानी धर्म को निकाल कर बाहर करेगा। मैं समझता हूँ कि इसके लिए ऐसा करना बड़ा ही कठीन होता यदि यह किसी विरोधी धर्म के झंडे के नीचे प्रकट होता। पर क्योंकी इसके सिपाही केवल इन्हीं में से भरती किये जा रहे हैं जिनसे यह मिलता जुलता है, इसलिये अन्त में इसके सफल होने का आधार अधिक सुदृढ़ है। (Vol. i pp. 499—502.)

भाषा में निकलता है। पूर्व और पश्चिम के लगभग सभी देशों में बहाई पाये जाते हैं और यद्यपि वह इस समय संख्या में बहुत ही कम हैं पर उनका प्रभाव अपनी संख्या से कहीं बढ़कर हो रहा है। ईश्वरीय प्रचार की संजीवनी शक्ति प्रतिदिन प्रकट होती जा रही है और ईश्वरीय धर्म मनुष्यमात्र में वेग से प्रसृत होता जा रहा है। ज्यों ज्यों यह फैलता जा रहा है त्यों त्यों मानव जाति में बड़ा परिवर्तन होता जाता है।

योरप और अमरीका के प्राथमिक अनुयायिओं को आशा थी कि बहाई धर्म के फैलने और इसके नियमों को मान लेने से किसी न किसी प्रकार एक नियत समय पर मनुष्य मात्र में एकता हो जायगी। परन्तु उन बातों के धीरे धीरे प्रकट होने से जो उस समय उनके भीतर विद्यमान थीं यह स्पष्टतः प्रकट हो गया है कि इस धर्म को मान लेना केवल हमारे अन्तर से ही संबन्धित नहीं है, यद्यपि यह भी अत्यावश्यक है, बल्कि अपने आप को सारे संसार का अंग समझना है और सचेत होकर यथा-सम्भव उन नई सामाजिक संस्थाओं को उन्नति देने का उद्योग करना है जो बहाउल्लाह ने स्थापित की हैं। इसलिये प्रचार की उन्नति को दर्शाने की चेष्टा करते समय एक व्यक्ति को यही नहीं देखना चाहिये कि बहाउल्लाह के नियम संसार में कम या ज्यादा कितने फैल गए हैं और इसके अनुयायिओं की संख्या कितनी बढ़ गई है बल्कि कुछ इसे भी अधिक देखना चाहिए। इसकी उन्नति के इस दरजे पर धर्म की शक्ति इस बात से प्रकट होती है कि कितनी शीघ्रता पूर्वक बहाई जाति श्रद्धालु भक्तों की अवस्था से निकल कर एक दृढ़ विधानात्मक संगठित समूह बनती जा रही है जो अपने चौगिर्द की विरोधता और मतभेदों से पृथक् रहता

है। यह बात कि अब्दुल-बहा ने स्पष्टतः एक दूसरे अन्तर्जातीय युद्ध की भविष्यवाणी की है प्रकट करती है कि तमाम प्राचीन सामाजिक संस्थाओं पर कितना असहनीय भार पड़ने वाला है। प्राचीन धर्मों के अनुयायिओं के मुकाबले में बहाईयों की अपेक्षाकृत अल्प संख्या यद्यपि तुच्छ प्रतीत हो किन्तु उनको इस बात का विश्वास है कि ईश्वरीय शक्ति ने उन्हें एक ऐसे नए धर्म की सेवा करने का बरदान दिया है जिसमें अति शीघ्र पूर्व और पश्चिम निवासी समूह के समूह प्रवेश करेंगे। शौक़ी अफ़ेन्दी ने बहाईयों को सूचना दी है कि सन् १९६३ तक जो बागे रिज़वान में बहाउल्लाह के अपने आप को पूर्ण अवतार होने की घोषणा करने की १०० वीं वर्षगांठ है बहाउल्लाह क धर्म के नियम सारे संसार में स्थापित हो जाएंगे।

इसलिये यह सत्य है कि परमात्मा ने तमाम देशों में शुद्ध पवित्र हृदयों से प्रकाश किया है किन्तु वह हृदय इस बात से अपरिचित हैं कि यह प्रकाश किस साधन द्वारा हुआ है और यद्यपि बहाई धर्म की उन्नति हम उन बहुत से उद्योगों में देतेख हैं जो बहाई जाति के बाहर दूसरे लोग बहाउल्लाह के किसी न किसी सिद्धान्त के प्रचार में कर रहे हैं किन्तु प्राचीन विधान की निर्बलता इस बात की विश्वासनीय युक्ति है कि परमात्मा के राज्य के नियम केवल बहाई जाति के अन्दर ही फलफूल सकते हैं।

बाब और बहाउल्लाह का ईश्वरावतार होना

जितना अधिक हम बाब और बहाउल्लाह की जीवनी और उनकी शिक्षाओं को पढ़ते हैं उतना ही अधिक हमारे लिये यह

असंभव होता जाता है कि हम उनके महत्त्वका, सिवाये के ईश्वरीय प्रकाश होने के कोई और सवब या आधार बता सकें। उनका पालन पोषण एक ऐसे वायुमण्डल में हुआ था जो धार्मिक उन्मत्तता और पक्षपातों से पूर्ण था। उन्होंने साधारण सी आरम्भिक शिक्षा प्राप्त की थी। पश्चिम की संस्कृति का उन्हें कोई ज्ञान न था। कोई राजनैतिक या आर्थिक शक्ति उनकी पृष्ठपोषक न थी। उन्होंने लोगों से कुछ न मांगा और उनको अन्याय और अत्याचार के बिना और कुछ न दिया गया। संसार के प्रमुख लोगों ने या तो उनकी अवहेलना की या विरोध किया। उन्हें अपना कर्तव्य पालन करने में कोड़े लगाये गये, दुःख दिया गया, बड़ी बड़ी आपत्तियों में फँसाया गया। सारा संसार उनका विरोध करने पर तुला था और ईश्वर के बिना उनका कोई सहायक न था तो भी उनकी विजय अब ही प्रकट और प्रत्यक्ष है।

उनके विचारों की उच्चता और बड़प्पन, उनके जीवनों की पवित्रता और स्वार्थ त्याग, उनकी विस्मयजनक बुद्धि और ज्ञान, उनका निर्भीक साहस और निश्चय, उनका पूर्व और पश्चिम दोनों के निवासियों की आवश्यकताओं का ज्ञान, उनकी शिक्षाओं की विचारानुकूलता और पूर्णता, अपने मानने वालों में हार्दिक श्रद्धा और भक्ति और उत्साह उत्पन्न करने की शक्ति उनके प्रभाव की महत्ता और प्रबलता, उनके प्रचार की उत्तरोत्तर अधिकाधिक उन्नति, यह उनकी सत्यता के ऐसे प्रबल और निरुत्तर करने वाले प्रमाण हैं जिन्हें केवल धार्मिक इतिहास ही उपस्थित कर सकता है।

उज्ज्वल भविष्य

बहाई शुभ समाचार ईश्वर के प्रसाद एक मनोहारी दृश्य

हमारे नेत्रों के सामने ला खड़ा करते हैं और मनुष्यमात्र के भविष्य की उन्नति के मनोमोहक दृश्य ला खड़ा करते हैं। यह निश्चय ही उन सब प्रकाशों से बड़ा प्रकाश है जो आज तक मानव जाति को दिये गये थे, या यों कहिये कि यह सब प्रथम प्रकाशों को पूरा करता है। इसका उद्देश्य मनुष्य मात्र को नया जीवन देना 'एक नया आसमान और नयी पृथ्वी उत्पन्न करना' है। यह वही काम है जिसे पूरा करने में मसीह और अन्य सब ईश्वरावतारों ने अपने जीवन व्यतीत किये और इन बड़े ईश्वरीय शिक्षकों के बीच कोई ईर्ष्या या विद्वेष नहीं है। यह काम केवल उन प्रकाशों या इस प्रकाश के ही द्वारा नहीं, बल्कि सब की संमिलित शक्ति से पूरा होगा। जैसा कि अब्दुल-बहा कहते हैं:—

"इस बात की आवश्यकता नहीं कि मसीह को बड़ा बनाने के लिये इब्राहीम को छोटा करके दिखाया जावे। यह आवश्यक नहीं कि बहाउल्लाह को ऊँचा करने के लिये ईसा को घटाया जाये। ईश्वरीय सत्य को जहाँ भी दीखे हमें ग्रहण करना चाहिये। सारांश यह है कि यह सभी बड़े बड़े ईश्वरावतार ईश्वरीय पूर्णता के दर्जे को बढ़ाने के लिये आये थे। यह सभी ईश्वरीय इच्छा के आसमान में समान रूप से सूर्यवत् प्रकाशित हो रहे हैं। सब ही संसार को अपना प्रकाश दे रहे है।" (Star of the West, vol iii, No. 8; p. 8.)

काम ईश्वर का है, और ईश्वर अवतारों को ही नहीं बल्कि मनुष्यमात्र को बुलाता है कि यह इस उत्पादक कार्य में उसके सहकारी बनें। यदि हम उसके निमन्त्रण को स्वीकार नहीं करते तो इससे हम उसके चल रहे काम को रोक नहीं सकते, क्योंकि ईश्वर जो चाहता वह हुए बिना नहीं रहता। यदि हम अपने

कर्तव्य को पूरा करने में असफल रहेंगे तो वह अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये दूसरे साधन उत्पन्न कर सकता है, पर घाटे में हम ही रहेंगे, क्योंकि हम उस वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त न कर सकेंगे जिसके लिये हम उत्पन्न किये गये हैं। बहाई शिक्षा के अनुसार मानव अस्तित्व का सच्चा और उजला उपयोग यह है कि हम ईश्वर के साथ एक हो जायें, उसके सेवक, उसके प्रेमी, और उसकी इच्छा को पूरा करने के लिये इच्छा पूर्वक साधन बन जायें, यहाँ तक कि हम अपने अंदर उसके सिवा और किस को न पाये।

मनुष्यमात्र को एक बहुत अच्छा हृदय दिया गया है क्योंकि उसे ईश्वर ने अपनी प्रतिकृति और अपना स्वरूप बनाया है, इसलिये जब मनुष्य को सत्य की प्राप्ति हो जाती है तब वह भ्रम के मार्ग में नहीं भटकता। बहाउल्लाह हमें विश्वास दिलाते हैं कि ईश्वर का आह्वान अब बहुत शीघ्र सर्वसाधारण में स्वीकृत होगा और सारी मनुष्यजाति सत्यप्रियता और आज्ञाकारिता की ओर झुकेगी। उस समय "सब शोक हर्ष में और सब रोग स्वास्थ्य में बदल जायेंगे", और इस संसार के राज्य "हमारे ईश्वर और उसके मसीह के राज्य बन जायेंगे और ईश्वर अनन्त समय तक राज्य करेगा।" (Rev. ix, 15.) न केवल वही जो पृथ्वी पर हैं, बल्कि वह सब भी जो आसमानों पर हैं, ईश्वर से मिलकर शाश्वत आनन्द का उपभोग करेंगे।

धर्मों का फिर से नया करना

आजकल के संसार की अवस्था निश्चय ही हमें इस बात की

साक्षी देती है कि बहुत कम अपवादों के साथ इस बात की आवश्यकता है कि प्रत्येक धर्म के लोगों को उनके धर्म के सच्चे अर्थ बताकर उन्हें जागृत किया जाये। यह जागृति उत्पन्न करना बहाउल्लाह के प्रचार या कर्तव्य का बड़ा उपयोगी भाग है। वह ईसाइयों को सच्चे ईसाई और मुसलमानों को सच्चे मुसलमान बनाने आये हैं और सब लोगों को उनके अपने अपने धर्म-प्रवर्तकों के सच्चे भावों से परिचित कर रहे हैं। उनमें वह भविष्यवाणी भी पूरी हो गई जो इन सब बड़े बड़े अवतारों ने की थी कि समय के पूरा होने पर एक महान् ऐश्वर्यमय प्रकाश होगा जो सब अवतारों के कामों को पूरा करेगा। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती अवतारों की अपेक्षा आध्यात्मिक सत्यों को अधिक स्पष्ट करके दिखाया है और व्यक्तिगत तथा जातीय जीवन के उन सब प्रश्नों के विषय में जो आजकल संसार के सामने उपस्थित हैं ईश्वर की इच्छा को प्रकट किया है। उन्होंने एक सर्वसाधारण शिक्षा दी है जिस पर एक नयी और श्रेष्ठ सभ्यता की पक्की बुनियाद पड़ रही है। यह शिक्षा संसार भर की उन सब आवश्यकताओं को पूरा करती है जो इस नये दौर से संबन्ध रखती हैं।

नये प्रकाश (नूर) की आवश्यकता

मानव संसार की एकता, संसार के भिन्न भिन्न धर्मों का एक दूसरे से मिलान, धर्म और विज्ञान का मेल, सर्वसाधारण शान्ति की स्थापना, अन्तर्राष्ट्रीय पंचायत, अन्तर्राष्ट्रीय न्याय सभा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, स्त्रियों की समानाधिकार-प्राप्ति, सार्वजनिक शिक्षा, मानव दासत्व का ही नहीं बल्कि व्यापारिक दासता का भी अपाकरण, प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता और

अधिकारों की रक्षा करते हुए मनुष्यमात्र का एक ही वंश या कुल के लोगों के समान एक सूत्र में बद्ध होना, यह ऐसी समस्याएं हैं जो बड़े महत्त्व की और बड़ी बड़ी कठिनाइयां उपस्थित करती हैं और जिनके बारे में ईसाइयों,मुसलमानों और अन्य धर्मानुयायिओं के विचार भिन्न भिन्न और प्रायः भयंकर वैरोत्पादक थे और अब तक हैं, परन्तु बहाउल्लाह के द्वारा ईश्वर ने बड़े स्पष्ट और सुगम सिद्धान्त प्रकट किये हैं जिन का अनुसरण संसार को प्रत्यक्ष स्वर्ग बना देगा।

सत्य सब के लिए है

प्रायः लोगों का यह विचार है कि बहाई शिक्षा ईरान और पूर्वी देशों के लिये निःसन्देह अत्यन्त आलोकमय और उपयोगी है, परन्तु पश्चिमी जातियों के लिये वह अनावश्यक और अयोग्य भी है। एक आदमी को, जिसने उपर्युक्त भाव प्रकट किया था, अब्दुल-बहा ने उत्तर दियाः—

"बहाउल्लाह के प्रचार का अर्थ यह है कि जो कुछ सबके लाभ के लिए है वह ईश्वर की ओर से है और जो ईश्वर की ओर से है वह सब के कल्याण के लिए है। यदि यह सच है तो सब के लिये सच है, यदि नहीं तो सब के लिये नहीं। इसलिए वह ईश्वरीय प्रचार जो सब के लाभ के लिए हो पूर्व या पश्चिम तक बंद नहीं रक्खा जा सकता, क्योंकि सत्य के सूर्य की किरणें पूर्व और पश्चिम दोनों को प्रकाशित करती हैं और उसका ताप उत्तर और दक्षिण दोनों में अनुभूत होता है, अर्थात् एक ध्रुव (Pole) का दूसरे ध्रुव से कोई भेद नहीं। मसीह के प्रकाश के समय रूमी और यूनानियों ने भी यही कहा था कि उनका आना

केवल यहूदियों के लिये ही था। उनका विश्वास था कि उनकी सभ्यता पूर्ण है और उन्हें मसीह की शिक्षा से कोई विशेष लाभ नहीं और इसी भ्रान्त विचार ने उनमें से बहुतों को उसके प्रसादों से वञ्चित रक्खा। पता हो कि ईसाइयत के सिद्धान्त और बहाउल्लाह की आज्ञाएँ सर्वथा समान हैं और उनके मार्ग भी एक से हैं। प्रत्येक दिन की एक पृथक् उन्नति है। एक समय था कि यह ईश्वरीय शिक्षा भवन (उत्तरोत्तर वृद्धिशील प्रकाश) संसार के गर्भ में था, फिर जन्म में आया, फिर बालभाव को प्राप्त हुआ, फिर बुद्धिशाली यौवन में आया, आज यह बड़ी शोभा और चमक के साथ विद्यमान है।"

"वह मनुष्य धन्य है जो रहस्य को जान लेता और प्रकाशमय लोगों के संसार में अपने लिये स्थान पाता है।"

अब्दुल-बहा की अन्तिम इच्छा और वसीयतनामा

नया आकार

अपने प्रिय नेता अब्दुल-बहा के प्रयाण के बाद बहाई प्रचार ने अपने इतिहास का एक नया पृष्ठ खोला है। यह नया आकार उस आत्मिक रूप जीवन में एक उच्च पद को दर्शाता है अर्थात् इस धर्म के माननेवाले अब पहले से अधिक दृढ़ हो गए हैं और अपनी ज़िम्मादारियों का प्रकाश भली भान्ति करने लग गए हैं। अब्दुल-बहा ने अपनी अलौकिक शक्ति और अद्वितीय योग्यता द्वारा पूर्व और पश्चिम के देशों में उस प्रेम को फैलाने का काम किया जो आप बहाउल्लाह के प्रति रखते थे। आपने धर्म के प्रकाश को बहुत से हृदयों में प्रकाशमान किया। आपने लोगों को वैयक्तिक आत्मिक जीवन के गुण प्राप्त करने में उनका

पथप्रदर्शन किया। आपके परलोक गमन के बाद समय आगया था कि वह पारबन्धिक विधान स्थापित किया जाए जिसे संसार के उस विधान का केन्द्र और नमूना कहा गया है जिसको स्थापित करना बहाउल्लाह के धर्म का वास्तविक उद्देश है। इसलिए अब्दुल-बहा का वसीयतनामा बहाई इतिहास में एक नया युग आरम्भ करता है जो कच्चाई और गैरज़िम्मादारी के युग को उस युग से अलग करता है जिसमें स्वयं बहाईयों के लिए यह बात ठहराई गई है कि वह वैयक्तिक स्थिति से निकल कर सामाजिक मेल जोल और पारस्परिक सहायता के चक्कर को विस्तृत करें। अब्दुल-बहा ने जिस पारबन्धिक आयोजना की वसीयत की है उसके तीन बड़े अंग यह हैं:—

१ "ईश्वर के प्रचार का रक्षक।"
२ "ईश्वरीय प्रचार के हाथ।"
३ "स्थानीय, समस्त देशीय तथा अन्तर्देशीय आध्यात्मिक सभाएँ।"

ईश्वरीय प्रचार का रक्षक

अब्दुल-बहा ने अपने सबसे बड़े दौहित्र शोक़ी अफ़ेन्दी को 'प्रचार के रक्षक' की ज़िम्मेदार पदवी प्रदान की। शोक़ी अफ़ेन्दी ज़िय्या खानुम के सबसे बड़े पुत्र हैं, जो अब्दुल-बहा की सबसे बड़ी बेटी हैं। इनके पिता मिर्ज़ा हादी बाब के संबन्धियों में से हैं। (यद्यपि बाब के सन्तान तन्तु में से नहीं क्योंकि बाब का इकलौता बेटा शैशवकाल में हीं मर गया था)। शोक़ी अफ़ेंदी अब्दुल-बहा के प्रयाण के समय पचीस वर्ष के थे और यह आक्सफोर्ड के बालियल कॉलेज में विद्याध्ययन कर रहे थे।

इनको नियत करने की घोषणा का उल्लेख अब्दुल-बहा ने अपने निर्वाण पत्र (Will) में इस प्रकार किया है:—

"ऐ मेरे प्यारे मित्रो ! इस पीड़ित के प्रयाण के बाद पवित्र वृक्ष (Lote-Tree) की शाखाओं और टहनियों को (बाब और बहाउल्लाह बन्धुओं को) ईश्वर के प्रचार के हाथों को, और अब्हा के सौन्दर्य के अनुगामियों को आवश्यक है कि वह शोक़ी अफ़ेन्दी की ओर झुकें जो यौवनावस्था की शाखा है, और जो सम्मानित और पवित्र दो वृक्षों से उत्पन्न हुए हैं और जो पवित्र वृक्ष की दो शाखाओं के मिलने से अस्तित्व में आये हैं, क्योंकि यह ईश्वर का चिह्न है, एक चुनी हुई शाखा है और ईश्वर के प्रचार के रक्षक हैं, और सब टहनियां, ईश्वर के प्रचार के हाथ, अपने प्रिय भक्तों के लक्ष्य हैं । यह ईश्वर की वाणी के व्याख्याता हैं और इनके बाद एक दूसरे के अनन्तर जो प्रथमापत्य होगी उसे इस स्थान पर आरूढ़ होने का अधिकार होगा ।"

"पवित्र और यौवनशालिनी शाखा, ईश्वरीय प्रचार का संरक्षक, और सर्वसाधारण चुनाव के द्वारा नियत और स्थापित हुई सार्वजनिक न्याय सभा (बेतुलअदल) यह दोनों अब्हा सौन्दर्य के संरक्षण में और उस महत्तम के अभ्रान्त पथदर्शन के आश्रय में होंगे । जो कुछ वह निर्णय करेंगे वही ईश्वर का निर्णय होगा ।"

"ऐ ईश्वर के प्यारो ! ईश्वरीय प्रचार के संरक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह मरने से पूर्व अपने स्थान पर किसी को नियत करे ताकि उसकी मृत्यु के बाद कोई झगड़ा न उठे । वह जो नियत किया जाये सांसारिक पदार्थों से अवश्य विरक्त होकर रहे, पवित्रता का स्वरूप बने, अपने में ईश्वर का भय, ज्ञान, बुद्धि और विद्या प्रकट करे । यदि ईश्वरीय प्रचार के संरक्षक के वंश की प्रथमापत्य अपने में इस उक्ति का

तत्त्व "बच्चा अपने पिता का रहस्यमय सार है" प्रकट न करे अर्थात् अपने में पितृक्रमागत आध्यात्मिकता सिद्ध न करे और उसका चरित्र अपने वंश के उज्ज्वल आचरणों के विरुद्ध हो तो संरक्षता के लिए किसी और शाखा को (अर्थात् उसी वंश में से किसी दूसरे को) उसके स्थान में नियत करें।"

"ईश्वरीय प्रचार के हाथ अपने समुदाय में से नौ व्यक्तियों को चुना करेंगे जो ईश्वरीय प्रचार के संरक्षक की महत्त्वपूर्ण सेवाओं में सदा निरत रहा करेंगे। इन नौ व्यक्तियों का चुनाव या तो सर्वसम्मति से होगा या ईश्वरीय प्रचार के हाथों के समुदाय में से होगा, और यह नौ व्यक्ति सर्वसम्मति से या बहुमत से संरक्षता के लिये स्थानापन्न किये जाने वाले व्यक्ति पर अपनी अनुमति प्रकट किया करेंगे और अनुमति इस रीति से प्रकट की जायेगी जिससे समर्थकों और विरोधियों के भेद का पता न लगने पाये (अर्थात् गुप्त पर्चियों द्वारा हो)।"

ईश्वरीय प्रचार के हाथ

बहाउल्लाह ने अपने जीवनकाल में ही विश्वासपात्र और सुपरीक्षित चार मित्रों को प्रचार का काम चलाने और उसे अग्रसर करने के लिये 'अयादी अमरुल्लाह' (ईश्वर के प्रचार के हाथ) की पदवी देकर नियत किया था। उनमें से तीन मर चुके हैं और केवल एक बाकी है। अब्दुल-बहा अपने निर्वाणपत्र (Will) में एक स्थायी कार्यकारिणी कमेटी बनाने के लिये कहते हैं जो ईश्वरीय प्रचार में संरक्षक की सहायता किया करेगी और इसे वही पदवी प्राप्त होगी। इन्होंने लिखा है:—

"ऐ मित्रो! ईश्वरीय प्रचार का संरक्षक ईश्वरीय प्रचार के हाथों को नियत किया करेगा। इन हाथों का कर्तव्य होगा कि यह ईश्वरीय

सौरभ का प्रसार करेंगे, मनुष्यो की आत्माओं का सुधार करेंगे और सभी अवस्थाओं और समयों में सांसारिक वस्तुओं से विरक्त और पवित्र होकर रहा करेंगे। उनके आचरण, चरित्र, शील, कार्य और वचनों से ईश्वर का भय प्रकट हो।"

"ईश्वरीय प्रचार के हाथों की यह समिति संरक्षक के प्रत्यक्ष अधीन रहेगी। वह उन्हें लगातार प्रेरणा करेगा कि वह अपनी सारी शक्तियों और योग्यताओं से ईश्वर के मधुर सौरभ का प्रसार करें और संसार भर के लोगों को सन्मार्ग दिखायें, क्योंकि ईश्वरीय परिचालन एक ऐसा प्रकाश है जिससे सारा संसार प्रकाशित हो सकता है।"

विधानात्मक रचना

बहाई विधानात्मक रचना के संबन्ध में निम्नलिखित बातें बहाई दुनिया (Baha'i World) भाग ५ पृष्ठ १६१ आदि से ली गई हैं:—

बहाई धर्म के सांसारिक प्रबन्ध के नियमों को बहाउल्लाह ने वर्णन किया। अब्दुल-बहा ने अपनी पुस्तकों में इन नियमों की व्याख्या की। विशेषतः अपने वसीयतनामे में आप ने इन पर भली भान्ति प्रकाश डाला है।

इस विधानात्मक रचना का उद्देश भिन्न भिन्न जातियों, धन्धों, स्वभावों और पितापूर्व धर्म संबन्धी विचारों वाले मनुष्यों के बीच दृढ़ एकता पैदा करना है। बहाई धर्म का ध्यान सहित सहानुभूति पूर्वक अध्ययन इस बात को दर्शा देगा कि बहाई विधान का ढंग और उद्देश इस धर्म के मौलिक सिद्धान्त के ऐसा संपूर्ण रूप से अनुकूल है कि उसका इसके साथ ऐसा ही संबन्ध है जैसा शरीर का आत्मा के साथ।

बनावट में बहाई विधान के सिद्धान्त पारस्परिक सहायता पर निर्धारित हैं और क्रियात्मक रूप में वह एक नए और उच्च कोटि के विश्वव्यापी आचरण को जुटाते हैं।...

बहाई जाति और दूसरी संस्थाओं में यह भेद है कि इसकी नींव ऐसी गहरी और इतनी विस्तृत है कि प्रत्येक श्रद्धालु व्यक्ति इसमें शामिल हो सकता है। दूसरी संस्थाएं यद्यपि आशय और सिद्धान्त से न हों तो भी व्यवहार और कार्यरूप से दूसरों को अपने में शामिल नहीं करतीं। परन्तु बहाई संस्था सब को अपने में शामिल करती है और किसी श्रद्धालु व्यक्ति पर उसके दरवाज़े बंद नहीं हैं। प्रत्येक संस्था में या तो स्वयं उसके भीतर या दूसरों से लिया हुआ चुनाव का कोई न कोई आधार होता है। धर्म में यह आधार एक भाव होता है जो उसकी प्रारम्भिक ऐतिहासिक स्थिति के अनुसार होता है। नीति में यह एक पार्टीया प्लैटफॉर्म होता है। आर्थिक तथा कारोबारी बातों में यह पारस्परिक आपत्ति या पारस्परिक शक्ति होता है। व्यवसाय और विज्ञान में यह आधार एक विशेष सिखलाई या आन्दोलन या लाभ होता है। इन सब में चुनाव का आधार जितना तंग होता है उतना ही आन्दोलन बलवान होता है। यह एक ऐसी स्थिति है जो उस स्थिति के जो बहाई धर्म में विद्यमान है सर्वथा प्रतिकूल है। यही कारण है कि बहाई धर्म में यद्यपि बढ़ने और उन्नति करने की प्रबल आकांक्षा है फिर भी इसके अनुयायिओं की संख्या अति धीरे धीरे बढ़ रही है क्योंकि लोगों को सब मामलों में संकोच और फूट की बान पड़ गई है। उनके विचार में फूट को यथाचित जानना और उसकी परवानगी देना बड़ा महत्वपूर्ण

है। बहाई धर्म में प्रवेश करने से इन बातों को छोड़ना पड़ता है और यह बात आरम्भ में बड़ी कष्टदायी प्रमाणित होती है क्योंकि अहंकार विश्वव्यापी प्रेम की महान् आज्ञा के विरुद्ध बग़ावत करता है। विद्वानों को सीधे सादे और अनपढ़ों के साथ, धनी लोगों को कङ्गालों के साथ, गोरों को कालों के साथ, ईसाइयों को यहूदियों के साथ, हिन्दुओं को मुसलमानों के साथ और मुसलमानों को पारसियों के साथ मिलकर और ऐसी अवस्था में रहना पड़ता है कि शताब्दियों पुराने विशेषाधिकारों और मनघड़ंत नियमों का त्याग करना होता है।

परन्तु इस दुःख और कष्ट का परिणाम बेहद अच्छा निकलता है। यह स्मरण रहे कि गुण जब जनसाधारण से पृथक् हो जाता है तो व्यर्थ हो जाता है। इसी प्रकार नीति और धर्म मनुष्यमात्र की साधारण आवश्यकताओं से पृथक् होकर कदापि फलते फूलते नहीं। मानुषिक स्वभाव के संबन्ध में अभी तक कुछ मालूम नहीं हुआ क्योंकि हम आजतक मानसिक, आचरण संबन्धी, चिन्तात्मक या सामाजिक बचाव की अवस्था में रहते रहे हैं। बचाव भय उत्पन्न करता है। परन्तु ईश्वर का प्रेम भय को दूर कर देता है और जब भय दूर हो जाता है तो हमारी स्वाभाविक शक्तियां उन्नति करती हैं। आत्मिक प्रेम के साथ दूसरों से मेल जोल हमारी इन शक्तियों का बड़े ज़ोर के साथ प्रकाशन करता है। बहाई जाति एक ऐसी संस्था है जहाँ यह बात इस युग में हो रही है। यद्यपि अभी इसकी प्रगति बहुत धीमी है किन्तु ज्यों ज्यों इसके मानने वाले उन व्यक्तियों से परिचित होते जाएंगे जो मनुष्यों में एकता के फूल को खिला रही हैं इसकी प्रगति वेगपूर्ण होती जायगी......।

स्थानिक बहाई समस्याओं की देख रेख और ज़िम्मादारी एक सभा के हाथों में होती है जो आत्मिक सभा कहलाती है। इस सभा (जिस के सभासदों की संख्या ६ होती है) का चुनाव प्रति वर्ष २१ अप्रैल या रिज़वान के पहले दिन को होता है। (रिज़वान बहाउल्लाह के अपने आप को पूर्ण अवतार होने की घोषणा करने के मंगलाचार का त्योहार है)। जाति के सब बालिग वोट (मत) देते हैं। मत देने वालों की नामावली गत वर्ष की आत्मिक सभा तैयार करती है। आत्मिक सभा के कर्तव्यों के संबन्ध में अब्दुल-बहा ने लिखा है:—

"प्रत्येक बहाई व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह आत्मिक सभा परामर्श किए बिना एक पग भी न उठाए। जी जान से इस सभा की आज्ञाओं का पालन करे ताकि सब बातें विधिवत और नियमित रूप से हों और प्रत्येक काम विधानात्मक हो जाए। यदि ऐसा न किया जाएगा तो प्रत्येक व्यक्ति धींगाधांगी से जो चाहेगा करेगा और अपनी इच्छानुसार धर्म को हानि पहुँचाने का कारण होगा।"

"परामर्श लेने वालों (आत्मिक सभा के सभासदों) का सर्व प्रथम कर्तव्य यह है कि उनका आशय शुद्ध हों, उनका हृदय प्रकाशमान हों, परमात्मा के सिवाय वह सब को पूर्णतया त्याग दें, ईश्वरीय प्रेम में मग्न हों, ईश्वर के प्रेमियों से नम्रता तथा अधीनतापूर्वक व्यवहार करें, आपत्तिकाल में धैर्य व सहनशीलता से काम लें और ईश्वराराधन उनका कर्तव्य हों। यदि ईश्वर की कृपा से उनमें यह गुण पैदा हो जाएं तो ईश्वरीय गुप्त शासन से सहायता उनको मिलेगी।"

"आज के दिन परामर्श देने वाली आत्मिक सभा का अस्तित्व अति महत्वपूर्ण और आवश्यक है। इन पवित्र सभाओं का आज्ञापालन

अनिवार्य और प्रत्येक बहाई का सर्वप्रथम कर्तव्य है। इन सभाओं के सभासदों परस्पर इस प्रकार परामर्शादि करें कि मतभेद और वैमनस्य का कोई अवसर ही उपस्थित न हो और यह बात तभी प्राप्त होगी जब प्रत्येक सभासद सभा में पूर्ण स्वतन्त्रता और शुद्ध अन्तःकरण पूर्वक अपनी राय का प्रकाशन करेगा और अपनी प्रस्ताव देगा। यदि कोई उसकी राय के विरुद्ध कुछ कहे तो उसे बुरा न माने, क्योंकि जब तक काट छाँट की बातें और युक्तियाँ सम्मुख न रक्खी जाएंगी सत्यता प्रकट न होगी। वास्तविकता की ज्वाला तभी प्रकाश करेगी जब भिन्न भिन्न युक्तियाँ परस्पर टकराएंगी। बातचीत और वादविवाद के पश्चात् यदि सब सहमत होकर निर्णय करें तो बहुत ही अच्छा है किन्तु यदि ईश्वर न करे रायों में मतभेद हो तो बहुमत द्वारा निश्चित बात को स्वीकार करें...।"

"पहली शर्त यह है कि सभा के सदस्यों के बीच पूर्ण प्रेम और स्नेह हो। वह बेगानापन से सर्वथा घृणा करें और परमात्मा के प्रेम को दर्शावें क्योंकि वह एक ही सागर की लहरें, एक ही नदी की बूँदें, एक ही आकाश के तारागण, एक ही सूर्य की किरणें, एक ही वाटिका के वृक्ष और एक ही फुलवाड़ी के फूल हैं। यदि उनके विचार एक जैसे न होंगे और वैमनस्य रहित मित्रता उनमें न होगी तो उनकी सभा को उस समय समाप्त कर देना चाहिये।"

"दूसरी शर्त—सभा के सदस्य जब सभा में एकत्रित हों तो परमात्मा की ओर चित्त को लगाए रक्खें और उसी से सहायता की याचना करें। बातचीत केवल आत्मिक विषयों पर हो जो लोगों की शिक्षा, बालकों को पढ़ाने लिखाने, सब जातियों और सम्प्रदायों के

दरिद्रियों की सहायता और निर्बलों की सहायता, सब जातियों से दयापूर्ण व्यवहार, ईश्वरीय प्रेम के प्रचार और ईश्वरीय वाणी की पवित्रता को सिद्ध करने से संबन्धित हों। यदि सभासद इन शर्तों को पूरा करेंगे तो वह ईश्वरीय सहायता पाएंगे और उनकी सभा ईश्वरीय दयालुता का केन्द्र बन जाएगी। ईश्वरीय बल की सेनाएं उनकी सहायता के लिए आएंगी और उन्हें दिन प्रतिदिन नवीन आत्मिक आनन्द प्राप्त होगा।''

इस विषय पर कहते हुए शोक़ी अफ़ेन्दी लिखते हैं:—

''प्रत्येक बहाई का कर्तव्य है कि वह सर्वसाधारण को कोई पुस्तक या पत्रिका (पैम्फलट) तब तक न दे जब तक उस स्थान की आत्मिक सभा उस पर भली भान्ति विचार करके अपनी स्वीकृति न दे दे। और यदि यह पुस्तक या पत्रिका ऐसी है (जैसा साधारणतः होता है) जिसका संबन्ध उस देश में धर्म संबन्धी हितों से है तो आत्मिक सभा का यह कर्तव्य है कि वह उसे उस देश की नैशनल स्पिरिचुअल असेम्बली (समस्त देशीय सभा) के पास विचार करने और स्वीकृति के लिए भेजे। यह बात केवल पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए ही नहीं बल्कि प्रत्येक समस्या जिसका संबन्ध उस स्थान में वैयक्तिक अथवा समष्टि रूप से धर्म के साथ हो वह अनिवार्य रूप से उस स्थान की आत्मिक सभा के सम्मुख उपस्थित होना चाहिये। आत्मिक सभा, यदि इस समस्या का संबन्ध सारी जाति से नहीं है, तो उसके संबन्ध में निश्चित करेगी। यदि समस्या सारी जाति से संबन्धित है तो आत्मिक सभा इसे समस्त देशीय (सभा) के सामने रक्खेगी। यह निश्चित करने का अधिकार भी समस्त देशीय सभा को है कि कोई मामला स्थानिक है या जातीय। जातीय समस्याओं का अभिप्राय नैतिक समस्याएं नहीं है क्योंकि संसार

भर के बहाईयों को बड़े ज़ोर से वर्जित किया गया है कि वह किसी अवस्था में भी नैतिक मामलों में न पड़े। उनका काम केवल यह है कि वह देश के बहाईयों के आत्मिक व मानसिक मामलों का प्रबन्ध करें।"

"परन्तु विभिन्न स्थानिक सभाओं और उनके सभासदों और विशेषतः प्रत्येक स्थानिक और समस्त देशीय सभा में मेलजोल, एकता और पारस्परिक सहायता अत्यावश्यक है क्योंकि इस पर धर्म की एकता, मित्रों का मेल जोल और उस के प्यारों के आत्मिक तथा मानसिक कामों का शीघ्रता पूर्वक और पूर्ण रूप से होना निर्भर है।"

"विभिन्न मुकामी (स्थानिक) और जातीय सभाएं इस समय वह नीवें हैं जिनकी दृढ़ता पर भावी विश्वव्यापी बैतुल अदल (न्यायालय) दृढ़ता पूर्वक स्थापित होगा। जब तक यह सभाएं क्रियाशीलता और एकता के साथ काम न करेंगी उस समय तक इस सन्धि काल के अन्त होने की आशा नहीं है...इस बात को भली भान्ति याद रक्खें कि बहाई धर्म का मूल उद्देश्य स्वतन्त्रतापूर्ण आचार व्यवहार धारण करना नहीं, नम्रतापूर्ण मित्रता, स्वतन्त्रतापूर्ण शक्ति नहीं बल्कि सत्य और मित्रतापूर्ण परामर्श है। सिवाय सच्चा बहाई होने के और कोई वस्तु दया व न्याय, स्वतन्त्रता और अधीनता वैयक्तिक अधिकारों की शुद्धताई और ईश्वर परायणता, चौकन्नापन समझ और सावधानी, मित्रता, सत्यता और उत्साह के सिद्धान्त को इकट्ठा नहीं रख सकती।"

एक देश की स्थानिक सभाएं एक दूसरी से नौ चुने हुए मैम्बरों की एक सभा द्वारा जो समस्त देशीय सभा कहलाती है परस्पर मिली हुई हैं और उनके काम परस्पर संबन्धित अर्थात्

मिले हुए हैं। समस्त देशीय सभा का चुनाव प्रति वर्ष स्थानिक बहाईयों के प्रतिनिधि करते हैं। यह प्रतिनिधि उस स्थान के बहाई चुनते हैं जहाँ आत्मिक सभा होती है। नैशनल कॉनवैन्शान जिसमें यह प्रतिनिधि एकत्रित होते हैं एक चुनाव करने वाली संस्था होती है। प्रत्येक देश के लिए प्रतिनिधियों की कुल संख्या शोक़ी अफ़ेन्दी नियत करते हैं और यह संख्या प्रत्येक स्थान के बहाईयों की संख्यानुसार उन पर बांट दी जाती है। यह नैशनल कॉनवैन्शनें प्राय: रिज़वान के दिनों में की जाती हैं अर्थात् १२ दिनों में जो २१ अप्रैल से आरम्भ होते हैं और जिनमें बहाउल्लाह ने बग़दाद के निकट बाग़ रिज़वान में पूर्ण अवतार होने की घोषणा की थी। प्रतिनिधियों को स्वीकार करने का अधिकार उस समस्त देशीय सभा को होता है जो गत वर्ष में काम करती रही हो।

नैशनल कॉनवैन्शान एक अवसर होता है जिसमें बहाई कामों के संबन्ध में प्रत्येक व्यक्ति की समझबूझ गम्भीर हो जाती है और गतवर्ष संबन्धित जातीय और स्थानिक रिपोर्टें सुनी जाती हैं। कॉनवैन्शन के दिनों में बहाई पब्लिक कांग्रेस करने की भी प्रथा पड़ गई है। एक बहाई डैलिगेट (प्रतिनिधि) का काम केवल यही नहीं है कि नैशनल कॉनवैन्शान में आए और नई समस्त देशीय सभा के चुनाव में भाग ले। प्रतिनिधि जब एकत्रित होते हैं तो वह एक सलाह करने वाली और परामर्श देने वाली संस्था होती है। वह जो सिफ़ारिशें करते हैं नई समस्त देशीय सभा के मैम्बर उन पर भली भान्ति विचार करते हैं।

समस्त देशीय सभा के संबन्ध का स्थानिक सभा और देश के बहाईयों के साथ वली अमरुल्लाह (धर्म का नेता) के पत्रों में यों वर्णन किया है :—

"समस्त देशीय सभा के संबन्ध में यह अत्यावश्यक है कि प्रत्येक उस देश में जहाँ स्थिति अनुकूल है और बहाईयों की संख्या बहुत ज्यादा हो गई है वहाँ तुरन्त ऐसी सभा स्थापित कर दी जानी चाहिये जो उस देश भर के बहाईयों की प्रतिनिधि हो।"

"उन का सर्वप्रथम काम यह होना चाहिये कि पारस्परिक परामर्श द्वारा देश के बहाईयों की क्रियाशीलताओं और मामलों को बढ़ाएं, संगठित करें और एक विधानाधीन लाएं और अर्ज़ मुकद्दस (पवित्र भूमि) के साथ लगातार पत्रव्यवहार करके नियम बनाएं और धर्म के साधारण कामों को उन्नति दें।"

"उन का एक और भी काम है जो पहले से किसी प्रकार कम नहीं और वह यह है कि कुछ समय उपरान्त यह बैतुलअदल (न्यायालय) जातीय बन जायेंगी जिसे अब्दुल-बहा के वसीयतनामे (मृत्यु लेख) में बैतुल अदल सानवी (दूसरा) कहा है जो अब्दुल-बहा के मृत्यु लेख के स्पष्ट लेखानुसार संसार भर की समस्त देशीय सभा के साथ मिल कर अन्तर्जातीय या विश्वव्यापी बैतुल अदल के मैम्बरों को प्रत्यक्ष रूप से चुना करेगी। विश्वव्यापी बैतुलअदल संसार भर में धर्म संबन्धी कामों को संगठित और विधानात्मक बनाएगा और उनका पथ प्रदर्शन करेगा।"

"इस सभा की, जो विश्वव्यापी बैतुलअदल के स्थापित होने तक प्रतिवर्ष चुनी जाया करेगी, प्रकट है कि बहुत बड़ी जिम्मादारियां हैं क्योंकि इसे अपने इलाके में सारी स्थानीय सभा पर पूर्ण अधिकार होगा, वह बहाईयों के मामलों का प्रबन्ध करेगी, धर्म की बड़ी सावधानी से रक्षा करेगी और धर्म के सर्वसाधारण मामलों की देख रेख और उनका निपटारा करेगी।"

"देश में धर्म की हित संबन्धी बातों पर भारी प्रभाव डालने वाली

समस्याएं उदाहरणार्थ अनुवाद कराना, पुस्तकें छापना, मश्रीकुल अज़कार, प्रचार और ऐसे ही दूसरे मामले जो स्थानिक मामलों से पूर्णतया अलग हैं समस्त देशीय सभा के अधीन होंगे।"

"ऐसे मामलों को जैसा कि स्थानिक सभाओं को स्थानिक मामलों के साथ करना चाहिये यह उन सब-कमेटियों (उपसभाओं) को सौंप दिया करेगी जिन्हें समस्त देशीय सभा के मैम्बर देश भर के बहाईयों में से चुना करेंगे और इन सब-कमेटियों का समस्त देशीय सभा के साथ वही संबन्ध होगा जो स्थानिक कमेटियों का अपनी-अपनी स्थानिक सभा के साथ है।"

"इस सभा को ही यह अधिकार भी होगा कि वह यह निश्चित कर ले कि यदि वह समस्या जो उपस्थित है स्थानीय है और स्थानिक सभा के पास निश्चित करने के लिए जाना चाहिये या यह समस्या ऐसी है कि स्वयं उसे इस पर विचार करके फैसला देना चाहिये।"

"उस धर्म के हितार्थ जिससे हम सब प्रेम रखते हैं और जिसकी हम सब सेवा करते हैं उस समस्त देशीय सभा के मैम्बरों का जिसे कॉनवैन्शन के समय प्रतिनिधि चुनाव करें यह सर्वप्रथम कर्तव्य होगा कि वह वैयक्तिक रूप से और सामूहिक रूप से प्रतिनिधियों के ठीक विचारों, भावों, आशयों, रायों और परामर्श का पूर्णतया सम्मान करें। वास्तविक मामले को छुपाने, अनुचित रूप से मौन रहने और स्वतन्त्र रूप से पृथक् रहने के प्रत्येक खोज और चिह्न को अपने अन्तःकरण से निकाल कर सहर्ष और समूचे रूप से अपनी आयोजनाओं, अपनी आशाओं और अपनी चिन्ताओं को उन प्रतिनिधियों के सम्मुख रक्खेंगे जिन्होंने उनको चुना है। वह प्रतिनिधियों को उन विभिन्न मामलों से सूचित करेंगे जिन पर वर्तमान वर्ष में विचार करना है और फिर शान्तिपूर्वक और सद्भावना से प्रतिनिधियों की रायों और फैसलों को

जावेंगे। नई चुनी हुई समस्त देशीय सभा को कॉन्वैन्शन की उपस्थिति में और प्रतिनिधियों के चले जाने के बाद ऐसे ढंग धारण करने होंगे जिनसे मामलों को समझने की शक्ति पैदा हो, परस्पर विचारों का अदली बदली करना बना रहे और इसमें सुविधाएं पैदा हों और भरोसा बढ़े। वह प्रकट रूप से यह दर्शा देगी कि सब बहाईयों की सेवा करने और उनके हित को दृष्टि गोचर रखने के सिवा उसकी और कोई आकांक्षा नहीं है।"

"इस बात को दृष्टिगोचर रखते हुए कि कॉनवैन्शन महात्विक नियमानुसार बहुत देर बाद होती है इस लिए समस्त देशीय सभा उन सब मामलों के अन्तिम फैसले को जिन का संबन्ध धर्म के हित संबन्धी बातों से है अपने हाथ में रक्खेगी। उदाहरणार्थ इस बात को निश्चित करने का अधिकार कि यदि अमुक स्थानिक सभा उन नियमों के अनुसार चल रही है या नहीं जो धर्म की उन्नति के लिए नियत किए गए हैं।"

प्रति वर्ष स्थानिक बहाई चुनाव की नामावलियाँ ठीक करने की ज़िम्मादारी प्रत्येक स्थानिक सभा पर लगाई गई है और इस विषय में आज्ञाएं देते हुए वली अमरुल्लाह यों लिखते हैं :—

"संक्षिप्त रूप से और वर्तमान स्थिति के अनुसार बड़ी-बड़ी बातें जिन का यह निश्चित करते समय ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि कोई व्यक्ति सच्चा बहाई है या नहीं यह हैं—मुबश्शर अर्थात् बाब, पूर्ण अवतार अर्थात् बहाउल्लाह और बहाई धर्म के सच्चे द्रष्टा—अर्थात् अब्दुल-बहा के पदों को जैसा अब्दुल-बहा के मृत्यु लेख में लिखा है मानना और जो कुछ उनकी लेखनी द्वारा प्रकट हुआ है उस का बिना टालमटोल पालन करना, अब्दुल-बहा के वसीयतनामे की तमाम शर्तों

में पूर्णतया श्रद्धा और उन पर पूर्णतया कार्य्यबद्ध होना और वर्तमान बहाई विधान के तत्व और उसकी प्रथा पर पूर्णतया कार्य्यबद्ध होना-यह मेरे विचार में मौलिक और वास्तविक बातें हैं जो इस महत्वपूर्ण निर्णय के करने से पहले भली भान्ति ध्यान पूर्वक जांच लेनी चाहियें।"

अब्दुल-बहा की शिक्षा बहाई संगठन की और समाज के फलने फूलने के संबन्ध में एक सार्वदेशीय सभा की स्थापना को अनिवार्य ठहराती है। इस सभा के मैम्बरों का चुनाव समस्त देश सभाएं किया करेंगी। यह सभा अभी बनी नहीं किन्तु इस के संबन्ध में पूर्ण रूप से और स्पष्टतया आज्ञाएँ दी गई हैं:—

"और अब बैतुलअदल (न्यायालय) के संबन्ध में जिसे ईश्वर ने सारी भलाइयों का सोता और अचूक ठहराया है यह है कि इसका चुनाव बहाईयों की विश्वव्यापी वोट (मत) द्वारा होना चाहिये। इसके मैम्बर ईश्वर के भय स्वरूप हों, बुद्धि और ज्ञान के भण्डार हों, धर्म में दृढ़ हों और मनुष्यमात्र के हितैषी हों। बैतुलअदल से अभिप्राय एक विश्वव्यापी असेम्बली है अर्थात् प्रत्येक देश में एक दूसरी असेम्बली चुनी जाए और यह दूसरी असेम्बलियाँ इस विश्वव्यापी असेम्बली का चुनाव करें।"

"सारे मामले इस विश्वव्यापी असेम्बली के सामने पेश हों। जो कुछ ईश्वरीय ग्रन्थ में नहीं पाया जाता इस असेम्बली को उन कानूनों और नियमों के बनाने का अधिकार होगा। यही संस्था सब कठिन प्रश्नों को सुलझाया करेगी। वली अमरुल्लाह इस असेम्बली के आयु-पर्यन्त पूजनीय नेता और प्रतिष्ठित मेम्बर होंगे। यदि वह स्वयं इसके परामर्श आदि में सम्मिलित न हो सकेंगे तो वह अपने स्थान में किसी को अपना प्रतिनिधि नियत किया करेंगे...यह असेम्बली कानून बनाया

करेगी और महफिल आमिला उन कानूनों को प्रचलित किया करेगी। कानून बनानेवाली संस्था प्रचलित करनेवाली संस्था की सहायता करेगी और प्रचलित करनेवाली संस्था कानून बनानेवाले महकमे से सहयोग करेगी ताकि इन दोनों शक्तियों के पूरे पूरे मेल जोल और एकता से न्याय की नींव पुष्ट हो जाए और सारा संसार स्वर्ग बन जाए।"

"प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि किताब अक़दस (सद्ग्रन्थ) पर कटिबद्ध रहे और जो कुछ उसमें स्पष्ट रूप से नहीं लिखा हुआ है उसके लिए बैतुलअदल से पूछे। जो कुछ बैतुलअदल सर्वसम्मति या बहुमत से निश्चित करे वही सत्य और स्वयं ईश्वरीय अभिप्राय है। जो कोई उससे विमुख होगा वह वास्तव में उनमें से होगा जो उपद्रव चाहते हैं, ईर्षा के प्रेमी हैं और ईश्वर से विमुख हैं।"

वर्तमान काल में भी सारे संसार के बहाई निरन्तर पत्र व्यवहार तथा वैयक्तिक भेंटों द्वारा सत्य हृदय से एक दूसरे के साथ संबन्ध रखते हैं। भिन्न भिन्न जातियों, नसलों, धर्मों और गाथाओं के लोगों का इस प्रकार परस्पर मिलजुल कर रहना इस बात का प्रबल प्रमाण है कि हठधर्मी और एक दूसरे से घृणा का प्राचीन भाव मेल जोल के उस तत्व द्वारा जो बहाउल्लाह ने स्थापित किया है परास्त हो जाएगा।

इस विधान की मुख्य बातें शोक़ी अफ़ेंदी ने अपने पत्रों में जो आपने बहाईयों को फरवरी १६२६ से लेकर अब तक समय समय पर लिखे हैं इस प्रकार वर्णन की हैं:—

"मैं उनको जो इस धर्म के अनुयायी हैं यह पुकार पुकार कर कहे बिना नहीं रह सकता कि वह उन भावों को और मिट जाने वाले फैशनों को जो इस समय प्रचलित हैं भूल जाएं और इस बात को इस प्रकार हृदयांकित करलें जैसे पहले कभी न हुई थी कि वर्तमान सभ्यता

के बोदेभाव और लड़खड़ाती हुई संस्थाएं ईश्वर की दी हुई संस्थाओं के सर्वथा प्रतिकूल हैं और ईश्वर की स्थापित की हुई संस्थाएं ही उन प्राचीन संस्थाओं के खंडहरों पर स्थापित होंगी...।"

"क्योंकि बहाउल्लाह .....ने मनुष्य जाति प्रति एक नई और नया जन्म देने वाली आत्मा को ही उत्पन्न नहीं किया, आपने केवल कुछ सार्वदेशिक सिद्धान्तों को ही नहीं गिना या किसी विशेष ज्ञान विज्ञान का ही वर्णन नहीं किया चाहे यह कितने ही प्रबल, ठीक और विश्वव्यापी क्यों न हों किन्तु आप ने और आप के बाद अब्दुल-बहा ने पहले धर्मों से भिन्न स्पष्ट कानून दिए, सम्पूर्ण संस्थाएं स्थापन कीं और ईश्वरीय विधान के नियम बताए हैं। यह आगामी समाज के लिए आदर्श होंगे, संसार में महान् शान्ति स्थापित करने के प्रबल साधन हैं, सारे संसार को एक बनाने के अकेले उपाय हैं और पृथ्वी पर न्याय तथा सत्यता के राज्य की घोषणा करते हैं...।"

"मसीह के धर्म से भिन्न, मोहम्मद के धर्म से भिन्न, पुराने सब धर्मों से भिन्न प्रत्येक देश में बहाउल्लाह के शिष्य जहाँ कहीं भी वह काम करते हैं प्रकट, स्पष्ट और अवधारित (ज़ोरदार) भाषा में वह तमाम कानून, नियम, सिद्धान्त, संस्थाएं और आदेश जिनकी उनको अपने काम के करने के लिए आवश्यकता पड़ती है रखते हैं .....यही बहाई धर्म की पहचान के चिह्न की बात है। इसीं में धर्म की एकता की शक्ति और उस धर्म की शक्ति है जिसका दावा है कि वह पहले धर्मों को नष्ट करने या उनका अपमान करने नहीं आया बल्कि उन्हें मिलाने, एक करने, संयुक्त करने और सम्पूर्ण बनाने के लिए आया है........।"

"यद्यपि हमारा धर्म इस समय उन लोगों की दृष्टि में निर्बल दिखाई दे रहा है जो इसे इसलाम का एक सम्प्रदाय समझ कर

कहते हैं या उन छोटे छोटे सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय समझ कर जो अमरीका और योरप में बहुतायत से पाए जाते हैं घृणा से इस की ओर ध्यान नहीं देते फिर भी ईश्वरीय धर्म का यह बहुमूल्य मोती जो अभी बाल्यावस्था में है अपने सिद्धान्तों के भीतर बढ़ता रहेगा और सम्पूर्ण और निर्दोष उन्नति करता जाएगा यहाँ तक कि सारी मनुष्य जाति को अपने में ले लेगा। केवल वही लोग जिन्हों ने बहाउल्लाह के उच्च पद को पहचान लिया है, जिनके हृदय उनके प्रेम का स्वाद चख चुके हैं और उनकी आत्मा की शक्ति को अनुभव कर चुके हैं इस ईश्वरीय धर्म के महत्व का और मनुष्य जाति के लिए ईश्वर के इस बहुमूल्य प्रसाद का यथोचित आदर कर सकते हैं।"(२१ मार्च १९३०)।

"इसी अभिमत स्थान, इसी नवीन सांसारिक विधान की ओर जिसका आरम्भ ईश्वर से हुआ, जो संसार को अपने में ले लेने की शक्ति रखता है, जिसके सिद्धान्त न्यायपूर्ण हैं, जिसकी सब बातें नई हैं पीड़ित मनुष्य जाति को बढ़ने का उद्योग करना चाहिये...।"

"मानुषिक संस्थाओं के उन नेताओं के उद्योग कैसे करुणाजनक हैं जो काल के तत्व का खयाल न करके समस्याओं को उनके प्राचीन कालानुसार, जब जातियाँ अपनी अपनी कोठड़ियों में घिरी पड़ी थीं इस काल में चलाना चाहते हैं जिस में या तो बहाउल्लाह के बताए हुए ढंगानुसार सारे संसार में मेल हो या यह नष्ट हो जाए। संसार की सभ्यता के इतिहास के ऐसे विकट समय में संसार भर की जातियों के नेताओं के लिए उचित है, चाहे वह छोटी हों या बड़ी, पूर्व में हों या पश्चिम में, विजयी हों या परास्त, उनको बहाउल्लाह के सिंहनाद को सुनना पड़ेगा और संसार की एकता के भाव से भरपूर होकर जो ईश्वरीय धर्म की एक जरूरी शर्त है बहादुरी से कमर बांधकर खड़े हो जाएं ताकि

उस एकमात्र चिकित्सा करने वाली योजना को जो ईश्वरीय वैद्यने रोगग्रस्त मनुष्य जाति के लिए निश्चित किया है पूर्ण रूप से संसार में प्रचलित करदें। उनको चाहिए कि वह उन तमाम विचारों को जो उन्होंने पहले से सोच रक्खे हों सदा के लिए छोड़दें और प्रत्येक जातीय हठधर्मी को त्याग दें और अब्दुल-बहा जो ईश्वरीय विद्याओं के माने हुए व्याख्या करने वाले हैं उनके इस उपदेश को याद रक्खें। अब्दुल-बहा ने संयुक्त राज्य अमरीका के एक बड़े अफसर को जिसने आप से यह प्रश्न किया था कि अपने देश के राज्य और इस के निवासियों की हित संबन्धी बातों को बढ़ाने के लिए मुझ को क्या करना चाहिए, यह उत्तर दिया था "तुम अपने देश की अत्युत्तम सेवा कर सकते हो यदि तुम सारे संसार के नागरिक बन कर फेडरेशन के उन नियमों को जिनके अनुसार तुम्हारे अपने देश में शासन हो रहा है संसार भर के देशों और जातियों में प्रचलित करने का उद्योग करो।"

"किसी न किसी रूप में एक अखिल संसार साम्राज्य अवश्य बनेगा जिसके पक्ष में संसार के सारे राज्य युद्ध करने, कर लगाने के कुछ अधिकारों और हथियारबंदी के सारे अधिकारों को छोड़ देंगे। संसार के प्रत्येक राज्य को केवल उतने हथियार और फौज रखने की आज्ञा होगी जिससे वह अपने देश के भीतर प्रबन्ध को यथोचित रूप से रख सके। इस अखिल संसार के साम्राज्याधीन एक कार्य्यकर्त्ता महकमा होगा जिसको इस अन्तर्जातीय साम्राज्य के किसी विद्रोही मेम्बर को दण्ड देने के लिए सर्वोच्च और स्वतन्त्रतापूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे। इस संसार भर की पार्लामेंट के मेम्बरों को लोग अपने अपने देशों में चुना करेंगे और प्रत्येक मेम्बर के चुनाव की पुष्टि उसके देश की सरकार किया करेगी। इस सर्वोच्च न्यायालय के फैसले उन अवस्थाओं में भी चालू हुआ करेंगे जब

कि दोनों पक्ष जिन्होंने अपना मुकद्दमा पेश किया है सहमति से उसके फैसले को न मानेंगे। यह संसारभर की एक जाति होगी जिसमें तमाम आर्थिक व कारोबारी रुकावटें सदा के लिए उठा दी जायेंगी और मालिक व मज़दूर के पारस्परिक संबन्ध को सत्य रूप से मान लिया जाएगा, साम्प्रदायिक वैमनस्य का कोलाहल तथा लड़ाई झगड़ा सदा के लिए ठंडा कर दिया जाएगा, अन्तर्जातीय शत्रुता की ज्वाला सदा के लिए बुझा दी जाएगी, संसार भर के शासन संघ के प्रतिनिधि भली भान्ति सोच विचार कर अन्तर्जातीय कानूनों का एक न्यायशास्त्र बनायेंगे जिसमें यह भी अधिकार दिया जाएगा कि भिन्न देशों की इकट्ठी फौजें तात्कालिक ज़बरदस्त हस्तक्षेप कर सकें। अन्त में यह बात होगी कि संसार भर की जातियाँ एक जाति बन जाएगी जिस में सन्देहात्मक, लोभपूर्ण और वैमनस्यपूर्ण जातीय भाव बदल कर संसार भर के नागरिक होने का सदैव रहनेवाला विचार बन जाएगा—यह है उस भूमण्डल विधान का संक्षिप्त सा ढांचा जो बहाउल्लाह इस संसार के लिए लाए हैं और यह वह विधान है जो एक धीरे धीरे पकने वाले युग का सर्वोत्तम फल समझा जाता है...।"

"बहाउल्लाह के विश्वव्यापी धर्म के जीवन प्रदान करने वाले उद्देश के समझने में कोई शंका न होनी चाहिये। आप के धर्म का उद्देश कदापि यह नहीं है कि समाज की वर्तमान नींवों को उखाड़े बल्कि इस का उद्देश तो यह है कि इन नींवों को विस्तृत करे। समाज की संस्थाओं को इतना विस्तृत करे कि इस सदा परिवर्तनीय संसार की आवश्यकताओं के अनुकूल बन जायें। यह यथोचित श्रद्धाओं का विरोधी नहीं है और न ही यह अनिवार्य विश्वासों की जड़ खोखली करता है। इसका उद्देश न तो मनुष्यों के हृदयों में मातृभूमि के प्रति बुद्धिमत्तापूर्ण तथा

समझ बूझ वाले प्रेम की ज्वाला को दबाना और न जातीय स्वतन्त्रता को उड़ा देना है जो सीमा से बढ़े हुए केन्द्रपने के दोषों को दूर करने के लिए आवश्यक है। न तो यह इस सत्यता को ठुकराता है और न ही इसे दबाने की चेष्टा करता है कि संसार की जातियाँ और इसके लोग भिन्न भिन्न कुलों के हैं। उनके देशों का वातावरण (आब व हवा) भिन्न है, उनका इतिहास, भाषा, गाथाएं, विचार और स्वभाव एक दूसरे से पृथक् हैं। यह तो एक ऐसी विस्तृत शुभचिन्तता और ऐसे विस्तृत भाव उत्पन्न करने का उद्योग करता है जो आज तक मनुष्य जाति ने अनुभव नहीं किए......।"

"बहाउल्लाह की आज्ञा सर्वप्रथम प्रत्येक रूप के पक्षपात, देशवाद और परायापन के विरुद्ध है......क्योंकि कानून, नैतिक, आर्थिक व कारोबारी नियम सामूहिक रूप से मनुष्यमात्र की रक्षा के लिए होते हैं, इसलिए नहीं होते कि किसी विशेष कानून या नियम का पालन करने के लिए मनुष्यमात्र को भेंट चढ़ा दिया जाए .....मनुष्यमात्र की एकता का सिद्धान्त जो बहाउल्लाह के सारे सिद्धान्तों का मूल है किसी अज्ञानपूर्ण तरंग का फल नहीं है अथवा यह केवल किसी निरर्थक आज्ञा का प्रकाशन नहीं है......इसका तात्पर्य बड़ा गम्भीर है और इसके दावे उन तमाम दावों से बहुत बड़े हैं जो पहले तमाम सन्देश लाने वालों ने किए हैं। इसमें दिया हुआ सन्देश किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं है किन्तु इसका संबन्ध प्रारम्भिक रूप में उन अनिवार्य संबन्धों की वास्तविकता से है जो तमाम देशों और जातियों को एक मानुषिक कुल के सदस्य रूप बांधता है... ..।"

"यह मनुष्यमात्र के प्रकाश के अन्त को दर्शाता है......।"

"शोक कि यह बात भी अधिकाधिक प्रकट होती जाती है कि

मानुषिक विचार का यह नया रूप एक विश्वव्यापी आपत्ति की शक्तियाँ ही उत्पन्न कर सकती हैं......अग्नि परीक्षा के सिवा, जिस में से मनुष्यमात्र शुद्ध और तत्पर होकर निकलेगा, कोई वस्तु ज़िम्मादारी के उस भाव को उत्पन्न नहीं कर सकती जिसे एक नए युग के नेताओं ने अपने ऊपर लेना है......क्या स्वयं अब्दुल-बहा ने स्पष्ट शब्दों में नहीं कह दिया है कि 'एक और युद्ध जो पिछले युद्ध से अधिक कड़ा होगा निश्चित रूप से होकर रहेगा' ?"—नवम्बर २८, १९३१।

यह पारबन्धिक विधान...ज्योंही वह अंग जिनसे यह बना है और इस की सहांगी संस्थाएं साधक रूप से पूरी शक्ति के साथ काम करना आरम्भ कर देंगी, अपना दावा ज़ोर से पेश करेगा और अपने बल को प्रगट करेगा जिससे उस नए भूमंडल विधान का केवल केन्द्र ही नहीं वरन् नमूना भी है जिस ने सारी मनुष्यजाति को समय आने पर अपने में ले लेना है. . . . ।"

"जो धर्म पहले हो चुके हैं उन सबकी अपेक्षा केवल इसी एक धर्म ने एक ऐसा भवन निर्माण किया है जिसे दीवालिया और अङ्गभङ्ग मतों के घबराए हुए अनुयायिओं को चाहिये कि आएं और इसे भली-भाँति ध्यान पूर्वक देखें और उससे पहले कि समय बीत जाए इस के विश्वव्यापी शरणस्थान की वज्रांगी सुरक्षिता की खोज करें . . . .।"

यदि बहाउल्लाह के निम्नलिखित शब्द इस विधान की उस शक्ति और महानता की ओर जो भावी बहाई पंचायती राज्य का मूल है संकेत नहीं करते तो फिर यह किस ओर संकेत करते हैं ? फरमाया है:—"इस नवीन और महान् भूमंडल विधान के क्रान्तिकारी प्रभाव से संसार की समतुलना उलट पुलट हो गई है। इस विचित्र और अद्वितीय विधान के कारण जैसा कि आज तक संसार के देखने में कभी

न आया था मनुष्यों के जीवन विधान में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है.........।"

"आगामी बहाई पंचायती राज्य जिसका यह महान् भूमंडल विधान मूल है ज्ञान तथा कार्य्य दोनों प्रकार से संसार के नैतिक इतिहास में न केवल अद्वितीय हो है बल्कि इसकी उपमा संसार भर के स्वीकृत धर्मों के इतिहास में कहीं नाहीं पाई जाती। कोई डैमोक्रेटिक या स्वतन्त्र राज्य इस जैसा नहीं। कोई अधिनायकत्व चाहे वह राज्यवाद रूप का हो या प्रजातन्त्ररूप का इससे लग्गा नहीं खा सकता। कोई मध्यम रूप की शासनप्रणाली इसके तुल्य नहीं हो सकती। कोई धार्मिक शासन विधान चाहे वह यहूदियों का स्वाधिकारी शासन हो या ईसाइयों का पोपवाला राज्य हो या मुसलमानों की इमामत हो या खिलाफत, कोई भी इस भूमण्डल विधान के समान नहीं हो सकता जैसा कि इस के सम्पूर्ण बनाने वाले ने इसे बनाया है .....।"

"इस विधान की प्रारम्भिक अवस्था में कोई इसके उद्देश और तात्पर्य को छोटा न समझे। जिस आधार पर यह भूमण्डल विधान रचा गया है वह इस युग में मनुष्यमात्र के लिए ईश्वर का अटल उद्देश है। इसका प्रेरक स्वयं बहाउल्लाह है....इसका मौलिक और केन्द्रीय उद्देश जो इसका प्राण है वह उस नवीन भूमण्डल विधान को स्थापित करना है जो बहाउल्लाह ने बताया है। इसके ढंग, इसका मेयार न तो पूर्वी है और न पश्चिमी, न आस्तिक का है न नास्तिक का, न धनी का न निर्धन का और न गोरे का न काले का। इसका मक्रूज़ा मनुष्यमात्र का एकत्व और इसका मेयार विश्वव्यापी शान्ति है......८ फरवरी १९३४।"

"धर्म के विधान की उन्नति के निरन्तर ठोस होने के बढ़ते हुए चिह्नों और आपत्तिपीड़ित मनुष्यजाति के तारपौध को छिन्न भिन्न

करने वाली शक्तियों में अन्तर न केवल प्रकट व स्पष्ट ही है किन्तु ध्यान देने योग्य भी है। बहाई संसार के भीतर और बाहर चिह्न जो अति विचित्र रूप से उस भूमण्डल विधान की उत्पत्ति का प्रकाशन कर रहे हैं जिस का स्थापित होना धर्म के सुनहले युग का पता देते हैं दिन प्रतिदिन बढ़ते और एकत्रित होते जा रहे हैं .....।"

"स्वयं बहाउल्लाह घोषणा करते हैं, "अति शीघ्र वर्तमान भूमण्डल विधान लपेट लिया जाएगा और उसके स्थान में नया फैला दिया जायगा, ...।"

"बहाउल्लाह का प्रकट होना......को समझना चाहिये कि उनके आगमन से यह पता चलता है कि सारी मनुष्यजाति युवावस्था को प्राप्त हो गई है। इसे केवल यह न समझना चाहिये कि यह मनुष्यजाति की सदा बदलने वाली अवस्थाओं में एक और आत्मिक नवजीवन है। ना ही इसे केवल यह समझना चाहिये कि यह अवतारों के सिलसिले की एक और लड़ी है और ना ही इसे यह समझना चाहिये कि एक के पीछे दूसरे आने वाले नबियों के चक्रों में से यह भी एक चक्र है बल्कि इसे तो यह समझना चाहिये कि इस मण्डल पर मनुष्य के सामूहिक जीवन के महान् विकास का यह अन्तिम और सर्वोच्च पद है। सारे संसार के मनुष्यों का एक जाति बनना, संसार भर के नागरिक होने का भाव उत्पन्न होना, संसारभर की सभ्यता की स्थापि, जहाँ तक इस लोक के जीवन का संबन्ध है मनुष्य समाज के प्रबन्ध की अन्तिम सीमा समझना चाहिये यद्यपि मनुष्य अकेला भी असीम उन्नति करता जाएगा और इतनी बड़ी पराकाष्ठा का यही फल होना चाहिये और होगा......।"

"मनुष्य जाति की एकता जिसका चित्र बहाउल्लाह ने खींचा है उसका यह प्रयोजन है कि संसार भर का एक पंचायती राज्य स्थापित

होगा जिसमें जातियों, नसलों, धर्मों और सम्प्रदायों के लोग सदा के लिए पूर्णतया एक हो जायेंगे और जिसके शासन संबन्धी अङ्गों की स्वतन्त्रता और जिस के व्यक्तिगत मेम्बरों की वैयक्तिक स्वाधीनता और किसी कार्य्य में पहल करने की पूर्णतया रक्षा को जाएगी। जहाँ तक हम इस पंचायती राज्य का चित्र खींच सकते हैं इसमें एक संसार भर की व्यवस्थापिका सभा होगी जिसके सदस्य सारी मनुष्य जाति के प्रतिनिधि रूप से अन्त में उन सारी जातियों की कुल आमदनी पर अधिकारी हो जायेंगे जो इस पंचायती राज्य की मेम्बर होंगी और वह ऐसे कानून बनायेंगे जो जीवन को नियमित रूप का बनाने के लिए आवश्यक होंगे, जो आवश्यकताओं को पूरा करेंगे और सारी जातियों और देशों के संबन्धों की रचना न्याय पूर्वक करेंगे। संसार भर का एक प्रबन्ध कर्त्ता महकमा होगा जिसकी सहायता के लिए एक अन्तर्जातीय फौज होगी जो उन कानूनों को कार्य्यरूप में लायेगी जो कि व्यवस्थापिका सभा बनाया करेगी और इस प्रकार सारे पंचायती राज्य के सदस्यों की एकता की रक्षा हुआ करेगी। संसार भर का एक न्यायालय होगा जो उन झगड़ों का जो इस पंचायती राज्य के विभिन्न मेम्बरों के बीच उठा करेंगे निर्णय किया करेगा और प्रत्येक मेम्बर इन फैसलों को मानने पर बाध्य होगा। संसार भर में पत्रव्यवहार करने और गमनागमन के लिये एक प्रणाली स्थापित की जायेगी जिस के लिये कोई जाति रुकावट या सीमा नियत न कर सकेगी और अति शीघ्रता पूर्वक तथा पूर्ण नियमित रूप से काम किया करेगी। संसार भर की एक राजधानी होगी जो सारे संसार की सभ्यता के लिये एक केन्द्र का काम देगी। यह एक ऐसा केन्द्र होगा जिससे सारी संगठित करनेवाली शक्तियाँ उत्पन्न हुआ करेंगी और जो इन सारी शक्तियों का भण्डार होगा। संसार भर के लिये एक भाषा होगी जो या तो नई बनाई जायेगी या प्रचलित भाषाओं

में से चुन ली जायेगी। यह भाषा इस पंचायती राज्य की समस्त जातियों के स्कूलों में पढ़ाई जाएगी और यह मातृ भाषा के साथ एक द्वितीय भाषा होगी। संसार भर के लिये एक लिपि, संसार भरके लिये एक साहित्य, सारे संसार के लिये एक ही सिक्का, एक ही प्रकार के नाप तोल मनुष्य मात्र की विभिन्न जातियों के बीच गमनागमन और एक दूसरे को समझने में सुविधाएँ उत्पन्न करेंगे। संसार भर की ऐसे समाज में विज्ञान और धर्म जो मानुषिक जीवन की दो बड़ी प्रबल शक्तियाँ हैं एक बन कर मिल कर काम करेंगी और इस प्रकार एकता के साथ उन्नति करेंगी। ऐसे विधानाधीन समाचार पत्र यद्यपि मनुष्य जाति के विभिन्न विचारों को प्रकट करने के लिये पूर्णतया स्वतन्त्र होंगे किन्तु वह किसी एक धनाढ्य व्यक्ति अथवा संस्था के हाथों में पड़ कर कोई कुटिल प्रापैगंडा (प्रचार) न कर सकेंगे, चाहे ऐसा व्यक्ति अथवा संस्था सरकारी हो या ग़ैर सरकारी। और इस प्रकार समाचार पत्र दो विरोधी राज्यों या जातियों के प्रभाव से मुक्त हो जायेंगे। कच्चे माल के साधन खोजे जायेंगे और उन से पूरा पूरा लाभ उठाया जायगा। इसकी मंडियों में समता उत्पन्न कर के उनको उन्नति दी जायगी और इसकी उपज न्याय पूर्वक सब में बाँटी जाएगी।"

"साम्प्रदायिक धड़ाबन्दियां, ईर्षा, एक दूसरे के विरुद्ध षड्यन्त्र और छल कपट बंद हो जायेंगे और साम्प्रदायिक शत्रुता और हठधर्मी के स्थान में जातीय एकता, पारस्परिक मेल जोल प्रकाशमान होंगे। धर्म संबन्धी झगड़ों के कारण सदा के लिए उठा दिए जायेंगे, आर्थिक तथा कारबारी रुकावटें और सीमाएं पूर्णतया उड़ा दी जायेंगी और जातियों के बीच जो अनुचित भेद रक्खे हुए हैं वह पूर्णतया मिट जायेंगे। कङ्गाली और हद से ज्यादा धनवानपन दोनों लोप हो जाएं

युद्ध पर आर्थिक और नैतिक शक्ति जो इस समय नष्ट की जा रही है ऐसे उद्देशों के निमित्त लगा दी जायेगी जैसे मनुष्य जाति के हितार्थ आविष्कारों को विस्तृत बनाना, उपज को बढ़ाना, रोगों को नष्ट भ्रष्ट करना, वैज्ञानिक अन्वेषण को विस्तृत बनाना, शारीरिक स्वास्थ्य के मेयार को बढ़ाना, मानुषिक बुद्धि को चमकाना और तीव्र करना, भूमि के ऐसे साधनों को खोजना जिनका अभी तक पता नहीं लगा, मनुष्य की आयु को बढ़ाना और ऐसे ही दूसरे साधनों को उन्नति देना जो सब मनुष्यों के बुद्धि आचरण और आत्मज्ञान संबन्धी जीवन को प्रेरित और तीव्र बनाएं।"

"सारे संसार का एक संगठित विधान जिस में सारे संसार पर एक ऐसा राज्य होगा जिसके अधिकार और शक्ति को कोई ललकार न सकेगा, जिस में पूर्व और पश्चिम के आदर्श सिद्धान्त मिला दिए जायेंगे, जो युद्ध और इसकी आपत्तियों से निवृत्ति देगा और जो भूमितल पर की शक्ति के सारे साधनों को अपने काम में लाएगा, जिसमें बल न्याय का दास होगा, जिस के जीवन का आधार ईश्वर को विश्वव्यापी रूप से एक मानने पर होगा और जिसमें सारे संसार का एक धर्म होगा। यही वह अभिमत स्थान है जिसकी ओर मनुष्यजाति जीवन को संगठित करने वाले उद्योगों द्वारा बाध्य हो कर बढ़ रही है।"

"सारी की सारी मनुष्य जाति त्राहिमां त्राहिमां पुकार रही है और एकता की ओर जाने के लिए प्राण दे रही है और अपनी इन लम्बी और दीर्घ आपत्तियों को समाप्त करने के लिए सिर धुन रही है। फिर भी यह हठ के साथ उस प्रकाश को ग्रहण करने और उस अधिकारशाली शक्ति को मानने से इनकार कर रही है जो इसकी उलझनों को सुलझा सकती है और उस दारुण आपत्ति को टाल सकती है जिसमें यह फंसने वाली है......।"

"सारी मनुष्यजाति की एकता उस अभिमत स्थान का पहचान का चिह्न है जिसकी ओर अब मनुष्य समाज बढ़ रहा है। वंश, जाति और राष्ट्र संबन्धी एकता की ओर आपत्ति-पीड़ित मनुष्य जाति जाने की चेष्टा कर रही है। जाति बनाने का तजरुबा समाप्त हो चुका है। राष्ट्रीय अधिकार के अन्तर्गत जो उपद्रव है वह अब अपनी अन्तिम सीमा को पहुँच रहा है। मनुष्य जाति के लिए जो अब बुद्धि तथा ज्ञान में युवा-वस्था को प्राप्त हो रही है इस व्रत का त्याग कर देना अनिवार्य होगया है। उसके लिए अब मानुषिक संबन्धों की एकता को मानना अनिवार्य हो गया है और उसके लिए यह अटल हो गया है कि वह एक ऐसा साधन स्थापित करे जो उसके जीवन के इस मौलिक सिद्धान्त को सुघड़ता के साथ संसार में अस्तित्व में ला सके......११ मार्च १६३६।"

अब्दुल-बहा की वसीयत (Will) की कुछ और बातें

अब्दुल-बहा की अन्तिम वसीयत के महत्त्व का, उसके विषय के बहुमूल्य होने का और उसमें के बुद्धिपूर्ण आदेशों की महत्ता और पूर्णता का विचार करते हुए हम समझते हैं कि उस पर हम कोई टीका टिप्पणी न करें। परन्तु हम बहाई धर्म के इस संक्षिप्त से विवरण के अन्त में इस आवश्यक वसीयत की कुछ एक बातें लिख देना उचित समझते हैं जो अत्यन्त स्पष्टता से उस भाव और उन सिद्धान्तों का चित्र खींचकर दिखाते हैं जो अब्दुल-बहा के पथदर्शक और उत्साहवर्धक थे और जो इनके विश्वासपात्र भक्तों को पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिले हैं।

"ऐ ईश्वर के प्यारो! इस पवित्र दौर में लड़ना, झगड़ना और फ़साद करना सर्वथा निषिद्ध है। जो ऐसा करेगा वह ईश्वरीय प्रसाद से वंचित रहेगा। प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि सब जातियों और वंशों से, चाहे अपने हों या पराये, बड़े प्रेम, सुशीलता, सचाई,

औचित्य और हार्दिक दयालुता का व्यवहार करे, बल्कि प्रेम और सद्भाव यहाँ तक पहुँच जाये कि पराया अपने आपको प्रिय जाने और शत्रु सच्चा भाई, अर्थात् उनमें किसी प्रकार की भेद बुद्धि न रहे।"

"क्योंकि सार्वजनिकता ईश्वरीय है और परिधियां लौकिक हैं।"

"इसलिये ऐ प्यारे मित्रो! सब जातियों, धर्मों और लोगों से बड़ी सचाई, औचित्य, सद्भाव, दयालुता, सदिच्छा और मित्रता के साथ मिलो जुलो जिससे सारा संसार ब्रह्म के प्रसाद के पवित्र आनन्द से परिपूर्ण हो, अज्ञान, शत्रुता, घृणा और वैर संसार से दूर हो जाये, भिन्न भिन्न जातियों, संप्रदायों और दलों में जो भेद बुद्धि का अन्धकार छाया हुआ है वह एकता की ज्योति में बदल जाये यदि अन्य जातियाँ या लोग तुम से विश्वासघात करें तो तुम उनके हितैषी बने रहना, यदि वह तुम पर अत्याचार करें तो तुम न्याय करना, यदि वह तुम से घृणा करें तो तुम उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने की चेष्टा करना, शत्रुता करें तो मित्रता का व्यवहार करना, यदि वह तुम्हें विष दें तो तुम अमृत देना, यदि तुम्हें घायल करे तो तुम उनके घावों की मरहम बनाना, यही शुद्ध हृदय वालों के लक्षण हैं, यही सच्चे आदमी के चिह्न हैं।"

"ऐ ईश्वर के प्यारो! तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम सब एक तन्त्र राजाओं के, जो न्यायशील हैं, अधीन रहना, और प्रत्येक न्यायकारी राजा के भक्त बने रहना, संसार के सम्राटों की बड़े भक्ति-भाव और सचाई से सेवा करना, उनके अधीन और हितकारी बन कर रहना उनकी आज्ञा या अनुज्ञा के बिना राजनैतिक विषयों में हस्तक्षेप न करना, क्योंकि किसी न्यायकारी राजा से विरोध या विद्रोह करना ईश्वर से विरोध या विद्रोह करना है। यह तुम्हें मेरी शिक्षा और ईश्वर की आज्ञा है इसका मानना तुम्हारा कर्तव्य है। वह धन्य हैं जो पालन करते हैं।"

"ऐ स्वामिन् ! तू देखता है कि सब वस्तुएं मेरी दशा पर रो रही हैं और मेरे बन्धु मेरे दुःखों पर आनन्द मना रहे हैं। तेरी महिमा की सौगन्ध, ऐ मेरे स्वामी ! मेरे कई शत्रु भी मेरे कष्टों और दुःखों को देख कर दुःखी हुए, और प्रतिस्पर्धियों ने भी मेरे दारिद्रय, मेरे निर्वासन, मेरे संकटों पर आँसू बहाये, उन्होंने यह इसलिये किया कि उन्होंने मुझ में स्नेह दया और कृपा के सिवा और कुछ भी न देखा। जब उन्होंने मुझे आपत्तियों और संकटों के प्रवाह में घिरा देखा और दुर्भाग्य के तीरों का लक्ष्य बना देखा तो उनके हृदय करुणा से पूर्ण हो गये, उनकी आँखों से आँसू टपक पड़े, और उन्होंने गवाही देते हुए कहा कि "ईश्वर गवाह है, हमने इसमें सिवा वफादारी, उदारता और अत्यन्त करुणा के और कुछ नहीं देखा"। समझौता तोड़ने वाले पापाचारियों का क्रोध और भी अधिक भड़का और वह मेरी इस विपत्ति पर और मुझे इस प्रकार संकटों का शिकार बनता देख कर प्रसन्न हुए, मेरे विरुद्ध उठे और उन हृदय विदारक घटनाओं को जिनमें मैं घिरा हुआ था, देख कर आनन्द मनाने लगे।"

"ऐ मेरे स्वामी ! मैं अपनी जिह्वा और सारे दिल से तुझे बुलाता हूँ कि तू उन्हें उनकी निर्दयता, उनके पापपूर्ण कार्य, उनकी धूर्तता और धोखेबाज़ी के लिये न पकड़ना क्योंकि वह अज्ञानी हैं, उन्मत्त हैं, और निर्लज्ज हैं और नहीं समझते कि वह क्या कर रहे हैं। वह भले बुरे का भेद नहीं जानते और न्याय और सत्य का अन्याय और असत्य से भेद नहीं कर सकते, वह अपनी विषय वासना के अनुसार चलते हैं और अत्यन्त क्षुद्र तथा अज्ञानी पुरुषों के अनुयायी बने हैं। ऐ मेरे स्वामी उन पर दया कर और उन्हें इस संकटमय समय में आपत्तियों से बचाये रख और जो भी संकट, आपत्तियां और दुःख हैं, वह इस सेवक पर डाल जो इस अंधेरे गढ़े में गिरा हुआ है। प्रत्येक विपदा के लिये मुझे चुन, अपने

सब प्यारों के लिये मुझे न्योछावर कर। ऐ मेरे सर्वोच्च स्वामी ! मेरा जीवन, मेरी आत्मा, मेरी सत्ता, मेरा सर्वस्व उनके लिये न्योछावर कर। ऐ मेरे ईश्वर ! मैं बड़ी नम्रता से अपने मुँह के बल गिर कर तुझ से बड़े विनय से प्रार्थना करता हूँ कि उन सबको जिन्होंने मुझे कष्ट दिये हैं, क्षमा कर दे और उन सबको क्षमा कर जिन्होंने मेरे विरोध पर कमर बांधी और मुझको सताया और उन सबके अपराधों को धो डाल जिन्होंने मुझ पर अत्याचार किये हैं। उन्हें अपना उत्तम प्रसाद दे और उन्हें हर्ष प्रदान कर। शोक से उन्हें दूर रख और उन्हें शान्ति तथा ऐश्वर्य दे। तू शक्तिशाली, दयालु, विपदा में सहायक और स्वयंभू है।"

"मसीह के शिष्यों ने अपने आपको और सब संसारी वस्तुओं को भुला दिया था, सब साधनों का त्याग करके आत्म-भावना और करुणा में निमग्न हो गये थे, सबसे संबन्ध त्याग कर दूर तक बिखर गये थे, लोगों को ईश्वरीय मार्ग दिखाने में प्रवृत्त हो गये थे, यहाँ तक कि उन्होंने संसार को एक नया संसार बना दिया और अपनी अन्तिम घड़ी तक ईश्वर के उस प्रियतम के मार्ग में आत्मोत्सर्ग करते रहे। उनमें से प्रत्येक भिन्न भिन्न देशों में बड़ी शान से शहीद हुआ। वह लोग, जो उद्यमी हैं, उनका अनुसरण करें।"

"ऐ ईश्वर, ऐ मेरे ईश्वर ! मैं तुझे, तेरे अवतारों, तेरे दूतों, तेरे सन्तों और तेरे पवित्रात्माओं को साक्षी बनाकर कहता हूँ कि मैंने तेरे प्यारों के सम्मुख तेरी महिमा के प्रमाण उपस्थित करने में कोई कमी नहीं रहने दी और उनके सामने सब बातें खोल कर रख दी हैं जिससे वह तेरे प्रचार पर श्रद्धा करें, तेरे सीधे मार्ग और तेरे उज्ज्वल नियमों की रक्षा करें। निःसन्देह तू सर्वज्ञ और सर्व-बुद्धि-निधान है।"

इति शुभम्

शुध्धि पत्र

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुध्ध	शुध्ध
६	१६	वाल	वाले
८	२२	भतन	भवन
९	१३	पहल	पहले
१०	१८	हांने	होने
११	९	अवतार	अवतार
११	१३	जद्यपि	यद्यपि
१२	६	भविष्य	भविष्य
१५	१९	ग्रन्थ	ग्रन्थ
२२	२४	आरन्भ	आरम्भ
२४	१	अनया रौ युग	और नया युग
२७	२२	कांई	कोई
२१	८	पढ़े	पढ़े
३३	७	persia	Persia
३३	१७	शहीदत	शहादत
३३	१८	वरणों	चरणों
३५	१२	कीय	कीय
३६	२०	दृष्टे	दृष्टि
३८	९	करगार	कारागार
४१	३	जिवन	जीवन

४२	५	कां	को
४५	२३	शत्र	शत्रु
४७	३	भो	भी
४६	११	बारग	बारक
४६	१२	लांग	लोग
५१	७	संसा	संसार
५४	२१	रखा	...
५५	६	व्यवहार	व्यवहार
५६	२०	प्रसत्र	प्रसन्न
६२	१३	घोषणा	घोषणा
६४	१८	दृष्टि	दृष्टि
६५	२६	ईश्वरीन	ईश्वरीय
६६	१४	वृज्ञ	वृक्ष
६८	१२	असिहष्णु	असहिष्णु
६८	२३	ब्रोन	ब्राउन
६६	२६	ग्रिस	ग्रिसा
७१	१०	सम्वन्ध	संवन्ध
७३	१३	के	की
७४	४	का	की
७६	२४	आम्राय	आम्नाय
७७	१०	घोड़े	घुड़
७६	१०	लिय	लिये
७६	१०	पत्गी	पत्नी
७६	१६	सच्चे	बच्चे
७६	२२	प्रात्त	प्राप्त

८०	१२	सन्प्रदाय	सम्प्रदाय
८३	१२	क	की
८४	२	तोयह	तो यह
८४	३	छिप	छिपा
६१	३	वसा	वैसा
६१	१३	काय	कार्य्य
६१	१४	लज्ञण	लत्तण
६५	२१	मृत्य	मृत्यु
६५	२१	धर्मों	धर्मों
६६	१०	वाव	बाब
१०३	४	ईश्वरोय	ईश्वरीय
१०३	११	नवियों	नबियों
१०५	२३	जाहते	चाहते
१०६	७	कीर त्ता	की रत्ता
१०७	१६	आवश्क	आवश्यक
१११	१५	प्रैम	प्रेम
१११	२६	कौंई	कोई
११८	१८	बिनय	विनय
११६	११	हृगय	हृदय
१२०	२३	हौ गई	हो गई
१२४	६	मंडार	भंडार
१३१	६	पृथ्यी	पृथ्वी
१३५	१७	नहीं	नहीं
१३८	७	भेंट	भेंट
१४१	२१	पहचान्	पहचानूं
१४१	२३	सर्वसमय	सर्वसमथ

१४४	६	हौता	हेता
१४७	१६	घर्म	धर्म
१४८	२	गन्दाई	गन्दगी
१५१	५	अघिक	अधिक
१५२	१६	द्वारा	द्वारा
१५६	१५	बर्ताव	वर्ताव
१५६	११	करामात	करामत
१६०	६	निश्वास	विश्वास
१६७	७	कौनसो	को नसी
१६७	६	होगये	हो गये
१६८	१८	पैद	पैदा
१७३	७	बाका	बाकी
१७४	१५	ईश्ववरातार	ईश्वरावतार
१७७	६	बद्लक्र	बद्लकर
१८८	१५	अधार	आधार
१६५	८	मनुष्य	मनुष्य के
१६६	३	अमस्था	अवस्था
२०१	१८	तल्ती	तख्तो
२०२	६	बिनाशक	विनाशक
२०५	८	घनियों	धनियों
२०६	२	बसीयत	वसीयत
२१५	२२	सहबास	सहवास
२३२	२१	धम	धर्म
२३७	१	३३७	२३७
२५१	११	पूणता	पूर्णता
२५५	१६	यह्	यह

२५६	१४	पढ़ते है	पढ़ते हैं
२५६	२३	उन्नैसवाँ	उन्नीसवाँ
२६२	७	मदिन्र	मन्दिर
२६३	४	अपाहजों	अपाहिजों
२६५	१७	दुनिथा	दुनिया
२७०	४	Answer d	Answered
२७०	४	की की	की कि
२७४	२०	जन्तुओं	पशुओं
२६८	१४	जैनियल	डैनियल
२६६	२	थी	भी
२६६	४	भी	थी
३०१	८	यसीह	मसीह
३०२	११	वैठ	बैठ
३०४	२०	चुफी	चुर्की
३०५	६	तलवर	तलवार
३१३	२३	अथ	अर्थ
३१५	६	अभी	कभी
३१७	२१	लारे	सारे
३१८	२४	तुन्हारी	तुम्हारी
३२४	२०	अरुणदय	अरुणोदय
३२६	२०	बन तेहैं	बनते हैं
३३२	२१	नए	नये
३४१	११	स्कीकार	स्वीकार
३४७	१२	अौर	ओर
३५४	१	६२४	३२४
३५४	१४	पृरिधि	परिधि

३५६	१२	क	के
३५६	१७	देतेख	देखते
३६४	४	भित्रो	मित्रो
३७७	२०	असेम्वली	असेम्बली
३७८	२६	हृदयांकिंत	हृदयांकिंत

———